बापूकी छायामें

बलवन्तसिंह

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाजी देसाजी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति ५०००, १९५७

टाओ रुपये

जनवरी, १९५७

श्रद्धाके फूल

पूज्य दादीजी, माताजी और पिताजीके श्रीचरणोमें
जिनके परिश्रमी और सस्कारी जीवनसे मुझे
परम पूज्य बापूजीके चरणोमें रहने
योग्य शुभ सस्कार मिले।

बलवंतसिंह

सेवककी प्रार्थना

हे नम्रताके सम्राट्!
दीन भंगीकी हीन कुटियाके निवासी!
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्राके जलोंसे सिंचित
अिस सुंदर देशमें
तुझे सब जगह खोजनेमें हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे,
तेरी अपनी नम्रता दे,
हिन्दुस्तानकी जनतासे
अेकरूप होनेकी शक्ति और अुत्कंठा दे।
हे भगवान!
तू तभी मददके लिअे आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।
हमें वरदान दे,
कि सेवक और मित्रके नाते
जिस जनताकी हम सेवा करना चाहते हैं,
अुनसे कभी अलग न पड़ जायें।
हमें त्याग, भक्ति और नम्रताकी मूर्ति बना,
ताकि अिस देशको हम ज्यादा समझें,
और ज्यादा चाहें।

वर्धा, १२-९-'३४ — मो० क० गांधी

प्रस्तावना

वडे वृक्षके नजदीक या अुसकी छायामें लगाये हुअे छोटे पौधेकी वृद्धि कुंठित हो जाती है। यह मिसाल लेकर अक्सर कहा जाता है कि बडे पुरुषोंके आश्रयमें छोटे बढ नही सकते। बात सोचने लायक है। ये बडे कौन, जिनके आश्रयमें छोटे बढते नही? यह भी अुस वृक्षकी मिसालसे मालूम हो सकता है। वडे वृक्षके आश्रयमें छोटा पौधा क्यो नही बढता? अिसलिअे कि छोटे पौधेको मिल सकनेवाला पोषण वह बडा वृक्ष खा जाता है। दूसरोका पोषण खा जानेवाला बडा पुरुष याने बडा स्वार्थी या बडा महत्त्वाकांक्षी। अुसके आश्रयमें दूसरा कौन किस तरह पनपे?

बडे पुरुष भिन्न हैं और महापुरुष भिन्न हैं। महापुरुष महत्त्वाकांक्षी नही होते। वे महान ही होते हैं। वे दूसरोका पोषण खानेवाले नही होते, बल्कि दूसरोको पोषण देनेवाले होते हैं। अुनको मिसाल वत्सला गायकी दी जा सकती है। गाय बछडेको अपना दूध पिलाकर पोषण देती है, तो बछडा दिन-ब-दिन बढता ही जाता है। महापुरुषोकी यही आकांक्षा होती है कि अुनसे सबकी अुन्नति हो, सबको अूचा अुठानेमें वे मददगार बनें। यहा तक कि जैसे बच्चेको अूपर अुठानेको मा झुक जाती है, वैसे दूसरोको अूपर अुठानेके लिअे वे अपने महत्त्वको भुला देते हैं। महत्त्व ही अुनका अिसीमें होता है कि वे झुक जाय और दूसरे अूपर अुठें।

वृक्ष-गुल्म-न्यायकी मिसालें दुनियाभरमें कभी मिलती हैं। गो-वत्स-न्यायकी मिसालें भी कुछ मिलती हैं। बापूके जीवनमें हमने अुस मिसालको देखा है। अुनका आश्रय जिन्होने लिया, या जिनको अुन्होने आश्रयमें लिया, वे अगर छोटे थे तो बडे बन गये, खोटे थे तो खरे बन गये, कठोर थे तो कोमल बन गये, डरपोक थे तो निर्भय बन गये। बापूके साथके अपने सबधकी गाथायें जो भी लिखने बैठेगा, वह अिसी अनुभवको प्रकाशित करेगा। कविने लिखा है, "जिसके आश्रयमें रहनेवाले पेड जैसेके वैसे रह जाते हैं, चाहे वह सुवर्णगिरि या रजतगिरि क्यो न हो, हम अुसका गौरव नही करते। हम अुस मलय पर्वतका गौरव गाते हैं, जिसके आश्रयमें सामान्य

वृक्ष भी चन्दन बन जाते हैं।" इसीलिअे भारतीय हृदय राजा-महाराजाओंकी महिमा नहीं गाता, पर सत्पुरुषोंकी महिमा गाते अघाता नहीं। शंकराचार्यका वचन विश्रुत ही है-

क्षणमिह सज्जन-संगतिरेका।
भवति भवार्णव-तरणे नौका॥*

वलवन्तसिंहजीकी किताबमें महापुरुषोंकी अिस कीमियाका कुछ दर्शन पाठकोंको होगा असा मुझे विश्वास है।

कोअीम्बतूर जिला,
१०-९-'५६

*अिस संसारमें क्षण भरके लिअे भी सज्जनकी संगति मिल जाय तो वह संसार-सागरसे पार होनेके लिअे नौकाका काम देती है।

निवेदन

ता० २१-११-'५० को सुबहकी प्रार्थनाके बाद पूज्य जमनालालजीकी पवित्र जन्मभूमि सीकर (राजस्थान) मे गोसेवा-आश्रमके पवित्र और शान्त वायुमडलमें बैठकर जब मैंने अिन पवित्र सस्मरणोका आरभ किया था, तब मुझे कोअी स्पष्ट कल्पना नही थी कि क्या और कितना लिख सकूगा। मैंने सोचा था थोडे दिनमें थोडासा लिखकर रख दूगा, जो कभी सेवाग्रामके विस्तृत सस्मरण लिखनेवालोंके लिअे अेक अिशारामात्र होगा। स्वतत्र पुस्तकके रूपमें छापनेकी कल्पना तो स्वप्नमें भी नही थी। लेकिन जब अिन लेखोने कुछ रूप लिया और मैंने पुराने साथियोको दिखाया तो अुनकी पुरानी स्मृतिया ताजी हो गअी और अुन्होने अिनके साथ बडी ममता बताअी तथा मेरा अुत्साह बढाया। अिन्हें छपवानेका प्रेमभरा आग्रह भी किया। मुझे अुनकी सूचना पसन्द आअी। तो भी छ सालका लम्बा समय गुजर ही गया। मैं कोअी लेखक तो था नही, न टािअप आदिके साधन मेरे पास थे। अिसके लिअे जब जिससे सुविधाके अनुसार जितनी मदद मिल सकी अुतनीसे ही मुझे सतोष मानना पडा।

मै थोडेमें बापूजीके साथके अपने ही सस्मरण लिखनेकी दृष्टिसे बैठा था। लेकिन अन्य जिन सस्मरणोका बापूजीके साथ अविच्छिन्न सबध था अुनको लिखना भी मैंने जरूरी समझा। अगर मेरे मनमे पहलेसे ही अिस रूपमें प्रकाशित करानेकी कल्पना होती तो या तो ये लिखे ही नही जाते या अिनका कोअी दूसरा रूप होता। जब मैंने अिन लेखोको पूज्य काकासाहब कालेलकरको बताया और कहा कि लोग अिनको छपवानेका आग्रह करते है, तो क्या अिन्हें फिरसे लिखू ? काकासाहबने अेक सुन्दर दृष्टान्त देकर मुझे सतोष करा दिया। वे बोले, देखो भगवानने अर्जुनको गीताका अुपदेश दिया। थोडे दिनके बाद अर्जुनने अुसीको फिर सुननेकी अिच्छा प्रकट की। भगवान बोले, अर्जुन अब वह तो नही सुना सकता हू, क्योकि मेरे चित्तकी भूमिका वह नही है जो महाभारतके समय थी। भगवानने अर्जुनको 'अर्जुन-गीता' नामसे थोडासा सवाद सुनाया। तो भी मैंने अिन सस्मरणोको व्यवस्थित रूप देनेका प्रयत्न तो किया ही है। पाठकोको अिनमें कही कही अतिशयोक्ति, पुनरावृत्ति, आत्मश्लाघा, बापूजीके सामने अुद्धतता, आदिके दोष दिखाअी पडनेका सभव

है। लेकिन आखिर तो जैसा रूप होगा वैसा ही फिर भी आयेगा। मैं जैसा था और जिस रूपमें मैंने बापूका दर्शन किया, अुनके कथनका मैंने जो अर्थ समझा, अुस पर किसी प्रकारका रंग चढ़ाये बिना सागरमें से गागर भरनेका नम्र प्रयत्न अिसमें मैंने किया है।

अिन लेखोंके लिखनेमें बापूजीका चिन्तन जितना सतत और गहराअीसे चला, अुसने मेरे विचारोंको स्पष्ट करनेमें और मनके मैलको धोनेमें काफी मदद की। और मेरे श्रमका बदला बापूजीके चिन्तनके अुपरांत और क्या हो सकता है? अगर अिसमें से जनता-जनार्दनको भी बापूजीके अपार स्नेह, अुनकी सहनशीलता, अुनका धैर्य, अुनकी दूरदृष्टिका कुछ दर्शन मिल सका तो मैं अपने अिस प्रयत्नको धन्य मानूगा।

अिसमें रही भूलें और दोष जो भाअी-बहन मुझे सुझानेका निस्संकोच कष्ट करेंगे अुनके मैं अनेक आभार मानूगा। और अगर अिसकी दूसरी आवृत्ति छपने लायक कदर हुअी और तब तक मैं जिन्दा रहा तो अवश्य ही अुसमें सुधार करूगा।

पूज्य विनोबाने मेरे अिस अल्पसे प्रयासका जो ममताभरा गौरव किया, अुसके आनंदको प्रगट करनेके लिअे मुझे कोअी शब्द नहीं मिल रहे हैं। अिसके लिअे मैं अुनका अत्यन्त कृतज्ञ हू।

मेरे अिस प्रयासमें जो कुछ सफलता मिली है, वह बापूजीके पवित्र स्मरण और अुनके आशीर्वादका ही प्रताप है। अिसमें जो खामियां हैं वे मेरी अपनी खामियोंकी सूचक हैं।

यह दैवयोग ही कहा जायगा कि आज बापूजीकी कुटियामें ही बैठकर अुनकी मासिक पुण्यतिथि पर अपने अिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंकी अंतिम पंक्तियां मैं लिख रहा हू। बापूजीके प्रति तो अपनी नम्र श्रद्धांजलि मैं अिन्हीं शब्दोंमें अर्पण कर सकता हू.

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।

बापू-कुटी, सेवाग्राम,
३०-११-'५६

बलवन्तसिंह

कृतज्ञता-प्रकाश

जिन साथियोंने मुझे बापूजी तक पहुचानेमे हाथ बटाया, जिन्होंने जिन लेखोंके लिखनेकी प्रेरणा की, जिन्होंने जिनके लिखने, टाअिप करने, भूल सुधारने, लेख व्यवस्थित जमाने तथा प्रेसमें सपादन करने, प्रूफ पढने आदिमें कीमती मदद की है, अुनके प्रति कृतज्ञता प्रकट किये बिना मैं कैसे रह सकता हू?

सबसे पहले मुझे अपने परम प्रिय मित्र विश्वबंधुजीकी याद आती है, जिन्होंने मुझे पहली बार 'महात्मा गाधी' नामक बापूजीके लेखोंका सग्रह पढने और 'हिन्दी-नवजीवन' का ग्राहक बननेकी प्रेरणा की और जो सन् १९२१ से १९३१ तक बराबर दस साल तक मुझे बापूजी और दूसरे सत-महात्माओंकी तरफ चलनेमें मदद करते रहे।

दूसरे, अपने मित्र श्री प्यारेलालजी गर्ग और किसनलालजीका मैं बहुत कृतज्ञ हू, जिन्होंने मुझे साबरमती आश्रम तक पहुचनेमे आर्थिक सहायता दी और जो आज तक मेरे प्रति स्नेह रखते हैं।

तीसरे, मैं अपने पिताजीके फूफाजात भाअी चाचा ठाकुर टोडरसिंहजीको भी श्रद्धासे प्रणाम करता हू, जिन्होंने मुझे पहली बार बापूजीसे मिलानेकी व्यवस्था करनेके लिअे गाधी आश्रम, दिल्लीके व्यवस्थापक श्री विचित्रभाअीके नाम पत्र लिखनेकी कृपा की थी और अन्त तक मुझे अुनकी ओर बढनेकी प्रेरणा करते रहे।

अपने प्रिय मित्र मुनिलालजीको भी मैं कैसे भूल सकता हू, जिन्होंने साबरमती आश्रमके मत्रीके नाम मेरा सारा पत्र-व्यवहार ठीकसे लिखकर टाअिप करा दिया था। वे आज सन्यासी हैं और अुनका आजका नाम स्वामी सनातनदेवजी है।

आश्रममें जानेके लिअे मेरे अच्छे स्वास्थ्यका प्रमाणपत्र वैद्य रमादत्तजी शास्त्रीने दिया था। तथा अच्छे चालचलनका प्रमाणपत्र श्री आनन्दस्वरूप बिस्मिलने दिया था, जो अुस समय जिला काग्रेस कमेटी बुलदशहरके डिक्टेटर थे। अिन दोनों सज्जनोंका मैं बडा आभारी हू। साथ ही बुलदशहर जिलेके अुन सब काग्रेस कार्यकर्ताओंका भी हार्दिक अुपकार मानता हू,

जिन्होंने अपने शुभ आशीर्वादोंके साथ मुझे साबरमती आश्रमके लिअे रवाना किया था।

यहां मैं अपनी पुण्य जन्मभूमि समनपुर गांवको भी कृतज्ञतापूर्वक नम्र-प्रणाम करता हूं, जिसकी गोदमें पल-पुसकर मैं बड़ा हुआ और जिसकी मिट्टी तथा हवा-पानीसे मुझे अैसे संस्कार मिले जिनके प्रतापसे मैं बापूजी तक पहुंच सका।

बड़े बन्धुके समान आज भी जिनका मैं आदर करता हूं और आज भी जिनको आश्रमका मंत्री मानता हूं, अुन माननीय श्री नारणदासभाओ गांधीके भी मेरा दिल अनेक आभार मानता है, जिन्होंने मेरी अरजी मंजूर करके मुझे साबरमती आश्रममें प्रवेश दिया और मुझ पर प्रेम दरसाया। आज भी अुनका प्रेम मुझ पर वैसा ही बना हुआ है।

अिन लेखोंको लिखनेकी मूल कल्पना और आग्रह सेवाग्राम आश्रमके व्यवस्थापक और मेरे २५ वर्षके साथी भाओ श्री चिमनलालभाओका रहा और अुन्हींसे अिस विचारको बल मिला। पूज्य जमनालालजीकी द्वितीय पुत्री भक्तहृदया श्री मदालसा बहनके आग्रहसे अिसे मूर्तरूप मिला। मेरे सेवाग्रामके साथी भाओ ब्रह्मदत्तजी शर्मा अिस कार्यमें मेरे प्रेरक और लेखक बने; सारा मूल मेटर अुन्होंने ही लिखकर तैयार किया। पीछेसे अुसमें जो मेटर जोड़ा गया, अुसे लिखने तथा ठीकसे जमानेमें भाओ जमनाप्रसादजी मथुरियाने कीमती मदद की। मेरे परममित्र श्री रामनारायणजी चौधरीने भाषाकी दृष्टिसे रही भूलें सुधारनेमें मदद की। नवजीवनके हिन्दी विभागमें भाओ सोमेश्वरजी पुरोहितने सारे मेटरको व्यवस्थित रूप देने और अुसका संपादन करनेमें तथा अन्य भाअियोंने प्रूफ संशोधनमें काफी मेहनत की है। अिन सबका मैं हृदयसे कृतज्ञ हूं।

आज मैं पू० श्रीकृष्णदासजी जाजू (काकाजी) का भी पवित्र स्मरण करता हूं, जिन्होंने अिन संस्मरणोंको सुना, पसंद किया और जल्दीसे छपवा देनेका आग्रह और आशीर्वाद भी दिया। मुझे स्वप्नमें भी कल्पना नहीं थी कि काकाजी अिस तरह चले जायेंगे। मेरे मनमें अुनसे दो शब्द लिखवानेका रह गया। अिसका आज बहुत दुःख होता है।

जिन अनेक भाअियोंने अिसके टाअिप करनेमें कीमती मदद दी है, आज मैं अुन सबके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट किये बिना भी कैसे रह सकता हूं? नवजीवन-ट्रस्टने अिसे प्रकाशित करनेकी जो ममता बताओ

अुसके लिअे मैं अुसका भी अत्यन्त कृतज्ञ हूं। और भी जिन भाअियोंका अिसमें हाथ लगा और जिनसे मुझे अुत्साह मिला, अुन सबके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूं और सबको नम्रतापूर्वक प्रणाम करता हूं।

अन्तमें मैं अपने सामने खडी गोमाताओंको श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूं, जिनके अमृत जैसे दूध और पवित्र दर्शनसे मेरा दिल और दिमाग हमेशा ताजा बना रहा और मेरी स्मरणशक्तिने मेरा पूरा पूरा साथ दिया।

राजस्थान गोसेवा संघ
कृषि-गोपालन-केन्द्र,
दुर्गापुरा कैम्प (जयपुर)
३०-१२-'५६

बलवन्तसिंह

स्वपरिचय

यहां अपना परिचय देनेमें मुझे संकोच और अटपटापन लगता है। लेकिन जब मैं किसीका लिखा हुआ लेख पढता हूं तो सहज ही लेखकका परिचय जाननेकी मेरी अिच्छा हो जाती है। मेरे अिन संस्मरणोंसे भी पाठकोंको यह अिच्छा होना स्वाभाविक है। बापूजी कहते थे कि नअी तालीम माके गर्भसे आरंभ होनी चाहिये। अिस पर मैंने विचार किया तो मुझे लगता है कि माके गर्भसे नहीं बल्कि दादी और नानीके गर्भसे होनी चाहिये। और वह वहींसे आरंभ होती है। गायके नस्ल-सुधारमें भी मुझे यही अनुभव आया है। मुझ जैसा साधारण व्यक्ति भी बापूजी जैसे महान पुरुषका दुलार प्राप्त कर सकता है, अिसका दर्शन भी जनताको मिल सके अिस लोभसे थोडासा अपना परिचय देना मुझे अनिवार्य लगा है। बापूजीका हृदय किस हद तक ग्रामीण भारतने घेर लिया था तथा किस हद तक वे अपनी अमूल्य शक्ति, अपार सहनशीलता तथा धीरजके साथ अेक देहातीको अूपर अुठानेका प्रयत्न कर सकते थे, अिसका मर्म पाठक क्यों कर समझेंगे यदि मैं संकोचवश यह भी न बताअूं कि मैं करीब करीब अेक निरक्षर देहाती किसानके सिवा और कुछ न था। अितना-सा आवश्यक लिखनेमें भी यदि किन्हीं पाठकोंको आत्मश्लाघा जैसा लगे तो मैं अुन पाठकोंसे नम्रतापूर्वक क्षमा-याचना करता हूं।

मेरा जन्म विक्रमी संवत् १९५५ के फाल्गुन शुक्ल द्वितीयाको तदनुसार लगभग मार्च १८९८ में अक छोटेसे गांव नगलापुर (तहसील खुर्जा, जिला बुलन्दशहर, अुत्तर प्रदेश)में अेक साधारण जाट परिवारमें हुआ था। परिवारका धंधा खेती था। पिताका नाम भागमलसिंह तथा माताका नाम ज्ञानोदेवी था। मेरे पिताके चार भाअी थे। सबसे बडे नवलसिंह, दूसरे मेरे पिताजी, तीसरे चाचा दयारामसिंह और चौथे चाचा रणजीतसिंह थे। दादाका नाम कृष्णसिंह और नानाका नाम दलेलसिंह था। दादाजी और ताअूजीको मैंने नहीं देखा था। कनिष्ठ चाचा रणजीतसिंहजीकी थोडीसी याद है। मेरे दादा और नाना दोनों ही बडे गोभक्त थे। नानाजीको गाय चराते मैंने देखा था। मुझे लगता है कि मेरे दादाजी और नानाजीकी गोभक्तिका वारसा मुझे मिला है।

पिताजी और माताजी दोनों ही सीधेसादे और परिश्रमी थे। मेरी माने पुत्रकी अिच्छासे बडे कठोर व्रत-अुपवास किये थे। वे कहा करती थीं कि तेरे लिअे मैंने ५ बरस तक बरतनमें न खाकर ओखलीमें खाना खाया था। मैं करीब १० सालका था तब पिताजीका स्वर्गवास हो गया। मुझसे छोटे भाअी पदमसिंह और बडी बहन रघुबीरकौरके पालन-पोषणका भार भी माताजी पर ही आ पडा। मेरी दादीजी तुलसादेवी जिन्दा थीं। वे मेरे चाचा दयारामसिंहके साथ अलग रहती थीं। मेरे जन्मके पहले हमारे घरकी स्थिति अच्छी थी। लेकिन पिताजीके मर जाने पर हालत यहां तक बिगडी कि माताजीको पिसाअी करके हमारा पालन-पोषण करना पडा। माताजीका शरीर मजबूत था। वे १५–२० सेर मक्का प्रतिदिन पीसनेकी शक्ति रखती थीं। मेरे मामा बडे सज्जन पुरुष थे। वे हमारी बहुत मदद करते थे। मैं अधिकतर अुनके पास ही रहता था। दुर्भाग्यसे माताजी भी हमें छोडकर जल्दी ही चल बसीं। तब हमारा भार दादी और चाचाजी पर आ पडा। हमारा सारा ही परिवार निरक्षर था। चाचाजीने थोडीसी हिन्दी सीख ली थी। मेरी दादी बडे सत्कारी परिवारकी थीं। अुनको रामायण और महाभारतकी कथायें तथा और भी बहुतसी कथायें याद थीं। मेरा बहुतसा समय अुन्हींके सान्निध्यमें बीता। अुन्होंने मुझे न जाने कितनी बार रामायण और महाभारतकी तथा दूसरी कथायें कहानीके रूपमें सुनाअी होंगी। मैं मानता हूं कि वहीं मेरी सच्ची तालीम थी, जो मुझे बापूजीके जैसी महान आत्माके पास खींच कर ले गअी।

जहा रोटियोके भी लाले हो वहा पढनेका तो सवाल ही नही था। हमारे पास जमीन काफी थी, लेकिन कोअी कमानेवाला नही था अिसलिअे गरीबी थी। मेरी पाठशाला तो दादीके आसपास थी या अेकान्त जगलमें ढाकके वृक्षोंकी छायामें। अुसका आरभ अेक रोज अिस तरह हुआ। हमारे अेक खेतमे चने बोये थे। अुसकी रखवालीके लिअे चाचाजीने मुझे वहा बिठा दिया था। दिनभर खाली बैठे मन भी तो कैसे लगता? मैंने चाचाजीसे पहली किताब और लिखनेकी पट्टी मगा ली थी। अुस समय पहली किताब अेक पैसेमें आती थी। पट्टी पडोसीके लडकेसे माग ली गअी थी। अिस तरह मेरी पाठशाला बिना शिक्षकके सिर्फ अेक विद्यार्थीकी पाठशाला थी। मै किताबमे से पट्टी पर अक्षरोकी नकल करता रहता और जब शामको घर लौटता तब रास्तेमें जो भी लिखा-पढा मिलता अुससे अुन अक्षरोके नाम पूछ लेता या घर आकर चाचाजी से पूछ लेता। रातको सोते समय और सुबह अुठते समय खाटमें पडा पडा अुन अक्षरोको घोकता। सुबह अपनी रोटी, किताब, पट्टी आदि लेकर फिर खेत पर पहुच जाता। रास्तेमें कोअी पढा-लिखा लडका या आदमी मिल जाता तो अन्य अक्षरोके नाम पूछ लेता। धीरे धीरे मैंने बारहखडी पूरी कर डाली। जो विषय मुझे याद होता अुसे पुस्तकमें पढता। मेरी याद अक्षरोकी सडक पर चलती। अिस प्रकार मै कुछ पढने लगा था। जब मै छोटा ही था तब मेरे अेक चाचाने मेरी मातासे कहा कि यह लडका ठाला रहता है। क्यो न मेरे ढोर चराया करे? मै सुन रहा था। अुनकी बोली मुझे अितनी प्यारी लगी कि मैंने मासे स्वीकार करा लिया कि मै अिन चाचाका काम करूगा। और फिर अेक साल तक सवा रुपया मासिक लेकर मैंने अुनके ढोर चराये।

१९ वर्षकी अवस्थामे २५ जनवरी १९१७ को मै फौजके घुडसवारोमें २६ नबर रिसालेमें भरती हो गया। और मार्च १९२१ में समरी कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) द्वारा दो मासकी सजाके बाद नाम काटे जाने पर घर आ गया। अिसका जिक्र पुस्तकमे आ चुका है। दादीजी १९१७ के अगस्तमें चल बसी थी। २२ वर्षकी अवस्थामें चाचाजीने मेरी शादी कर दी। और खुद सन्यासी बनकर भगवानके भजनमें लग गये। यहा तक कि फिर अुनके दर्शन भी न मिल सके। पत्नी जानकीदेवी बडी सरल, सुन्दर, अुदार और समझदार थी। लेकिन अुस बिचारीका और मेरा साथ

अधिक न हुआ। होता भी कैसे? विधाताका विधान तो दूसरा ही था। अिसलिअे वह मुझे लगभग तीन वर्षमे ही मुक्त करके चली गअी। बचपनसे ही मेरी मनोवृत्ति साधु-भगतकी थी। हमारे जिलेका गगा-किनारा गगाजीके सारे बहावमें सर्वश्रेष्ठ व रमणीय था। और वहा पर बडे बडे सत साधना करते थे। जब घरसे फुरसत मिलती मैं गगाके किनारे अुनके सत्सगमें १५–२० रोज जाकर रह आता। अुन दिनो वहा पर अुडिया बाबा, हरि बाबा, भोले बाबा, दौलतरामजी (अच्युत स्वामी), शकरानदजी, निर्मलानदजी, अुग्रानदजी आदि सतोंसे मेरा परिचय और सत्सग हुआ। अुडिया बाबाकी मुझ पर खास कृपा रही।

'नारि मुअी घर सपति नासी, मूड मुडाय भये सन्यासी।' अिस न्यायसे कपडे रगनेका विचार भी मेरे मनमें आया। लेकिन भिक्षाका अन्न खाना मेरे स्वभावके अनुकूल नहीं था। अिसलिअे वह रग मुझ पर न चढ सका। और पूर्वजन्मके किन्हीं पुण्योंके प्रभावने मुझे कर्मयोगी बापूकी छायामें पहुचा दिया, जहासे बहुत छटपटाने पर भी मैं भाग नही सका। 'शुचीना श्रीमता गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते' अिस वचनके अनुसार मेरे पुण्य तो थे या नहीं भगवान जाने। परन्तु मेरे पूर्वजोंके पुण्यप्रतापसे शरीर रहते हुअे भी पूज्य बापूजी जैसे श्रेष्ठ पुरुषके घर मेरा पुनर्जन्म हुआ। और मेरा मानव-जीवन कृतार्थ हो गया।

मैंने साबरमती आश्रममें कताअी और धुनाअी सीखी। सावलीके खादी अुत्पत्ति-केन्द्रमें बुनाअी सीखी। और सेवाग्राम आश्रममें खेती और गोसेवाका काम सहज ही मुझ पर आ गया। किसान होनेके नाते अिसे बापूजी मेरा 'स्वधर्म' कहा करते थे। वही बापूकी छत्रछायामें रह कर अुनके पवित्र सकल्प और आशीर्वादके प्रतापसे मैं अिस 'स्वधर्म' के पालनमें थोडा कुशल बना।

विनोबाजीके आदेशसे राजस्थानमें बैठकर पिछले ५ वर्षसे सीकर केन्द्रमें मैंने गोसेवाका कार्य किया। और पिछले १ वर्षसे दुर्गापुरा कैम्प (जयपुर) में गोसेवा-सघका कृषि-गोपालन तथा सवर्धन केन्द्र चला रहा हू। बापूजीके आशीर्वादसे राजस्थानके समस्त रचनात्मक और राजनैतिक कार्यकर्ताओंका प्रेम और सद्भावना प्राप्त करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। अब विनोबाने मुझे यह आदेश दिया है कि मैं गोसेवाकी सीधी जिम्मेदारीसे मुक्त होकर केवल यह काम करनेवालोंका मार्गदर्शन करू और साथ ही

आध्यात्मिक अुन्नतिकी साधना करके जीवनको समृद्ध बनाअू। अिसी दिशामे बढनेका मेरा प्रयत्न चल रहा है।

अिस तरह बापूजीकी भाषामें मेरी नअी तालीमकी पाठशाला माके नही बल्कि दादी और नानीके गर्भसे आरभ होकर आजतक अुसी प्रकार चल रही है। अिसी पूजीके बल पर मे बापू जैसे महापुरुष तक पहुच सका और अुनका कृपापात्र बन सका। तुलसीदासजीने कितना सुन्दर कहा है

प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किये आप समान।
तुलसी कहू न राम से साहिब शील निधान॥

अिन वचनोका मैने अपने जीवनमे प्रत्यक्ष अनुभव किया है। सत्सगकी महिमा सुन्दरदासजीने बडे सुन्दर शब्दोमें बताअी हे

मातु मिले पुनि तात मिले सुत भ्रात मिले युवती सुखदायी,
राज मिले गजबाज मिले सब साज मिले मन वाछित पाअी।
लोक मिले सुर लोक मिले विधि लोक मिले वैकुण्ठ अुजाअी,
सुन्दर और मिले सबही सुख सत समागम दुर्लभ भाअी।

अैसा दुर्लभ सत-समागम मुझे बापूजीके चरणोंमे बैठ कर सहज ही प्राप्त हुआ। अब अिससे अधिक और मै भगवानसे क्या चाहू?

बलवन्तसिंह

अनुक्रमणिका

लेखक बापूजीको नया पैदा हुआ गायका बछडा दिखा रहे हैं ।

बापूकी छायामें

१

पूर्वभूमिका

बापूका नाम पहली बार मैंने १९१९ में अदनमें सुना जब कि मैं फौजमें था। अदनमें टर्कीसे लडनेके लिअे अंग्रेजोका अेक मोर्चा था। अुसी पर मैं नियुक्त था। अुससे पहले फौजमें तिलक भगवानका नाम तो सुना जाता था। कहा जाता था कि वे अंग्रेजोंके साथ हिन्दुस्तानियोकी समानताकी सिफारिश करते है और जितनी तनख्वाह अंग्रेज सिपाहियोको मिलती है अुतनी ही हिन्दुस्तानी सिपाहियोको मिलनेकी हिमायत करते है। लेकिन बापूका नाम नही सुना था।

रौलेट अेक्टके नामके साथ साथ बापूका नाम कान पर आया था। रौलेट अेक्टका विरोध करनेके लिअे जब जलियावाला बागमें सभा हुअी और अुस पर गोली चली, तो पजाबमें शाति स्थापित करनेके लिअे बापूजी पंजाब जा रहे थे। अुनको कोसी स्टेशनसे पकड कर वापिस भेज दिया गया। यह समाचार फौजी अखबारोंमे छपा। फौजी अखबारोंमें सब चीजें अिस ढगसे छपती थी कि मिस्टर गाधी और दूसरे कुछ लोग अंग्रेज सरकारके खिलाफ बगावत कर रहे हैं और वे अच्छे आदमी नही हैं। बापूके विरुद्ध जितना फौजी अखबारोंमें लिखा जाता था, अुतना ही मेरा चित्त अुनकी ओर आकृष्ट होता था और मुझे लगता था कि यह आदमी अैसा है जो हिन्दुस्तानको अंग्रेजोंके चगुलसे छुडायेगा। क्योंकि फौजमे अंग्रेजो और हिन्दुस्तानियोंके बीच जो भेदभाव बरता जाता था वह मनको चुभता था। अेक मामूली अंग्रेज, जो अेक हिन्दुस्तानी सिपाहीसे भी कम योग्यता रखता था, अफसर बना दिया जाता था और हिन्दुस्तानी अफसर भी अुसके सामने भीगी बिल्लीकी तरह तुच्छता महसूस करते थे।

जब जलियावाला बागमें गोलीकाड हुआ तो हमें लगा कि हिन्दुस्तानमें अंग्रेजो और हिन्दुस्तानियोंके बीच लडाअी शुरू हो गअी है और हो सकता है कि हम लोग हिन्दुस्तान न पहुच सकें। अुस समय हिंसा-अहिंसाका भेद तो हम कुछ जानते नही थे। अिसलिअे आपसमें यह चर्चा करते थे कि जो दो चार अंग्रेज अफसर हैं अुनको खतम करके हम खुश्कीके रास्तेसे

हिन्दुस्तान निकल चलेंगे। १९२० की जनवरीके लगभग मैं हिन्दुस्तान वापिस आया। झासीमें मैं फौजी अस्पतालमें बीमार था। अुनी समय बापूजी और मौलाना शौकतअली झासी आये थे। जब अैसे प्रसग आते थे तब शहर फौजकी हदसे बाहर कर दिये जाते थे और कोअी फौजी आदमी वहा नहीं जा सकता था।

मेरा अेक मित्र अेक अग्रेज अफसरके यहा अरदली था। वह किसी तरह झासीकी अुस सभामें पहुच गया। अुसने वहाका सब वर्णन मुझे सुनाया तो मनमें लगा कि मैं भी वहा गया होता तो अच्छा होता। अुसने मुझे कहा कि वहा 'वन्देमातरम्' बहुत बोलते थे। अुसका क्या अर्थ है? अुसका शब्दार्थ करके मैंने अुसे समझाया। 'वन्देमातरम्' में अितनी भावना छिपी है, अिसका अुस वक्त मुझे पूरा ज्ञान नहीं था। अुन वक्त तो मैं अितना ही समझता था कि बापूजीने अग्रेजोंसे लडनेके लिअे हिन्दुस्तानियोंकी अेक स्वतत्र फौज बनाअी है, वे सदाचारका प्रचार करते है, मास और मदिराके विरोधी हैं, और खादी पहननेके लिअे कहते हैं।

अिस बीच हमारी फौज पेशावर चली गअी थी। जनवरीके अन्तमें मैं भी पेशावर पहुचा। यह सन् १९२१ की बात है। मैं अिन चीजोंका फौजमें प्रचार करने लगा। क्योंकि फौजमें शराब भी पी जाती थी, मांस भी खाया जाता था और नैतिक जीवन भी कुछ अूचा नहीं रहता था। फौजके अूपर कडा प्रतिबध था। वहा न तो कोअी अैसे अखबार पढ सकता था जिनमें काग्रेस आन्दोलन और बापूजीकी किसी तरहकी खबरें हों, न शहरमें किसी सभा या जुलूसमें भाग ले सकता था और न फौजमें कोअी अैसा आदमी प्रवेश ही कर सकता था। लेकिन तो भी हवाके जरिये बहुतसे समाचार फौजमें पहुच जाते थे। हमारी अेक विशिष्ट टोली थी जो अिस प्रकारके सात्त्विक जीवनके लिअे छटपटाती थी। सब लोग मुझसे कहते थे कि तुम अिस्तीफा देकर बाहर जाओ और गाधीजीकी फौजमें हमारे लिअे भी स्थान निश्चित करके हमें खबर दो तो हम भी आ जायेंगे। अेक विचार यह भी चलता था कि कहीं पर अेक आश्रम बनाया जाय। अुसमें दिन भर सब लोग काम करें और रातको अेकसाथ मिलकर प्रार्थना करें, भोजन करें और स्वाध्याय करें। अिसके लिअे वे लोग मुझे ही अगुवा मानते थे और मुझे 'गाधी' नाम दे रखा था। मेरे अन्दर भी छटपटाहट चलती ही थी। लेकिन पैसे और फौजकी शानका मोह था। अिसलिअे अिस्तीफा

देनेकी हिम्मत नही होती थी। मनमें लगता था कि किसी तरहसे नौकरी छूट जाय तो अच्छा हो।

अुसी समय मुझे कुछ धार्मिक ग्रथ पढनेका शौक लगा था। अेक रोज पहरे पर कुछ पढते पढते नींद आ गयी और मुझे सोते हुअे अेक सार्जेन्टने पकड लिया। रातके बारह बजे मुझे कैद करके 'कोर्ट-गार्ड' में भेज दिया गया। सुबह होते ही फौजमें यह खबर बिजलीकी तरह फैल गअी। मै चुस्त सिपाही माना जाता था और आज तक अिस प्रकारकी कोअी भी गल्ती मुझसे नही हुअी थी, जिससे मुझे किसी भी अदालतके सामने जाना पडा हो। लोग मिलनेके लिअे मेरे पास आने लगे। अैसे मामलोंके लिअे फौजमे दो अदालतें होती थी। अेक तो सिर्फ बयान लेती थी, जिसको सजा देनेका कोअी अधिकार नही होता था। दूसरी 'समरी कोर्ट मार्शल' करनेवाली होती थी, जो जन्म-कैद या फासी तककी सजा दे सकती थी। और अुसके आगे कोअी अपील नही होती थी। अुसके पाच सदस्य होते थे। अेक कमाडिग अफसर और चार दूसरे होते थे, जिनमें हिन्दुस्तानी अफसर भी रहते थे। अिनमें अेक अैसा मुसलमान अफसर था जो पहले मेरा मास्टर रह चुका था और मुझ पर बहुत प्यार करता था। वह मेरे पास आया और दर्दके साथ मुझसे सब बात पूछी। जब अुसने मुझसे यह पूछा कि मै कोर्ट मार्शलके सामने क्या बयान दूगा, तो मैंने कहा कि घटना जैसी कुछ घटी है वैसी ही सच-सच कहूगा। अपने बचावके लिअे कोअी झूठ नही बोलूगा, यह मेरा निश्चय है। यह सुनकर वह अफसर बहुत खुश हुआ और मेरी पीठ ठोककर चला गया। मै कोर्ट मार्शलके सामने गया और सारी घटना जिस तरहसे घटी थी वैसी ही बता दी। अुसमें मेरे बचावके लिअे अेक बडा मुद्दा यह था कि मै तीन रातसे बराबर पहरा दे रहा था और आखोमें नीद भरी थी। अिरादतन् जमीन पर लेटा भी नही था, लेकिन दीवारके सहारे खडे खडे नीद आ गयी थी। अगर मेरे गार्डका अफसर गलत बयान नही देता, तो मै साफ छूट सकता था। लेकिन अीश्वरको अैसा ही मजूर था। मुझे दो महीनेकी सजा हुअी और फौजसे मेरा नाम कट गया। अुस समय सारी फौजमें अेक तहलका-सा मच गया और अैसा प्रतीत होने लगा कि विद्रोह हो जायगा। मैंने निकटके मित्रोंको समझाया और शात रहनेको कहा।

अुस समय पेशावर लडाअीका मोर्चा समझा जाता था और मोर्चे पर सोनेके अपराधमें गोलीसे मारने तककी सजा दी जा सकती थी। लेकिन

मेरे पक्षमें अैसे कारण थे जिनसे मुझे दो महीनेकी नाममात्रकी सजा देकर ही अदालतने अपना रोब रखनेका सन्तोष माना। मैं पेशावर सेंट्रल जेलमें भेज दिया गया। बापूजीके पास पहुचनेकी जो धीमी धीमी आग मेरे मनमें सुलगने लगी थी, अुनका पहला पाठ मुझे जेलमें मिला। मुझे जेलका अनुभव करानेमें अीश्वरका ही हाथ है, अैसा जेलमें जाकर मैंने अनुभव किया। मैंने भगवानको धन्यवाद दिया कि जिन मोहमें मैं फसा था अुनसे अुनने थप्पड मार कर मुझे छुडा दिया। 'करु सदा तिनकी रखवारी, जिमि बालक राखे महतारी।' यह वचन मेरे लिअे सार्थक सिद्ध हुआ।

अुन दो महीनेके जेल-जीवनमें जो कठिन परिश्रम मुझे करना पडा और जो शुद्ध विचार मेरे मनमें चले, वह सब सुनाने बैठू तो अेक लबा किस्सा हो जाय। अितना ही कह सकता हू कि अुन जेलके कठिन जीवन और शुभ विचारोंसे मेरा मन और तन अितना निर्मल हो गया था कि फिर मुझे सत्याग्रहके जेल-जीवनमें किसी प्रकारकी अडचन महसूस नहीं हुअी।

मै अपने अतरमें यह तो महसूस करता ही था कि भगवानने जो कुछ किया है अच्छा किया है, मगर यह स्पष्ट खयाल नहीं था कि बापूके पास पहुचनेकी पहली शर्त जेलकी तैयारी और अन्तरशुद्धिका प्रयत्न है। जेलमें मेरा काग्रेसके कुछ राजनैतिक कैदियोंसे भी परिचय हुआ। जेलसे छूटनेके बाद मैं पेशावर काग्रेस कमेटीके सदस्योंसे मिला। घर आते समय लाहौरमें लाला लाजपतरायसे मिला। राजनैतिक क्षेत्रमें मुझे पहला गुरुमत्र लालाजीसे मिला माना जा सकता है। अुन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम अपने यहा जाकर काग्रेसके कार्यकर्ताओंसे मिलो और जैसा वे कहें वैसा काम शुरू कर दो। अीश्वर तुम्हारी मदद करेगा।

लालाजीके दर्शन और आशीर्वादसे मुझे बहुत ही आनन्द हुआ। और मैं १९२१ के मार्च मासके अतमें अपने घर पहुच गया। हमारे गावके पास सौजरा गावमें विश्वबन्धुजी तिलक राष्ट्रीय पाठशाला चलाते थे। अुनसे मेरा परिचय हुआ। अुन्होंने मुझे बापूजीके लेख और भाषणोंका सग्रह 'महात्मा गाधी' नामक पुस्तक पढनेको दी। अुसे पढकर मुझे बहुत ही शाति मिली, क्योंकि मेरा मन आर्यसमाजके 'सत्यार्थप्रकाश' आदि कुछ ग्रथ पढनेसे तर्क-वितर्कके अंधेरेमें फस गया था। बापूजीके लेखोंसे मुझे प्रकाश मिला। मैं 'हिन्दी-नवजीवन' का ग्राहक भी बन गया। मैं खुद पढता और दूसरोंको सुनाता। अुसके ग्राहक भी बनाता। स्वागत-सगत लगानेमें और बापूजी तक भेजनेमें

विश्ववधुजीने मेरी बहुत मदद की। ये बडे त्यागी और विद्वान पुरुष है। अिनको बापूजीके पास खीचनेकी मैने कोशिश की लेकिन सफलता नही मिली। खुर्जामें काग्रेसके कार्यकर्ताओसे परिचय करके मै काग्रेसके काममें लग गया। लेकिन जो लोग आध्यात्मिक दृष्टिसे बापूजीके भक्त थे, अुनसे विशेष परिचय और प्रेम बढा। प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी अुनमें से अेक थे। ये सस्कृतके विद्यार्थी थे। श्री राधाकृष्ण सस्कृत पाठशालामें पढते थे और काग्रेसका काम भी करते थे। सीकराकी पाठशाला भी अिनकी ही कृति थी। बापूजीके परम भक्त थे। अिनसे भी मेरा घनिष्ठ सबध था। और मेरे गावमें काग्रेसका काम जमानेमें भी अिन्होने ही मदद की थी। विश्ववन्धुजीका हाथ तो था ही। आज तो प्रभुदत्तजीको सारा हिन्दुस्तान जानता है। अिन्होने भक्ति पर अनेक ग्रथ भी लिखे है। झूसीमें वे आश्रम बनाकर साधना करते है। खुशीकी बात है कि हम दोनो ही बालपनके साथी अपने अपने ढगसे गोसेवामें लगे हुअे है।

मुनिलालजी खुर्जाके व्यापारी वर्गके थे। वे बापूजीके अेक निष्ठावान भक्त थे। साबरमती आश्रममें आनेका सारा पत्रव्यवहार, प्रमाणपत्र आदि अुन्होने दुरुस्त करके टाअिप कराये और मेरा अुत्साह बढाया। बडे ही विचारशील और अध्ययनशील व्यक्ति है। अुन्होने सस्कृतके अनेक ग्रथोका अनुवाद भी किया है। आजकल वे सन्यासी है और अुनका नाम स्वामी सनातनदेव है। साधु-समाजमें भी अुनकी बडी प्रतिष्ठा है। अब भी जब कभी हमारा मिलन होता है तो बडे प्रेमसे कोली भरकर मिलते है। अिनके साथसे भी मुझे बापूजीके पास आनेकी प्रेरणा और व्यावहारिक सहायता मिली। प्यारेलालजी गर्ग हमारी ही तहसीलके नीमका नामक गावके बापूजीके भक्त, काग्रेस कार्य-कर्ता और अच्छे साधकोमें से है, जिन्होने आश्रममें पहुचने तक मेरा अुत्साह तो बढाया ही, आर्थिक सहायता भी दी।

अिस प्रकार खुर्जामें हमारा अेक सत्सगियो और बापूजीके भक्तोका मण्डल था, जो अेक-दूसरेको आगे बढानेमें दिलोजानसे मदद करते थे। पत्थर आखिरकी अेक चोटसे ही नही, पहलेकी अनेक चोटोके पडनेसे ही टूटता है। अिस प्रकार मनुष्यको अूपर अुठानेमें अनेकोका हाथ होता है। भगवानने गोवर्द्धन पर्वत भी तो बालग्वालोके बलसे ही अुठाया था। अुसमें कविकी कल्पना यही रही होगी कि किसी बडे कामका कोअी अकेला आदमी अभिमान न कर बैठे। अुसमें सबका हिस्सा होता है। मै तो पद पद पर अिसका अनुभव

करता हूं कि मुझे बापूजीके पास पहुंचानेमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे न मालूम कितनी जड़-चेतन सृष्टिका हिस्सा रहा है। जिससे मेरे मनमें बापूजीके पास जानेका अपना अभिमान कभी होता ही नहीं और सब साथियोंके प्रति कृतज्ञताका भाव बना रहता है।

२

बापूका प्रथम दर्शन

मेरा खयाल है १९२१ के अगस्तका महीना था। बापूजी विलायती कपड़ेकी होली करनेके लिअे हिन्दुस्तानका दौरा कर रहे थे। अुसी समय अुनके अलीगढ़ आनेकी खबर मिली। जब यह खबर मुझे मिली अुस समय मैं अपने अेक चाचा और चचेरे भाओीके साथ अेक खेतका बांध बना रहा था। हमारे यहां अेक छोटी-सी नदी थी, जिसका पानी चढ़ रहा था। और खेतमें पानी घुस जानेकी आशंका थी। असलिअे हमारा काम जोरसे चल रहा था। मेरे सारे कपड़े कीचड़से भरे थे। हमारा खेत स्टेशनके पास ही था। अुसी समय अलीगढ़ जानेवाली अेक गाड़ी आ रही थी। मैंने अपने चाचा और भाओीसे पूछा कि मैं गांधीजीके दर्शन करने जाअूं? वे मेरे अूपर बिगड़े और बोले, देखते नहीं हो, अगर अभी यह बांध नहीं बना तो रातको सारा खेत पानीमें डूब जायगा। मेरा दिल द्वन्द्वमें फंस गया। अिधर अिन लोगोंका भय था और अुधर बापूका आकर्षण था। अतमें मैं काम छोड़ कर स्टेशनकी ओर चल दिया। ज्यों ज्यों गाड़ी नजदीक आती गयी त्यों त्यों मेरा दिल बापूकी ओर खिंचता गया और मैं अुन लोगोंसे दूर हटता गया। अब मैंने सोचा कि अगर मैं भागकर गाड़ीमें बैठ जाअूं तो ये लोग मुझे पकड़ नहीं सकेंगे। गाड़ी आकर खड़ी ही होना चाहती थी कि मैंने फावड़ा फेंक दिया और कहा, "लो, मैं तो चला।" और दौड़कर गाड़ीमें बैठ गया। टिकट लेनेका तो होश ही कहां था और मेरे पास पैसे भी नहीं थे।

रातको साढ़े सात बजे अलीगढ़ पहुंचा। भीड़ बहुत थी। बापूजीको दो जगह भाषण करना था। मस्जिदमें स्त्रियोंके लिअे प्रबंध था और बाहर पुरुषोंके लिअे। बापूजीके साथ मौलाना मोहम्मदअली और स्टोक्स साहब भी थे। मैंने मंचके नजदीक पहुंचनेकी खूब कोशिश की और वैसी जगह पहुंच

गया जहासे बापूजीको स्पष्ट देख सकू। बहुत भीड और कोलाहल था। आसमानमे बादल थे और डर था कि पानी बरसेगा। सबकी प्रार्थना यही थी कि पानी न बरसे और बापूजीका भाषण सुनें। यही हुआ। बापूजी मच पर आये और अुन्होने लोगोसे शात रहनेको कहा। सब लोग शात हो गये। बापूजीके अुस भाषणका साराश करीब करीब सारा मुझे याद है। अुन्होने कहा था:

"भाअियो और बहनो,

गुलामीसे छूटनेका सबसे बडा हथियार है स्वदेशीधर्मका पालन। स्वदेशीका अर्थ है कि जो चीज हमारे देशमें बनती हो वह परदेशसे न लायें, जो हमारे प्रान्तमें बनती हो वह परप्रान्तसे न लाये, जो हमारे जिलेमें बनती हो वह दूसरे जिलोंसे न लायें और जो हमारे गाव या घरमें बनती हो वह बाहरसे न लें। चरखा तो घर घर चलाया जा सकता है। गावका जुलाहा बुन सकता है। तो हम क्यो विलायती कपडेके मोहमें पड़ें? विलायती कपडा तो जहरके समान है। कोअी भी अपने घरमें जहरको या सापको नही रख सकता। अुसे जला देना चाहिये। लोग कहते हैं कि खादी मोटी और खुरदरी होती है। मै पूछता हू कि अेक माका बच्चा काला और बदसूरत है और दूसरीका गोरा और खूबसूरत है। अगर पहली मासे कहा जाय कि तुम दूसरीके बच्चेसे अपना बच्चा बदल लो तो क्या वह बदलेगी? हरगिज नही बदलेगी, क्योंकि अपने बच्चेमें वह अपना ही रूप देखती है। अिसी तरह हम खादीको छोडकर विलायती या देशी मिलके कपडे कैसे पहन सकते हैं? अगर मुल्क विदेशी कपडे और दूसरी वस्तुओका सर्वथा त्याग कर दे तो मैने जो अेक सालमें स्वराज्य दिलानेकी बात कही है अुसमें सन्देह करनेका कारण नहीं रह जायगा। दवाका असर परहेज पर निर्भर है।"

मौ० मोहम्मदअली भी बोले, लेकिन वह मुझे याद नही है। बापूजीने लोगोंसे विलायती कपडे मागे। बातकी बातमें कपडोका ढेर लग गया और अुसकी होली जलाअी गअी। अुस समय बापूजीको मच पर देखकर अैसा लग रह रहा था कि यह तो कोअी अपने आदमी है और अिनके अधिक नजदीक जाना चाहिये। लेकिन जिस तरह मैं बापूजीके पास पहुचा, अुसकी किसी स्पष्ट कल्पना या सभावनाका दर्शन अुस समय मुझे नही हुआ था, सिर्फ मनकी अेक अिच्छामात्र थी।

३

सविनय प्रतिकारका प्रथम पाठ

अपने गावमें मैंने ग्राम कांग्रेस कमेटी बना ली थी। बादमें वह मंडिल कांग्रेस कमेटी हो गअी थी। आसपासके गावोंमें कांग्रेसका असर हो गया था। मुझे कअी साथी भी मिल गये थे। यद्यपि हम थे तो अिनेगिने ही, तथापि सब निष्ठावान थे और सत्याग्रहके विश्वासी थे। अेक दिन गावमें कुछ नाचनेवाले आये। मेरे परिवारवालोंने अुनका तमाशा करानेका निश्चय किया। मुझे दिनमें ही अिसकी खबर लग गअी थी। मैं अिस कार्यक्रमके प्रति अुदासीन रहना चाहता था। लेकिन मेरे घरके सामनेसे तमाशा देखनेवाले आ-जा रहे थे। मेरे कअी साथी मेरे पास आकर बैठे और जब वे चलने लगे तो मैं भी अुनके साथ हो लिया। अिससे अुनको आश्चर्य हुआ। लेकिन मैंने सफाअी कर दी कि चल कर देखें तो सही वहा क्या हो रहा है। जब हम वहा पहुंचे तो कुछ लोग प्रसन्न हुअे और कुछ चौंके। चौंके अिसलिअे कि आखिर हम लोगोंका वहा क्या काम है। मैंने हसकर अपने चाचासे, जिनके यहा यह तमाशा होनेवाला था, पूछा कि तमाशेमें कितनी देर है। वे खुश होकर बोले, 'बेटा, लडके सज रहे है, अभी आते हैं।' तब तक मेरे मनमें नाच बन्द करानेका विचार नही था। मैंने सहज ही कहा, 'चाचाजी, अिनमें सजनेकी क्या जरूरत है? यों ही भजन होने दो न?' वे बोले, 'बेटा, बिना सजे रौनक कैसे आअेगी?' मैंने कहा कि जनाने कपडे पहनाकर रौनक करना ठीक नही है। अिससे वातावरण गन्दा बनता है। अुन्होंने मेरी बात नही मानी। मैंने कहा कि यह नही हो सकेगा। वे बिगडे जिससे मेरे मनमें अुस नाचको बन्द करवानेके लिअे सत्याग्रहकी भावना जागी। मैं वहासे चला आया और अपने सबसे मजबूत साथीको मैंने जगाया। वह बोला, 'क्यों नाहक झझटमें पडते हो, गाववाले हमारी बात नही मानेंगे और झगडा बढेगा।' मैंने अुसे अुत्साह दिलाया कि भाअी अभी तो यह अेक छोटासा काम है। यहा सिर्फ दो चार गालियों या दो चार थप्पडों तक ही नौबत आनेवाली है। अितनेमें ही यदि हम हिम्मत हार गये तो अंग्रेजोंको निकालना कैसे संभव होगा, जिनके पास तोपें और बन्दूकें हैं और जिनके साथ लडनेमें जानका पूरा खतरा है। अंग्रेजोंके खिलाफ सत्याग्रह करनेके

लायक हम हैं या नहीं, जिसकी परीक्षा आज हो जानी चाहिये। पहले हम समझौता करनेका यत्न करेंगे अर्थात् जनाने कपड़े न पहनकर केवल भजन करें तो करने देंगे। नहीं तो आज हमारा पहला सत्याग्रह होगा। योजना बनाओ गओ कि यह साथी पहले जाकर लोगोंको समझावे कि हमारे गावमें काग्रेसका काम होता है जिसलिओ हमें नाच कराना शोभा नहीं देता। दूसरे, हमारी बहन-बेटियोंके सामने हम गन्दी बातें सुनें तथा गन्दे हावभाव देखें, यह शर्मकी बात है। अितने पर भी न मानें तो हम नाचके स्थानके चारों ओर खड़े होकर 'गाधीजीकी जय', 'भारत माताकी जय' के नारे लगातार लगाते रहें। अैसा करनेमें हमें गालिया मिलें तो सुन लें। किसी पर मार पड़े तो असे बचानेका प्रयत्न न करें। मार खाते खाते जब तक गिर न पड़े तब तक हर कोअी जय-जयकार करता रहे। हमारा साथी वहा गया और जब असके समझानेका कोअी परिणाम नहीं हुआ तो असने हम लोगोंको बुला लिया। हम लोग जय-जयकार करते हुअे वहा पहुच गये। कअी अुत्साही लड़के भी हममें मिल गये। गावका मुखिया मेरे चाचाका बेटा था। वह घटनास्थल पर पहुचा और सब हाल जानकर अुसने कहा कि वह सक्रिय मदद तो नहीं करेगा, लेकिन हमारा विरोध भी नहीं करेगा, क्योंकि हमारा लक्ष्य शुभ है। हमारे वहा पहुचते ही सन्नाटा छा गया। हमने नाचनेवालोंको घेर लिया और बिना अिधर-अुधर देखे जय-जयकार करने लगे। मेरे चाचाने कहा कि काम तो अिन लोगोंने पीटनेका किया है। परिवारका अेक दूसरा व्यक्ति बोला कि यदि यही बात है तो पीटो। लेकिन अिससे आगे कोअी कुछ न बोला और धीरे धीरे लोग खिसक गये। कुछ बहनें गालिया देती जा रही थीं कि आये बड़े गाधीवाले। आज तो स्वाग बन्द करा दिया, कलको ब्याह-बरात भी बन्द करा देंगे। अिनका सत्यानाश हो। दूसरे मोहल्ले-वालोंने ताना मारा कि आज अपने मोहल्लेमें तो तमाशा बन्द करा लिया है, कल हमारे मोहल्लेमें बन्द कराने आना। मारते मारते मुह लाल बना देंगे। हमने दूसरे दिनके लिअे भी वैसा ही समझौतेका और यदि समझौता न हो सके तो सत्याग्रह करनेका कार्यक्रम रच लिया था। लेकिन तमाशा करनेवाले ही राजी न हुअे और गावसे चले गये। फिर तो आसपासके गावोंमें भी स्वाग बन्द हो गया।

मेरे अेक दूसरे चाचा तथा गाववालों पर अिस घटनाका अच्छा असर हुआ। वे कहने लगे कि देखो अिन लड़कोंने जब रातको केवल जय बोलकर सारे

गांववालोंको भगा दिया, तो जब अंग्रेजोंको भी भगा देनेमें वे सफल होंगे। हमारे दिलोंमें भी जिस घटनाके बाद निर्भयता तथा आत्मविश्वास दृढ़ हो गये।

४

निकट सम्पर्क और सन्देहका अन्त

सन् १९२१ से १९२८ तकका समय जिस तरहसे बीता, अुसका सब वर्णन लिखने बैठूं तो मेरी ही आत्मकथा बन जाये। जिसलिअे अुसको टाल देता हूं। जितना ही कह सकता हूं कि मेरी गति सांप-छछूंदर जैसी थी। अुधर मैं बापूजीकी तरफ खिंचता था और जिधर परिस्थिति मुझे घरमें बांध कर रखना चाहती थी। आन्दोलनमें काम किया, खूब घूमा। बापूजीका 'हिन्दी-नवजीवन' पढ़ता रहा। 'आत्मकथा' भी पढ़ी। लेकिन बापूजीके पास पहुंचा कैसे जाय, जिसका कोअी मार्ग नहीं सूझा।

जहां तक मुझे याद है १९२९ के मार्चकी २९ तारीखको नयी दिल्लीमें बड़ी धारासभाके अध्यक्ष स्व० विट्ठलभाअी पटेलके बंगले पर कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी मीटिंग थी। मुझे पता चला कि बापूजी वहां आ रहे हैं। मैं अपने अेक चाचा ठाकुर टोडरसिंहजीकी सिफारिश लेकर गांधी आश्रमके व्यवस्थापक श्री विचित्रभाअीके पास गया। अुनसे मैंने कहा कि वे मुझे बापूजीसे मिला दें। मैंने अुनको पत्र बताया। अुन्होंने मेरे ठहरने आदिकी व्यवस्था कर दी। बापूजीसे मुलाकातकी व्यवस्था तो वे नहीं कर सके, पर स्व० विट्ठलभाअीकी कोठी पर, जहां बापूजी ठहरे हुअे थे, अुन्होंने मुझे पहुंचा दिया। दूसरे मित्र भी मेरे साथ थे। हम स्व० विट्ठलभाअीके बंगलेके मैदानमें जाकर बैठ गये। वर्किंग कमेटीकी मीटिंग चल रही थी। हमने कअी कागज बापूजीसे मुलाकात मांगनेके लिअे भेजे, लेकिन वे अुनके पास तक किसीने जाने नहीं दिये। मैं छटपटा रहा था कि मुलाकात कैसे होगी? तब अेक मोटर-ड्राअिवरने अुर्दूमें पत्र लिखकर फिर भेजा। वह पत्र मौलाना आजाद साहबने पढ़कर बापूजीको सुनाया। बापूजीने कहा, अुनसे कहो कि ठहरें, मैं अभी नीचे आता हूं। मैंने जब बापूजीका अुत्तर सुना तो बड़ा आनंद हुआ।

शामको वर्किंग कमेटीकी मीटिंग खतम हुअी और बापूजी नीचे आये। बापूजीके साथ अुनके पुत्र देवदासभाअी भी थे। मैंने बापूजीके चरणोंमें

प्रणाम किया और पूछा, "मनुष्यको अपनी आध्यात्मिक अुन्नतिके लिअे क्या करना चाहिये?"

बापू बोले, "सच्चा बनना चाहिये। आध्यात्मिक अुन्नतिका यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।"

दूसरा प्रश्न मुझे सूझ ही नहीं रहा था और बापूके पास अितना समय भी नहीं था। श्री विचित्रभाअीने मुझे कहा था कि तुमको जो कुछ पूछना हो लिखकर ले जाओ, क्योंकि गांधीजीके सामने जाकर लोग होशहवास भूल जाते हैं और कुछ पूछते नहीं बनता। लेकिन मैंने तो सीधे ही प्रश्न पूछना ठीक समझा। सोचा अुस वक्त जो सूझेगा पूछूंगा। यह प्रश्न सारे भावोंका निचोड़ था। अितने निकटसे बापूका दर्शन, मेरा प्रश्न और अुनका अुत्तर! अुस समयके आनन्दका वर्णन करना मेरी शक्तिके बाहर है। न तो मैं घबराया और न होशहवास ही भूला। बापूकी प्रेमभरी मुस्कराहटने मुझे मोहित कर लिया।

अुस समय बापूका घूमनेका समय था। बापूके साथ मौ० अबुलकलाम आजाद और प० मदनमोहन मालवीयजी थे। बापू घूमने चले, मैं भी पीछे पीछे चला, दो मेरे साथी और थे। अिस प्रकार अेकांतमें बापूजीके साथ घूमनेका जो अवसर मुझे मिला, अुसके लिअे मैं अीश्वरको अनेक धन्यवाद दे रहा था और अपने आपको कृतकृत्य मान रहा था। अुनकी आपसमें क्या बात चल रही थी, यह तो मुझे याद नहीं है। लेकिन बापूकी आवाज सुनकर मुझे खूब आनन्द होता था। बापूके लौटने तक मैं अुनके पीछे ही घूमता रहा। मुझे पता नहीं था कि घूमनेके बाद बापूजी प्रार्थना करते हैं। अिसलिअे अुनके बंगले पर लौटनेके बाद ही मैं वापिस दिल्ली चला गया। बादमें पता चला तो प्रार्थनामें शामिल न होनेका मुझे बहुत दुःख हुआ।

सन् १९२१ से १९२८ तकके समयमें मेरे विचारोंमें अनेक प्रकारके अुतार-चढाव होते रहे। मेरा मन कुछ सन्यास-वृत्तिका होता जा रहा था, और राजनीतिसे मुझे अुदासीनता-सी हो गअी थी। परंतु बापूके अिस छोटेसे दर्शनने जादूका-सा काम किया और मेरा मन फिर कांग्रेस आन्दोलन और बापूकी तरफ जोरसे खिंच गया।

सन् १९२९ में बापूने यू० पी० में खादी-प्रचारके लिअे दौरा किया था। अुसी सिलसिलेमें बापूका खुर्जा आनेका कार्यक्रम भी था। शायद अक्तूबरका महीना था। मैंने भी कुछ साथी कार्यकर्ताओंको अिकट्ठा करके किसानोंकी

ओरसे बापूको अभिनन्दन-पत्र और अेक थैली भेंट करनेका प्रबंध किया। किसानों-के पाससे अेक अेक पैसा मांगकर कुछ रुपये अिकट्ठे किये, अेक अभिनन्दन-पत्र भी लिखा। वह बापूजीको भेंट किया। अभिनंदन-पत्र अिस प्रकार था :

ॐ

। सत्यमेव जयते नानृतम् ।

श्रीयुत पूज्य महात्मा गांधीजीको

श्री कृषक कांग्रेस कमेटी समसपुर, जिला बुलन्दशहरकी तरफसे

श्रीमन्, वन्दे।

आपकी प्रशंसाकी गंधमें हम कृषक भी महक अुठे हैं। गंध वाणीका विषय न होनेसे हम ही क्या सभी आपकी प्रशंसा करनेमें असमर्थ हैं। भारत-वर्ष ही नहीं सारी दुनिया, अमेरिका अित्यादि देश भी, आपकी प्रशंसाकी गंधसे सुगन्धित हैं। जब जब हम आपके अुपकारोंको याद करते हैं तब हमको औश्वरकी करुणाका अनुभव होने लगता है। आपके हृदयमें भगवानके अहिंसा, सत्य, न्याय, शीलादि गुणोंका पूर्णतया प्रादुर्भाव हो गया है, अिसलिअे हम आपके आदेशको औश्वरका ही आदेश समझते हैं। जब भारतके पूर्वज महान पुरुषोंके कीर्तिपुंजका अितिहास विलायती सभ्यताके अंधकारमें मलिनताको प्राप्त होने लगा, तब आपने अपने चारित्र्यबल और सौजन्यके प्रकाशसे अुस आधुनिक सभ्यताके तमपुंजको छिन्नभिन्न कर ऋषि-मुनियोंकी कीर्ति-पुंज गाथाको अुज्ज्वल बना दिया।

अे संयमके अवतार! जब तेरी अफ्रीका जैसे असभ्य देश-संबंधी सत्याग्रहकी घटनाओंका स्मरण होता है तब प्रह्लादका चरित्र आंखोंके सामने खिंच आता है और विश्वास होता है कि दुष्ट हिरणाकुशके शासनकी नाओी आधुनिक दुःशासनको आप छिन्नभिन्न कर देंगे। जब आपका यह वाक्य 'जिसका औश्वरके सिवा और कोअी अवलम्ब नहीं वह जानता नहीं कि संसारमें पराभव भी कोअी चीज है' याद आता है, तो अैसा साहस होता है कि बड़ेसे बड़ा तिरस्कार भी सत्याग्रहीको नहीं झुका सकता। अे प्रेमावतार! तूने अपना तिरस्कार करनेवालोंकी रक्षा की। तेरी दृष्टिमें सब देश अेक समान हैं, अिसलिअे तू दुनियाका प्राण है। संसारमें तुझको ही लोग सबसे बड़ा महान पुरुष समझते हैं। आध्यात्मिक विषयमें तो आपके वाक्योंको पढ़कर ही हम दंग रह जाते हैं। आपके ये वाक्य 'हम स्वाद लेनेको पैदा नहीं हुअे हैं। हम

अपने बनानेवालेको पहचाननेके लिअे ही जीते हैं। यह शरीर हमको किराये पर मिला है, अिसलिअे किरायेके बदले अुनकी प्रार्थना करनी चाहिये और अन्त समयमें जैसा मिला है वैसा ही मालिकको सौंप देना चाहिये।' जब हम याद करते हैं तो संसारके विषयभोग नीरस प्रतीत होने लगते हैं और हृदयमें अीश्वरप्रेम अुमडने लगता है। जब जब मत-मतान्तरोंकी शंकाओंसे हम दुःखी होते हैं, तब आपके अिस आनन्ददायक वाक्यका स्मरण होता है कि 'राम न रामायणमें है, कृष्ण न गीतामें है, क्राअिस्ट न बाअिबलमें है, खुदा न कुरानमें है, किन्तु ये सब मनुष्यके चरित्रमें है, चरित्र नीतिमें है, नीति सत्यमें है, सत्य है सो ही शिवस्प है।' अिसके स्मरणसे हम अिन मत-मतान्तरोंके झगडोंसे अलग रहते हैं। जब हमारी आंखें आधुनिक भौतिक अुन्नतिको देखकर चकाचौंध हो गअी और हम अपने प्राचीन रीति-रिवाजोंको भूलने लगे, तब आपने ही हमको समझाया कि यह अुन्नति मनुष्यको बेकार और निकम्मा बनाती है, वास्तविक भौतिक अुन्नतिकी अितनी ही आवश्यकता है जिससे हम जिन्दा और नीरोग रह सकें।

आपने संयमको ही हमारा ध्येय बतलाया और यह भी बतलाया कि ज्यों ज्यों हम संयमी बनते हैं, त्यों त्यों अीश्वरके समीप पहुचते हैं। हम अपनी वेशभूषा, खानपानको भूल चुके थे। परतु आपने हमको अज्ञानकी घोर निद्रासे जगाया और चूल्हे, चक्की, चरखेको ही जीवनका मुख्य सहायक बतलाया। हम लोगोंने चर्बी लियडे कपडोंको पहनकर अपनेको भुला दिया था और अपने पूर्वजोंको हम असभ्य समझने लगे थे। परन्तु आपने हमको शुद्ध खादी पहनाअी और पूर्वजोंका अुच्चादर्श पुनर्वार जाग्रत कर दिया। आप रातदिन हमारी अुन्नतिके लिअे चिन्तित रहते है, क्योंकि आप करुणानिधि हैं। आपसे हमारे दुःख नही देखे जाते। हम लोग परतन्त्रताकी बेडीमे जकडे पडे हैं। अुस बेडीके काटनेमें आप अैसे लगे हैं कि अब कोअी संदेह नहीं कि वह कटनेवाली है। आपकी यह भारतयात्रा भारतका पुनरुत्थान करनेके लिअे ही है। यह हमारा बडा भारी सौभाग्य है कि बिना प्रयासके ही आज आपके दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। आपके दर्शनोंके आनन्दमें हम सब दुःख भूल गये हैं।

हमारे अन्दर जो छूतछातका मिथ्याभिमान था, अुसको आपने अपने चरित्रबल और पवित्रतासे दूर कर दिया है। क्योंकि चरित्रवान ही सबसे बडा और पवित्र मनुष्य है। जो दुश्चरित्र है वही अछूत है, यह शास्त्रका

निहाल है। आप हम दीनदुःखी कृषकोंके प्राण हैं। हम आपके अूपर निछावर हैं। बारडोलीके कृषक आपके अुपदेशामृतका पान करके अैसी बड़ी सरकारको नीचा दिखा सके, यह आपकी ही असीम कृपा थी। चम्पारनमें आपने कृषकोंको महान कष्टसे मुक्त किया। कहां तक आपके गुणगान करें? रौलेट अेक्ट, जिसको गलेघोंट कानून कहते थे, अुसका विरोध आपने ही किया। अिस दीनहीन भारतके लिअे अीश्वरने आपको भेजा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अपने सामने ही हमको स्वतंत्र कर देंगे।

हममें कोअी शक्ति नहीं कि हम कृतज्ञता प्रकट कर सकें। हम आपके अुपकारोंको कहां तक याद करें? आपकी गोदीमें हम सब कृषक विराजमान हैं। आपकी आज्ञानुकूल हम प्रायः सभी कांग्रेस कमेटीके मेम्बर बने हैं। जब हम देहली आपके दर्शनोंको गये थे तो आपने यह कहा था कि अैसे किसानो, सच्चे बनो, यही अुत्तम मार्ग है। सो हमारी रातदिन प्रभुसे प्रार्थना है कि हम महात्माजीके अुपदेशको कभी न भूलें और अुसे अपने कार्योंमें परिणत करके दिखलावें। अब आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम कृषकोंके अिस साधारण अभिनन्दन-पत्रको स्वीकार करें।

३-११-'२९

विनीत

कृषक कांग्रेस कमेटी, ननतपुरी

पैसे तो थोड़े ही थे। वे ही पत्रपुष्पके रूपमें हमने बापूजीको भेंट किये। खुलीकी मीटिंगमें बापूजी सिर्फ हमारे ही अभिनन्दन-पत्रके अुत्तरमें बोले। अुन्होंने कहा:

"मैं सन् १९०८ से अपने आपको किसान मानता हूं। असलमें मैं किसान नहीं हूं, लेकिन कर्मसे किसान बननेका पूरा पूरा प्रयत्न कर रहा हूं। आज किसानोंकी जो दुर्दशा है अुसे देखकर मुझे दर्द होता है। न अुनको पेटभर खाना मिलता है, न अुनके शरीर पर कपड़ा है। किसान और अुनके बैल हड्डियोंके पिंजरमात्र रह गये हैं। अुनमें मांस और रक्त तो दिखता ही नहीं है। और अुनके कंधों पर अितना बोझा है कि जिसको सम्हालना अुनके लिअे असम्भव हो रहा है। शहरोंके धनी लोग और सरकार अुनके कंधों पर ही चल रही है। अगर वे अपना कंधा हटा लें तो ये दोनों ही गिर जानेवाले हैं। किसान अन्न पैदा करता है, सबको खिलाता है, पर खुद भूखा रह जाता है। अुसके घरमें कपास होती है लेकिन कपड़ेके लिअे वह

दूसरोंका मोहताज रहता है। अपने घरमें सूत कातकर अपना कपडा तो वह बना ही सकता है। आज परदेशी सल्तनत हमारे सिर पर बैठी है। जिससे हमारा बहुतसा पैसा विदेश चला जाता है। चरखा हमारा बहुतसा पैसा बचा सकता है।"

अुस समय बापूजीके साथ पू० बा भी थी, लेकिन अुनका दर्शन मैं नही कर सका।

दिसबरमें लाहोर काग्रेस हुअी और अुसमें पूर्ण स्वतत्रताका प्रस्ताव पास हुआ। सत्याग्रह शुरू करनेकी रूपरेखा बनानेका काम बापूजीने अपने जिम्मे लिया। मै बडी अुत्कठासे 'हिन्दी-नवजीवन' की राह देखता रहता था। मैं यह जाननेके लिअे अुत्सुक था कि बापूजी किस तरह लडाअीका कार्यक्रम बनाते है। आखिर अुन्होने नमक-सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। बापूजीने आश्रम छोडते समय जो भाषण दिया था अुसमें अुनकी जिस प्रतिज्ञाका मुझ पर बडा असर हुआ कि 'मैं स्वराज्य लेकर ही आश्रममें लौटूगा, नही तो मेरी लाश समुद्र पर तैरेगी।' मेरी भी अिच्छा थी कि मैं बापूजीकी टोलीमें शामिल होअू। लेकिन बापूने लिख दिया था कि बाहरसे कोअी आदमी यहा आनेका प्रयत्न न करे। मैं वहा पहुचनेका रास्ता भी नही जानता था। अिसलिअे ६ अप्रैलको अपने अपने स्थान पर नमक-कानून तोडनेका जो कार्यक्रम था, अुसमें बुलन्दशहर जिलेमें खुर्जाकी पहली टोलीमें मैं शामिल हो गया। और मैंने भी यह निश्चय किया कि स्वराज्य मिलने तक घरमें नही बैठूगा। नमक-सत्याग्रह आरभ होने पर हमारी खुर्जा तहसीलको प्रथम स्थान मिला। तहसीलके तेरह सत्याग्रहियोमें से पाच हमारे गावके ही थे, जिनके नाम ये है:

१ पडित खेतलराम, हमारे पुरोहित।

२ श्री कमलसिंह, मेरे ताअूजात भाअी और बालमित्र।

३ श्री भूलेसिंह, मेरे चाचाका पुत्र जो बडा होकर काग्रेस कमेटीका मत्री व खजाची रहा।

४. प० ढक्कनलाल, गावके पासकी रामगढीके रहनेवाले।

५ मैं स्वय।

अिन तेरह सत्याग्रहियोंके जत्थेके नायक श्री बशीरभाअी पठान खुर्जाके प्रतिष्ठित पठान खानदानके थे। अुनकी लगन तथा सादा जीवन बडा आदरणीय था। श्री बशीरभाअीके पकडे जानेके बाद जत्थेका नायक मैं बना। रोजाना नमक बनाया जाता था और पुलिस देखती रहती थी। कुछ लोग हलचलके

शौकीन थे। अिसलिये तय किया गया कि तहसीलके सामने नमक बनाया जाय। तहसीलके सामने घासकी गजियां लगी थीं। और पुलिस किसी न किसी गैर-कानूनी अपराधमें हमें पकड़नेकी फिक्रमें थी। अिसलिये मैंने तहसीलके सामने नमक बनानेसे अिनकार कर दिया। अिससे डिक्टेटर घबराये कि अुन्होंने अैलान करा दिया है, अब नमक न बनानेसे लाज जायेगी। मैंने कहा कि यदि आसपास भीड़ जमा न हो और घासकी गजियोंमें आग न लगने देनेका प्रबंध कोअी कर ले तो मैं नमक बनानेको तैयार हूं। डिक्टेटर श्री आनन्दस्वरूपजी बिस्मिल राजी हो गये। पुलिसने भी अजीब तैयारी कर रखी थी। जब हमने तहसीलके सामने चूल्हा बनाया तो पुलिसके सिपाही चूल्हेमें पैर रखकर बैठ गये। अिससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। क्योंकि हमारा ही हथियार अुन्होंने अपनाया। लेकिन हमें तो नमक बनाना ही था। हमने दूसरे स्थान पर आग जलाअी और वहां चूल्हेका आयोजन करके नमक बनाया। पुलिसने वहां भी अहिंसाका बरताव किया। जब अुन्होंने अुबलती हुअी कड़ाही अुलटनेकी कोशिश की तो अुबलता हुआ पानी मेरे हाथों पर गिर जानेसे मेरे हाथ जल गये, लेकिन और कोअी दुर्घटना नहीं हुअी। अिससे अहिंसामें मेरा विश्वास सतेज हुआ।

फिर आन्दोलन कुछ ठंडा सा पड़ा, जिससे मुझे सत्याग्रहकी लड़ाअीके सफल होनेमें सन्देह हो गया। मैं देहातोंमें घूम रहा था। अेक रोज अकेला अेक नहरकी नालाके किनारे दिशा-मैदानको गया और अुसके किनारे बैठकर प्रार्थना करने लगा। मैंने फौजमें रहते हुअे अंग्रेजोंकी सारी फौजी ताकतको देखा था। मेरे सामने अुनके हथियार, अुनकी फौज, अुनकी किलाबन्दीका चित्र नाचने लगा। बड़े बड़े जमींदार, व्यापारी, अफसर सब अंग्रेजोंके पक्षमें हैं। हमारेमें बहुत छोटे आदमी हैं, जिनके पास न खाने-पीनेका ठिकाना है, न लड़ाअीके कोअी साधन हैं। तो अैसी सल्तनत पर कैसे बापूजीकी विजय होगी? अिस सन्देहने मेरे मनको घेर लिया। परन्तु न मालूम किस शक्तिने मुझे सुनाया -

रावन रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥

बल विवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे।।
अीस भजनु सारथी सुजाना। विरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु वुधि सक्ति प्रचडा। वर विज्ञान कठिन कोदडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद विप्र गुरुपूजा। अेहि सम विजय अुपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहू न कतहु रिपु ताके।।
महा अजय ससार रिपु, जीति सकअि सो बीर।
जाके अस रथ होअि दृढ, सुनहु सखा मतिघीर।।

सचमुच ही मेरी अधीरता विभीषणके जैसी थी और मैंने रामके अुत्तरके व गुण बापूजीमें देखे। बस, मेरे मनमें निश्चय हो गया कि बापू अिस ड़ाअीमें विजयी होंगे। और बापूके प्रति मेरी निष्ठामें जो थोडा अुथलापन ा अुसकी गहराअी बहुत बढ गअी। मुझे अटल विश्वास हो गया कि ापूका जन्म अिस रावणशाहीका नाश करनेके लिअे ही हुआ है।

५

साबरमती आश्रममें

गाधी-अिरविन-पैक्टके बाद जेलसे छूटने पर मेरे मनमें विचार आया के अब तो व्यवस्थित रूपसे रचनात्मक काममें जुटनेकी योग्यता प्राप्त करनेके हेतुसे साबरमती आश्रममें पहुच जाना चाहिये। मैंने आश्रमके मत्री ्री नारणदास गाधीको* पत्र लिखा और अुन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ी। मैं १९३१ की ५ जुलाअीको साबरमती आश्रम पहुच गया और खादी वद्यालयमें दाखिल हो गया।

पाखाना-सफाअी

मैं आश्रममें ता० ५ को पहुचा और ता० ६ को ही मुझे पाखाना-फाअीमें सम्मिलित होना पडा। आश्रममें रहनेवालोंके लिअे, चाहे वे विद्यार्थी

*नारणदास गाधी, बापूजीके भतीजे, साबरमती आश्रमके मत्री थे ौर सारे आश्रमवासियोंकी जवाबदारी बापूजीके बाद अुन पर थी। ाजकल वे राजकोटमें रहते हैं और सौराष्ट्रके सब रचनात्मक कार्योंके सूत्र-ार हैं।

हों या स्थायी सदस्य, सफाअीका काम स्वयं सीख लेना अनिवार्य था। श्रद्धालु दर्शकोंको भी, जो तीन दिन आश्रममें ठहर सकते थे, अेक बार तो अिस काममें सम्मिलित होनेकी सलाह दी जाती थी। क्योंकि अितना कर लेनेके बाद ही अुनका आश्रम देखना संपूर्ण माना जाता था। पहले दिनका अनुभव, जो मैंने लिख रखा है, यहां देता हूं। मेरे साथी अेक बिहारी भाअी थे, जिनको सफाअीके काममें मुझे सहायता करनी थी, अथवा यों कहें कि जिनसे मुझे यह काम सीखना था। वे कअी दिनोंसे सफाअी करते आ रहे थे और सिखानेकी योग्यता रखते थे। बाल्टियां मैलेसे मुंह तक भरी हुअी थीं। अुन्हें बांसोंमें लटका कर खेतमें ले जाया गया। वहां मुझे सारी क्रियायें बड़े प्रेमसे समझाअी गअीं। बदबू तो खूब आअी। लेकिन कुछ तो अुन भाअीके समझानेका ढंग आकर्षक था और कुछ मेरे मनकी पूर्व-तैयारी थी कि यहां भंगीका काम स्वयं करना ही होगा। अिसलिअे मुझे पहले दिन भी अिस कामसे घृणा नहीं हुअी और सफाअी पूरी करके जब मैंने साबरमती नदीमें स्नान किया तो बड़ा ही आनंद आया। फिर तो यह काम मुझे प्रिय हो गया। जब जब मेरा नंबर आता तभी प्रसन्नता होती। यह विचार भी मनमें आता कि अिस बाहरकी सफाअीसे जब अितना आनन्द होता है तो यदि अन्तरको धोना, पोंछना, स्वच्छ करना आ जावे तब तो न मालूम कितना आनन्द हो सकता है। वास्तवमें पाखाना-सफाअी आश्रमके जीवनका अेक अविभाज्य अंग थी।

दिनचर्या व भोजन

आश्रममें अैसे ही विद्यार्थी या कार्यकर्ता टिकने पाते थे जिन्हें पाखाना-सफाअीके काममें जरा भी झिझक नहीं होती थी। शेष स्वयमेव चले जाते थे। पाखाना-सफाअी स्वतः किसीका भी पूरे दिनका काम नहीं था, बल्कि यह शारीरिक श्रमके दैनिक कार्योंमें से अेक था। और सब लोगोंको बारी बारीसे अिसमें भाग लेना अनिवार्य था। आश्रमके पाखाने भी शहरोंके संडास जैसे नहीं थे। सफाअी करते समय क्वचित् ही मलमूत्रका हाथोंको स्पर्श होने पाता था। अिनमें मुख्य बात सिर्फ मनकी सूग निकाल देनेकी थी। और मनमें से यह सूग निकाल देना आश्रममें रहनेकी अेक अनिवार्य शर्त थी। जो नवीन काम सीखने भरके लिअे भी आश्रममें आते थे, अुनके लिअे भी यही नियम था।

आश्रममें भोजनका क्रम अिस प्रकार रहता था:

प्रात ६।। बजे — राब व डबल रोटीका नाश्ता।

दोपहरको १०।। बजे — रोटी, दाल, साग और चावल।

सायकाल ५।। बजे — खिचडी, डबल रोटी, साग।

दूध-घीके कूपन खरीदे जा सकते थे और अुनके बदलेमें जितना दूध जिसे ावश्यक हो मिल सकता था। खादी-विद्यार्थियोको १२ रुपये मासिक ात्रवृत्ति मिला करती थी। भोजनखर्च करीब ५ रुपये मासिक आता था। करीब २।। रुपये फुटकर खर्च होते थे। शेष दूध-घीके लिअे बच रहते थे। कोअी विद्यार्थी अस्वस्थ हो गया हो तो विशेष मात्रामें दूध-घीकी व्यवस्था हो जाती थी। कोअी कोअी तो दूध-घीका त्याग करके कुछ पैसे बचाकर अपने माता-पिताकी सहायताके लिअे भेज देते थे।

मेरा और अुन बिहारी भाअीका सहवास बहुत समय तक रहा था। वे बादमे हिमालय चले गये और सुननेमें आया कि वहा जवानीमें ही अुनका शरीर छूट गया।

कुछ परिचय

पुराने आश्रमवासियोमें से कुछका परिचय यहा दिया जाता है।

श्री सुरेंद्रनाथ गुप्ता १९१६ में बापूजीके आश्रममें प्रविष्ट हुअे। तबसे अेकनिष्ठ आश्रमवासी रहे। साबरमती आश्रम छोडनेके बाद वे गुजरातके खेडा जिलेके बोरियावी गावमें ग्रामसेवाका काम करते रहे। आजकल समन्वय आश्रम, बोधगया (बिहार) में काम करते है। अिनसे मेरा परिचय आश्रममें विशेष कारणसे हुआ। आश्रममें पानी पीनेकी प्रथा अैसी थी कि पात्रको मुहसे अूचा रखकर बिना ओंठ लगाये सीधा मुहमें पानी गिराते थे। अैसा करनेमें पात्र कभी कभी मुहसे छू भी जाता था। अिसलिअे मैं सार्वजनिक बरतनसे पानी पीना पसन्द नही करता था। दूसरे, आश्रममें आम तौर पर गुजराती भाषा बोली जाती थी, जिससे हिन्दीमें बातें करनेकी मेरी भूख पूरी नही होती थी। जब कोअी हिन्दी बोलनेवाला मिलता तो मुझे बडी खुशी होती। बरेलीके श्री शीतलासहायजी अेक बार आश्रममें आये। अुन्हे मेरी अुपरोक्त कठिनाअियोका जब पता चला तो अुन्होने मेरा परिचय श्री सुरेन्द्रजीसे कराया और कहा कि आप अपनी पानीकी प्यास और हिन्दीमें बोलनेकी भूख दोनों अिनके पास आकर मिटा सकते है। तबसे हमारा परिचय दिनोदिन बढता गया।

मीराबहनका थोड़ा अधिक परिचय यहां देता हूं। वे ७ नवंबर १९२५ को बापूजीके पास आओ। और बड़े प्रेम और श्रद्धासे बापूजीको पिता ही नहीं वरन् अिस जीवनका मार्गदर्शक बनाकर अुनकी सेवामें तल्लीन हो गओ। पूज्य बापूजीने भी अुनकी अिस प्रकार सम्हाल की, जैसे कोअी अत्यन्त निकटकी अपनी ही पुत्री हो। बापूके साबरमतीके निवासस्थान 'हृदयकुंज' के पासवाली नदीतटकी दो कोठरियोंमें से अेकमें वे रहती थीं। जब वे भोजनके समय अपनी कोठरीमें आतीं और मैं अुनके हाथों परसे दो पक्षियोंको, जो अुनके पासवाले नीम पर रहते थे, किशमिश खाते देखता तो मुझे सहसा प्राचीन कालके अुन आश्रमोंका स्मरण हो आता, जहां कि मनुष्य अन्य प्राणियोंके साथ भयरहित वातावरणमें रहा करते थे। मीराबहनका सेवाग्रामका हाल तो अिस पुस्तकमें आगे खूब आया है।

आश्रममें दोनों समयकी प्रार्थना स्व० पंडित नारायण मोरेश्वर खरे कराया करते थे। वे संगीतशास्त्री थे और बड़े प्रेम व तल्लीनतासे भजन गाया करते थे। अेक दिन रामायणके पारायणके समय, जो प्रातः ५॥ बजेसे आरम्भ होकर रातके १० बजे समाप्त हुआ, मैं भी अुनके साथ शरीक था। बीचमें सिर्फ १ घंटा आराम तथा ३५ मिनट फलाहारमें लगे थे। मैंने अिस पारायणके समय अुनकी गहरी भक्ति और कोमल हृदयके भरपूर दर्शन किये। बार बार प्रसंग आने पर अेकाध मिनट तक अुनका गला रुंध जाता था और आंसू बह निकलते थे। अुनके सुपुत्र रामभाअू तथा सुपुत्री मथुरी दोनों संगीतमें प्रवीण निकले। पंडितजी पूज्य नाथजीके भक्त थे। हरिपुरा कांग्रेसके अवसर पर वे वहीं अचानक बीमार पड़ गये और अधिवेशन पूरा होनेके पहले ही अुनका स्वर्गवास हो गया।

पूज्य जमनालालजी बजाजका भी प्रथम परिचय मुझे साबरमती आश्रममें ही ता० ३०-७-'३१ को मिला था। अुन्होंने हमें आश्रममें सत्य अहिंसा, त्याग, सेवाभाव आदि सद्‌वृत्तियां सीखकर जानेकी सलाह दी थी।

पूज्य राजेन्द्रबाबूसे भी प्रथम परिचय यहीं हुआ था। अुनका निवेदन यह था कि वे अपनेको अुपदेश देनेका अधिकारी नहीं मानते, बल्कि स्वयं हम जैसे बननेकी वृत्ति रखते हैं। अुन्होंने यह सलाह दी कि जो कुछ हम यहांसे सीख कर जावें, अुसे जीवनमें अुतार कर अुससे जनताको लाभ पहुंचावें।

आश्रमका दैनिक कार्य प्रात ४ बजेसे रातके ८ बजे तक घडीकी सुअियोंके साथ चला करता था। अुसे करते हुअे रातको दो घटेकी चौकी देना मुझे अखरता था। मैंने आश्रमके मत्री श्री नारणदास गाधीसे यह प्रश्न किया था कि अस्तेय व्रतका पालन करनेवाले जहा रहते हो वहा चोरीकी आशका क्यो हो? अुन्होने बडे प्रेमसे मुझे समझाया था कि आश्रमकी सपत्ति किसीकी निजी सपत्ति न होकर सार्वजनिक सपत्ति है। यदि अुसकी रक्षा हम न करें तो अपने कर्तव्यमे गिर जाते। अिस प्रकारकी अनेक चर्चाअें अुनसे हुआ करती थी और वे बडी योग्यता और प्रेमसे हमारी शकाओंका निवारण करते थे। वे अपना सारा बचा हुआ समय सदा कताओमें लगाते थे। और अपने घरमें अपने हाथकते सूतकी खादीका ढेर लगाये रहते थे। अुनकी कताअीका क्रम कभी टूटा नही सुना और आज भी वैसा ही जारी है।

महिलाओमें अुल्लेखनीय परिचय कु० प्रेमाबहन कटकसे हुआ था। वे अुस समय बहनोंके छात्रालयकी व्यवस्थापिका थी और लडकियोंको पढाती भी थी। अुनका स्वभाव, रोब, चालढाल सब फौजी अफसरके सदृश थे। अुनकी कठोरताके खिलाफ शिकायतें खूब होती थी, लेकिन वे बापूजी तथा श्री नारणदासभाअीमें अगाध श्रद्धा रखती थी, जिसके सहारे अुनका जीवन आज अूचे शिखर पर जा पहुचा है। आजकल वे पूनाके पास सासवड नामक स्थानमें रचनात्मक कार्यका बडा सुन्दर आश्रम चला रही हैं।

आश्रमके अिस छोटे परिवारको मैं अिमाम साहबका परिचय दिये बिना समाप्त नही कर सकता। अेक दिन अुनका परिचय अिस प्रकार सहजमें ही हुआ। शामको विद्यालयकी छुट्टी होने पर जब मैं बाहर आया तो देखा कि अेक मुसलमान आगन्तुक यह पूछ रहे हैं कि यहा अिमाम साहब नामके जो प्रसिद्ध मुसलमान रहते हैं अुनका घर कहा है। अुनकी बोलीसे मैंने जाना कि वे अुत्तर प्रदेशके है। पूछने पर अुन्होने अपनेको बुलन्दशहरका वकील बताया और कहा कि मैं अिस वक्त नवाब छतारीको गोलमेज कान्फरेन्सके लिअे बम्बअीसे विदा करके लौटा हू और आश्रम देखने यहा चला आया हू। लेकिन अब अिमाम साहबसे मिलनेके लिअे वक्त कम रह गया है, अिसलिअे चला ही जाअूगा। मैंने सोचा कि अपने जिलेका आदमी है अिसकी कुछ सेवा तो कर ही देनी चाहिये। अिसलिअे मैं अुन्हे आग्रहपूर्वक हाथ पकडकर अिमाम साहबके बगले पर ले गया। अिमाम साहबने अुनका यथोचित सत्कार किया। मैंने भी अुनके

ये प्रथम दर्शन किये थे। अुनके स्नेही चेहरेको देखकर मेरे मनमें बड़ा आदरभाव पैदा हुआ। बातों बातोंमें खादीका प्रसंग छिड़ गया। वकील साहबने फरमाया कि यों तो खादीकी बात ठीक है, लेकिन हिन्दुओंका रुख हमारे साथ अच्छा नहीं है। अितना कहना था कि अिमाम साहब बिजलीकी तरह कड़ककर बोले, "खादीमें हिन्दू-मुस्लिमका सवाल कैसे अुठता है? क्या खादी हिन्दुओंकी बपौती है? अगर अैसा ही हो तो मैं क्यों यहां जान मारनेको पड़ा हूं? खादी तो हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अीसाअी सभीके लिअे अेकसी है। हिन्दू स्त्रियां तो बाहर निकलकर और भी काम कर सकती हैं, लेकिन मुसलमान पर्दानशीन औरतोंके लिअे तो चरखा रोजीका बड़ा जरिया है। मुसलमान धुनते हैं और बुनते भी हैं। अगर हिसाब निकाला जाय तो खादीसे मुसलमानोंको पहुंचनेवाला फायदा हिन्दुओंसे कम नहीं पाया जायगा। आप जैसे पढ़ेलिखे लोग यह बात नहीं समझते और खादीमें भी हिन्दू-मुस्लिम सवाल खड़ा करते हैं यह अफसोसकी बात है।" वकील साहबका मुंह अुतर गया। वे कुछ भी अुत्तर दिये बिना सलाम करके चलते बने। मैंने अिमाम साहब जैसे तेजस्वी और समझदार सज्जनका दर्शन करके अपने भाग्यको सराहा और साथ ही खादीका भी महत्त्व जाना।

बहन मैंने आश्रममें दूसरी नहीं देखी। पंडित तोतारामजी सनाढयने आश्रममें ही रहते रहते अपना शरीर छोड़ा। और यह लिखते हुअे आनन्द होता है कि अन्तिम दिनोंमें शक्तिके अभावमें जब अुन्हें सेवा तथा देखरेखकी जरूरत हुआी, तब अमीनाबहनने ठीक वैसे ही श्रद्धा तथा प्रेमसे अुनकी सेवा की, जैसे अेक पुत्री अपने पिताकी करती है। अिससे मेरे हृदयमें अिस बहनके लिअे गहरा आदर है।

पंडित तोतारामजी साबरमती आश्रमकी खेतीके संचालक थे। अुन्होंने देशके लिअे कितना कष्ट सहन किया था, अिसका सही पता अुनकी 'फीजीमें मेरे २१ वर्ष' पुस्तक पढ़नेसे चल सकता है। अुनके साथ मेरा परिचय तो तब हुआ जब १९३१ में मैं आश्रममें खादीका विद्यार्थी था। अुसी समय बंगालमें तूफानके भारी प्रकोपमें लोग संकटमें पड़ गये थे। अुनकी मदद करनेके लिअे अेक देशव्यापी अपील निकली। आश्रमके पास अैसी कोअी पूंजी तो थी नहीं जिसमें से दान देनेका अधिकार आश्रमको हो। अिसलिअे यह तय हुआ कि आश्रमवासी अेक रोज मजदूरी करें और जो पैसा प्राप्त हो अुसे अुनकी सहायताके लिअे भेजें। काम खेती और गोशाला विभागमें करना था। दूसरे दिन सब आश्रमवासी काममें लगे और पंडितजीने सबको काम बांट दिया। काम ठेकेसे दिया गया था। मुझे अेक कुअेंकी टूटी हुअी दीवारके मलबेसे अीट साफ करके अलग चट्टा लगानेका काम मिला था। अुस रोजकी मेरी मजदूरीके ३ रुपये १० आने हुअे। मैंने अितनी जोरसे काम किया था कि अुसकी थकानसे दूसरे दिन मुझे बुखार आ गया। आश्रमके मंत्री श्री नारणदासजी गांधीने अिसके लिअे मुझे मीठा अुलहना भी दिया था। पंडित तोतारामजी अुत्तर प्रदेशके फैजाबाद जिलेके थे। अुनकी और मेरी भाषा अेक थी अिसलिअे भी अुनसे परिचय करनेमें मुझे देर न लगी। वे ठेठ देहाती हिन्दी बोलते थे। जब सन् १९३३ के आंदोलनके समय बापूजीने सरकारको सौंपनेके लिअे आश्रम छोड दिया और सरकारने भी आश्रम पर कब्जा नहीं किया तब अुसकी रक्षा पंडितजीने की थी।

अुनकी पत्नी श्री गंगाबहनकी मृत्यु पर बापूजीने लिखा था कि "गंगाबहनने आश्रमको अपनी सेवासे शोभायमान किया है। अुनके स्मरणोंको याद करते करते अब भी मैं थका नहीं हूं। वह लगभग निरक्षर होने पर भी ज्ञानी थीं। जो बच्चे अुन्हें मिले अुनकी सार-संभाल अुन्होंने अपने बच्चोंकी तरह की। अुन्होंने किसी दिन किसीके साथ तकरार की हो या

किसी पर वे नाराज हुअी हों, अिसकी जानकारी मुझे नहीं है। अुनको न तो जीनेका अुल्लास था, न मरनेका भय था। अुन्होंने हसते हसते मृत्युको गले लगाया। अुन्होंने मरनेकी कला हस्तगत कर ली थी।

पंडित तोतारामजी कुशल किसान तो थे ही, साथ ही बड़े सरल, प्रेमी, मिलनसार लेकिन अपनी बात पर डटे रहनेवाले थे। वे कबीरको अपना गुरु मानते थे और अुनके भजन बड़ी श्रद्धा और प्रेमसे गाया करते थे। पंडितजीका कहना था कि दिन कामके लिअे और रात भगवानके भजनके लिअे है। अिस-लिअे ही वे रातका बहुतसा समय भगवानके भजनमें बिताते थे। अुनका कहना था कि काम पूरा करनेके बाद मेरे चित्त पर दिनके कामका कोअी भार या लगाव नहीं रहता है। मैं रातको बिलकुल मुक्त रहता हूं। जब वे भजन गाते तो आसपासका सारा वातावरण सात्त्विक आनन्दके भावोंसे भर जाता था। अेक भजन 'सखी सैर करूं अुस देशकी मोह नदीसे पार बने' गाते गाते वे आत्मविभोर हो जाते थे। जब मेरे मनमें किसी प्रकारकी बेचैनी होती तो अुनके पास जाकर मनको आराम मिलता। वे कहते, "अरे रमा रहे दिल किनारेमें कभी तो लहर आयेगी। तुम तो क्षत्रिय हो और फौजमें भी तो निशाना लगाना सीखा है। तो संयमकी ढाल लेकर विचारके तीरोंसे अिन संसारके काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर शत्रुओंके सीनेमें अैसे तानके मारो जो आरपार निकल जाय। लला, हिम्मत क्यों हारत हो। बापूजीसे और सीखना ही कहा है। जा डोकराके पास और है ही तो कहा। बस। रामनामकी लूट है लूटी जाय तो लूट, अन्तकाल पछतायगो प्राण जायेंगे छूट। बगलमें ठोसा और मजऊका भरोसा। जा मन रूपी मक्काकी रोटी खूब मसल डारो और जामें भगवान गुनगानको गुड डारि द्यो। नेक सो ज्ञानको घी छोड द्यो। बस मलीदा बनायके कांखमें दबाय ल्यो। जब काम, क्रोध, लोभ, मोहकी भूख सतावे तब नेक सो काढिके खाय ल्यो। जब थको तो सतरूपी वृक्षकी छायामें थोडो सो विश्राम कर ल्यो। रामनामकी कथा रूपी पानी पीते चलो। और तुम्हें का चाहिये?" जब पंडितजी अपने अिन देहाती मन्त्रोंका अुच्चारण करते करते गद्गद हो जाते तब मैं भी चित्रवत् अुनके अिन अमृतवचनोंका पान करके आत्मविभोर बन जाता था।

बापूजीके सिद्धान्तोंको पंडितजीने समझबूझ कर अपने जीवनमें अुतार था। अुनके जीवनमें लेशमात्र भी आलस्य या अिधर-अुधरकी किसी चमक दमकका दाग नहीं था। अुनका मन स्फटिक जैसा निर्मल था। आश्रमके

किसी प्रकारके आपसी मनमुटावसे अुनका कोअी मबध नही रहता था। वे भले और अुनका काम भला। जब मैं बापूजीके साथकी पुण्यस्मृतियोका स्मरण करता हू, तो अुसी मालिकामे पडित तोतारामजीके मेरे अूपर किये हुअे पुत्रवत् स्नेहको कैसे भूल सकता हू ?

पडितजीने आखिरकी घडी तक आश्रमकी अमूल्य सेवा की और अपने क्षण-भगुर शरीरको भी आश्रमकी ही पवित्र भूमिको अर्पण कर दिया। 'राम ते अधिक राम कर दासा' अिस भावनासे मैं पडितजीके चरणोमें अपनी नम्र श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

पू० नाथजीके बोध

साबरमती आश्रममें आध्यात्मिक दृष्टिके लोगोसे परिचय करनेकी मेरी सहज वृत्ति रहती थी। अैसे परिचयोमें से प्रमुख परिचय पूज्य केदानाथजीका हुआ। पूज्य नाथजी आश्रममें कभी कभी आया करते थे। श्री किशोरलालभाअी, रमणीकलालभाअी, सुरेन्द्रजी, गगाबहन वैद्य, अित्यादि अुनके शिष्य हैं। मेरे आश्रममें रहते हुअे पूज्य नाथजी जब पहली बार आये तब सुरेन्द्रजीने मेरा अुनसे परिचय कराया और अुनके सत्सगके लिअे भी प्रेरित किया। मैं समय माग कर अुनके पास जाकर अपनी आध्यात्मिक शकाओंका निवारण करने लगा। अिसकी अति सक्षिप्त झाकी पाठकोको यहा कराता हू।

प्रश्न 'तृण सम सिद्धि तीन गुण त्यागी' अिसका आप क्या अर्थ करते है ?

अुत्तर अिसका अर्थ अैसा नही समझना चाहिये कि किसी भी दशामें तीनो गुणोका नितान्त अभाव हो जाता है। यदि वैसा हो जाय तो जड अवस्था प्राप्त हो जाय। अिसलिअे त्रिगुणातीतका अितना ही अर्थ है कि तमोगुण और रजोगुणका अत्यन्त कम होना और सतोगुणकी प्रधानता होना।

पूज्य नाथजीके सामने मैंने अपनी सारी दुर्बलताअें अर्थात् मनकी चचलता, क्रोध, अभिमान, अपमानकी असहिष्णुता, किसी सस्था या व्यक्तिके अधिकारमे न रह सकना, नम्रताकी कमी अित्यादि ब्योरेवार स्पष्ट रखनेका प्रयत्न किया तथा अुनसे कअी आध्यात्मिक प्रश्न अिस आशयके किये कि अीश्वर-प्राप्ति किस अवस्थाका नाम है, अुसका साधन क्या है, शान्तिमय जीवन जीनेकी कला कैसे हाथ लगे, अित्यादि। अुनके अुत्तरोंका सार यहा मेरी

बुद्धिके अनुसार देता हूँ। पूज्य बापूजीका ज्ञान तो अपार है। मेरी अिन पंक्तियोंसे कोअी वादविवाद अुठाये न करे। केवल सामान्य ज्ञानके हेतुसे ही यहाँ अिसे पाठकोंके सामने रखता हूँ।

अीश्वर कोअी अैसी शक्ति नहीं है जिसे पाकर ही मनुष्य पूर्ण हो जाता हो। परन्तु वह अेक प्रकारका ज्ञान है। अीश्वरके साथ तद्रूप हो जानेकी कल्पनासे मानव-समाजका कल्याण होता हो अैसा भी नहीं है। जो लोग अीश्वरको सर्व-शक्तिमान तथा सर्वव्यापी भी मानते हैं, लेकिन पाप करनेसे नहीं चूकते, अुनसे लोगोंका कल्याण कैसे हो सकेगा? अीश्वरकी कल्पना और अुसकी प्राप्तिके नाम पर बहुतसा दम्भ और स्वार्थ चलता है। अीश्वर जगतको चलानेवाला परम तत्त्व है। अुसकी प्राप्तिकी या अुसमें तद्रूप होनेकी आवश्यकता ही क्या है? अीश्वरमें मिलकर जन्म-मरणसे मुक्त हो जाना, अुसके स्वरूप-चिन्तनमें ही मग्न रहना, ये दोनों केवल कल्पनाके आधार पर हैं। जो वस्तु या तत्त्व प्रत्यक्ष अनुभव या ज्ञानमें न आ सके अुसकी कल्पना करना, अुसके लिअे प्रयत्न करना व्यर्थ शक्तिका व्यय करना है। जो ज्ञान पुस्तकोंमें अीश्वरका प्रतिपादन करता है वह कल्पनासे लिखा गया है। अीश्वर वह तत्त्व है जिससे जगतको चेतना मिलती है। अुसका मनुष्योंसे कोअी सम्बन्ध नहीं है। जगतका कार्य व्यवस्थित चले अिस तरहका हमारा जीवन होना चाहिये। जगतका कार्य तभी व्यवस्थित चल सकता है जब प्रत्येक मनुष्य अपना अपना कार्य ठीक रीतिसे करता रहे। काम, क्रोध, मोह, लोभ, द्वेष आदि, जो मनुष्यके प्रकृति धर्म हैं, मर्यादामें रहें। अुनका समूल नष्ट होना असंभव है। अुनमें शुद्धि लानेका प्रयत्न करना चाहिये और अुन्हें सात्त्विक बनानेका भी प्रयत्न करना चाहिये। जैसे क्रोध दूसरेकी रक्षाके लिअे किया जाय तो सात्त्विक हुआ। अैसा भी गुण जब केवल स्वार्थके लिअे होता है अथवा मर्यादासे अधिक होता है तब हानि करता है। वस्तुका मूल्य अुसके अुपयोगमें है। जिस अन्नजलसे शरीर पुष्ट होता है अुसीके अमर्यादित सेवनसे मृत्यु तक हो जाती है। विवेकसे काम लेना चाहिये। अपने लिअे कमसे कम कष्ट अुठाओ और दूसरोंको देना पड़े तो कमसे कम कष्ट दो। दूसरोंके लिअे अधिकसे अधिक परिश्रम करो। अपने प्रेमका वृत्त सदा बढ़ाते रहो। किसीके साथ हुअे प्रेमको कम न होने दो, अुसे बढ़ाते ही रहो। जैसे हम अपने शरीरकी चिन्ता रखते हैं वैसे ही कुटुम्बकी, ग्रामकी, देशकी, मानव-जातिकी, प्राणीमात्रकी, जड़-चेतन संपूर्ण जगतकी यथार्थ चिन्ता

करना, अुसके साथ मेल साधना तथा अुसका रक्षण करना हम सीख जावें तो आज जगतमें अव्यवस्थाके कारण जो दुःख व्याप्त है वे टल जावें। दिनमें अेक या दो बार ही नही बल्कि प्रतिक्षण औश्वरको सामने रखकर विचारपूर्वक बरताव करना चाहिये। यदि कोअी गलती हो जाय तो तुरन्त स्वीकार कर लेना चाहिये। और अैसा प्रयत्न करना चाहिये जिससे कभी अैसी भूल न होने पावे जिसके लिअे पीछेसे पश्चात्ताप हो। जीविकाका साधन शुद्ध, स्वाश्रयी और जगतके लिअे कल्याणकारी हो। हम अपने अुद्योग द्वारा जो अुत्पन्न करे अुससे जगतका पोषण व श्रेय होना चाहिये। जैसे अन्न, वस्त्र, औख, गोपालन अित्यादि। किसी प्रकारके मादक द्रव्य जैसे तम्बाकू, अफीम, शराब, अित्यादि अुत्पन्न न करे।

ज्यो ज्यो सद्‌गुणोकी वृद्धि होगी, त्यो त्यो दुर्गुण मिटते जायगे। अिसलिअे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अपरिग्रह, प्रामाणिकता, दया, करुणा, मैत्री, सरलता आदि सात्त्विक गुणोकी वृद्धि करनी चाहिये।

गीताके निष्काम कर्म पर पूज्य नाथजीने विशेष भार दिया। अपने कार्यसे जो सतोष मिल जाय वही सच्चा सुख है। अिसकी तुलनामे आत्मानन्द, परमानन्द वगैरा सब कोरी कल्पनाअें है। अपनेमें आकर्षण शक्ति पैदा करनेकी आवश्यकता है। आपने नेपोलियन बोनापार्टका छूटती तोपके पीछे गहरी नीद लेनेका अुदाहरण देकर मनको अेकाग्र करने पर जोर दिया। और कहा, समाजके सघर्षमें रहकर अपनी मनोवृत्तिया अकुशमें रहे तब समझना चाहिये कि हमारा कुछ विकास हुआ है। अेकान्तमें शान्त रहना कोअी पुरुषार्थ नही है। लेकिन समाजमें मर्यादाओमें रहना चाहिये। जो कार्य अगीकार किये हो अुनको ठीक तरहसे पूरा करना चाहिये।

दूसरेकी बातका अच्छेसे अच्छा अर्थ लेना चाहिये। थोडीसी बात पर नाराज होकर किसीसे मिलनेवाले लाभसे वचित हो जाना भूल है। गलतफहमी हो तो बात करके अुसे दूर कर लेना चाहिये।

सुबह शाम स्वस्थ चित्तसे बैठकर जिस तत्त्वसे हमें चेतना मिलती है अुस औश्वर-तत्त्वका विचार करना चाहिये। अुसी तत्त्वसे मुझे शक्ति मिले, मेरी शुद्धता बढे, मेरे कुसस्कारोका नाश हो, अैसे शुभ सकल्प करने चाहिये। अपनी मनोवृत्तिका निरीक्षण करना चाहिये। और जो कमी ध्यानमें आवे अुसको दूर करनेका निश्चय करना चाहिये। अिस प्रकारकी प्रार्थनाकी परम आवश्यकता है।

सन् १९०२में अेक प्रकारकी निराशा छाअी हुअी थी तब मेरे मनमें (पूज्य नाथजीके मनमें) अैसा विचार आया कि अैसी शक्ति प्राप्त की जाय, जिससे राष्ट्रका कल्याण हो, मानव-समाज सुखी और व्यवस्थित हो। जिस उद्देश्यसे घर छोडकर मैं साधनामें जा लगा। हिमालयमें तथा अन्य स्थानोंमें कुछ ध्यान-धारणा तथा वेदान्तका अभ्यास किया। परन्तु अुससे कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ। कअी साधुओंके पास अभ्यास किया। फिर जब प्राप्त किये हुअे ज्ञान तथा अभ्यासकी नींव पर स्वतंत्र विचार करना शुरू किया तो मुझे समाधान हुआ। मैंने जो समझा अुसका दूसरोंके साथ विचार किया। लोगोंको मेरा विचार पसंद आया। अब जिन लोगोंके साथ संबंध आ गया है अुनके आध्यात्मिक समाधान तथा सामाजिक कार्यके लिअे अिधर-अुधर जाता हूं। किसी खास प्रकारका अुद्देश्य नहीं है।

* * *

फिर तो पूज्य नाथजीके साथ मेरा संबंध अितना गाढ हो गया कि बापूजी मुझे नाथजीका आदमी समझने लगे। अब जब भी मुझे समय मिलता है मैं अुनके पास जाकर दस बारह दिन रह आता हूं। मुझे बापूजीके पास टिकाये रखनेमें पूज्य नाथजीका बहुत हाथ रहा है। जब कभी मैं बापूजीसे अपना चले जानेका अिरादा प्रगट करता तो वे यही कहते, जाओ नाथके पास। और मैं चला भी जाता। थोडे ही दिनोंमें नाथजी मुझे समझा-बुझाकर बापूजीके पास भेज देते और कहते कि तुम्हारे लिअे बापूजीके पाससे अधिक अच्छा स्थान और नहीं है। और अुधर बापूजीके समक्ष मेरी यह वकालत करते कि अिसका रोष क्षणिक होता है और आपके पास ही रहनेसे अिसकी शक्तिका सही अुपयोग हो सकेगा। पूज्य नाथजीका स्वभाव बडा ही प्रेमल है। अुनके अंतरमें भक्तिका झरना सतत बहता रहता है। प्रातःकालमें जब वे तुकारामके अभंगोंमें मग्न होते हैं और ज्ञानेश्वरीकी ओवियोंकी झडी लगाते हैं, अुस समय महात्मा तुलसीदासजीकी यह चौपाअी याद आ जाती है

मत नानि मुद मंगल मूला। सोअी फल सिधि सब साधन फूला।।

वे बहुत कम बोलते हैं और बहुत कम लिखते हैं। लेकिन जो कुछ वह बोलते और लिखते हैं वह 'कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी' अर्थात् सत्य और प्रिय तथा विवेकयुक्त बोलते और लिखते हैं। अुनके अिन्हीं विचारोंमें

से 'विवेक और साधना'* नामक पुस्तककी रचना हुअी है, जो आध्यात्मिक साधको और विचारकोंके लिअे बडी ही मनन करने योग्य है। अुनका सहज झुकाव निवृत्ति-मार्गकी ओर है। लेकिन साथियोकी गुत्थिया सुलझाने, रोगियोकी सेवा करने और आजकल व्यवहार-शुद्धिकी बडी' प्रवृत्तिकी जिम्मेवारी अुन्होंने अपने सिर पर ले रखी है। पूज्य किशोरलालभाअी जैसे बुद्धिशाली अपने वैराग्यके हथियार जमीन पर रखकर अन्तिम श्वास तक सेवामय प्रवृत्तिमें डूबे रहे, यह पूज्य नाथजीका ही प्रभाव था।

बापूजीके साथ खादी-विद्यार्थियोके प्रश्नोत्तर

अुस समय बापूजी आश्रममें नही रहते थे। बारडोली या बाहर रहते थे। जब कभी अहमदाबाद आते थे तो गूजरात विद्यापीठमे ठहरते थे। आश्रममें बीमारोको देखने मात्रके लिअे आ जाते थे। अेक दफा आये और हम खादीके विद्यार्थियोको मत्रीजीके आग्रहसे समय दिया। बापूजीने कहा कि कुछ पूछना हो तो प्रश्न पूछो। श्री अब्बासभाअी¹ने प्रश्न पूछा "आप आसमानी और सुलतानीकी बात बार बार किया करते है। आसमानीका अर्थ क्या है?"

बापूजीने कहा, "अतरात्माकी आवाज ही आसमानी है। ज्यो-ज्यो तुम बाहरकी आवाजसे मनको हटाते जाओगे, त्यो-त्यो तुम्हें आत्माकी आवाज सुनाअी पडेगी। समझ लो कि सारगीकी आवाज मधुर होने पर भी ढोलकी खराब आवाजमें नही सुन पडती। अैसे ही अतरकी आवाज सच्ची और मधुर होने पर भी सासारिक विषयोकी ढोलरूपी आवाजमें नही सुन पडती। बस यही आसमानीका अर्थ है। विषयोसे मनको हटाते जाओगे तो आसमानी सुननेकी शक्ति पैदा हो जायगी। तुम अपनी निर्दोषतासे दूसरोंके दोषोको दूर कर सकते हो।"

अेक भाअीने प्रश्न पूछा, "क्या आप नाटक पसद करते है?"

बापूजीने कहा, "यदि भगवद्बुद्धिसे किया जाय तो बच्चोंके खेलके बतौर करनेमें मैं कोअी हानि नही समझता।"

---

* नवजीवन प्रकाशन मन्दिरसे प्रकाशित हिन्दी पुस्तक। कीमत ४—०—०; डाकखर्च १—४—०।

१ श्री अब्बासभाअी सौराष्ट्रके थे। आश्रममें आश्रमवासीके रूपमें रहकर खादी-विद्यालयमें खादी-शिक्षकका कार्य करते थे।

अुसी दिन आश्रममें अेक भाओीने साप मार दिया था।[1] बापूजीसे पूछा गया कि क्या आश्रममें अैसा कर सकते हैं? बापूजीने कहा, "हरगिज नहीं परन्तु मैं रामदास[2]को दोषी नहीं कह सकता। क्योंकि मेरे मनमें सापके लिअे अितनी दया नहीं है। सापके काटनेसे बच्चेकी मृत्यु हो जाने पर मुझे जितना दुःख होता अुतना सापके मरनेसे नहीं हुआ। यदि मुझे सापके मरनेका भी अुतना ही दुःख होता जितना बच्चेके मरनेसे होता, तो मैं रामदाससे कह देता कि तुम आश्रमसे भाग जाओ। परन्तु मैं भी अभी सापसे डरता हू, फिर तुमको निर्भय कैसे कर सकता हू? हा, अैसा बनना जरूर चाहता हू। वैसे तो हम और साप सब संसाररूपी बडे सापके मुखमें खडे हैं, जिसको काल या मृत्यु कहते हैं। अैसी अवस्थामें हम किसीको क्यों मारें? मैं सापको दुष्ट नहीं कह सकता, क्योंकि अुसका तो स्वभाव ही अैसा है। हा, मनुष्य दुष्टता करता है तो अपने शुद्ध स्वभावको छोड देता है। तुम अहिंसा और सत्यको समझो। जाओ भागो।"

विद्यार्थियोंके सामने प्रवचन करते हुअे बापूजीने कहा

"यह आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम है। ब्रह्मचर्यका अर्थ है सब अिन्द्रियोंको वशमें करके ब्रह्ममें लगाना। यहा पर जवान लडके-लडकिया, स्त्री-पुरुष सब रहते हैं। अिस विषयमें मुझसे कओी मित्रोंने कहा था कि अैसा कैसे हो सकता है कि स्त्री-पुरुष अेक जगह रहकर ब्रह्मचर्यका पालन कर सकेंगे। परन्तु मैंने तो अिस जोखिमको अुठानेका साहस किया। सफलता भी मिली है। मैंने अिसका प्रयोग सबसे पहले दक्षिण अफ्रीकामें किया था। लेकिन वहा अितनी

---

१. आश्रम पहले १९१५ में साबरमती नदीके पश्चिमी तट पर कोचरब नामके गावके समीप बना था और बादमें साबरमती सेन्ट्रल जेलके समीपकी भूमि पर बनाया गया, जो अब तक विद्यमान है और हरिजन आश्रमके नामसे प्रसिद्ध है। पहले वह स्थान निपट जगलमें था। अब तो वहा भी काफी बस्ती हो गओी है। वहा साप अक्सर निकला करते थे। सामान्य नियम यह था कि साप पकडनेके लिअे लाठीके अेक सिरे पर अेक छेद करके अुसमें रस्सी डालकर अेक फास बना ली जाती थी। अुससे सापको बिना मारे पकड लिया जाता था और आश्रमसे दूर चन्द्रभागा नदीके विस्तारमें छोड दिया जाता था। बहुधा अैसा ही होता था। सापके मारे जानेकी यही अेक अनूठी घटना थी।

२ पूर्व खानदेशका अेक खादी-विद्यार्थी।

सफलता नही मिली थी जितनी यहा मिली है। स्त्रियोंके छात्रालयमें कोअी पुरुष नही जा सकता। बीमार अवस्थामें सेवाके लिअे यदि अुसके सबधी जाना चाहें तो जा सकते हैं। अिस नियमका सब लोग स्वय पालन करें और जो अैसा न कर सकें वे घर चले जायें, तो अुनके लिअे और आश्रमके लिअे अच्छा होगा। अगर कोअी दोष हो तो सत्यतासे बता दो।"

अुस समय मैंने भी बापूजीसे कुछ पूछा था। आश्रममें मेरा मन नही लग रहा था और कुछ घरकी चिन्ता भी थी। मैंने यह सब हालत बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा कि "घरका मोह छोडो और निश्चिन्ततासे यहाके काममें अेकरूप हो जाओ, तो मुझे निश्चय है कि तुम्हें अवश्य शान्ति मिलेगी। यहाकी हवामें कोअी अैसी चीज है जो शान्ति देती है, अैसा मेरा खुदका अनुभव है। अब तो मैंने आश्रम छोड दिया है। लेकिन बाहर घूमते हुअे मुझे जब कभी अशान्ति होती थी तो शान्तिके लिअे यहा दौड आता था और मुझे शाति मिलती थी।"

१९३२ का आदोलन और जेलयात्रा

अूपर जो लिखा गया है वह मेरे साबरमती आश्रमके ६ मासके जीवनका अत्यत सक्षिप्त-सा परिचय है। अितनेमें १९३२ का आन्दोलन छिड गया। अिस बीचमें मैं कातना और धुनना सीख चुका था और मैंने बुनाअीका अभ्यास शुरू किया था।

आन्दोलनके प्रारभमें ही बापूजी जेल चले गये। आश्रमसे भी प्राय. सभी खादी-विद्यार्थी आन्दोलनमें भाग लेने चले गये। मैं भी गुजरातके प्रसिद्ध सत्याग्रह केन्द्र कराडीकी टोलीके साथ हो लिया। सक्षेपमें अितना ही लिखता हू कि वहा जाकर मैं प्रथम नायक बना और लगभग ४०० भाअी-बहनोंके जुलूसको लेकर निकला। पुलिसकी अच्छी तरह मार खाअी, परतु अिस बार पकडा नही गया। जब कुछ स्वस्थ हुआ तब दुबारा वही सत्याग्रह किया और अढाअी वर्षकी सजा लेकर बीसापुर जेलमें पहुच गया।

बापूजीके जेलसे लिखे गये बोधपत्र

अब तक बापूजीको न तो मैंने कोअी पत्र ही लिखा था और न अुनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय ही था। सामान्य परिचय जरूर था। बीसापुर जेलसे मैंने बापूजीको प्रथम पत्र लिखा। अेक तो गुम हो गया। अुसकी नकल मेरे पास थी अिसलिअे दुबारा लिखा। अुनका अुत्तर आया :

सेंट्रल जेल,
यरवडा, पूना

भाओी बलवर्तासह,

तुम्हारा खत मिला है।

१ गुरुमें स्थितप्रज्ञके गुण होने चाहिये। अैसा सर्वगुण-सपन्न कोओी मनुष्य मुझे नही मिला है। थोडे-बहुत अशमें अैसे गुण तो कअियोंमें प्रत्येक देशमें मिले है।

२. सुख-दुःखमें, मानापमानमें, सम रहनेका तात्पर्य यह है कि अपमान होनेसे खिन्न नहीं बनना, मान मिलनेसे फूल नही जाना। अपमानका अथवा दुःखका अिलाज न करना अैसा कभी नही है।

३. भक्तके गुण प्रयत्नसाध्य हैं, प्रयत्न कैसे किया जाय यह भी अुसी अध्यायमें बताया गया है। लेकिन अुससे भिन्न प्रयत्नसे भी अैसे गुण प्राप्त हो सकें तो रुकावट नही है।

४. निद्रा प्रयत्नसे निर्दोष हो सकती है। निर्दोष निद्रा अुनका नाम है जिसमें जागनेके पश्चात् निद्राके सिवाय और किसी वस्तुका ज्ञान नही रहता है और सुखका अनुभव होता है। यद्यपि गीतादिका पाठ किया जाता है तो भी अनजानपनमें अनेक विचार आते जाते है। जब आत्मा गीतामय अथवा कहो भगवानमय हो जाता है तब शुद्ध निद्राका सभव होता है। अिसलिअे आज जो प्रयत्न गीतामय होनेका चलता है अुसीको श्रद्धापूर्वक कायम रखा जाय।

५. रामायण पर भी लिखनेका विचार तो रहता ही है, किन्तु समयाभावसे रह गया है। यों तो अब कोओी आवश्यकता भी नहीं रही है। जो अनासक्तियोगका अभ्यास अच्छी तरह करेगा वह रामायणका अभ्यास भी अपने आप घटा लेगा।

६ रामायणमें यदि अितिहास है तो वह गौण वस्तु है, अध्यात्म प्रधान वस्तु है। अितिहासके निमित्त धर्मका बोध दिया गया है। अिस कारण रामको आत्मा और रावणको अीश्वर-विमुख शक्ति समझकर सारी रामायण पढना। समझो राम कृष्ण हैं, अुनका दल पाडवसेना है, रावण दुर्योधन है। महाभारत और रामायणमें अेक ही दृष्टि है।

गुरुमुखी ग्रथोंका अभ्यास कर रहे हो सो भी अच्छा है। गीता कठ करनेकी प्रतिज्ञाका पालन किया जाय।

भाअी फूलचदके पत्रका अुत्तर दिया गया है। आशा है यह पत्र मिल जायगा। हम सव अच्छे हैं।

५-२-'३३

सवको
वापूके आशीर्वाद

१९३२ के आन्दोलनमें वम्वअी प्रेसीडेंसीमें वीसापुर कैम्प जेल खुला था। अुसमें करीब २००० राजनैतिक कैदी थे। वापूजी अुस समय यरवडा जेलमें थे। हम लोग वीसापुर कैम्प जेलमें थे। यरवडा कैम्प जेलमें भी वहुतसे साथी थे। सव साथियोंके साथ वापूजीका पत्रो द्वारा लगातार सवध रहता था। वे कितनी मधुरतासे हमारी खोज-खवर रखते थे, अिसका आभास नीचे दिये गये अुनके पत्रसे मिलेगा। फूलचदजीको वापूजीने लिखा था:

भाअीश्री फूलचद,

आपका पत्र मिलनेसे हम सवको वहुत आनन्द हुआ। कैदी हैं अिसलिअे जितनी पली पानी पीने दें अुतना ही पीयें। अैसा भी समय था जव कैदीको न पत्र लिखने देते, न पढने देते, न पूरा खाना खाने देते थे; चौवीसों घटे वेडिया पहिनाये रखते और घास पर सुलाते थे। अिसलिअे हम तो जो कुछ भी मिले अुसीके लिअे ओश्वरका अनुग्रह मानें। मान भग हो तव मर मिटें, देहको कष्ट मिले अुसे सह लें।

आप सव वहा सुखी हैं, यह जानकर हमें आनन्द हुआ है। अन्तमें तो सुख-दुःख मानसिक स्थिति है। आप और मामा नियमोंका पालन करते हैं, कराते हैं, स्वच्छता रखाते हैं, यह सव शोभा देता है।

मैं अुम्मीद रखता हू कि वहा हरअेक भाअी समयका अच्छासे अच्छा अुपयोग करते होंगे। अैसा अेकान्त और अैसी फुर्सत वार-वार नही मिलेगी। पढनेकी सुविधा हो तो पढना, विचार करना तो है ही। और भी अनेक प्रवृत्तिया हैं। अुनमें से कोअी न कोअी ले लेनी चाहिये। अेक गभीर भूल हम सव करते हैं। वह यह है कि सरकारी समय और वस्तु कौन जाने अपनी नही है अैसा समझकर हम अुन्हें अुडाते हैं। थोडासा विचार करनेसे मालूम होगा कि सरकारी वस्तु और समय प्रजाके ही हैं। अभी वे सरकारके कब्जेमें हैं, अिसलिअे यदि हम अुन्हें अुडावें तो

प्रजाका ही धन और समय अुडाया कहा जायगा। अिसलिअे हमारे पास जो कुछ आवे अुसका हम सदुपयोग करें। जेलोंमें हम जो कुछ भी अुत्पन्न करें वह प्रजाके धनमें वृद्धि करनेके बराबर ही है। सरकार विदेशी है अिससे अिस विचारश्रेणीमें कुछ अन्तर नहीं पड़ता। अब अिससे आगे जाअू तो राज्यप्रकरण आता है और अुसमें हम कैदीकी भांति ही वर्तन कर सकते हैं। अिसलिअे यह बात मैं यहीं पूरी करता हूं।

जाननेवालोंमें वहां कौन कौन हैं यह लिखना। अथवा जिसका पत्र लिखनेका समय आया हो वह लिखे। दीवान मास्तर वहीं हैं? आश्रमके माधवलाल वहां हैं? हम तीनों जन तो यहां मौज अुड़ा रहे हैं अैसा कह सकते हैं। खाने-पीनेमें हम संयम रखें। वही अंकुश सोने-बैठनेमें भी। कातना धुनना ठीक चल रहा है। पढ़ना तो चलता ही है। अखबार भी ठीक ठीक मिलते हैं। पुस्तकें तो रोजाना किसी न किसीके पाससे आती ही हैं। प्रार्थना नियमित चलती है। यही हमारा कार्यक्रम है। सबको हमारा यथायोग्य।

बापू

बापूजीके अन्य पत्रोंमें से नीचे लिखे अुद्धरण सर्वसामान्यके लिअे लाभकारी होनेकी दृष्टिसे यहां देता हूं:

आश्रमकी प्रार्थनाके संबंधमें

"प्रार्थनामें साकार मूर्तिका निषेध नहीं किया है। लेकिन निराकारको प्रथम स्थान दिया है। सम्भव है अैसा मिश्रण करना किसीको ठीक न लगे। मुझे निराकार ज्यादा जचता है। पूजामें परिस्थिति या स्थानविशेषका असर साकार पूजामें होता माना गया है। होना नहीं चाहिये, क्योंकि आखिरकार अुनके पार जाना होता है। अनुभवके विषयमें अैसा नहीं है। अेक अुदाहरण शरीर तथा आत्माका लें। देह तथा आत्मा अेक-दूसरेके अत्यन्त निकट होनेसे देहसे अलग आत्माका भास नहीं होता। शरीरको भेदकर जिस ऋषिने आत्माका अनुभव किया और सर्व प्रथम यह आचार किया कि 'नेति नेति' अर्थात् यह शरीर आत्मा नहीं है, अुस ऋषिसे अब तक कोअी आगे नहीं जाने पाया है।"

विचार और प्रवृत्ति

"मैंने गहराओीसे विचार करके यह निश्चय किया कि जो विचार अमलकी कसौटी पर कसे न जा सकें वे निरर्थक तथा भारस्वरूप गिने जावें। दूसरे शब्दोमें कहा जाय तो यह कि विचारके साथ प्रवृत्ति जरूर हो, लेकिन केवल पारमार्थिक तथा निष्काम, अन्य नही। यह बात ओशोपनिषद्‌में चमत्कारिक रीतिसे कही गओी है। विद्या-अविद्या, सभूति-असभूतिका वर्णन किया है। अिनके अर्थके विषयमें बहुत मतभेद है। सुरेन्द्र (श्री सुरेन्द्रजी) से यह समझना।"

जेलमें अभ्यास

"वल्लभभाओीकी लगनका मै कहा तक बखान करू? सस्कृतकी सातवलेकरकी पाठमाला तो चल ही रही थी। अिसमें गीताके ३० श्लोक कण्ठ करनेका क्रम और जुड गया। कातना भी नियमित चलता है। ४० अकका सूत वे कात रहे है। अिन सबमें विशेषता यह है कि ज्यों ही जरासे खाली हुअे कि सस्कृत अुठाओी मानो कोओी विद्यार्थी परीक्षाकी तैयारी कर रहा हो। महादेवभाओी ८० अकका सूत कात रहे है। मेरा भी परसो तक ४० अक निकल रहा था। परतु फिर बाओी कोहनीको आराम देनेके लिअे गाडीव चक्र छोडकर मगन चक्र अपनाया है और अुस पर ४० अक कातना सभव नही है।"

ओश्वरके विषयमें

"जो सेवा करे या जो सेवा ले, दोनोको ही मै ओश्वर मानता हू। लेकिन ये दोनो ओश्वर काल्पनिक हैं। जो सच्चा ओश्वर है वह कल्पनासे परे है और वह न सेवा करता है, न लेता है। ओश्वर नही है यह कहना गलत है। यदि हम है तो ओश्वर है। यदि ओश्वर नही है तो हम फिर क्या है? ओश्वर हमारे अन्तरमें व्याप्त है, अिसलिअे हमें प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना अर्थात् स्मरण। ज्यो ही हमने स्मरण किया त्यो ही काल्पनिक ओश्वर पैदा हुआ। आस्तिकता अन्तमें बुद्धिका विषय न होकर श्रद्धाका है।"

निष्काम कर्म तथा अन्तरशुद्धि

"कोओी यह माने कि अन्तरशुद्धि बाह्य कर्म करते करते नही साधी जा सकती तो यह भ्रम है। अिससे ठीक अुलटी बात सच है कि बाह्य कर्म

अंतरशुद्धि अर्थात् प्रतिक्षण ईश्वर-आराधन बुद्धि जाग्रत रखे बिना निर्वाण हो ही नहीं सकता। दोनों अनिवार्य हैं। धर्म अर्थात् [illegible] नियम [illegible] सबोंको लागू है। मनुष्य निष्काम भावसे [illegible] यही [illegible] ज्ञान और विशेषता है। भगवान बुद्धको मैं [illegible] नहीं [illegible]। मैं अुनका पुजारी हूं। मेरी मान्यता यह है कि बौद्ध साधु और अुनके [illegible] नियमका अुल्लंघन करनेसे ही अर्थात् [illegible] त्याग करनेके कारण ही अलग हो गये, जैसे कि वे आजकल भी लंका, ब्रह्मा तथा तिब्बतमें देखे जाते हैं।"

जेलमें मिलनेके विषयमें

"यह शरीर मिट्टीका पुतला है। [illegible] मिलना निरर्थक है। जिसके अन्दर जीव रम रहा है अुससे मिलनेकी अिच्छा मनमें बना मोह है, जिसे दूर करनेमें कभी जन्म भी कम पड़ेंगे। सच्चा मिलन तो मनका मनसे और हृदयका हृदयसे होता है और ये तो हजारों मीलके फासले पर होने पर भी अेक क्षणमें मिल लेनेकी शक्ति रखते हैं। परन्तु यदि मन नहीं मिलते हों तो मिट्टीके पुतलोंका तो आमने सामने तो क्या अेक भर करके मिलना भी निरर्थक होता है।"

अनशनकी योग्यताके विषयमें

"हृदयमें पूर्ण सत्य तथा पूर्ण अहिंसा हो, अन्तर्प्रेरणा मिली हो, किसीके प्रति द्वेष हृदयमें न हो, हेतु स्वार्थी न होकर पारमार्थिक हो। अन्तर्नाद सुननेके कान बिना संयमके नहीं खुलते, अिसलिअे अभ्यस्त तथा चुस्त संयमी हों।"

भिन्न भिन्न धर्मोंके विषयमें

"मैं हिन्दूधर्मको सत्यके सबसे निकट मानता हूं। यदि मैं अैसा न मानता होअू तो मैं सत्यका पुजारी होनेसे जिस धर्मको सत्यके अधिक निकट समझू अुसीमें चला गया होअू। यह मान्यता मोहजन्य भी हो सकती है, लेकिन अैसा मोह क्षन्तव्य है। अन्य धर्मावलम्बियोंके लिअे अुनके अपने अपने धर्म सत्यके सबसे नजदीक होंगे। अुनके वैसा माननेसे मुझे कोअी द्वेष नहीं है। सब धर्म मुझे समान प्रिय हैं। सर्वधर्म-समभावका मेरा विचार मौलिक है और अिसीसे मेरे लिअे यह संभव हुआ है कि स्वयं चुस्त हिन्दू रहते हुअे भी मैं अन्य धर्मोंकी भी पूजा कर सकता हूं और अुनमें जो श्रेष्ठ हो अुसे निःसंकोच ले सकता हूं। और वैसा करता भी हूं।"

अनासक्तिके विषयमें

"अनासक्तिका अर्थ जडता नही है। निर्दयता भी नही है। चूकि सेवा तो करनी ही होती है, अिसलिअे दयाकी भावना तो और भी तीव्र हो जाती है। कार्यदक्षता तथा अेकाग्रता भी बढती है। मेरी भावना जगतमात्रकी सेवा करनेकी है। अिसमें कुटुंब भी आ ही आ जाता है अर्थात् कौटुम्बिक सेवा रह जाती हो सो भी नही। अिसलिअे मेरे अनासक्तिपूर्वक सेवाकार्य अपना लेनेसे अपना कुछ भी नही खोया और मुझे बहुत कुछ मिला है।"

* * *

जेलमें बापूजीका अुपवास

बापूजीने २-५-'३३ से यरवडा जेलमें २१ दिनका अुपवास आरभ किया। श्री सुरेंद्रजी हमारे साथ वीसापुर जेलमें थे। अुनके नाम बापूजीने हम सबके लिअे पत्र लिखा। मूल पत्र गुजरातीमें था। यहा अुसका अनुवाद दिया जाता है।

यरवडा मदिर,
६-५-'३३

चि० सुरेंद्र,

रामदास कहता था कि जब अुसने तुमसे मेरा सदेश कहा तब तुम्हारी आखोंमें आसू आ गये थे। मै अैसा मानता हू कि तुम्हारी आखोंमें आसू तो हर्षके ही होंगे, दु:खके तो कदापि नही। यह अुपवास किये बिना कोअी चारा ही न था। और यह समय अुसके लिअे योग्य मुहूर्त था। यह मुझे बिलकुल स्पष्ट लग रहा है। अस्पृश्यता जैसे भयानक राक्षसका नाश मुझे अन्य किसी प्रकारसे अशक्य लगता है। रावणके तो केवल दस सिर थे। अिस राक्षसके हजार मस्तक है। यह मस्तक कैसे है यह तुम्हें समझानेकी जरूरत नही। अिस राक्षसका मूलसे नाश करना हो तो वर्तमान साधनोसे नही हो सकेगा। अिसके लिअे प्राचीन परतु विस्मृतप्राय अमोघ साधनकी जरूरत है। यह बात मुझे अुतनी ही सीधी मालूम हो गअी है, जितना गणितके किसी प्रश्नका अुत्तर। करोड रुपये अिकट्ठे कर लें तो भी क्या सवर्णोका हृदय पलटेगा? कुदन जैसे सेवकोंके बिना हजारों सघ भी किस कामके? जिस आश्रमके द्वारा मुझे यह काम सिद्ध कराना है, अुसी आश्रममें दरार पडी हुअी कैसे

देखूं? हरिजन आजकल दिङ्मूढ हो गये हैं, वे भयभीत हैं। जिन्होंने भय छोड दिया है वे अुद्दंड बन गये हैं। अुनके रोषका रूप भीषण हो जाय अिसमें आश्चर्य ही क्या?

अिन नव अनिष्टोंका सामना कर सकनेके लिअे हम अपनी सारी आध्यात्मिक पूंजी खर्च कर दें। अिसके अतिरिक्त कोअी चारा नहीं है। अीश्वर करे मेरे अकेलेके अितने ही यज्ञसे काम चल जाय तो मेरे हर्षकी सीमा न रहे। परंतु मैं यह नहीं मानता कि मेरे अंदर अितनी अधिक पवित्रता है। अैसे सैंकडों, हजारों अुपवास जब हम करेंगे तब ही यह हजारों वर्षोंका प्राचीन पाप धुलेगा। तुमने और तुम्हारे ही जैसे दूसरोंसे अिस यज्ञमें बडे भागकी आशा रखता हूं। परंतु मेरे अिस अुपवासके दरमियान कोअी कुछ न करें, शान्त रहें और मन, वचन, कर्मसे जितनी शुद्धता साध्य हो अुतनी साधें। यह पत्र महादेवने लिखा है। वह रोजाना अिसी प्रकार लिखता रहेगा और जब तक शक्य होगा मेरे दस्तखत लेता रहेगा। सरकारकी आज्ञा मिल गअी है कि मैं रोजाना तुमको अिस प्रकारसे पत्र लिख सकूंगा और तुम भी मुझे लिख सकोगे।

सबको

बापूका आशीर्वाद

बापूका यह पत्र हमको ८ तारीखको मिला। अुपवासकी खबर तो पहले ही मिल गअी थी और जेलमें काफी गंभीर वातावरण हो गया था। सब लोगोंने २४ घंटेका अुपवास और प्रार्थना की थी। हम सबकी तरफसे श्री सुरेंद्रजीने बापूजीको पत्र लिखा:

वीसापुर कैम्प जेल,
८-५-'३३

परम पूज्य बापूजी,

आपका कृपापत्र आज मिला। सबने पढा, खूब प्रेरणा मिली। यह गंभीर प्रसंग होते हुअे भी आनंद हुआ। रामदासभाअीने जब आपका रहस्यपूर्ण संदेश सुनाया तब हृदय भर आया। मेरे आनंदाश्रुओंको किसीने देखा न होगा, पर मुझे कबूल करना चाहिये कि वे दुःखसे सर्वथा मुक्त न थे। गत सात दिनमें खूब आत्मनिरीक्षण किया है। आपके अुपवासका समाचार मिला। अुसकी महत्ता, व्यापकता और आवश्यकता मैं समझ सकता

हू और मै मानता हू कि यह अुपवास आपने मेरे लिअे, मेरे समान सब साथियोंके लिअे किया है। आपके अिस दिव्य सूर्यके प्रचड, सौम्य शीतल प्रकाशमें मै अपने अदरकी सभी गुप्त-प्रगट त्रुटियोको देखता हू। मुझमें हरिजनोंके लिअे वह अुत्कटता नही, वह समर्पण नही, वह कुशलता नही, जैसी कि आपके सेवकमें होनी चाहिये। जैसा आदमी अेक क्षेत्रमें होता है अुससे भिन्न दूसरे क्षेत्रमें कैसे हो सकता है? मै चमार बना। आपके चमारमें जो समर्पण, कुशलता, अुत्कटता होनी चाहिये वह मुझमें नही। अैसी अनेक बातें यहा लिख सकता हू। आप मुझे मुझसे अधिक जानते है। आज सात दिनके मथनके बाद प्रातःकालमें अुठते ही मै प्रफुल्लित और शान्त था। खड्डा फाजिल[1] से आनेके बाद आपका पत्र मिला। आपकी आशा मै पूर्ण कर सकू अिससे विशेष मुझे कोअी प्रसन्नता नही है। जिस बलिदानकी आप मुझसे आशा रखते है, वह मै आपके आशीर्वादसे अर्पण कर सकू अैसी प्रभुसे प्रार्थना है। आपसे पू० नाथजी मिल गये। अुनसे मिलनेकी अिच्छा है। मेरा आश्रमके पडितजीके नाम लिखा पत्र आपको मिल गया? श्री फूलचदभाअीका ४–५–'३३ का यहासे लिखा पत्र आपको मिला होगा। वे अब जल्दी छूटकर नही आयेंगे, परतु १७ तारीखको आपके पास आयेंगे और दर्शन करके वापिस लौटेंगे। आज यहा १२ बजे सबने अपने अपने स्थान पर प्रार्थना की है और आत्म-सतोषके लिअे २४ घटेका अुपवास किया है। हम वीसापुर मदिरवासी आपको आध्यात्मिक खुराक किस प्रकार भेज सकते है, अिस बारेमें मैने ये सूचनायें की है

१. जेलमें आदर्श सत्याग्रहीका-सा जीवन व्यतीत करना।

२ सयमी और प्रार्थनामय जीवन पर विशेष भार दिया जाय।

३ धार्मिक साहित्यके अतिरिक्त आपके ही साहित्यका वाचन, श्रवण, मनन और चर्चा करें।

४ प्रत्येक व्यक्ति अपने गत सामाजिक जीवनका निरीक्षण करे और भविष्यके जीवनके लिअे शुद्धतर सकल्प करे।

ये सूचनायें केवल दिशासूचक हैं। बाकी प्रत्येक व्यक्ति अुन पर अपनी रीतिसे विचार करेगा।

---

१ वीसापुर कैम्प जेलमें मलमूत्र गाडनेके लिअे खड्डे खोदनेवाली टोली।

श्री गोकुलभाअी भट्ट, श्री अेन० के० पाटील, श्री फूलचंदभाअी, श्री रमणीकलालभाअी, श्री मोहनलाल भट्ट, श्री दरबारी साधु, श्री गोडसेजी, श्री दीवाण साहिब और श्री बलवंतसिंहजी वगैरा सब आश्रमवासी और सब अन्य भाअियोंकी ओरसे आपको सादर प्रणाम। हम सब प्रभुसे प्रार्थना करते हैं कि जैसे भगवान कृष्ण कालीमर्दन करके हसते हुअे बाहर निकल आये, वैसे ही आप भी निर्विघ्न बाहर निकल आवें और आत्मशुद्धिके यज्ञमें हमको लंबे समय तक मार्गसूचन करते रहें।

आपका कृपापात्र
सुरेंद्र

अेक दो दिनमें ही बापूजीके अुपवासके सम्बन्धमें पूज्य नाथजीका मराठीमें लिखा पत्र मिला। यहां अुसका अनुवाद दिया जाता है।

पूना
८-५-'३३

श्री सुरेन्द्रजी,

सप्रेम आशीर्वाद। मैं परसों यहां आया। पूज्य बापूजीसे मुलाकात हो गअी। यद्यपि मेरा अुनके साथ संभाषण नहीं हुआ तथापि अुनकी लिखी हुअी बातें तथा और लोगोंकी बातचीत सुनी। अुनका आज तकका जीवन, अुनका ध्येय, अुस ध्येयको प्राप्त करनेके लिअे अुनका साधन-मार्ग, आजकी अुनकी मानसिक स्थिति अित्यादि विषयोंकी जो कल्पना मुझे हुअी तथा अुस विषयमें मैं जितना चिंतन कर सका हूं, अुस परसे मुझे अैसा लगता है कि आज बापूजी जो कर रहे हैं वह अुचित ही कर रहे हैं। मुझे यह भी लगता है कि अुनके साधन-मार्गमें अिस अिक्कीस दिनके अुपवासके अतिरिक्त और कोअी अुपाय नहीं है। पिछले अुपवासके समय मैंने अिस प्रकारसे अुनकी विचारशैलीका चिन्तन नहीं किया था। अिससे अुनका अुपवास करना मेरी समझमें नहीं बैठा था। अुनका निश्चय सुनकर आप सब लोगोंके दिल अस्वस्थ हो गये होंगे। कारावासके बंधनोंके कारण तो आप लोगोंका और भी ज्यादा अस्वस्थ बन जाना संभव है। लेकिन जब आप सब लोगोंने अपनी खुदकी तथा औरोंकी चित्त-शुद्धिका यह महान कार्य आरंभ किया है, तो अुनके अिस कामसे आप लोगोंको अस्वस्थ नहीं बन जाना चाहिये।

पूज्य वापूजीका स्वास्थ्य अच्छा है। अुनमें खूब अुत्साह है। असिसे लगता है कि वे अिक्कीस दिन पूरे कर सकेंगे। अुन्होंने आप सब लोगोको अितना तो जरूर ज्ञान दिया है जिससे चिन्ताकी वात होते हुअे भी चिन्ता करना आप अुचित न मानें। अुपदेशक अुपदेश करता है तव श्रोता लोग सुनते रहते हैं, लेकिन ज्यो ही अुपदेशक अुन्ही अुपदेशोंके अनुसार व्यवहार शुरू कर दे त्यो ही यदि श्रोताओको दु ख होने लगे तो यही मानना होगा कि श्रोताओने अुपदेशको समझा नही। श्रोता और वक्ताकी अपेक्षा आप लोगों तथा पूज्य वापूजीके वीचका सवध तो अत्यन्त निकटका है तथा हार्दिक है। हमी लोगोने वुद्धिपूर्वक समझ कर जव अेक कामको अुठा लिया तो अुसे करते हुअे कभी मनको विचलित नही होने देना चाहिये, यह तो आप लोग जानते ही हैं। न जानते हो तो अब जान लें। अिसके सिवा और कोअी चारा नही है। पूज्य वापूजी जव आज व्रत कर रहे हैं तव यह आवश्यक है कि आप लोग अपने मनोको शान्त रखकर अुनके कार्यमें मानसिक सहानुभूति पहुचावें। मनुष्य कैसी भी असह्य परिस्थितिमें पडा हो, अितना तो वह जरूर कर सकता है।

आज यह पत्र में लिखनेवाला नही था, लेकिन कल जव मैं काकाके यहा गया तो वहा अेक सज्जनने आपको पत्र लिखनेकी सूचना की। अिस-लिअे लिखा है। श्री दरवारीजी, वलवन्तसिंह, गोकुलभाअी, गोडसे, सव परिचित मित्रोको नमस्कार। श्री रमणीकलालभाअीको तीन चार दिन पहले पत्र भेजा था। मुझे नही लगता कि वापूजीके वारेमें अुनको लिखकर समझानेकी जरूरत है। वे खूब समझदार हैं और गभीर हैं। अुनको यह पत्र दिखाना और आशीर्वाद कहना।

शुभचिन्तक
नाथ

जेलसे रिहाअी

अितनेमें ही वापूको छोड दिया गया। लेकिन अिस पत्रव्यवहारका [परि]णाम यह हुआ कि जेल अधिकारियोको शक हो गया कि हम लोग भी [उप]वास करनेवाले हैं। अिसलिअे हम आश्रमके खास खास दस आदमियोको [वीस]ापुरसे वदलकर यरवडामें अेकात कोठरीमें ले जाकर रख दिया गया।

अेक रोज वारह वजे हमारी वैरकके किवाड वद हो गये और वार्डरने [आ]से आकर हमको कहा कि वापूजी जेलमें आ गये। सव लोगोने दूसरे दिन

बापूजीकी ४ बजेकी प्रार्थना भी सुनी। लेकिन बापूजीने फिर अुपवास शुरू किया और सरकारने अुन्हें फिर छोड दिया। अुसके बाद बापूजी हरिजन कार्यमें ही लग गये।

मैं १२ मार्च १९३४ में अढाअी सालकी सजा पूरी करके यरवडा जेलसे छूटा। बापूजीने सविनय सत्याग्रह स्थगित कर दिया था। अिस विषयमें मैंने बापूजीको पत्र लिखा कि मैं तो दुबारा जेल जानेकी तैयारी कर रहा था और आपने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। अैसा क्यों किया गया? बापूजी अुडीसामें हरिजन-यात्रा कर रहे थे। पुरीसे अुनका जवाब आया:

भाअी बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। तुमको आहिस्ते आहिस्ते मेरे निर्णयकी योग्यता प्रतीत हो जायगी। तुम्हारे जैसे सरल सविनय भंग करनेवाले काफी थे। साथियोंकी त्रुटियोंसे भिन्न भी आध्यात्मिक कारण निर्णयके लिअे थे। अनुभव नित्य बता रहा है कि निर्णय बहुत ही योग्य था। अब तुम्हारे सिर पर ज्यादा जिम्मेवारी आयी है। तुम्हारी रचनात्मक शक्तिकी, तुम्हारी श्रद्धाकी और तुम्हारी दृढताकी अच्छी परीक्षा होगी। नारणदास कहे वही करो। रचनात्मक कार्य करते हुअे कोअी कुछ बाधा डाले तो अुसका अुत्तर देना। फिर भी जेल जाना पडे तो सहन करना। अनिवार्य कारण पैदा होनेसे सविनय भंग योग्य और कर्तव्य भी हो सकता है। मेरे जेल जानेके बाद तो बाहरवाले अपने मतके अनुसार करेंगे। अिसमें भी नारणदास कहे अैसा ही करना। अितना याद रखो कि जेल जानेका कोअी स्वतंत्र धर्म नहीं है और अुसके लिअे योग्यता प्राप्त करनी पडती है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। वजनका पता नहीं है। मेरी पैदल यात्राकी कथा तो पुरानी हुअी।

पुरी, ६-५-'३४ बापूके आशीर्वाद

बापूजी मुझे 'भाअी' सम्बोधन करके पत्र लिखते थे। मैंने अिसके खिलाफ शिकायत की कि आप अैसा कैसे लिखते हैं। क्योंकि जिनको वे चिरंजीव लिखते थे अुनसे मुझे अीर्ष्या होती थी। अिस बारेमें बापूजीका जवाब आया:

भाअी बलवन्तसिंह,

भाअी अथवा चिरंजीव अथवा और कोअी विशेषणसे कुछ फर्क नहीं पडता जब तक भाव अेक है। मुझे जिसका ठीक परिचय नहीं है, जिसको

भुम्र भित्यादि नही जानता हू भुसको प्राय भाभी लिखा करता हू। तुमको सुरेंद्र अपने साथ रखे तो मुझको अच्छा लगेगा। नारणदास राजकोट है। वह कहे अैसा करो।

४–६–'३४ बापूके आशीर्वाद

अिसके बाद मै जबरदस्ती बापूजीका 'चिरजीव' बन बैठा और फिर कभी बापूजीने मुझे 'भाभी' नही लिखा।

समाजवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर

अिसके पश्चात् मै २९–६–'३४ को साबरमतीमें[1] बापूजीसे मिला। बापूजीने मुझे राजकोट नारणदासभाअीके साथ काम करनेकी सलाह दी। लेकिन वहा मुझे अच्छा न लगा और मै अपने घर वापिस आ गया। १ जनवरी १९३५ को बापूजी हरिजन-आश्रमकी नीव डालने दिल्ली आये थे। मै बापूजीसे मिलने गया और जब तक वे दिल्ली ठहरें, तब तक अुनके साथ दिल्ली ठहरनेकी अिच्छा प्रकट की। बापूजीने अनुमति दे दी और मै वहा ठहर गया। यहा पर बापूजीको और निकटसे देखा। अुनके पास अनेक प्रकारके लोग आते थे, चर्चा करते थे और मै सुनता था। अेक रोज समाजवादी पार्टीके लोग बापूके पास आये और चर्चा करने लगे कि किसानो पर बहुत कर्ज है अुससे अुन्हें कैसे मुक्त किया जाय। अुन्होने यह भी पूछा "खाडके लिअे गन्ना बेचनेमे अधिक पैसा मिलता है, गुडमें कम। तब किसान क्या करें? स्वराज्यमें पूजीवाद रहेगा या नही? आपके ग्रामोद्योगमें राजनीति है या नही?"

बापूने कहा. "किसानोको कर्जसे मुक्त तो आज नही कर सकता हू। अगर आज स्वराज्य भी हो जाय तो मै अैसी घोषणा नहीं कर सकता कि किसानो पर जो कर्ज है वह कम किया जाय। लेकिन मै तो किसानोंको आलस्यसे व फिजूलखर्चीसे बचानेका प्रयत्न कर रहा हू। किसानो पर कर्ज क्यो होता है? कोअी कहता है, मैने शादी की थी, कोअी कहता है, मैने पिताका श्राद्ध किया था। मै कहता हू, लाओ मै तुम्हारा पंडित बन जाअू, श्राद्ध और शादी दोनो करवा दू। अुसमें पैसेकी क्या जरूरत है?

---

१. १९३४ में बापूजी हरिजन-यात्रा कर रहे थे और अुन दिन साबरमती आश्रममें आये थे।

"किसानोंको गुड बनाकर अधिक पैसे लेने चाहिये, क्योंकि लोगोंको समझना चाहिये कि खाडमे गुड अच्छा है। खाडमे मे सब तत्त्व चले जाते है और गुडमें वे सब रहते हैं।

"स्वराज्यमें भी कुछ तो व्यक्तिगत सपत्ति रहेगी ही। अैसा कोअी देश नही है जहा अैसा न हुआ हो।"

बीचमें अेक सज्जनने कहा कि रूसमें अैसा नही है।

बापूने कहा, "क्या तुम रूस गये हो?"

अुसने कहा, "हा जी।"

बापूने हसकर कहा, "तब तो मैं हारा।"

खूब हसी हुअी। बापूने पूछा, "क्या अेक भी समाजवादी अैसा है जिसके पास व्यक्तिगत सपत्ति कुछ भी न हो?"

सत्यवती[1] बहनने कहा, "हा, मैं अैसी हू।"

बापूने कहा, "यह शरीर तो तुम्हारी सपत्ति है ही।"

सत्यवती, "ना जी, शरीर भी समाजका है।"

बापू गभीर हो गये और बोले, "देखो सभलकर बात करो। अगर कोअी लडका तुम्हारी तरफ बुरी निगाहसे देखे तो तुम पिस्तौल लेकर खडी हो जाओगी न?"

सब लोग खूब हसे और सत्यवती बहन झेंप गअी।

चौथे प्रश्नके अुत्तरमें बापूने कहा, "ग्रामोद्योगमें राजनैतिक भावना लेकर कोअी कार्यकर्ता नही आयेगा। लेकिन अुसका परिणाम तो वही आयेगा जो काग्रेस चाहती है।

* * *

अेक रोज अेक भाअीने बापूजीसे तत्त्वज्ञानके बारेमें चर्चा करते हुअे कुछ पूछा। बापूजीने कहा, "यह काम तो अीश्वरका है। अिसका ठेका तुम क्यों लेते हो? तुम करोडोंमें से अेक क्यो बनते हो? करोडोंमें ही रहो। तत्त्वज्ञान अनुभवगम्य है और खुदके अनुभवसे आनेवाली अवस्था है। तुम तो सेवा करो। लोगोंको अच्छा गुड, अच्छा आटा, अच्छा तेल, अच्छा चमडा, अच्छा चावल और अच्छा दूध पिलाओ। अगर अुसमें कुछ पाप हो तो मेरे अूपर छोड दो और पुण्य हो तो तुम लो।"

---

१. स्वामी श्रद्धानदजीकी पौत्री और दिल्लीकी अेक प्रमख कार्यकर्त्री।

ये मेरे अेक मित्र थे। जिनके लिअे मैंने बापूजीसे समय मागा था। बापूजीने मेरी तरफ गभीरतासे देखकर कहा, "मेरे पास अैसी बातोंके लिअे समय कहा है?"

६

वर्धाको प्रस्थान

खुर्जामें अुस समय श्री रामस्वरूपजी गुप्ता खादीकार्य चला रहे थे। अुनकी अिच्छा मुझे अपने काममें ले लेनेकी थी। मैं बापूजीकी अनुमतिसे ही अपना काम निश्चित करना चाहता था। अत हम दोनों अुनके पास गये। सारी बातें सुनकर बापूजीने कहा, मुझे लगता है कि तुम मेरे साथ वर्धा चलो। अिसीमें तुम्हारा हित है। मेरी मानसिक तैयारी बापूजीके साथ जानेकी नही थी और मनमें था कि पूज्य बापूजी यहा रहनेके लिअे आशीर्वाद दे देंगे। लेकिन अीश्वरको कुछ और ही मजूर था। मेरी अितनी हिम्मत नही थी कि बापूजीके निर्णयके बाद कह सकू कि मेरी वर्धा चलनेकी अिच्छा नही है। अिसलिअे मुझे अुनके साथ जाना मजूर करना ही पडा। गुप्ताजीको बापूजीके निर्णयसे निराशा तो हुअी, लेकिन क्या करते? मैं अेक रोजके लिअे अपने घर जाकर सामान ले आया और बापूजीके साथ हो लिया। २८ जनवरी, १९३५को बापूजी वर्धाके लिअे निकले और मैं भी अुनके साथ गया। अुस समय मेरे मनकी स्थिति अेक कैदी जैसी ही थी। जब आज बापूजीके अुस रोजके निर्णयका विचार करता हू, तो लगता है कि बापूजीमें कोअी अैसी अजीब शक्ति थी जिससे वे मनुष्यके दोषोमें से भी अुसके थोडेसे गुणोको परख कर और अुसे अपने निकट रखकर दोषोका निवारण और गुणोका विकास कर लेते थे। कितनी दूरदृष्टि, कितना स्नेह, कितनी अुदारता, कितनी क्षमा और माकी तरह खुद कष्ट सहन करनेकी कितनी शक्ति अुनमें भरी थी!

वर्धा जाकर बापूने मगनवाडीमें अपना डेरा जमाया और वहाकी भोजनादिकी सारी व्यवस्था, जो ग्रामोद्योग सघके हाथमें थी, अपने हाथमें ले ली। वहाका रसोअीघर नौकरोंसे चलता था। बापूजीने कहा कि अब तो आश्रमके ढगका अपने सहयोगसे चलना चाहिये। अुसकी जिम्मेदारी हममें से कोअी ले ले। श्री महादेवभाअीके साथ विचार करके बापूजीने वह जिम्मेवारी मुझे देनेका निश्चय किया। मैंने कहा कि भोजनालयके लिअे

बाजारसे सामान खरीदना मेरे स्वभावके अनुकूल नही है। बापू गंभीरतासे बोले .

"अैसी बात क्यों करते हो? जो काम मिल जाय अुसीको कर्तव्यप्राप्त समझकर करना चाहिये। अिसीको भगवानने गीतामें 'योग. कर्मसु कौशलम्' कहा है। किसी कामकी प्राप्तिकी लालसा भी न हो। मैं तुमको यही सिखा देना चाहता हू कि किसी भी काममें हमको सकोच न होना चाहिये। कार्य तो बाहरकी चीज है और अीश्वर अतरकी चीज है। बाहरी पूजा तो भक्त कर सकता है और दभी भी। परन्तु अन्तरकी पूजा तो भक्त ही कर सकता है। बस, अगर हम अतरके पुजारी बन जाय तो हमारा काम निबट जाता है।"

बापूके ये अुद्‌गार प्रेम और सहृदयतासे सने हुअे थे। मुझे यह सुनकर खूब आनद हुआ और मैंने अपनी बातको वापिस खींच लिया। लेकिन बापूजीने बाजारसे सामान खरीदनेका काम मुझे न देकर श्री व्रजकृष्णजी चादीवाला[१] को दिया। बापूजीने आगे कहा, "यह ग्राम-व्यवसाय मेरे जीवनका आखिरी कार्य है। अिसको सुशोभित करना मेरा धर्म है। जो लोग मेरे पास रहना चाहते है, वे आश्रम-जीवन बितायें और अिस काममें मेरी मदद करे।"

श्री सत्यदेवजी शास्त्री[२] से निष्काम कर्मके बारेमें बात करते हुअे बापूजीने कहा कि "कर्तव्यप्राप्त कर्म अपनेको निमित्त मात्र समझकर करना चाहिये। जगतमें अनेक शक्तिया अपना काम कर रही हैं। हम तो अुन शक्तियोंमें से क्षुद्रसे क्षुद्र शक्ति रखते हैं। यह अहंभाव रखना तो मूर्खता है कि मैं करता हू।" बापूजीने यक्ष और पाडवोंका दृष्टात दिया।

मैं रसोअीघरमें कडाअीसे नियमोंका पालन करता था। अिसलिअे भोजनालयमें मेरा रहना कुछ आदमियोंको अखरता था। जब मैं भोजनालयके अिस कामसे अूबने लगा, तब मैंने अपनी मन स्थिति बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा

"सच्ची पाठशाला तो पाकशाला ही है। साबरमती आश्रमके आरभमें पाकशालाका काम मेरे, बासासाहबके तथा विनोबाके हाथमें रहा। यह कार्य

१ दिल्लीके अेक प्रसिद्ध कार्यकर्ता।

२ साबरमती आश्रममें बापूके पास आये थे। अुस समय महिलाश्रममें शिक्षक थे।

कठिन तो है ही। परन्तु अिसमें लोगोंकी मनोवृत्ति पहचाननेका अच्छा अवसर मिलता है। मानापमान सहन करना ही तो बडीसे बडी साधना है। मेरा धर्म है कि तुमको हारने न दू। अगर तुम भागना चाहो तो भागनेके लिअे स्वतत्र हो, परन्तु तुम्हारा भागना मुझे अच्छा न लगेगा। और आखिर तो जहा जाओगे वहा भी मनुष्य ही रहते होंगे और अुनसे भी सघर्ष होगा तो क्या करोगे? मेरा मार्ग तो लोगोंके बीचमें रहकर सेवा करनेका है। पहाडोंमें, जगलमें भाग जानेका मेरा मार्ग नही है। और वह मुझे पसद भी नही है, क्योकि अुसमे दभ भी हो सकता है। यह जगत हिंसामय है। अिसमें अहिंसामय बनकर रहना ही पुरुषार्थ है। तुम नाथके और सुरेन्द्रके पुजारी हो, यह समझकर ही मैंने तुमको अितनी जिम्मेदारीका काम सौंपा है। अिसीमें अीश्वरका दर्शन करना और हरअेक कामको सफाअी और सूक्ष्मतासे करना बहुत बडी साधना है। जब तक मेरे मनमें न आ जाय कि अब तुमको किसी गावमें जाकर सेवाकार्य करना चाहिये या तुम्हारे मनमे निश्चयपूर्वक न आ जाय तब तक यहासे तुम्हारा हटना मुझे अच्छा न लगेगा। मानापमानका सहन करना तो बडा तप है। तब ही हम गीताके बारहवें अध्यायको अपने जीवनमे अुतार सकते हैं। किसी बकरेको न मारना ही अहिंसा नही है। सबसे प्रेम करना ही अहिंसा है। तुम्हारे कामसे मैं खुश हू। तुम्हारा सब काम मेरी नजरमें है। तुम प्रसन्नतापूर्वक रहो और अपना काम करो।"

७

मगनवाड़ीके प्रयोग और पाठ

कार्यारंभ

सन् १९३४में बापूजीके मनमें जब ग्रामोद्योग संघकी स्थापनाका विचार आया तो प्रश्न अुठा कि अुसका मुख्य केन्द्र कहां रखा जाय। जमनालालजीके मनमें बहुत दिनोंसे चल रहा था कि किसी तरह बापूजीको वर्धामें बसाया जाय। बस, अिस अवसरका लाभ लेकर अुन्होंने तुरन्त हाथ फैला दिया और कहा कि अुसके लिअे वर्धा सबसे अच्छी जगह है, क्योंकि वह हिन्दुस्तानके मध्यमें है और ग्रामोद्योग संघके लिअे मैं अपना बगीचा तथा मकान और सब प्रकारकी सुविधा देनेको तैयार हूं। बापूजीने अुसे स्वीकार किया और जमनालालजीने अपना सुन्दर बगीचा और मकान ग्रामोद्योग संघको समर्पण किया। अुसका नामकरण मगनलालभाअी गांधीके नामसे मगनवाडी किया। अिसलिअे मगनवाडी बापूजीका मुख्य क्षेत्र बना और ग्रामोद्योग संघको व्यवस्थित और लोकप्रिय बनानेकी दृष्टिसे बापूने अपना डेरा मगनवाडीमें डाला। बापू मगनवाडीमें करीब डेढ साल रहे। अितने समयमें ग्रामोद्योगोंके पुनरुद्धार, ग्राम-सफाअी, भोजनके प्रयोग, रचनात्मक कार्यकर्ताओंके साथ हुअी चर्चाअें — अनेक अैसे प्रसंग हैं कि बापूके मगनवाडी निवासका अेक स्वतंत्र बड़ा ग्रंथ बन सकता है। अिन प्रसंगोंको अच्छी तरह तो महादेवभाअी[1] ही लिख सकते थे। शायद अुनकी डायरीमें से कुछ मिलें भी। कुमारप्पाजी[2] कुछ लिख सकते हैं। मेरा तो सिर्फ भोजनालयके कारण या घरेलू कारणोंसे बापूजीसे जो थोड़ा-बहुत संबंध आता था अुसके बारेमें ही कुछ अुदाहरण यहां दूंगा।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है बापूजीने कार्यारंभ वहांके रसोअीघरका चार्ज अपने हाथमें लेकर किया। अुन्होंने लोगोंको हाथ-पिसा आटा, हाथ-कुटा चावल, घानीका तेल अित्यादि खानेका और अपने हाथसे ही रसोअी

---

१ श्री महादेव देसाअी, बापूजीके सेक्रेटरी।

२ श्री जे० सी० कुमारप्पा, प्रसिद्ध अर्थशास्त्री। अुस समय ग्रामोद्योग संघके मंत्री।

बनानेका पाठ देना आरंभ किया। अिस प्रकारका रसोअीघर चलानेका मेरे जीवनमें यह पहला प्रसंग था। विविध प्रकारके लोग आते थे, समय-बेसमय भी आते थे। अुन सबका आतिथ्य करना और अुन सबको संतोष देना बड़ा कठिन काम था। मगनवाडीमें भिन्न भिन्न रुचिके लोग थे। आटा सब लोगोंको बारी बारीसे पीसना पड़ता था। खाना बनाने और बरतन मलनेकी भी बारी थी, लेकिन अुसमें बहुत बाधाअें आती थी।

बापूने तेलकी घानी भी वहीं शुरू कर दी थी, जिसकी व्यवस्था श्री छोटेलालजी[1] ने की थी। बादमें अुसका चार्ज अप्रकाशबाबूको दिया गया था, जो 'ट्रिब्यून' के अुपसंपादक थे लेकिन अुसे छोडकर सत्संगके लिअे बापूके पास आ गये थे। लोगोंको रहनेके लिअे जगहकी भी तंगी थी। पश्चिमके दरवाजेके अुत्तरके कमरेमें सब लोग रहते थे। और अुसका नाम धर्मशाला हो गया था। कुछ दिन काकासाहब कालेलकर भी अुसमें रहे थे। भसालीभाअी[2] का कर्मयोग वहींसे शुरु हुआ था। जब वे भटकते भटकते बापूके पास आये तब अुनकी शारीरिक अवस्था बहुत खराब थी। पैर सूजे हुअे थे। दांत बिलकुल निकम्मे हो गये थे, क्योंकि वे केवल कच्चा आटा ही घोलकर पीते थे। बापूने अुनको धूपमें सिकी हुअी रोटी खाने और चरखा कातनेको राजी कर लिया और वहीं रहनेके लिअे कहा। वे रह गये किन्तु अुस समय वे बापूसे ही बात करते थे और बाकी समय मौन रखते थे।

छोटे छोटे कामोंमें भी बापू बहुत बारीकीसे ध्यान देते थे। मीराबहन बापूकी व्यक्तिगत सेवा करती थी। रसोअीघरमें नित नये अैसे प्रश्न आते थे, जिनके लिअे मुझे बापूके पास जाना पड़ता था। मेरे खिलाफ शिकायतें भी बापूके पास जाया करती थी। भोजनका क्रम यह था:

---

१ १९१७ से साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख आश्रमवासी। अिनका विस्तृत परिचय 'सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग' नामक प्रकरणमें आयेगा।

२ श्री जयकृष्ण भसाली। साबरमती आश्रमसे बापूजीके साथी, जिन्होंने १२ बरसका मौन लिया था। अुन्होंने कअी लंबे लंबे अुपवास व भोजनके विचित्र विचित्र प्रयोग किये हैं। सन् '४२ के आन्दोलनमें अिन्होंने सबसे लम्बा अुपवास किया था, जो ६३ दिन तक चला था। अिसका वर्णन 'अगस्त आन्दोलन और आश्रमवासी' प्रकरणमें आयेगा।

नाश्तेमें दलिया और १० तोला दूध।
दोपहरको २० तोला दही या छाछ और रोटी तथा साग।
शामको २० तोला दूध और खिचडी या चावलके साथ साग।

*　　　*　　　*

अब मैं यहां कुछ अैसे प्रसंग देता हूं, जिनसे मुझे बापूके हृदयके विविध पहलुओंका ज्ञान हुआ, जीवनमें मैंने बहुत बहुत सीखा और अुनके प्रकाशमें अपने जीवनको गढनेका प्रयत्न किया।

१

पहला पाठ

अेक रोजकी बात है। दलिया खतम हो गया था। श्री तुलसीमेहरजी नेपालसे कुछ खानेकी चीजें लाये थे। अुन्होंने कहा कि सवेरे नाश्तेमें सब लोगोंको बांट देना। दलिया नहीं था और ये चीजें मिल गअीं, अिस कारण मैंने दूसरे दिन नाश्तेमें लोगोंको दूध तथा मेहरजीकी लाअी हुअी दूसरी चीजें दीं। शामको घूमते समय बहनोंने बापूके सामने बात निकाली कि आज सुबह नाश्तेमें दलिया नहीं बना था। बापू चौंके कि यह कैसे हो सकता है?

शामकी प्रार्थनाके बाद मेरी पेशी हुअी। बापूने पूछा, क्यों बलवंतसिंह, आज दलिया क्यों नहीं बना था? मैंने सब परिस्थिति और कारण बताया। अिस पर बापूजीने लम्बा भाषण सुनाया। कहा, "देखो मैंने ग्रामोद्योग संघका रसोअीघर जिस तरहसे चलता था वह बंद कर दिया है और सबको खाना खिलानेकी जिम्मेदारी अपने सिर पर ली है। अुनको मैंने बता दिया है कि मैं तुमको क्या क्या खिलाअूंगा, और वह सब तुम्हारे मारफत करवाना चाहता हूं। मैंने अुन्हें खिलानेका जो वचन दिया है अुसमें अगर अुनकी अनुमति लिये बिना कुछ परिवर्तन करूं तो मेरे लिअे यह अुचित नहीं है। तुलसीमेहरकी चीजें खानेके समय या अूपरसे दे सकते थे, लेकिन दलिया तो लोगोंको देना ही चाहिये था। दलियाके बदलेमें दूसरी चीजें देकर हम दलिया न बनानेका बचाव नहीं कर सकते। जो लोग दलिया ही पसंद करते है और दूसरी चीज नहीं लेते, अुनके लिअे तुम्हारे पास क्या जवाब

है? अगर दला हुआ दलिया नही था तो मुझे तो कहना था। मैं खुद दलनेमें मदद करता।"

शिकायत करनेवाली बहनो पर मुझे गुस्सा आया। पर बापूका कहना ठीक लगा। मैंने अपनी भूल कबूल की और कहा कि आगे जब कभी अैसा प्रसग आयेगा तब आपकी मदद जरूर लूगा। आगे अैसी भूल नही होगी।

लोग ठीक समय पर अपने हिस्सेका आटा नही पीस पाते थे। अेक रोज आटा खतम हो गया तो मैं सीधा बापूके पास गया कि आज आटा नही है और कोअी पीसनेवाला भी नही है। मैं चाहता तो खुद पीस सकता था और कोशिश करके किसी दूसरेकी मदद भी ले सकता था। लेकिन मेरे मनमें तो अुस रोज बापूजीने कहा था अुसकी थोडी चिढ थी। अिसलिअे मैं अुनकी परीक्षा लेना चाहता था। बापूने कहा, चलो मैं चलता हू पीसनेके लिअे। बापू आये और मेरे साथ चक्की पर बैठ गये। बस, हमारी चक्की चलने लगी।

बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे थे, अिसलिअे अेक तरफ तो खुशी हो रही थी कि मैं बापूको चक्की पर कैसे घसीट लाया और आज बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे हैं। परन्तु दूसरी तरफ मेरे मनमें दया और शर्म आ रही थी कि यह तो मैं भी कर सकता हू। बापूजीको क्यो कष्ट दू? अुस समय श्री काले, जो अेक लाखके अिनामवाले चरखेका प्रयोग कर रहे थे, वही थे। वे अेक कैमरा लेकर बापूजीका फोटो लेने लगे। मैं नही जानता वह चित्र कही आया या नही, या आया तो कैसा आया। लेकिन मेरे मनमें अुसे प्राप्त करनेकी अिच्छा बनी रही है।

सचमुच ही मेरे लिअे बापूका वह बडा भारी पाठ था। मैंने अपने आपको धन्य माना कि जगतके अेक महापुरुष अिस तरह मेरे साथ चक्की पीस सकते हैं। बापूजीकी कर्तव्यनिष्ठा और छोटे कामको भी वे कितना महत्त्व देते हैं अिसका ज्ञान मुझे अिस बातसे हुआ। थोडी देरमें मैं हारा और मैंने बापूजीसे कहा कि आप जाअिये मैं खुद ही पीस लूगा। बापूजीके पास कामका तो पहाड पडा था। बोले, हा मेरे पास तो बहुत काम पडा है। और वे चले गये। अुस रोजसे मैंने अिस बातकी सावधानी रखी कि अिस प्रकारका प्रसग कभी न आवे। लेकिन अैसे प्रसग और भी आये, जब बापूजीने कामकी भीडमें भी मुझसे और दूसरोंसे अनेक काम करवाये।

२

भगवान कृष्णका स्मरण

अेक दिन बापूजीने अेक योजना निकाली कि सबके जूठे बरतन बारी बारीसे दो-तीन आदमी मलें और रसोअीघरके पकानेके बरतन दो आदमी बारी बारीसे अलग मलें। अिससे लोगोंमें आपसमें प्रेमभाव बढेगा, अेक-दूसरेके बरतन मलनेमें जो घृणा है वह मिट जायगी और सबका समय भी बचेगा। अुन्होंने अिसका महत्त्व मुझे समझाया। लेकिन अुनकी यह बात मेरे गले न अुतरी। मैंने कहा कि सबके जूठे बरतन अेकसाथ मलनेमें काफी अव्यवस्था होनेका डर है। बापूने कहा कि अव्यवस्थामें व्यवस्था लाना ही हमारा काम है। चलो, पहली बारी मेरी और बाकी। बस, बाको लेकर बापूजी बरतन मलनेकी जगह जाकर बैठ गये। और सबसे कह दिया कि थाली यहां रख दो और हाथ धोकर चले जाओ। पहले तो लोग घबराये, लेकिन बापूका रुख देखकर सब बरतन रखकर चले गये। बस, बापू और बा दोनों बरतन मलनेके लिअे जुट गये। मैं रसोअीघरके चार्जमें था। मुझे वे ना नहीं कह सकते थे। अिसलिअे मैं भी अुनकी मददमें जुट गया।

जब बापू और बा सबके जूठे बरतन साफ कर रहे थे, तब मेरे मनमें भगवान कृष्णकी याद आ रही थी और मैं सोच रहा था कि युधिष्ठिरके यज्ञमें भगवान कृष्णने जूठन अुठानेका काम क्यों लिया होगा। मनमें आनंद और शर्मका द्वन्द्व चल रहा था। लेकिन बापूजी और बाको हम कामसे कैसे विरक्त करें, अिसका रास्ता नहीं सूझ रहा था। साथ ही साथ यह भाव भी पक्का हो रहा था कि जब बापू और बा अिस तरहका काम कर सकते हैं, तो हमारे मनमें किसी भी कामके लिअे छोटे-बडेका भेद नहीं रहना चाहिये। बीच बीचमें बा और बापूका मनोरंजन भी चल रहा था। दोनोंमें होड लग रही थी कि देखें कौन अच्छा साफ करता है? बापूजी बरतन साफ करते और कहते, "क्यों बलवंतसिंह, कैसा साफ हुआ है? तुम क्यों हिम्मत हारते हो? आदमी निश्चय करे तो दुनियामें कौनसा अैसा काम है जो वह नहीं कर सकता। आखिर हमारे घरोंमें क्या होता है? स्त्रियां ही घरके सब जूठे बरतन साफ करती हैं। यह हमारा बडा कुटुम्ब है। और हमें स्त्री-पुरुषका भेद मिटाना है अिसीलिअे तो मैंने रसोअी-घरका चार्ज किसी बहनको न देकर तुमको दिया है। साबरमतीमें भी मैंने

रसोअीका चार्ज विनोबाको दिया था। मैं मानता हू कि स्त्री-पुरुषके कामोंके विषयमें जो भेद है वह हमारे आश्रममें तो रहना ही नही चाहिये। और खास तौर पर रसोअीघर तो पुरुषोंको ही चलाना चाहिये। मैंने अपने जीवनमें अिस प्रकारके अनेक प्रयोग किये है। और मैं अिस नतीजे पर पहुचा हू कि सामूहिक रसोअीघर चलानेमें जो कुटुम्ब-भावना बढती है, वह अन्य प्रकार नही बढती। जो रसोअीघर चलाता है अुसकी जिम्मेदारी बहुत ब होती है। सब चीजोंको व्यवस्थित और स्वच्छ रखना और जितने भोजन करनेवाले हैं अुनको भगवान समझकर प्रेमसे खिलाना यह आध्यात्मिक प्रगतिकी बडी साधना है। तुम अिसमें पास होगे तो मैं समझूगा कि तुम सेवा कर सकते हो।"

मेरे मनमें अेक तरफ तो यह चल रहा था कि जल्दीसे जल्दी बापूजी बरतन छोडकर यहासे चले जाय और दूसरी तरफ यह चल रहा था कि बापूजी जितनी देर यहा रहेंगे अुतना ही अच्छा है। क्योंकि मुझे दोनो प्रकारके पाठ मिल रहे थे। अगर मैं चित्रकार होता तो अुस दिनका चित्र बनाकर लोगोंके सामने रखता। बापूका अिस प्रकारका चित्र मैंने अेक भी नही देखा है और शायद किसीके पास होगा भी नही।

यह लिखते समय मेरे मनमें जो भाव अुठ रहे हैं, अुनको कलमबद्ध करना भी मेरे सामर्थ्यसे बाहरकी बात है। बापू कहा और हम कहा ? हमको अुन्होंने कितने कितने कष्ट सहन करके कैसे कैसे सुन्दर पाठ पढाये। लेकिन हम पूरी तरहसे अुनके पाठोंको हजम नही कर सके। अब मनमें आता है कि दो-चार सालके लिये बापूजी फिर आ जाय तो अुनसे खूब सीखें। पर 'अब पछताये होत क्या जब चिडिया चुग गअी खेत'। गया समय हाथ नही आता। मेरे मनमें अैसा थोडे ही था कि कभी बापूजी हमसे अलग होनेवाले हैं। लेकिन जो दुनियाका नियम है, वही हम पर भी लागू हुआ।

३

पहले खुद फिर दूसरे

तेलघानी बापूजीके कमरेके पीछे ही चलती थी और तिल आदिकी सफाअी बापूजीके सामनेके बरामदेमें होती थी। तिलकी सफाअीका काम बा और दूसरी बहनें करती थी। अेक रोज पूज्य बाने मुझसे कहा, बलवत

देखो यह तिल बहुत बारीक है और अिसमें बारीक कचरा है। मेरी आँखोंसे नहीं दीखता है। तुम अेक बाओीसे सफाओी करा दो न। मैंने बड़े अुत्साह और आनन्दके साथ हाँ कहा।

अुस समय अेक बोरेकी सफाओी करनेके लिअे मजदूरनें दो या चार आने पैसे लेती थीं। मैंने तुरन्त ही अेक बाओीको तिल साफ करनेके लिअे लगा दिया और मनमें खुश होने लगा कि मैंने बाकी मदद की। मुझे पता नहीं था कि थोड़ी देरमें ही बा और मेरे दोनोंके अूपर बापूका हंटर पड़नेवाला है।

बापू किसी कामसे या स्नानके लिअे कमरेसे बाहर निकले। मजदूर बाओीको तिल साफ करते हुअे देखकर बोले, "अिस बहनको किसने लगाया?" अब बिल्लीके गलेमें घंटी बांधनेका सवाल खड़ा हो गया। जवाब कौन दे?

मैंने डरते डरते धीरेसे कहा, "बापूजी, मैंने लगाया है।"

बापू बोले, "क्यों? मैंने तो यह काम बाको और दूसरी बहनोंको सौंपा है न? तब तुम अिसके बीचमें क्यों पड़े?"

मैंने शरमाते हुअे कहा कि तिल बहुत बारीक हैं और अुनमें बारीक कचरा है। यह साफ करनेमें बाको नहीं दीखता है। फिर अिसकी सफाओीके पैसे भी ज्यादा नहीं लगेंगे।

बापू गंभीर हो गये और बोले, "ठीक है, तो दूसरा सब काम छोड़कर मैं पहले तिल साफ करूँगा।" वे सूप लेकर तिल साफ करने बैठ गये। यह देखकर मुझे तो पसीना आ गया।

पासवाले कमरेमें बा हमारा संवाद सुन रही थीं। शायद अुनके मनमें भी मेरे अूपर दया और बापूके अूपर कुछ गुस्सा आ रहा होगा। वे थोड़ी देरमें बाहर आओीं और दुःखी मनसे बापूके हाथसे सूप छीनकर बोलीं "आप अपना काम करें। हम साफ कर लेंगे।" बापू चले गये और बा तिल साफ करने लगीं। अुस समय मुझे भी यह सोचकर बापूके अूपर बड़ा गुस्सा आया कि छोटीसी बातके लिअे बापू बाको कितना कष्ट देते हैं। लेकिन जिसको मैं छोटी समझता था, वह बापूके लिअे बड़ी बात थी। वे तो गृह-अुद्योग और ग्रामोद्योगके लिअे ही वहाँ बैठे थे। अगर अुनको सबसे पहले बासे न कराते या खुद न करते तो दूसरोंसे कहनेके लिअे बल कहाँसे लाते?

४

किफायतशारीका अनोखा नमूना

अेक वार वजाजवाडी, वर्धामें काग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक थी। वापूजीने भोजनके लिअे सबको निमत्रण दिया। मुझे बुलाकर कहा कि देखो आज अितने मेहमान आनेवाले हैं। अुनके भोजनका प्रवध करना है।

मैंने कहा, "मेरे पास अितनी थाली-कटोरी नही है।" वे वोले, "वडके पत्ते तोड लाओ और अुनकी पत्तलें वना लो। कटोरियोंके स्थान पर मिट्टीके सकोरे अिस्तेमाल करो। आखिर देहातके लोग क्या करते हैं? जब अुनके यहा मेहमान आते है तो क्या वे नये वरतन खरीदते हैं? हम भी तो यहा गरीबीका व्रत लेकर ही बैठे हैं न। हम तवगर तो है नही जो नये नये वरतन खरीदते रहे। और देखो जो मिट्टीके सकोरे हैं वे भी खानेके बाद फेंक देनेके लिअे नही हैं। अुन सबको धोकर, साफ करके फिर अग्निमें शुद्ध करके रख देना।"

पत्तलकी वात तो मेरी समझमें आ गअी, लेकिन मिट्टीके सकोरोको काममें लेकर और अग्निमें शुद्ध करके फिर कामने लेनेकी बात मेरे मनको नही पटी। क्योंकि अुत्तरप्रदेशमें तो यह रिवाज है कि मिट्टीका वरतन काममें लिया और फेंक दिया। और यही सस्कार मेरे चित्त पर जमा हुआ था। अिसलिअे अुसे फिर काममें लानेसे घृणा थी। अिस पर बापूजीने अेक लवा भाषण सुनाया।

वापूजीने कहा, "देखो कुम्हार अुस पर कितनी मेहनत करता है! अुसे वनाता है, तपाता है, अुस पर रग करता है। और हम अेक ही वार अिस्तेमाल करके अुसे फेंक दें यह तो हिंसा है। सामानकी वरबादी तो है ही।" मुझे अव ठीक याद नहीं है लेकिन पेरिन वहन या गोसी बहनका नाम लेकर वापूने कहा कि अुन्होंने मुझे बताया है कि अिस तरहसे मिट्टीके वरतनका अुपयोग हो सकता है और वे करती भी हैं। तो हम भी क्यों न करें?

बापूजीकी वात पूरी तरह तो मुझे नही जची, लेकिन मैंने प्रयोग करना कबूल किया। सकोरे दिल्लीसे हमारे साथ आये थे। जब सब लोग खाने बैठे तो मैंने सूचना की कि मिट्टीके वरतन कोअी फेंक न दें। धोकर अेक तरफ रख दें। अुनका फिर अिस्तेमाल किया जायगा। अिस पर राजेन्द्रवावू चौंक

कर बोले, "अुन्हें फिर अिस्तेमाल किया जायगा?" बापू अुनके पास ही बैठे थे। अुन्होंने कहा, "हां, अिनको फिरसे अग्निमें तपाकर शुद्ध किया जायगा और तब अिनका अुपयोग करनेमें कोअी हर्ज नहीं है।" बापूकी यह बात अुनको अटपटी लगी, लेकिन वे कुछ बोल नहीं सके। मैंने सब बरतन अिकट्ठे किये और फिरसे अुन्हें अग्निमें तपाकर अुनका अुपयोग किया। अनुभव यह आया कि जिन बरतनोंमें दूध या दहीका अुपयोग किया गया था, अुनकी शकल भद्दी हो गयी थी। क्योंकि अुनमें चिकनाअीका शोषण हो गया था, और अिस कारण अुन पर रोगन-सा फिर गया था। पानीके बरतनोंमें कुछ फर्क नहीं हुआ और वे बिलकुल कोरेकी तरह निकले। तबसे मिट्टीके बरतनोंका अक्सर मैं पानीके लिअे ही अुपयोग करता था। और वे शुद्ध कर लिये जाते थे। सकोरों-पत्तलोंका सिलसिला मगनवाडीमें अक्सर चलता था।

५

जीवनका कार्य और आशीर्वाद

मैं प्रारंभमें अेक बात कहना भूल गया। जब हम वर्धा पहुंचे तब पहले तो बापूजीने मेरे साथ घूम कर मगनवाडीकी सारी जमीन मुझे बतायी और कहा कि बिना बैलके हाथ-पैरसे तुम काम कर सको अुतनी जमीन ले लो और अुसमें हाथसे खोदकर सागभाजी पैदा करो। तुम तो किसान हो न? और सब किसानोंके पास बैल भी कहां होते हैं? हम तो गरीब किसान हैं। अिसलिअे हमारे पास कुछ भी न हो तो भी हम अपनी सागभाजी कैसे पैदा कर सकते हैं, यह हमें सीख लेना चाहिये।

मगनवाडीके कुअेंके पास ही जमीनका अेक छोटा सा टुकडा खाली पडा था। अुसे मैंने और बापू दोनोंने पसन्द किया और मैं फावडा लेकर अुसमें जुट गया। आज सोचता हूं तो ध्यानमें आता है कि बापूने अुस जमीनके टुकडेमें कार्यारंभ करानेके साथ साथ मेरे जीवनका कार्य और अपना आशीर्वाद दोनों ही मुझे दे दिये थे। महान पुरुषोंकी दृष्टि कितनी दीर्घ होती है, अिनकी कल्पना अुस समय तो नहीं हुअी थी किन्तु आज हो रही है। लोग किसी बडे कामका श्रीगणेश करनेके लिअे और आशीर्वाद लेनेके लिअे किसी बडे आदमीको बडे प्रयत्नसे बुलाते हैं। लेकिन मेरे कामका श्रीगणेश बापूने खुद आग्रहपूर्वक प्रेमभरे आशीर्वाद देकर कर दिया। बापूकी छोटी छोटी चीजोंमें कितना रहस्य भरा था, यह अुस समय ध्यानमें

नही आता था। अब जब अुनका स्मरण आता है तो अेक अेक चीज स्मृतिपट पर चलचित्रकी तरह आकर सामने नाचने लगती है। अिससे आनद और दुःख दोनो होते हैं। आनद अिस बातका कि भगवानने हमको अैसा सुअवसर दिया कि बापूजीके अितने निकट रहकर हमें सब सीखनेको मिला और दुःख अिस बातका कि तब हमने अुस बातको आजकी तरह क्यो नही समझा। सचमुच भगवान मनुष्यके जीवनमें कैसे कैसे खेल खेलता है, लेकिन हम अुनका रहस्य नही समझ पाते।

मैं अुस टुकडेमें रोज खोदता, क्यारी बनाता, खाद डालता और कुछ न कुछ भाजी लगाता। जब अुग जाती तो बापूको दिखाने लाता। बापू देखते और आनदसे मुक्तहास्य हसते। कहते, "मेरे खाने लायक कब होगी?" मैं अुतावला हो जाता और रातदिन चिन्ता करता कि जल्दी बढ जाय तो बापूको खिलाअू। जब थोडी बढ जाती, मैं छोटेसे पत्ते लेकर जाता और धोकर बापूजीके सामने रख देता। अुस समय बापूजीको और मुझे जो आनद होता था अुसकी तुलना मा और बच्चेके पारस्परिक भावसे ही की जा सकती है। निःसन्देह अुस समय हमारी दोनोंकी मानसिक अवस्था अैसी ही थी।

६

भानूबापा

बापूजीके आसपास शिवजीकी बरात तो थी ही, लेकिन अुसमें भानूबापामें तो सचमुच शिवजीके ही मुख्य गुण थे। वे कच्छके थे। बापूजीके प्रति अुनकी अगाध श्रद्धा थी। अुम्रमें ६० से अूपर थे। बापूजीके पास जायें और बोले, "मुझे तो आपके पास सेवा करना है। जिस कामको कोअी न करे अैसे फालतू कामको मैं करूगा और सबके बाद जो बच जायगा अुससे ही अपना गुजर कर लूगा।" अुनके पास कुछ पैसा था। वह भी अुन्होंने बापूजीको देनेको कहा। अुसका क्या हुआ मुझे पता नही चला। बापूजीने कहा, "आप मगनवाडीमें चलनेवाले कामोंमें से अपनी अनुकूलताका काम पसद कर लें।" अुन्होंने सफाअीका काम पसद किया। सुबह झाडू और बाल्टी लेकर निकलते और मगनवाडीके कोने कोनेमें फिर जाते। जहा भी कचरा और गदगी पाते वहींसे अपनी बाल्टीमें डालकर अुचित स्थान पर पहुचा देते। जब सब लोग भोजन करके चले जाते तो मेरे पास आकर कहते, "भाअी

जो कुछ बचा हो मुझे दे दो।" मैं अुनका ध्यान तो रखता ही था। लेकिन मगनवाडीमें मेहमानोंकी अितनी अनिश्चितता रहती थी कि कब कितने मेहमान आ जायेंगे अिसका कोअी ठिकाना नहीं था। अिसलिअे कभी कभी मैं कठिनाअीमें पड जाता था। लेकिन वे तो अवधूत ठहरे। कहते, अरे भिक्षा कम तो क्या होगा? और जूठन डालनेकी बाल्टीमें जूठन निकाल कर ले जाते। मुझे अिससे दुःख और घृणा भी होती। कपड़ेमें मात्र लंगोटी रखते थे। ओढने-बिछानेके बिस्तरका तो सवाल ही नहीं था। चटाअीका ही कोअी टुकड़ा टुकडा लेकर अुसी पर कहीं पड़े रहते। और सारी मगनवाड़ीका समाचार बापूजीको सुना आते। अुनके भोजनकी अिस अव्यवस्थाने मुझे बुरा लगता। मैंने बापूजीसे कहा। बापूजी बोले, "भानुबाबा तो अवधूत है। अुनकी सादगी और अपरिग्रहको तो मुझे भी अीर्षा होती है। लेकिन अुनके भोजनकी अव्यवस्था मुझे पसंद नहीं है। मैंने अुन्हें समझाया भी। लेकिन वह बेचारा भी क्या करे? अपनी आदतसे लाचार है। अुसमें कितनी सेवा और त्याग है! अगर व्यवस्था भी अुसके जीवनमें आ जाय तो सोनेका आदमी है।'

७

त्यागका पाठ

अुसी समय हरिलाल गांधी भी बापूजीके पास आ गये थे। कहते थे कि मेरी भूल मेरी समझमें आ गयी है और अब मैं बापूजीके पास ही रहूंगा। बापू तो महान पुरुष थे। मैं और हरिलालभाअी अेक ही कमरेमें रहते थे। पहलेसे अुस कमरेमें मैं रहता था, अिसलिअे मैं अुस पर अपना ज्यादा हक समझता था। हरिलालभाअीने चाहा कि वह कमरा अुनके लिअे खाली कर दिया जाय और मैं कहीं दूसरी जगह चला जाअूं। मैंने कहा कि यह नहीं हो सकता। यह शिकायत बापूजीके पास गयी। अुस समय बापूका अेक महीनेका मौन चल रहा था। बापूने मुझे बुलाया और पूछा, "तुम्हारा और हरिलालका क्या झगड़ा है?" मैंने सब बताया। बापूने लिखा:

"तुम अुसको कमरा दे दो, क्योंकि तुम तो पेड़के नीचे भी रह सकते हो। तुम मुझे छोडकर भागनेवाले नहीं हो, लेकिन हरिलाल तो मुझसे दूर दूर भागता है। अब अुसके दिलमें राम बैठा है और मेरे पास आया है, तो छोटी छोटी बातोंके लिअे मैं अुसको तंग करना नहीं चाहता हूं। अगर वह टिक जाय तो बहुत बड़ी बात होगी। सबसे बड़ा संतोष तो बाको

होगा। बाकी यह बडी शिकायत है कि मैं हरिलाल पर ध्यान नही देता। लेकिन मैं अपने ढगसे ही ध्यान दे सकता हू। मेरे मनमें मेरे और परायेका भेद ही नही है। जो मेरे रास्तेमे चलता है वह मेरा है। दूसरे रास्तोंसे चलनेवालोका मै द्वेष नही करूगा, लेकिन अुनकी मदद भी नही करूगा। अिसलिअे तुमसे मैं त्यागकी आशा रख सकता हू। हरिलालसे नही।"

मै बापूकी बात समझ गया और वह कमरा हरिलालभाअीके लिअे मैने खाली कर दिया। अुस दिनसे मैं सचमुच ही पेडके नीचे रहने लगा। बापूजीने मुझे पेडके नीचे रहनेको क्यो कहा, अुसका मर्म मैं पेडके नीचे रहकर समझा। वास्तवमें जिस चीजकी योग्यता मुझमें नही थी अुसकी आशा और शुभ सकल्प करके बापूजीने मुझे किस तरह पोषण दिया है, अिस बातका जब मैं विचार करता हू तो मेरा हृदय गद्गद हो जाता है और मेरा मस्तक बापूजीके चरणोमें झुक जाता है।

बापूजीने मुझे जापानी साधु श्री केशवभाअी[1] और श्री राजकिशोरी[2] बहनको हिंदी पढानेका काम सौंपा। केशवभाअी टूटीफूटी अग्रेजी तो जानते थे, लेकिन वैसे जापानीके अलावा और कुछ नही जानते थे। मैं भी हिंदी और गुजरातीके अलावा और कुछ नही जानता था। अिसलिअे अुसी पेडके नीचे अिशारोंसे काम लेकर हमारी हिन्दी पाठशाला शुरू हुअी।

८

काम करो तो खाना मिलेगा

अेक रोज अेक नौजवानने मुझसे आकर कहा कि "मुझे दो तीन रोज ठहरकर यहा सब देखना है। बापूजीसे मिलना है। मेरे पास खाने-पीनेके लिअे कुछ भी नही है। यही भोजन करूगा।" मैंने जाकर बापूजीसे कहा। बापूजीने अुनको बुलाया और पूछा कि वे कहाके रहनेवाले हैं और अिस समय कहासे आ रहे हैं। अुन्होंने कहा, "मै बलिया जिलेका रहनेवाला हू और कराची काग्रेस देखने गया था। मेरे पास पैसा नही था अिसलिअे कभी गाडीमें बिना टिकट, कभी पैदल मागते-खाते गया और अैसे ही आया।" बापूजीने गभीरतासे कहा, "तुम्हारे जैसे नौजवानको यह शोभा नही देता।

---

१ अेक जापानी साधु जो बापूजीके परम भक्त थे।

२ श्री चन्द्र त्यागी मेरठ जिलेके निवासी थे और साबरमती आश्रममें बहुत दिनोंसे रहते थे। राजकिशोरीबहन अुनकी पुत्रवधू थी।

अगर पैसा पास नही था तो कांग्रेस देखनेकी क्या जरूरत थी? अुससे लाभ भी क्या हुआ? बिना मजदूरी किये खाना और बिना टिकट गाडीमें सफर करना चोरी और पाप है। यहा बिना मजदूरी किये खाना नही मिल सकता।" अुनका नाम अवधेश था। देखनेमें अुत्साही और तेजस्वी मालूम होते थे। वहाकी कांग्रेसके कोअी कार्यकर्ता थे। अुन्होने कहा, "अच्छा मुझे काम दीजिये। मैं काम करनेके लिअे तैयार हू।" बापूजीने मुझसे कहा "अुनको कोअी काम दो। जो आदमी हृष्टपुष्ट है और काम मागने आता है अुसको काम मिलना ही चाहिये। और अुसके बदलेमें खाना मिलना चाहिये। यह काम सल्तनत और समाज दोनोका है। लेकिन सल्तनत तो आज पराअी है। समाजका ध्यान भी अिस तरफ नही है। लेकिन मेरे पास जो आदमी आकर काम मागता है अुसे मैं ना नही कह सकता। हमारे पास अैसे काम पैदा करनेकी शक्ति होनी चाहिये कि हम लोगोको ना न कह सकें।" बापूने अुनसे कहा, "अच्छा अवधेश तुम यहा पर काम करो। मैं तुमको, खाना दूगा और आठ आने रोजके हिसाबसे अूपर मजदूरी दूगा। जब तुम्हारे किरायेका पैसा हो जाय तो टिकट लेकर घर चले जाना।" अवधेशजीने बडी खुशीसे कबूल किया।

मैंने अुनको रसोअीघरमें काम दे दिया। वे भाअी बडे मेहनती और श्रद्धालु थे। मेरा खयाल है करीब डेढ महीना अुन्होंने खूब काम किया और टिकटके लायक पैसा हो जाने पर अपने घर चले गये।

९

रसोअीघर और सफाअी

बापूजी रसोअीघरके छोटेसे छोटे काममें खूब रस लेते थे। कभी कभी तो घंटो चक्की दुरुस्त करनेमें चले जाते थे। चावल और अनाजकी सफाअी अुनके ही कमरेमें होती थी। वे सब लोगोंको अिकट्ठे करके काम करने और ग्रामोद्योगकी चीजें खानेका महत्त्व समझाते थे। रसोअीघरमें जाकर सब चीजोंकी सफाअी और व्यवस्था देखते थे।

अेक रोज हम लोग बिना धुले आलू काट रहे थे। अितनेमें बापू आ गये। बोले, "बलवन्त, बिना धोये आलू काटना तुम कैसे सहन कर सकते हो? अुनमें चारों तरफ मिट्टी लग जाती है। पहले अुसको खूब रगडकर धोना

चाहिये और फिर काटना चाहिये।" मेरा तो अिसकी तरफ विलकुल ही खयाल न था। मैं शरमाया और आगेसे धोकर ही काटनेका निश्चय किया।

अेक रोज वापू रसोअीघरमें आये और वड़े ध्यानसे चारों ओर देखने लगे। रसोअीघरके अेक अंधेरे कोनेकी छतमें मकडीका जाला लगा था। वापूने अुसे देख लिया। अुसकी तरफ अिशारा करके मुझसे कहने लगे, देखो वह क्या है? रसोअीघरमें जाला हमारे लिअे शर्मकी वात है। मैं तो शर्मसे गड-सा गया। मेरे मनमें कभी आया ही नही था कि अुस ओरसे रसोअी-घरकी छत भी साफ करना चाहिये। और यह भी नही समझता था कि वापू अैसी अैसी चीजोंको भी देखेंगे। मैं हैरान था कि वापू अितने विविध कामोंका भार अुठाते हुअे भी अिन चीजोंमें अैसी वारीकीसे अितना समय कैसे दे सकते है!

भोजनके अनेक प्रयोग चलते थे। वनानेका समय कैसे बचाया जा सकता है, चूल्हा अैसा हो जिसमें लकडी कम जले और धुआं न हो, क्या चीज वनानेसे समय कम लगेगा और पोषण भी पूरा मिलेगा—अिन प्रश्नों पर विचार होता था। मसालीभाअी नीम खाते थे और अुसकी वडी तारीफ करते थे। अिसलिअे वापूजीने खुद भी नीम खाना शुरू किया और दूसरोंको भी खिलाते थे। अिमलीका प्रयोग भी चलता था। वापूके पास दो-चार बीमार तो वने ही रहते थे, जिनका अिलाज वापू खुद करते थे। अुस समय चार मुख्य रोगी थे। मदालसा वहन, भाअू पानसे, हरजीवन कोटक और सुमंगल प्रकाश। भाअू पानसेके पेटदर्दका कारण ढूंढनेके विचित्र प्रयोगका वर्णन मैं आगे करूंगा।

पू० वा रसोअीघरके वारेमें वापूजीसे भी अधिक व्यवस्था और सफाअी पसंद करती थीं। जव रसोअीघरमें आ जातीं तो दोष वतानेकी झडी लगा देतीं। यह ठीक नहीं है, वह ठीक नहीं है, यह गन्दा है, वह गन्दा है। अपने हाथसे भी काम करने लगतीं। यह मुझे अच्छा नहीं लगता था। अैसा लगता था कि वा मेरी आलोचना कर रही हैं। अेक रोज मैंने वापूजीके पास जाकर शिकायत की। वापूजी खूव हंसे और वोले, "वाकी वाणी जितनी सख्त है हृदय अुतना ही कोमल है। तुम जानते नहीं हो। अव्यवस्था और गंदगी वासे विलकुल सहन नहीं होती। तुमको तो वाके कहनेसे अुपदेश लेना चाहिये और अपने कामको स्वच्छ व व्यवस्थित करना चाहिये, जिससे वाको कहनेका अवसर न मिले। 'निंदक वावा वीर हमारा' कवीरका

यह भजन जानते हो? आलोचना तो हमारे दोष बताकर हमें निर्दोष बनानेमें सहायक होती है।" जिस पर बापूजीने बाके और अपने पिछले जीवनकी लम्बी कथा सुना डाली।

बाके कहनेसे मुझे जितना दुःख हुआ था अुससे अधिक बापूकी सान्त्वनासे आनन्द हुआ। गुस्सेमें रोया-सा मुह लेकर बापूके पास गया था और हसता हुआ लौटकर बड़े अुत्साहसे अपने काममें लग गया।

१०

विचित्र प्रयोग

अेक रोज भाऊ पानसेने जाकर बापूसे कहा कि मेरे पेटमें दर्द है। बापू विचारमें पड गये कि दर्द क्यों हुआ? अुनसे पूछा कि तुमने क्या क्या खाया है? अुन्होंने भोजनमें खाअी चीजें बताते हुअे गन्नेका नाम भी लिया। बापूने कहा, "बस गन्नेसे ही दर्द हुआ है।" मै पासमें ही खडा था। मुझे बडा आश्चर्य हुआ। मैं बोला, "बापू, गन्नेने दर्द कैसे हो सकता है?" बापूने कहा कि गन्ना चूसते समय अुसके छोटे छोटे रेशे भीतर चले जाते है और वे कमजोर आतोंमें पहुचकर चुभते हैं।" बापूजीकी यह बात मुझे अेक बच्चेकी-सी लगी और बिलकुल नही पटी। मैंने आश्चर्यसे कहा, 'भला गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे कैसे अन्दर जा सकते हैं?" बापूने दृढतासे कहा, "जा सकते हैं। जिसकी परीक्षा करके मैं तुम्हे अभी बता देता हू।"

भाअूको अेनीमा दिया और मलको कपड़ेसे छनवाया। फिर मीराबहनको बुलाया और बोले, "देखो, मेरी तो नाक नही है, पर तुम सूघकर देखो अिसमें कैसी बदबू आती है?" मीराबहनकी नाक बहुत तेज मानी जाती थी। जब यह सारी क्रिया चल रही थी और बापूजी मीराबहनको सूघनेके लिअे कह रहे थे, तब मैं मन ही मन हस रहा था कि आखिर बापू यह क्या कर रहे हैं। बापूकी अिस बारीकीका महत्त्व मैं बादमें समझा और अिस घटनाको कभी नही भूला।

मीराबहनने मलको सूघकर क्या राय दी, यह मुझे याद नहीं है, बापूने मीराबहनसे कहा कि अिस मलको धूपमें सुखाओ और मक्खियां अुडाती रहो। जब मल सूख गया तो बापूने मुझे बुलाया और कहा, "तुम कहते थे कि गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे पेटमें नहीं जा सकते। अब देखो।"

मैंने देखा तो सचमुच ही अुसमें गन्नेके रेशे थे। मेरे लिअे यह नया दृष्टान्त था। मैं खुद भी गन्ना चूसता था पर खयाल नही था कि पेटमे रेशे चले जाते है। अब ध्यान दिया तो मालूम हुआ कि अच्छे नरम गन्नेके कुछ रेशे चले ही जाते है।

११

बापूके मनकी वेदना

अिसी समय बापूजीने कार्यकर्ताअोसे ग्रामसफाअी और सेवकोंके ग्राममें रहनेके बारेमें कहना शुरू किया।

बापूजी खुद भी पासके सिन्दी गावमें सुबह सफाअीके लिअे जाया करते थे। दूसरे लोग और मेहमान भी बापूजीके साथ जाते थे। वहासे मैलेकी बाल्टिया भरकर लाते थे और अुसका मगनवाडीमें खाद बनाया जाता था। सिन्दी जाते और आते समय अनेक प्रकारकी चर्चायें चलती थी।

अुस समयके बहुतसे प्रसग मेरी डायरीमें अधूरे-से दर्ज है। आज जब सोचता हू तो मन मसोस कर रह जाता हू कि मैंने पूरे-पूरे प्रसग क्यो नही लिख लिये। लेकिन अुस समय मैं न तो आजके जैसा लिखना ही जानता था और न मुझे अितनी समझ ही थी। तो भी मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने जितना लिख लिया वह भी कैसे लिख लिया। साबरमतीमें जब मैं लोगोसे कोचरब आश्रमके बारेमें सुनता था कि बापूजीने आश्रम कैसे शुरू किया और कैसे सब कामोंमें सबके साथ भाग लिया, तो मेरे मनमें मलाल हुआ करता था कि मैं अुस समय क्यो नही रहा। लेकिन अीश्वरकी कृपासे मगनवाडीमें भी वही सब चल रहा था। दिनमें अेक बार तो मुझे बापूकी सलाह लेना और बापूजीको रसोअीघरका सब हाल बताना ही पडता था। अनेक बार अैसे भी प्रसग आते थे कि दिनमें कअी बार बापूजीसे पूछना पडता या बापूजीको रसोअीघरमें आना पडता। अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा कि मेरी अिच्छा है कि मैं किसी गावमें जाकर बैठू और वहा काम करू। बापूजीने कहा, "मैं भी तुमसे यही आशा करता हू और तुमको ग्राममें भेजनेका ही मेरा विचार है। तुम्हारी शक्तिका अच्छा अुपयोग ग्राममें ही हो सकता है। साबरमतीमें भी मैंने लोगोको अिसी दृष्टिसे जमा किया था। परतु आज तो मैं देखता हू कि आश्रमका प्रयत्न निष्फल ही गया। आज कोअी भी आश्रम-वासी गावमें जानेको राजी नही है, सिवा दो-चारके। सो भी मैं कहू तो।

अिसलिअे अब तो मैं अपने पास अैसे ही आदमियोंको जमा करना चाहता हू जो बादमें ग्रामोंमें जाकर बस जायें। तुम्हारे लिअे जब मेरे मनमें आ जायगा तो तुम्हें गावमें भेज दूगा। गावका चुनाव भी तुम ही करोगे।"

१२

सहशिक्षा और बापू

जिन दिनों शामकी प्रार्थना बापूजी महिलाश्रमकी लडकियोंके आग्रह पर महिलाश्रममें ही करते थे। मगनवाडीसे महिलाश्रम काफी लंबा पडता था। अुस समय लोग भी काफी थे। महिलाश्रमकी लडकिया बापूजीको लेने बजाजवाडी तक आ जाती थी और वहासे बापूजीके साथ महिलाश्रम लौट जाती थी। बीचमें अनेक प्रकारकी चर्चायें होती थीं। अेक रोज किसी लड़कीने पूछा कि लडके और लडकिया अेकसाथ पढ सकते हैं?

बापूजीने कहा — नहीं।

लडकीने पूछा — क्यों?

बापूजीने कहा — अब तक जो परिणाम आये हैं अुनसे मैं जिस नतीजे पर पहुचा हू कि जो स्वभावसिद्ध वस्तु है अुसे सघर्षमें रखना अुचित नहीं है। बडे बडे विचारक अिसी निर्णय पर पहुचे हैं कि जिनसे लाभके बदले हानि ही अधिक होती है।

लड़की — तब आप अेक ही सस्थामें लडकों और लड़कियोंके अेकसाथ रहनेका समर्थन क्यों करते हैं?

बापूजी — यह कोअी बुरी बात नहीं है। अेक ही छप्परके नीचे हम सब रहें।

लडकी — तब साथ पढ़नेमें ही क्या हर्ज है?

बापूजी — तो साथ कसरत करनेमें क्या हर्ज है?

खूब हंसी हुअी। अैसी प्रकारकी बहुतसी चर्चा हुअी। बापूजीने कहा: अेक रोज मैं आठ आनेकी शर्तमें घरकी सब रोटी खा गया था। बापूजी और हम सब लोग खूब हसे।

१३

फूलसे कोमल बापू

बापूजी जहा भी रहते थे वहां पर आश्रमके सब नियमोंका पालन करानेका पूरा पूरा प्रयत्न करते थे। अस्वाद-व्रतका तो दिनमें तीन बार

अनुभव करनेका प्रसग आ जाया करता था। लेकिन जो लोग वापूजीको निकटसे नही समझते थे अुन लोगोको अुनकी कअी वातोसे वडी दुविधा खडी हो जाती थी।

श्री व्रजकृष्ण चादीवाला कुछ अस्वस्थ थे और दिल्लीमें अुनका अिलाज चल रहा था। मुझे ठीक याद नही कि वापूजीने अुन्हे वुलाया था या वे खुद वापूजीके पास आना चाहते थे। लेकिन अैसा कुछ याद पडता है कि वापूजीने अुनको लिखा था कि तुम्हारा जैसा अिलाज दिल्लीमे चलता है वैसे अिलाजकी व्यवस्था यहा कर दी जायगी। वे आ गये। वापूजीने अुनसे सारी वाते पूछी। अुन्होने वताया कि मुझे रोज अितनी मलाअी खानेकी डॉक्टर या वैद्यकी सलाह है। वापूजीने कहा, "तो वस यहा अुसका प्रवध हो जायगा। तुम अेक कढाअी लाकर वलवन्तको दे दो। वह अुसमें दूध गरम करके मलाअी तैयार कर देगा।" लेकिन व्रजकृष्णजी विचारे सकोचके मारे कढाअी नही लाये, क्योकि आश्रममे मलाअी अित्यादि खाना अुन्हें ठीक नही लगा।

अैसे ही अेक दिन निकल गया। वापूजीने मुझसे पूछा — क्यो व्रज-कृष्णके लिअे मलाअी तैयार की?

मैंने कहा — वापू, अभी तक कढाअी नही आयी।

वापू — अच्छा, व्रजकृष्णको वुलाओ।

मैंने अुन्हें वुलाया।

वापूने कहा, "क्यो व्रजकृष्ण अभी तक कढाअी क्यो नही लाये? और तुम्हारे लिअे मलाअी क्यो नही वनी?

अुन्होने कहा, "नही वापू, आश्रममें अितनी खटपट करनेमे सकोच होता है।"

वापूने कहा, "यह तुम्हारी मूर्खता है। शरीरके लिअे जो आवश्यक है वह अुसको देना धर्म है। जाओ, अभी जाओ शहरमें और कढाअी लेकर आओ।"

वे विचारे गये और कढाअी ले आये। अितनेमे शाम हो गअी। वापूजीने मुझसे कहा कि सवेरे व्रजकृष्णको अितनी, शायद २० तोला, मलाअी मिलनी ही चाहिये।

मैंने कढाअीमें दूध चढा दिया और धीमी आचसे मलाअी वनाना शुरू किया। मेरा खयाल है रातमें तीन चार दफा जागकर मैंने मलाअी अुतारी और सुवह तक जितनी मात्रा जरूरी थी अुतनी तैयार हो गअी। यह देखकर

बापूजीको बहुत आनन्द हुआ और ब्रजकृष्णजीको खाना खानेके लिये कहा। फिर तो यह सिलसिला चलता रहा। अुस रातको करीब करीब मुझे सारी रात जागना पड़ा था। लेकिन बापूकी अिच्छाके अनुसार मलाओ तैयार करके देनेका मनमें अितना अुत्साह था कि अितने जागरणसे भी थकानका अनुभव नहीं हुआ। बापूमें जहां संयमके बारेमें पत्थरसे अधिक कठोरता थी, वहां साथियोंके स्वास्थ्यके प्रति फूलसे अधिक कोमलता और अुदारता थी।

संत हृदय नवनीत समाना, कहा कबिन पर कहि नहिं जाना।
निज परिताप द्रवहिं नवनीता, पर दुख द्रवहिं सुसंत पुनीता।
कुलिस हु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परहि कहु काहि।

तुलसीदासजीके अिन वचनोंकी बापू साक्षात् मूर्ति थे। मैंने कभी बार अिन दोनों चीजोंको अपने बारेमें भी अनुभव किया।

१४

तुर्की महिलाका स्वागत

नगनवाडीमें टर्कीकी अेक बहन खालिदेखानूम आनेवाली थीं। बापूजीने अुनके लिअे जो तैयारियां और सफाओ आदिका प्रबन्ध किया था, वह देखने लायक था। वे कहां बैठेंगी, कहां सोयेंगी, कहां स्नान करेंगी तथा कमोड आदिकी सारी व्यवस्था बापूजीने अपनी आंखोंके सामने कराओ थी। वे बहन आओं। बापूजीने अुनका प्यारसे वैसा ही स्वागत किया जैसा कि कोओ मां बेटीके आने पर किया करती है। अुनकी छोटीसे छोटी बातके लिअे बापूजी ध्यान रखते थे। अपने पान बिठाकर अुन्हें खिलाते और बीच बीचमें पूछते जाते कि कैसा लगता है। नीमकी पत्तीकी चटनी, अिमलीकी लुगदी, कच्चा साग, न मालूम छोटी छोटी कितनी वानगियां बापूजी अुनके सामने परोसते। नीमकी चटनी भले ही कड़वी हो, लेकिन अुसमें बापूके प्रेमका पुट लगा रहता था। अिसलिअे वह बहन अुसे बड़े स्वादसे खाती। अुनकी बापूजीके साथ काफी चर्चायें होतीं। मैं अंग्रेजी नहीं जानती था अिसलिअे समझमें तो नहीं आती। लेकिन अुनकी आवाज अितनी नरम और अितनी मधुर थी कि वे जब बोलती तब अैसा लगता था मानो अुनके मुंहसे फूल झर रहे हों।

हमारे परिवारमें वे अितनी घुलमिल गअी थी कि जब १०–१५ रोजके बाद जाने लगी तो अुनको और हमको अुस विछोहका अनुभव कष्टदायी मालूम हुआ। बापूजीके प्रति अुनकी श्रद्धा और भक्ति अद्‌भुत थी। आज भी वे तुर्किस्तानमें बापूजीकी दृष्टिसे काम कर रही हैं। आश्रममें वे अपनी मधुर स्मृतिया छोड गअी। आज भी अुनकी यादसे चित्तमें प्रसन्नताका अनुभव होता है।

१५

अपनेको सबसे बुरा समझो

रसोअीघरकी खटपट और लोगोंकी छोटी छोटी शिकायतोंसे मैं अितना तग आ गया था कि मनमें अनेक बार मगनवाडी छोडकर जगलमें भाग जानेका विचार आता था। अेक रोज बापूजीके पास जाकर मैंने कहा, "मेरा यहासे जगलमें भाग जानेका विचार होता है। लेकिन आपके पास रहनेका लोभ भी नही छूटता। अब आपके आखिरी दिन हैं और सारे जीवनके अनुभवका आखिरी निचोड आपसे मिलता है। मुझे यह लाभ सहज प्राप्त हुआ है। अिसे कैसे छोडू?"

बस बापूने समझाना शुरू किया "तुम मेरे पास मौन धारण करके रहो। जडभरत जैसे बन जाओ। जगतमें अपने आपको सबसे बुरा समझो। मेरा मार्ग जगलमें भाग जानेका नही है। अुसको मैं अुचित नही मानता हू। आज सच्चे सन्यासी तो गृहस्थोंकी तरह घरोंमें रहते हैं और सबकी सेवा करते हैं। अगर मुझे छोडकर भाग ही जाओगे तो मुझे बुरा नही लगेगा। लेकिन यह तुम्हारी कमजोरी होगी। आनन्दसे रहो। तुम्हारा सब भार तो मैंने अुठाया है न?" बापूके प्रेमभरे वचन सुनकर मैं सब दुःख भूल गया।

१६

गावमें हम शिक्षक बनकर न जायं

अेक रोज मैंने कहा, "बापूजी, अच्छा तो यह है कि ग्रामसेवक ग्राममें रहकर अपनी आवश्यकताके लिअे कमा लें और बादमें कुछ सेवा कर दें। क्योंकि सस्था जमाना और अुसके लिअे अुन लोगोंसे पैसा मागना, जो अुन्ही साधनोंसे पैसा कमाते हैं जिनका कि हम विरोध करते हैं, ठीक नही है। दूसरे, ग्रामवासी गावमें बसनेवाले सेवकको भाररूप समझते हैं। फिर

जिसमें यह भी डर है कि बुद्ध भगवानके भिक्षुओंकी तरह ग्रामसेवकोंका समुदाय भी कहीं जनताके लिअे भाररूप न हो जाय।"

बापू बोले, "यह बात तो नया अवतार धरनेकी कही। सेवक अपने लिअे कमा लेना चाहे यह तो अुनका अभिमान है। अगर सच्ची सेवा करनेकी भावना सेवकमें होगी तो निर्वाहके लिअे ग्रामवाले अुसे दे देंगे। हा, परिवारके लिअे नहीं मिलेगा। बुद्धके सेवकों और आजके सेवकोंमें अंतर है। वे लोगोंको ज्ञान देनेको जाते थे, जब कि हम अुनकी सेवा करनेकी दृष्टिसे जाते हैं। अगर ग्राममें हम अुनके शिक्षक बनकर जायेंगे और अुनसे कहेंगे कि हमारे लिअे यह लाओ, वह लाओ, तो ग्रामके लोग हमसे अवश्य अूब जायेंगे। सेवक नम्र बनकर सेवा करता रहे और अपने निर्वाहके लिअे अुसी ग्राममें से माग ले तो अुसको अवश्य मिल जायगा।"

१७

कुछ महत्त्वके प्रश्नोत्तर

बापूका अेक मासका मौन होनेवाला था। मैंने कहा, "बापू, मेरे पाच मिनट आपके पास धरोहर हैं।" बापूने कहा, "अच्छा, गंगाबहनके बाद आ जाना।"

मैं भोजनालयकी चौखट पर बैठ गया। बापूजीके आवाज देते ही हाजिर हो गया। मैं प्रश्न पूछता था, बापूजी अुत्तर देते थे।

प्रश्न — आपने लोक और परलोक दोनोंका समन्वय किया है। स्त्री, पुरुष, लड़के, लड़की, अपने, पराये सबको आप अच्छी तरह संभाल सकते हैं। बड़ीसे बड़ी कठिनाअी आने पर भी आप प्रसन्नचित्त रहते हैं। क्या जीवन्मुक्ति और अीश्वर-प्राप्ति आपकी कल्पनामें अिससे भी आगेकी चीज है?

अुत्तर — हा, मुझमें जो प्रसन्नता रहती है अुसे देखकर बहुतसे लोग चकित हो जाते हैं। परन्तु यह मैं भी नहीं जानता कि यह प्रसन्नता कैसे प्राप्त हुअी, रहती अवश्य है। जीवन्मुक्ति और अीश्वर-प्राप्तिकी कल्पना तो मेरी बहुत आगे बढ़ी हुअी है। जीवन्मुक्तमें रागद्वेषकी गंध भी न होनी चाहिये। मैं देखता हूं कि मेरे अन्दर काफी राग है और जहा राग है वहा द्वेष तो है ही। और जब तक रागद्वेष है तब तक मैं अैसा दावा नहीं कर सकता कि जो कुछ प्राप्त करना था मैंने प्राप्त कर लिया या मैं

जीवन्मुक्त हू। हा, मेरा प्रयत्न अवश्य है। कोअी भी मानव अैसा दावा नही कर सकता और अगर करता है तो यह अुसका अभिमान है।

प्रश्न—मनुष्य जितना अुन्नत हो सकता है अुतनी अुन्नति तो आपने कर ली है न?

अुत्तर—यह भी कैसे कहा जा सकता है? कोअी मनुष्य अिससे भी आगे जा सकता है।

प्रश्न—क्या जीवन्मुक्तिके निकट पहुचकर भी मनुष्यके पतनकी सभावना रहती है?

अुत्तर—पूरी पूरी। (बापूने चटाअीके किनारे पर हाथ रखकर कहा) देखो, अिस किनारेसे जो तिलभर अिधर है वह अिधर ही है। अुसका दूसरे किनारे तक लौट आना पूरी तरह सभव है। किनारेसे जो तिलभर भी पार गया सो गया।

प्रश्न—आपकी अीश्वरके बारेमें क्या कल्पना है? हमारे शास्त्रोंमें अवतारवाद और अव्यक्त दोनो प्रकारसे अीश्वरका वर्णन है। आपने लिखा है कि सत्य ही अीश्वर है। अिन तीनो बातोमें से कौनसी किस प्रकार अेक-दूसरेके साथ सबध रखती है?

अुत्तर—तीनो ही सही है। हम सब अीश्वरके ही अवतार है। जैसा कि गीताके ग्यारहवे अध्यायमे विराट् पुरुषका वर्णन है। और अीश्वर अव्यक्त है यह बात भी सत्य है। क्योकि अुसको पूरी तरह जाना नही जा सकता। अव्यक्त तत्त्व अितना सूक्ष्म है कि शरीरधारी अुसे पूरी तरहसे शरीर रहते हुअे प्राप्त नही कर सकता। अीश्वर सूक्ष्मसे सूक्ष्म तत्त्व है। जो सत्य है वह है ही, अितना ही कह सकते है। और जो है वही अीश्वर है।

मै जब कुछ और आगे बढने लगा तब बापूने कहा—अरे, भीष्म पितामहकी तरह मै मरता थोडे ही हू, जो सारा तत्त्वज्ञान आज ही पूछने लग गये।

मै—अेक मासके लिअे तो आप मर ही रहे है न?

बापूजी—(हसकर) अरे, तो फिर अेक मासके बाद जिन्दा होनेवाला [illegible] हू। बस, अब भागो। देखो दूसरे लोग गाली देते होगे कि अिमने क्या [illegible]त्वज्ञान छेड दिया है। तुम्हारा अीश्वर तो रसोडेमें है। मै तो टट्टीमें [illegible] जाते समय अीश्वरका ही दर्शन करता हू।

मैं—हां, जब जब मैं हारता हूं और भोजनालयके कामको झंझट समझता हूं, तब तब मैं हिन्दू धर्मके अुस अुच्चादर्शका स्मरण करके मनको समझा लेता हूं, जिसके अनुसार प्राचीन कालमें लोग ऋषियोंके आश्रमोंमें बारह बारह वर्ष तक धैर्यपूर्वक गाय चराने, लकड़ी बीनने और गोबर पाथनेका काम करते रहते थे। अुसके बाद कहीं वे अुपदेशके अधिकारी समझे जाते थे। मेरा तो आप जैसे महापुरुषसे सहजमें ही अितना घनिष्ठ सबंध हो गया है।

बापूजी—हां, ऐसा ही समझना चाहिये। मनको खूब प्रसन्न रखो और अपने काममें ही औश्वरका दर्शन करो। यही सच्ची साधना है।

बस मैंने बापूके चरणोंमें प्रणाम किया, बापूका प्रेमभरा थप्पड़ मिला और मैं भाग गया।

१८

मौनका महत्त्व

बापूका मौन आरंभ हो गया। और २९ दिन बाद खुला। अुस समय बापूजीने प्रवचन दिया

"आज मेरे मौनको २९ दिन हो गये। अिसलिअे आवाज तो कुछ बैठ-सी गयी है। आशा है आज सारे दिनमें खुल जायगी। सब लोग कुछ सुननेकी अिच्छासे यहां आ गये हैं। यह मौन मैंने आध्यात्मिक हेतुसे नहीं लिया था, कामके कारणसे ही लिया था। मुझे संतोष है कि अिन दिनोंमें मैंने अपना काम बहुत कुछ निबटा लिया। डाकका काम मैं रोज निबटा लेता था। मौन कामके लिअे लिया था तो भी अुसका जो कुछ आध्यात्मिक लाभ होनेवाला था वह तो हो ही गया। अितने दिनके अनुभवसे मुझे मौनकी महत्ता मालूम हो गयी। जो सत्यका पालन करना चाहता है अुसके लिअे मौन साधनामें सहायक अेक अमोघ अस्त्र है। मौनसे सत्यकी बहुत रक्षा होती है। मौनका अर्थ है चेष्टामात्रका न होना। मौनमें अिशारा या लिखना भी नहीं होना चाहिये। सत्यके अुपासकको बोलकर अपना काम करने या विचार बतानेकी आवश्यकता नहीं है। अुनका तो आचरण ही दुनियाको अुपदेश-रूप होना चाहिये। जैसे जो अच्छी पूनी बनाता है वह किसी अुपदेशके बिना ही अपने कार्यकी छाप दूसरों पर डाल देता है। अितने दिनोंमें मुझे कोअी दिन याद नहीं आता है, जब कि मेरी बोलनेकी अिच्छा हुअी हो। ज्यों ज्यों मौन छूटनेकी अवधि निकट आती जाती थी, त्यों त्यों मुझे घबराहट लगा

जाता था। मेरी बोलनेकी अिच्छा नही होती थी। मौनमें सबसे बडा लाभ तो यह है कि वह क्रोधको जीतनेका बडा अच्छा अुपाय है। मुझे भी गुस्सा तो आता है, मगर मैं अुसे पी जाता हू । यो तो क्रोध चेहरेसे भी प्रतीत हो जाता है। परतु अुसका परिणाम बहुत कम होता है। क्योकि मौनके कारण बहुत कुछ नही कर सकता और लिखते लिखते तो क्रोध शात हो जाता है। अिसलिअे मैं अिसका यह सार खीच लेता हू कि सत्यके अुपासकके लिअे मौन बहुत ही आवश्यक होता है।"

१९

सब मिट्टीके ही पुतले है

भोजन परोसनेमें दो अन्य भाअी मेरी मदद करते थे। वे मुझसे पक्तिमें बैठकर भोजन करनेका अर्थात् परोसते समय अपनी थाली भी रखनेका आग्रह करते थे । दो चार बार मैंने अुनकी बात सुनी-अनसुनी कर दी । लेकिन अुनका आग्रह बढता ही गया। तब मैंने अुनको स्पष्ट कह दिया कि भोजनालयकी जवाबदारी जब तक मेरी है, तब तक मैं पक्तिमें बैठ नही सकता। क्योकि यदि किसी दिन भोजन खतम हो गया और अेकाध व्यक्ति भूखा रह गया तो मैं अुसे क्या खिलाअूगा। यदि भूखे रह जानेका प्रसग आवे तो मुझे ही भूखा रहना चाहिये। मैंने सबके साथ खा लिया हो और बादमें किसीको भूखा रहना पडे तो यह मेरे लिअे शर्मकी बात होगी। अिन भाअियोंके मनमें सन्देह था कि मैं पीछेसे कुछ अच्छा अच्छा खाता होअूगा। यह बात मेरे कान पर आअी जिससे मुझे दु ख हुआ। और मैंने बापूजीसे कहा कि मैं तो समझता था कि आपके पास सब देवता बसते होगे। अिसी आशासे आपके पास सत्सगके लिअे आया था । लेकिन मैं देखता हू कि यहा भी वैसे ही लोग है जैसे ससारमें अन्यत्र है। अुन भाअियोको बुलाकर बापूजीने पूछा तो अुन्होने अिनकार कर दिया। लेकिन यह सब अेक आश्रम-वासी श्री भगवानजी भाअीने सुना था । अुन्होने बापूजीके सामने मेरी बातकी पुष्टि की ।

अिस प्रसग पर बापूजीने कहा, "देखो मेरे पास आखिर तो सब मिट्टीके ही पुतले है। मैं खुद भी मिट्टीका पुतला हू। मनुष्यमें जो कम-जोरिया हो सकती है, वह सब अिन लोगोमें भी है। अिनमें से निकलनेका प्रयत्न करनेके लिअे ही तो हम सब अिकट्ठे हुअे है। दूसरेके गुण और

अपने दोष देखनेसे आदमी अूचा चढता है। जो दूसरेके दोष देखता है अुसका अर्थ यह होता है कि वह अपनेमें अुनसे ज्यादा गुण देखता है। यह दृष्टि खतरनाक है। मैं किसीको बुलाने तो जाता नहीं हूं। जो सहज रूपसे मेरे पास आ जाते हैं और मुझे रखने जैसे लगते हैं अुनको रख लेता हूं। मैं विश्वामित्र तो नहीं हूं कि रोज नयी नयी सृष्टि करता रहूं। अिसलिअे मेरा तो अैसा ही चलता है। तुम सबके गुण और अपने दोष देखनेका निश्चय करो तो मेरे पास रहकर कुछ पा सकोगे। नहीं तो मेरा और तुम्हारा समय व्यर्थ जायगा। तुम्हारे मनमें जो आता है वह मुझे कह देते हो यह मुझे प्रिय लगता है। क्योंकि अिन परसे मैं तुम्हें कुछ कह सकता हूं। सबके साथ प्रेम करना सीखो और प्रफुल्लित चित्तसे रहो। हारनेकी बात नहीं है। जाओ, भाग जाओ।"

मैं बापूजीके पाससे चला तो आया, लेकिन मगनवाडीके रसोअीघरकी व्यवस्था करनेमें शुरूसे ही अैसी खटपटोंके कारण मेरा मन अूब गया था। मेरे मनमें यह विचार धीरे धीरे घर करने लगा था कि मैं यहांसे और कहीं चला जाअूं। अिस अंतिम प्रसंगने मेरे अिस विचारको बिलकुल पक्का कर दिया और मगनवाडी छोडकर चले जानेकी मेरी पूरी पूरी मानसिक तैयारी हो गअी।

८

विनोबाजीके निकट परिचयमें

बापूजीको छोडकर चले जानेकी मेरी तैयारी पूरी हो चुकी थी। बापूजीने भी आज्ञा दे दी थी। लेकिन जानेके पहले विनोबाके आश्रमका अनुभव लेनेकी अिच्छा थी। मैंने बापूजीसे कहा तो वे बोले, 'हां, विनोबाके आश्रमका अनुभव तो लेना ही चाहिये। अुनके पास बहुत कुछ सीखा जा सकेगा।'

बापूजीने विनोबाजीसे बात करके यह व्यवस्था कर दी कि जब तक मैं अुनके पास रहना चाहूं तब तक रह सकूं। विनोबासे मेरा परिचय भी करा दिया। ता० २६-४-'३५ को मैं मगनवाडीसे नालवाडी चला गया। बीच बीचमें बापूजीसे मिलता रहता था और नालवाडीके अपने अनुभव सुना

आता था। जब कभी मैं वहाके जीवनकी तारीफ करता तो बापूजीका मुख आशा और खुशीसे खिल अुठता था। अुन्हें लगता होगा कि मैं अुनके फंदेसे तो छटक रहा हू, लेकिन यदि विनोबाके फदेमे फस जाअू तो अच्छा हो। अन्तमें जीत बापूजीकी हुअी। यह हो सकता है कि विनोबाजीके सहवास और अुनके प्रवचनोंने मेरे भ्रमकी रस्सीके बलोको कुछ ढीला कर दिया हो। नालवाड़ीके थोड़ेसे अनुभव पाठकोंके लाभके लिअे मैं यहा अुद्धृत करता हू।

नालवाडीमे अुस समय ८-१० सेवक थे और विनोबाजी भी अुन दिनो वही रहते थे। अुन्ही दिनो अुनका ८ घटे सूत कातनेका प्रयोग भी चलता था। नालवाडी आश्रमका कार्यक्रम और दिनचर्या व्यवस्थित और मगनवाडीसे कुछ कठोर थी। प्रात ४ बजेसे रात्रिके साढे आठ बजे तकका समय कार्यक्रमसे ठसाठस भरा रहता था। चक्की पीसना, पानी भरना, पाखाना-सफाअी, भोजन बनाना, आदि सब काम आश्रमवासी ही करते थे। अेक विचित्र नियम यह था कि अगर कोअी सेवक किसी काम पर निश्चित समय पर न पहुचे तो अुसे कुछ न कहकर आश्रमका व्यवस्थापक अुस दिन प्रायश्चित्तके रुपमें अुपवास कर लेता था। श्री वल्लभभाअी (वल्लभस्वामी) आश्रमके व्यवस्थापक थे। मुझे अिस नियमका ज्ञान न था। अेक दिन न मालूम किस कारणसे मैं किसी काम पर समय पर नही पहुच सका। दोपहरको वल्लभस्वामीने भोजन नही किया। मेरे यह पूछने पर कि वल्लभ-स्वामीने आज भोजन क्यो नही किया, जाननेवाले मित्र मेरी ओर देखकर हसने लगे। जब मैंने हसनेका कारण पूछा तो वे लोग और भी हसे। लेकिन मेरी समझमें कोअी बात नही आयी। जब मैंने जाननेका बहुत आग्रह किया तो अेक भाअीने मेरा ही कारण बताया। यह जानकर मुझे दुख और आश्चर्य दोनों हुअे। दुख अिसलिअे हुआ कि मेरे कारण व्यवस्थापकको अुपवास करना पडा और आश्चर्य अिसलिअे हुआ कि ये लोग कैसे विचित्र हैं कि मुझे नियम बताये बिना ही अुपवास तक कर लेते हैं। मैंने अुस दिन शामको भोजन नही किया। यद्यपि अुनका यह नियम मुझे अब तक समझमें नही आया है, तो भी अुस दिनके बाद मैं हर काम पर समयसे पहले ही अुपस्थित हो जाता था। काम करनेका तो मुझे अभ्यास था ही। दैवयोगसे अुन दिनो विनोबाजी प्रात और सायप्रार्थनाके बाद रोज ही कुछ न कुछ बोलते थे। और दैवयोगसे अुन्ही प्रवचनोमें से बहुत थोडा मेरी डायरीमें दिनाक-

वार लिखा मिला है। अुसकी वानगी पाठकोंके लिअे यहां अुद्धृत करता हूं। अैसे तो विनोबाजी सदा बोला ही करते हैं। लेकिन तब आसपासके मुट्ठीभर लोग ही अुन्हें जानते थे और तब वे मजदूरकी तरह ८ घंटे शरीर श्रमका काम भी करते थे। विचार तब भी अुनके वैसे ही थे जैसे आज हैं।

२९-४-'३५

सुबहकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीने प्रवचन करते हुअे कहा: भोजन स्वच्छ तथा प्रेमपूर्वक बनाना चाहिये। भोजन बनानेवालेकी भावना अैसी होनी चाहिये कि आज मेरे घर भगवान आनेवाले हैं और अुनकी सेवाके लिअे मुझे आजका ही अवसर मिला है। यदि भोजन करनेवालोंके प्रति अिस प्रकार भगवद्बुद्धि होगी तो भोजन अपने आप ही स्वच्छ और प्रेमपूर्वक बनेगा। अिस प्रकार भोजन बनानेकी व्यवस्थामें अेक रुपयेसे अधिक खर्च नहीं आना चाहिये। कपडेकी भी हमको कमसे कम आवश्यकता होनी चाहिये। जूता होना आवश्यक है।

३०-४-'३५

आज अेक बीमारको देखने गया था अिसलिअे देरसे आ सका। अुसे बीमारीकी हालतमें ही अुसके मित्रोंने अकेला रेलमें बिठाकर भेज दिया। अुसको निमोनिया है। आजकी समाज-रचना अितनी बिगड गअी है कि लोग अेक-दूसरेकी चिन्ता नहीं करते। अिस समाज-रचनाको सुधारनेके विषयमें मैंने खूब विचार किया है। आज तक मैं निष्काम प्रेममें ही पला हूं। अिसलिअे मेरे लिअे यह कहना कठिन है कि समाज निष्ठुर है। परन्तु अुनमें जडता अवश्य है। यदि कोअी प्रयोग करना चाहे तो अपनी चिन्ता छोडकर दूसरोंकी चिन्ता करके देख ले कि क्या परिणाम आता है। मुझे कैसे सुख मिले, मुझे कैसे प्रतिष्ठा मिले, मैं किस प्रकार विद्या प्राप्त करूं, अित्यादि चिन्तायें छोडकर दूसरोंकी चिन्ता करके देखो। अुसमें कैसा आनन्द आता है! जो अपनी चिन्ता छोडकर दूसरोंकी चिन्ता करने लगता है, अुसकी भगवानको चिन्ता करनी पडती है। पुस्तकोंमें भी खर्च न होना चाहिये। जिनको जैसी पुस्तक चाहिये वह वैसी लिखकर अपने पास रख ले। मेरा प्रयत्न ब्रह्मचर्य-पालनका है। यदि अिस जन्ममें सफलता न मिली तो चाहे १० जन्म भी क्यों न लेने पडें मैं धीरज नहीं छोडूंगा। यह बोलते हुअे विनोबाजी आत्म-विभोर हो गये और हम लोग भी शून्यवत् होकर अुनके अुन अुद्गारोंका

पान करते करते जगा नहीं रहूंगे। फिर आगे बोलते हुअे अुन्होंने कहा जो अपनी चिन्ता करने लगता है, मैं अुसकी चिन्तासे मुक्त हो जाता हू। मैं ही सब लाभ क्यों प्राप्त कर लू? जो दूसरोंके पास है वह भी तो मेरा ही है। अगर अेक जेबमें पैसे घटे हुअे और दूसरी जेबमें अधिक हुअे तो क्या हम घबराते हैं? दोनों जेबें हमारी ही तो हैं। जो ज्ञान दूसरोंके पास है वह हमारे पास भी होना ही चाहिये, यह हमारी सकुचित वृत्ति है। अपने शरीरकी चिन्ता बहुत लोग किया करते हैं। यदि वजन कम हो गया तो घबरा जाते हैं। वजन जाता कहा है? अगर मैंने आम और केले अधिक खा लिये तो बाहरका वजन मेरे अूपर लद गया, यदि कम खाये तो अुतना भार कम अुठाना पड़ा। अेक मित्रने मुझसे कहा कि जवानीमें पैसे बचाकर बुढ़ापेके लिअे रख लेना चाहिये। मैंने अुससे तो कुछ न कहा। परन्तु कौन कहेगा कि यह विचार योग्य है? जो जवानीमें सेवा करेगा अुसकी सेवा बुढ़ापेमें समाजरूपी परमेश्वर करेगा। अगर किसीको विश्वास न हो तो करके देख लो। सेवामय जीवन बितानेमें जो आनद है वह अपने लिअे चिन्ता करनेमें नहीं है। माता अपने बच्चे पर प्रेम करती है। परन्तु वह प्रेम निष्काम नहीं होता। अिसलिअे अुसका अुदाहरण यहा नही देता हू। अेक मित्रने मुझसे कहा कि दूसरोंकी चिन्ता करना भी तो अेक प्रकारका मोह ही है। परन्तु अैसा नहीं है। मोह तो अपने शरीरके आसपास अपना डेरा डाले बैठा है। अगर अपने शरीरके आसपासके बन्धन तोड दिये जाय तो बाहर और बन्धन है ही नहीं। जिसकी शरीर पर आस्था है वह तो गड्ढेके किनारे पर ही खड़ा है। अेक कदम आगे बढते ही अुसका जीवन समाप्त समझिये। तुलसीदासजीने अपने अनुभवसे कितना सुन्दर लिखा है

'परहित बस जिनके मन माहीं,
तिन कह जग दुर्लभ कछु नाही।'

यह बोलते बोलते विनोबाजीका हृदय भर आया और वाणी रुक गयी। हम सबके हृदय भी गद्‌गद हो गये। कितना पावन था वह दिन!

शामके भोजनके बाद मैं कन्या-आश्रममें बापूजीसे मिलने गया। बापूजी दूरसे देखकर ही हसे और अुन्होंने पूछा, क्यों वहा कैसा लगता है? मैंने कहा, अच्छा लगता है। बापूजीने कहा, हा अच्छा तो लगना ही चाहिये। गुड तो मीठा ही लगता है, लेकिन रोगीको तो गुड भी कडुआ लगने लगता है न? अुसको तो मिर्च मीठी लगती है। ये लडकिया भी तो मन

ही मन कहती होगी कि बापू हमको अुबली भाजी खिलाते हैं। मिर्चका साग देखकर अिनकी जीभ कैसे पानी डालती होगी? यह कहते हुअे लड़कियोंकी ओर देखकर वे खूब हँसे और आगे बोले कि यह तो मैंने मजाक किया। लेकिन सच बात तो यह है कि मनका रोग शरीरके रोगसे भी भयानक होता है। शरीरके रोगका अिलाज करना आसान है। यदि कोअी रोगी दवा न भी खाय तो आजकल अिंजेक्शनसे भी काम चल जाता है। लेकिन मनके रोगीकी दवा कैसे हो? अुसकी दवा तो अुसीके पास होती है। दूसरे लोग केवल थोडा सहारा लगा सकते हैं। मुझे लगता है कि विनोबाके साथ तुम्हें कुछ सहारा जरूर मिलेगा। अुनसे तो मैं भी बहुतसी बातें सीखता रहता हूं। तुम दत्तात्रेयकी बात जानते हो? अुन्होंने कुत्तेको भी अपना गुरु माना था। वहां क्या कार्यक्रम रहता है? काममें तो तुम किसीसे हारनेवाले हो नहीं। लेकिन किसीके साथ झगडा नहीं करना और तबीयत अच्छी रखना। जब जब वहांसे छुट्टी मिले तब मेरे पास आनेकी छूट है।

मैंने प्रणाम किया और बापूजीकी अेक थप्पडकी प्रसादी लेकर चला आया। मनमें सोचता जाता था कि कहीं सचमुच ही मेरी हालत अुस रोगीके जैसी न हो, जिसे दूध कड़ुआ लगता है और खट्टी छाछ भाती है। मैंने बापूजीकी आंखोंमें मेरे लिअे ममता देखी। लेकिन न मालूम मेरा मन क्यों अुचट गया है। देखें अीश्वर कहां ले जाता है।

दैवयोगसे विनोबाजीने भी अपने प्रवचनमें बीमारकी ही बात की थी।

३-५-'३५

प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीने अपने प्रवचनमें कहा: हम सूत भगवद्‌बुद्धिसे ही कातते हैं। अिसलिअे अिसके साधन भी अत्यन्त व्यवस्थित होने चाहिये। हमारी धुनकी और तांत सितारकी तरह मधुर आवाज देनेवाली हो। तकलीकी गति बढानेके लिअे जो सुधार करने हों अुनकी शोध होनी चाहिये। धुनते और कातते समय हमारा आसन योगियोंका-सा होना चाहिये। पूनियां अितनी बढ़िया होनी चाहिये कि कातनेमें बिलकुल श्रम न पड़े। हमें आध्यात्मिक साधना और दैनिक कर्मयोगका समन्वय कर लेना चाहिये। जगतमें केवल कर्म और केवल साधना करनेवाले बहुत हैं। लेकिन दोनोंमें मेल साधनेका रास्ता हमें बापूजीने दिखाया है। यही वह मार्ग है जिस पर सब चल सकते हैं। यह आश्रम अैसी ही साधनाका अेक केन्द्रमात्र है और कुछ नहीं।

सायंप्रार्थनाके प्रवचनमें विनोबाजी अिस प्रकार बोले जगतमें सेवा करनेके दो मार्ग हैं। स्वाभाविक रूपसे जो सेवाकार्य सम्मुख अुपस्थित हो जाय अुसे करना, यह अेक मार्ग है। और दूसरा है संस्था खोलकर लोगोंको अेकत्रित करके अुनकी सेवा करना। दोनों मार्ग श्रेष्ठ हैं, दोनों ही सुरक्षित हैं। लेकिन दोनोंमें धोखा हो सकता है। पिता अपनी संतानकी जवाबदारी जैसे संभालता है अुससे भी अधिक जवाबदारी संस्थाके संचालककी होती है। माता-पिता तो अिस बातसे संतोष मान लेते हैं कि अुनकी संतान शक्तिशाली और सुखसे अपना जीवन व्यतीत करनेवाली हो जावे। परन्तु संस्थाके संचालक पर यह दुहरी जवाबदारी आती है कि वैसी शक्ति किस प्रकार प्राप्त हो और प्राप्त होने पर वह औश्वरार्पण कैसे हो। मैं दिनभर अिसी विचारमें रहता हूं कि किस सेवककी कितनी प्रगति होती है। मेरा स्वभाव ही अैसा है कि जिस कामकी जिम्मेदारी मैं ले लेता हूं अुसके सिवा दूसरे कामोंके लिअे मेरे पास समय ही नहीं बचता। 'गीताओी' लिखते समय मुझे दूसरा विचार ही नहीं आता था। अब अिस संस्थाकी जवाबदारी मैंने ली है तो पूरी शक्तिसे अुसे निभानेका प्रयत्न करना मेरा धर्म है। मुझमें चारसे अधिक सेवक संभालनेकी शक्ति नहीं है। अधिक संख्या देखकर मेरा जी घबरा अुठता है। यहां जितने आदमी हैं अुन्हें प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करना चाहिये और यह देखते रहना चाहिये कि रोज कितनी प्रगति होती है। अेक-दूसरेके साथ प्रेम रखना और अेक-दूसरेकी प्रगतिमें सहायता करना सबका धर्म है। शक्ति प्राप्त करना और अुसे औश्वरार्पण करना यह मूलमंत्र है। जितने दोष स्वार्थमें हो सकते हैं — जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि — ठीक अिसी प्रकार परमार्थमें भी हो सकते हैं, यदि परमार्थ औश्वरार्पण बुद्धिसे न किया जाय। बस यही सीखना है। सब लोग अिस पर विचार करें।

४-५-'३५

मनुष्य तीन प्रकारकी खुराक सृष्टिसे लेता है जीवसृष्टि, वनस्पति और खनिज। जीवसृष्टिमें दूध, वनस्पतिमें फलसाग तथा खनिजमें नमक आदि आते हैं। परन्तु औश्वर तत्त्व तो सर्वत्र भरा हुआ है यह बात स्पष्ट है। जिसमें औश्वर प्रत्यक्ष दीखता है, अैसी ही जीवसृष्टि है। मुझे तो कभी कभी पत्थरमें भी औश्वरका दर्शन होता है। जब पहाड़ों पर चला जाता हूं तो वहां मुझे स्पष्ट शिवरूपका भास होता है। अिसलिअे खुराकके विषयमें

भी मनुष्यके सामने अहिंसाका प्रश्न आकर खड़ा रहता है। मनुष्यका शरीर केवल खनिज पर तो निभ नहीं सकता। परन्तु वनस्पति पर तो जरूर निभ सकता है। दूधकी कल्पना मांस छुड़ानेके लिअे ही हुअी है। अिसलिअे मनुष्यको जहां तक संभव हो खुराकके बारेमें अहिंसक बननेका प्रयत्न करना चाहिये। नमक शरीरके लिअे आवश्यक नहीं है। यह प्रयोग करके देखने जैसी बात है। यदि अिसे छोड़ा जा सके तो अपने अस्वाद-व्रतको बहुत बल मिलेगा।

*   *   *

सच्चा अर्थशास्त्र यह है कि हरअेक कामकी समान मजदूरी दी जाय।

*   *   *

शामको मैं बापूजीसे कन्या-आश्रममें मिलने गया। बापूजीने दूरसे ही देखकर पूछा, कैसा चलता है? मैंने प्रणाम किया और कहा, ठीक चल रहा है। बापूजीने पूछा, तीन चार दिन क्यों नहीं आये? मैंने कहा, यों ही छोटे मोटे काममें लग जाता था। बापूजीने कहा, हां काम छोड़कर मेरे पास आना ठीक नहीं है। विनोबासे कुछ चर्चा होती है? मैंने कहा, आज-कल अुनके प्रवचन बड़े अच्छे होते हैं। अुस दिन आपके पाससे गया तो अुन्होंने भी करीब करीब वही बात कही जो आपने कही थी। बापूजीने कहा, ठीक है। विनोबा जब बोलता है तब अपने आपको भूल जाता है और श्रोताओंके साथ अेकरूप हो जाता है। तभी तो अुसके आसपास अितने सेवक पड़े हैं। मैंने अनुभवसे देखा है कि विनोबा जैसा बोलता है वैसा आचरण करनेमें अपनी सारी शक्ति लगा देता है। हम जैसा बोलते हैं वैसा ही आचरण करें तो सारा प्रश्न ही निबट जाय। मैं बापूजीको प्रणाम करके लौट आया।

६-५-'३५

पहले जमानेमें अेक भक्तिपक्ष और अेक सेवापक्ष अिस प्रकार दो पक्ष थे। सेवापक्षमें हिंसा करना भी शामिल था। अेककी सेवाके लिअे दूसरेको मारने तककी नौबत आ जाती थी। अीश्वर-प्राप्ति करनेवाले अिस झंझटसे अलग रहते थे। परन्तु आज हमारा जो प्रयोग चल रहा है, वह भक्ति और सेवाका अेकीकरण करनेका प्रयोग है। जिसमें वीरत्व और साधुत्व दोनोंका समावेश हो जाता है। अनुभवसे जो कार्यरूपमें आ सके वही शास्त्र है। आजका शास्त्र यही है कि भूखोंको रोटी कैसे मिले, अिसका विचार और

अुपाय करना। खादीका अर्थशास्त्र अिसी विचारमें से निकला है। बापूजी अिसीको दरिद्रनारायणकी सेवा कहते हैं।

८-५-'३५

प्रश्न ब्रह्मचर्यके पालनके लिअे क्या क्या साधन चाहियें ?

अुत्तर सक्षेपमें कहू। खुली जगहमें शारीरिक श्रम करना, खुली जगहमें ही सोना, सात्त्विक भोजन, अीश्वरका सतत चिंतन, सत्सग और जितनी देर स्त्रीका साथ मिले अुतनी देर अुसके लिअे पूज्यभाव रखना। स्त्री है ही पूजने योग्य। लोगोने बुरी कल्पना करके अुसको भयानक स्वरुप दे दिया है। परन्तु वह वास्तवमें अितना भयानक है नही। कुछ हद तक तो है, नही तो पुरुषार्थ ही क्यो ?

प्रश्न लडको तथा लडकियोको अेकसाथ शिक्षण देना आपके विचारसे कैसा है ?

अुत्तर अिस समय अैसी परिस्थिति है कि मै कहूगा कि अलग रखना चाहिये। परन्तु अेक जगह रखनेसे अेक-दूसरेको लाभ ही होगा। साथमें अेक जाग्रत और योग्य व्यवस्थापक होना चाहिये।

प्रश्न क्या ध्यानयोग द्वारा मनुष्यकी पूर्णता हो सकती है ? अिस विषयमें आपका क्या अनुभव है ?

अुत्तर पूर्णता तो नही हो सकती। परन्तु अेक अगका विकास हो सकता है। मनुष्यके पास तीन शक्तिया है कर्म करनेकी, बोलनेकी और विचार करनेकी। ध्यानसे विचारका विकास होता है। परन्तु कर्म तथा वाचा अधूरे रहते है।

प्रश्न तब पूर्णता किस प्रकारसे प्राप्त होती है ?

अुत्तर चित्तशुद्धि, योग्य कर्म तथा शुद्ध भाषणसे। जब चित्त शुद्ध हो जाता है तब ध्यानसे योगसिद्धि हुअी समझनी चाहिये। क्योकि चित्त-शुद्ध मनुष्य जिस कामको करेगा अुसीसे ध्यानयोग सिद्ध हो सकेगा। नम्रतापूर्ण सरल चित्तसे प्रभुकी भक्ति, सबके साथ प्रेमभाव रखना यही अुत्तम मार्ग है।

सायकालकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीका प्रवचन

आज हिन्दुस्तानमें या सारे जगतमें जो सस्थायें है वे सब बन्द कर देने योग्य हैं। कुटुब-सस्था सगुण है। अन्य सस्थायें निर्गुण। जिस सस्थामें सगुणता नही है वह निकम्मी है। सगुणता अर्थात् आपसमें प्रेम, अेक-दूसरेकी

आत्माको पहचानना। अवगुण देखने हों तो अपने ही अवगुण देखो, दूसरोंके अवगुण न देखो। स्वयं भगवान कभी अवतारोंमें क्यों नहीं रहते। आजकलके स्कूल-कॉलिज सभी निर्गुण हैं। मैं नहीं जानता कि कहीं भी प्रोफेसर शिक्षक विद्यार्थीके जीवनके साथ परिचय रखता हो। मुझे याद नहीं आता कि किसी शिक्षकका अच्छा असर मेरे मन पर हो। माताका असर जरूर है, दादाका भी है। बापूका है, मित्रोंका है, विद्यार्थियोंका है, सानेगुरुका है। पर किसी शिक्षकका नहीं है। अिस प्रकारकी निर्जीव संस्थायें बन्द कर दी जानी चाहियें। मैं जब घर छोड़कर आया जिस दिन निकल पड़ा अुस दिनकी मुझे याद है। अुस दिन अैसा अनुभव हुआ जैसे बाघके मुंहसे मैं शिकार निकल कर भागा हो और आनन्दका अनुभव करता हो। लेकिन कुटुम्ब-संस्था फिर भी अच्छी है। वहां सब आपसमें प्रेम करते हैं और अेक-दूसरेके आत्म-विकासमें मदद करते हैं। रेल्वे स्टेशनके मुसाफिरोंकी भांति नहीं कि थोड़ी देर पास पास बैठे और फिर भिन्न दिशाओंमें चले गये।

* * *

अभिमान ९ प्रकारके होते हैं। १ सत्ताका, २ संपत्तिका, ३ बलका, ४ रूपका, ५ कुलका, ६ विद्वत्ताका, ७ अनुभवका, ८ कर्तृत्वका, ९ चरित्रका। परन्तु यह मानना कि मुझे अभिमान नहीं है, अिसके बराबर भयानक अभिमान दूसरा नहीं।

शामको भोजनके बाद मैं कन्या-आश्रममें बापूजीसे मिलने गया और अपनी दो कल्पनायें अुनके सामने रखी। अेक खेती करनेकी और दूसरी खादीकी। बापूजीने खेतीकी कल्पना पसंद की और कहा "दोनों ही काम पवित्र और अुपयोगी हैं। मुझे तो अेकसे अेक अधिक प्रिय है। लेकिन गीतामाता कहती है कि स्वधर्ममें मरना भी अच्छा है, और परधर्म अच्छा हो तो भी खतरनाक है। अिसका कारण यह है कि मनुष्य अपने स्वाभाविक कर्मको जितनी खूबीसे कर सकता है अुतनी खूबीसे दूसरा काम नहीं कर सकता। तुम्हारा स्वधर्म खेती है। खेतीके साथ गाय तो आ ही जाती है। क्योंकि गायके बिना खेती हो ही नहीं सकती। आजकल लोग खेती मशीनसे करनेकी बात करते हैं, लेकिन हमको तो घी, दूध, खादके लिअे गोबर और चमड़ा भी चाहिये। हाडमांसका अुत्तम खाद भी चाहिये। क्या मशीन ये सब देगी? अिसलिअे मैं कहता हूं कि हिन्दुस्तानको मशीन नहीं, गाय चाहिये। तुमको मैं और क्या कहूं, तुम तो जन्मसे ही किसान हो। आज किसान गायको

छोडकर भैंसके पीछे भाग रहा है। गुजरातमें तो भैंसे तेजीसे बढ रही हैं और अुनके पाडोकी हिंसा होती है। कही कही किसान खेतीमें पाडोका अुपयोग करते हैं। लेकिन मोटे तौर पर यही कहा जायगा कि पाडे अपने भाग्य पर ही छोड दिये जाते हैं। जिस प्रकार गाय या बैलका अुपयोग सर्वत्र होता है, वैसा पाडेका नही होता। अिसलिअे मै फिर कहता हू कि तुम्हारे लिअे गोपालनके साथ खेती अुत्तम मार्ग होगा।" मैंने अनुभव किया कि महापुरुष कितने दूरदर्शी होते हैं। मैंने खादीका काम सीखा। बापूजीने मुझे सावलीमें खादीके काममे लगानेकी कोशिश की। लेकिन अन्तमें पानी अपने ठिकाने ही आकर रुका।

११–५–'३५

प्रेमके विषयमें बोलते हुअे विनोबाजीने कहा कि हम लोगोमें प्रेमकी कमी है। अेक-दूसरेके साथ अेकरूपताका अनुभव होना चाहिये। जब तक हम यह मानते हैं कि हम तो काफी प्रेम करते हैं तब तक हमारा प्रेम कम है यह बात साफ है। जब हमको यह प्रतीत हो कि हमें जितना प्रेम करना चाहिये अुतना नही करते, तब ही कुछ प्रेम समझा जाय। पूर्ण प्रेम तो शरीरके रहते हुअे हो ही नही सकता। पूर्ण प्रेम अर्थात् विश्वप्रेम, अीश्वर-प्रेम। जब प्रेम पूर्णताको प्राप्त होगा तब यह शरीररूपी जेलखाना क्षणभर भी नही ठहर सकेगा। आत्मारूपी प्रेम तुरत ही सारे विश्वमें मिल जायगा। जब तक शरीर है और जब तक अहभाव है, तब तक प्रेम पूर्ण नही हो सकता। प्रेमका अुदाहरण देनेके लिअे हम राम-लक्ष्मणका नाम लेते हैं। आश्रमका अुदाहरण क्यो नही लेते? अहकार सेवा करनेमें भी हो सकता है और सेवा लेनेमें भी। मैं सेवा करता हू यह विचार तथा मैं बडा हू, मेरी सेवा होनी चाहिये, यह विचार दोनो ही दोषपूर्ण हैं।

* * *

आश्रममें बाहरसे आनेवालोकी कभी अुपेक्षा न होने पावे।

* * *

पानीके विषयमे बोलते हुअे कहा कि जब कोअी मुझे पानी पिलाता है तब मैं पानीमें भगवानका स्वरूप देखता हू। गीतामे कहा गया है, पानियोमें मैं रस हू।

१२-५-'३५

आज बुद्धसेनने मौन रखा है। यह मुझे अच्छा लगता है। मौन रखनेमें बहुतसी शक्ति खर्च होनेसे बच जाती है। मनकी वासनाओंसे लड़नेका अवसर मिलता है। वासना प्रतिक्षण चोरकी भांति हमारे अन्दर प्रवेश करना चाहती है। असलिअे जो सदा जाग्रत रहता है अुसीके घरमें वासनाका प्रवेश नहीं हो सकता। बहुतसे लोग कहते हैं, मनमें वासनाका अुद्भव हो तो अुसका भोग करना चाहिये। लेकिन मैं कहता हू, यह रास्ता गलत है। अुसका अर्थ तो यही होगा कि वासनाओंके सामने कायरोंकी भांति हथियार डाल दें। यदि मनुष्य शरीरसे बचा रहे तो मन भी सुधर जायगा। शर्त अितनी ही है कि जो विषय-विचार मनमें आयें अुसे पोषण न मिले।

* * *

पूनीका दान अुत्तम है। मुझे जो पूनी मिलती है अुसमें मैं भगवानका दर्शन करता हू।

* * *

मद्रासमें कोअी अेक कुटुम्ब जलकर मर गया था। अुसके विषयमें विनोबाजीने कहा कि जिस प्रकार मर जाना हमारी गरीबीका चिह्न तो है ही। लेकिन अिसका अेक और भी कारण है। मजदूरीमें अत्यन्त असमानता। कॉलिजोंमें प्रिन्सिपाल और प्रोफेसर १ घटा प्रतिदिन और वर्षमें ६ मास काम करके मासिक १२०० या १००० या ६०० या ५०० रुपये लेते हैं, परन्तु वे पढाते क्या हैं? थोडीसी मेहनत करके मैं वही अुनसे भी अच्छा पढा सकूगा। अुनको अितने पैसे लेनेका क्या हक है? और पढानेकी कीमत लेना तो स्वय अपना अपमान करना है। सबको मेहनत करके खानेका हक है, नहीं तो चोरी है। अेक सन्यासी अपवाद माना गया है। लेकिन वैसा सन्यासी मैंने अब तक कहीं नहीं देखा है। अुसकी तो हम कल्पना ही कर सकते हैं। हमें पहले अेक-दूसरेके कधेसे अुतर जाना चाहिये। पीछे सेवाका नाम ले सकते हैं। नहीं तो सेव्य कहेगा कि भाअीसाहब पहले हमारे कधेसे नीचे अुतरो, फिर हमारी सेवा करना। हम अपने मनमें यह सोचें कि हम तो ज्ञानका अुपदेश देते हैं तो यह दम्भ होगा। ज्ञानका मूल्य पैसा नहीं, प्रेम है। यदि हम आश्रमवाले अपना बोझ दूसरो परसे अुतार लें, तो अुतने पापसे बच जावेंगे।

१३–५–'३५

प्रतिदिन माता जैसे बच्चेको जगाती है, वैसे ही प्रभु हमको जगाता है कि अुठो, मेरा स्मरण करो और अपने काममें लग जाओ।

* * *

जैसें अपने लिअे धन कमाना स्वार्थ साधना है, वैसे ही केवल अपने ही लिअे पढना भी स्वार्थ है। हमारे पास जो ज्ञान हो वह अपने साथीको देना धर्म है।

* * *

सेवासे जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह दूसरे प्रकारसे नही हो सकता।

१६–५–'३५

कर्तव्यत्रयी — १ सत्यनिष्ठा, २ धर्माचरणका प्रयत्न, ३ हरिस्मरण-रूप स्वाध्याय। सन्तकी अपेक्षा सत्य श्रेष्ठ है। सत्यके अशमात्रसे सत निर्माण होते है। ज्ञानी जो कर्म करता है वह तो करता ही है, लेकिन जो नही करता वह भी करता है। परन्तु कर्म-सन्यस्त पुरुष जो नही करता वह तो नही ही करता और जो कुछ वह करता है वह भी नही करता तब कर्म-सन्यासी होता है।

* * *

मेरा नालवाडी रहनेका समय पूरा हो चुका था और दूसरे दिन मैं मगनवाडी बापूजीके पास लौट जानेवाला था। अिसलिअे शामकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीसे मिलकर मैंने चर्चा की कि नालवाडीसे मैंने क्या सीखा और यहाका मेरे दिल पर क्या असर पडा। अिससे अुनको भी बहुत आनन्द हुआ और मुझे भी परम सतोष मिला। विनोबाजीमें मैंने अेक प्रखर विचारक, *अुत्कट साधक, अूचे दर्जेके वैराग्यनिष्ठ, अद्भुत श्रमशील तथा साथियोंको* अूचा अुठानेका सतत प्रयत्न करने और तीव्र अिच्छा रखनेवाले पुरुषके दर्शन किये। मुझे लगा कि बापूजीके बाद अगर कोअी कुछ प्रकाश दे सकता है तो वह यही शख्स हो सकता है। मैंने अपने दिलकी सब बातें अुनके साथ करके रातको ही अुनसे विदा ले ली थी।

१८–५–'३५

प्रात कालकी प्रार्थनाके बाद प्रवचन करते हुअे विनोबाजीने कहा। बलवतसिहजीने रातको बातें कीं अुनसे मुझे बडा सतोष हुआ। मेरा और अुनका सबध जीवनभरके लिअे बध गया है। अुनकी बातें मुझे बडी ही

प्रिय लगी है। अुन्होंने यहांसे बहुत कुछ लाभ अुठाया है और सबके साथ अच्छा परिचय कर लिया है। यह बात बहुत महत्व रखती है। मेरा परिचय अिसी प्रकारसे होता है और वह सदाके लिअे कायम हो जाता है मैं चाहता हूं कि आश्रमका अिस प्रकारका लाभ अधिकसे अधिक लोग अुठा सकें। आश्रमके सब लोगोंको अपनी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिये।

* * *

मैंने नालवाडीसे विदा ली और बापूजीके पास मगनवाडी आ गया मैं तो बापूजीको भी छोडकर जानेकी पूरी योजना बना चुका था तब विनोबाजीके साथ सबंध बांधे रहनेका तो सवाल ही नहीं था। लेकिन सत्पुरुषोंके मुंहसे जो वचन सहज ही हृदयकी गहराअीसे निकल जाते हैं अुनके आगे-पीछेकी स्पष्ट कल्पना वे खुद भी नहीं कर सकते तो दूसरा कोअी कैसे कर सकता है। सत्पुरुषोंके आशीर्वाद और अुनके वचनों पर हमारी जो निष्ठा है, अुनके पीछे कोअी अव्यक्त शक्ति काम करती है, यह अनुभव सिद्ध हो चुका है। विनोबाजीके अिस वचनको कहे हुअे अेक जमाना गुजर गया है। लेकिन सचमुच ही मेरा और अुनका सबंध दिनोदिन बढ़ता ही चला रहा है और जीवनभरके लिअे बंध गया है। बापूजीके बाद जब आश्रमका मार्गदर्शक नियत करनेकी बात अुठी, तो मैंने ही विनोबाजीके नामकी सूचना की। आज यहां (नीकरमें) भी मैं अुन्हींके आदेशानुसार गोसेवाका पवित्र काम कर रहा हूं। अुनके साथ मेरे बहुतसे विचारोंकी पटरी नहीं बैठती और अुनको भी मैं बापूजीकी तरह ही खूब कडी बातें सुना देता हूं, तो भी अुनकी परिधिसे बाहर निकलनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। 'मिलि न जाअी नहिं गुदरत बनअी' — ठीक यह दशा आज मेरे मनकी विनोबाजीके सबंधमें है। मैं गोसेवासे अपने मनको हटाकर अुनके भूदानमें मदद नहीं कर सकता हूं। वे दुनियाके सारे प्रश्नोंका हल भूदानमें मानते हैं, अुससे भी अधिक मैं अुन्हीं प्रश्नोंका हल गोसेवामें मानता हूं। यों तो दोनों काम अेक ही सिक्केकी दो बाजू हैं। अुनका अेक ओरको मगज फिरा है, तो मेरा दूसरी ओरको। लेकिन हैं दोनों बापूजीके पागलखानेके ही दो सदस्य। बापूजीमें यह खूबी थी कि वे अेकसाथ अनेक पागलोंको 'नट मरकट अिव सर्वहिं नचावत' की तरह अेक ही डोरीमें बांधकर विविध प्रकारके नाच नचा सकते थे। और अुस जालको वे अपने पीछे भी छोडकर गये हैं, जिसमें बंधे हुअे हम सब अुनकी ओर मुंह करके विविध प्रकारके नाच नाच रहे हैं और भ्रमसे अुसमें अपनेपनका नाम भी करने लगते हैं।

अुसी दिन विनोबाजी कहीं बाहर चले गये थे। जब मैंने बापूजीको आकर प्रणाम किया तो अुन्होंने हसकर कहा, "विनोबाको भगाकर भाग आये?" मैंने कहा, "जी हा।" बापूजीने पूछा, "विनोबासे खूब सीखकर आये हो न?" मैं सकोचमें पड गया। क्योंकि विनोबाजीने जो कुछ कहा और मैंने सुना, अुसे अगर सीखा हुआ माना जाय तो मेरा बापूजीको छोडकर जानेका सवाल खतम हो जाना चाहिये था। लेकिन वह तो ज्योंका त्यों खडा था। मैंने बापूजीको अेक लम्बा पत्र लिखा कि मैं जानता हू कि आपको मेरे जानेसे दु ख होगा, लेकिन अब तो मुझे जाना ही है। क्या करू? मेरे भाग्यमें आपका सत्सग नहीं बदा है। अिसलिअे दु ख तो मुझे भी हो रहा है।

अेक रोज मैंने बापूजीसे पूछा, "आदर्श गावकी आपकी कल्पना क्या है?" बापूजीने कहा, "आदर्श गावमें सब धर्मोंके लोग परस्पर प्रेमसे रहते हो, कोअी अछूत न समझा जाता हो, कुअें-मदिर पर सबका समान अधिकार हो। सब खादी पहनते हो। ग्रामकी सफाअी आदर्श हो। हर प्रकारसे गाव स्वावलम्बी हो।"

प्रश्न — ग्रामसेवकको ग्राममें होनेवाले भोजोंमें, जो शादी या मृत्युके समय होते हैं, शामिल होना चाहिये या नहीं?

अुत्तर — हरगिज नहीं। धार्मिक क्रियाओंके सिवा ग्रामसेवक किसीमें हिस्सा नहीं लेगा। धार्मिक क्रियाओमें खर्चकी तो आवश्यकता होती ही नहीं।

प्रश्न — ग्रामसेवक काग्रेसकी किसी समितिका सदस्य बन सकता है या नहीं?

अुत्तर — न बनना अच्छा है। क्योंकि अुसमें से रागद्वेष पैदा होता है और कार्यमें विघ्न पडना सभव है।

प्रश्न — क्या मैं कोअी सस्था बनाकर काम करू?

अुत्तर — अभी नहीं। बिना सस्थाके सस्था जैसा कार्य करना। अगर सस्था बननेवाली होगी तो अपने आप बन जायगी। सेवा करना अपना धर्म है।

अतमें बापूजीने कहा कि "अब जो विचार किया है अुसके अनुसार तुमको किसी गावमें स्थिर हो जाना चाहिये। मेरा आशीर्वाद तो है ही। ग्रामवासियोंकी सेवा मनसे, वचनसे और कर्मसे करो। अेकादश व्रतोंका पालन तो करना ही है। मेरे पास जब आना जरूरी लगे तब आनेकी अिजाजत है। लेकिन अितना समझ लो कि हमारा अेक भी पैसा रेलभाडेमें व्यर्थ खर्च

न हो। जब तुम्हारी स्थिरचित्तता प्राप्त हो जाय और जैसा पहले कि यहां ठीक रहते थे, तो यह आश्रम तो तुम्हारा घर है। जब चाहो यहां आ सकते हो। यहांसे जो भी पाया है वह व्यर्थ नहीं जा सकता। भगवानका वचन है कि किया हुआ शुभ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता। जिसका अर्थ यह है कि जन्मान्तर भी हो सकता है। लेकिन जिस जन्ममें जब जिज्ञासा तथा जन्म हो तो किया हुआ या समझा हुआ शुभ कर्म या शुभ विचार काम आता है। वह नष्ट नहीं हो जाता तो यहांसे सीखा हुआ तुम्हारे काम क्यों न आयेगा? लेकिन जिसके लिए समय चाहिये। मेरा और तुम्हारा जो सम्बन्ध बन गया है वह टूट कैसे सकता है? तुम शान्त चित्तसे जाओ और वहां भी काम करो वहांके सब हाल लिखते रहो।"

९

कुछ और संस्मरण

१

भाखरीका किस्सा

खूब प्रयत्न करने पर भी और बापूजीकी खूब प्रेमवर्षा होने हुअे भी मेरा मन मगनवाडीसे ऊब गया था और मैं वहांसे भागना चाहता था। घर जानेका निश्चय हो चुका था। दूसरे दिन जानेकी तैयारी थी। अमतुस्सलाम बहनने रसोअीघरका चार्ज ले लिया था। मैंने अमतुस्सलाम बहनसे रास्तेके लिअे भाखरी बनानेकी बात की। मैं तेल नहीं खाता था जिसलिअे मोवनमें घी डालनेको कहा। अुन दिनों रास्तेमें आम मिलते थे जिसलिअे भाखरीके साथ आम रखनेको भी कहा। अमतुलबहनने मुझसे पूछा कि भाखरी कितनी चाहिये। मैंने कहा कि चौबीस घंटेका रास्ता है। दो समय खानेको चाहिये। अुन्होंने चौबीस घंटेका अर्थ किया चौबीस भाखरी और बापूजीसे जाकर कहा कि बलवन्तसिंह २४ भाखरी चाहता है, घीका मोवन और साथमें आम भी मांगता है। यह सुनकर बापूको धक्का-सा लगा। मुझे बुलाया और बोले, "तुम रास्तेके लिअे २४ भाखरी मांगते हो? घीका मोवन भी चाहिये और साथमें आम भी चाहिये?" मैंने हंसकर कहा, "बापू, २४ भाखरीकी बात तो मैंने नहीं की। हां, घीके मोवन और आमकी बात जरूर की थी। क्योंकि

मै तेल नही खाता और आम तो नाश्तेमें मिलता ही है। स्टेशनसे मैं कुछ खरीदता नही हू। जेलसे छूटते समय कैदीको जो भत्ता मिलता है अुससे ज्यादा मैने कुछ नही मागा।"

बापूने कहा — अितनेकी भी क्या जरूरत है? तुम तो नीमके पत्ते खाकर रह सकते हो। अेक दो दिन भूखे रहनेमे क्या है? मै यहा किसीको खाना नही देता हू। और अेण्ड्रूज साहब वगैराके कअी दृष्टात मेरे सामने बापूने रख दियें।

मैंने कहा — मै तो लोगोको साथके लिअे भी खाना देता था। और मुझे अपनी भूल नही लगती है।

बापूने कहा — ठीक है, अब तो मेरे पास समय नही है और मैं कल गुजरात जा रहा हू। तुम भी कल मत जाओ। वहासे लौटने पर बात करेंगे।

बापूजी करीब दस दिन गुजरातमे रहे। अिस बीच तीन चार पत्र बापूजीके आये और मेरे गये। बापूने लिखा

चि० बलवतसिह,

तुम्हारी २१ तारीखकी अव्यवस्था देखकर मै परेशान हुआ। लेकिन अच्छा हुआ कि मैंने तुम्हारी अितनी निर्बलता जान ली। अब तुम्हें स्थिरचित्त होकर अपनेको समझ लेना चाहिये। किशोरलाल और काकासाहबसे बात करो।

बोरसद, २३–५–'३५ बापूके आशीर्वाद

मुझे अिस सारे प्रकरणसे दु ख हो रहा था, यद्यपि अपनी कोअी गलती अिसमें मै नही मानता था। मैंने बापूको यह बात लिखी। बापूजीका अुत्तर आया।

चि० बलवतसिह,

तुमको जब दोषदर्शन नही हुआ है, तो क्लेश क्यो? भले ही कोअी महात्मा भी हमारा दोष बतावे। लेकिन जब तक हमको प्रतीति न हो तब तक न शोक होना चाहिये, न प्रायश्चित्त। मैंने तुममें असत्य नही पाया है, लेकिन विवेकशून्यता पायी है। जब तुम्हें आश्रमके पैसेमे जाना था तो जानेका कारण ही नही था। दिल्लीसे आना भी अुचित था या नही, यह सोचनेकी बात है। अैसे ही रोटी व आमकी बात है। लेकिन अिन सब बातोमें दु ख माननेकी बात नही है। सिर्फ समझनेकी बात है,

मन पर अंकुश रखनेकी बात है। अधिक मिलने पर। अुम्मीद है कि ७ दिन जो मिल गये हैं अुनका पूरा सदुपयोग किया होगा।

तुम्हारा कागज वापिस करता हूं।

२७–५–'३५ बापूके आशीर्वाद

२
बापू बापू ही थे

बापूजीको लगता था कि मैंने रास्तेके लिअे खाना क्यों मांगा। और मुझे लगता था कि जेलके कैदीको भी रास्तेका जो भत्ता दिया जाता है वह मुझे देनेसे बापूजीने अिनकार क्यों किया? जब बापू गुजरातसे वापिस आये तो अिस विषय पर हमारी घंटों चर्चा हुअी। लेकिन न तो बापूने ही मुझे क्षमा किया और न मैंने ही अपनी भूल कबूल की। बापूने निर्णय दिया कि अब तुम घर नहीं जा सकते। मैंने अपना निर्णय बताया कि आपके पास मैं नहीं रह सकता।

बापूने कहा—अच्छा, मेरे पास नहीं तो मेरे आसपास रहो, किशोरलालके पास रहो, विनोबाके पास रहो और बीच-बीचमें मुझसे मिलते रहो।

मैंने कहा—सत्संगके लिअे मुझे किसीके पास नहीं रहना है। हां कुछ काम सीखना हो तो अलग बात है।

बापूने कहा—क्या सीखना चाहते हो?

मैंने कहा—मेरा बुनाअी काम अधूरा है। मैं बुनाअी सीखना चाहता हूं

बापू बोले—अच्छा तो विनोबाके पास नालवाडीमें बुनाअीका का भी चलता है और मेरे पास भी रहोगे। विनोबासे मैं बात कर लूंगा। मानता हूं वहां तुम्हारा मन लग जायगा। विनोबा तो बडा संत पुरुष है

बापूजीने विनोबासे बात की, अुन्होंने कबूल किया और नालवाडीमें मे रहने और बुनाअी सीखनेकी व्यवस्था कर दी। अिस प्रसंगको याद कर मेरे हृदयकी क्या गति हो सकती है यह पाठक समझ सकते हैं। कोअ अुपद्रवी लडका मूर्खताभरे गुस्सेसे मांको छोडकर भागता हो और मां अुस पीछे पीछे दौडती हो, यही मेरी और बापूकी स्थिति थी। मांका तो बच्चे साथ कुछ निजी स्वार्थ भी होता है, लेकिन बापूका तो मेरे प्रति शु वात्सल्य और प्रेमके सिवा दूसरा भाव नहीं हो सकता था। बापूके पास भागनेकी मेरी आकुलता और बापूका मेरे प्रति अगाध प्रेम और मुझे अप पास रखनेकी छटपटाहट—अिसकी तुलना मैं किसके साथ करूं? भगवा

कृष्णने गीतामें कहा है कि 'प्राप्य पुण्यकृताम् लोकानुषित्वा शाश्वती समा। शुचीना श्रीमता गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।' मै नही जानता कि मैंने पिछले जन्ममें कुछ पुण्य किये थे या नही। लेकिन मेरा तो अिसी शरीरसे श्रेष्ठ पिताके घर जन्म हो गया। यह मै प्रत्यक्ष अनुभव करता हू। अिससे अधिक तो मै क्या कहू? लेकिन माको प्रसवके समय जो पीडा होती है, अुससे कम पीडा मुझे अपने पास पकड रखनेमें बापूजीको नही हुअी। मै बापूजीको अपनी माता कहू, पिता कहू, गुरु कहू — ये सब विशेषण मुझे फीके-से लगते हैं। अितना ही कह सकता हू कि बापू बापू ही थे। अुनके जैसा प्रेम और अुदारता किसी भी शरीरधारीमे मुझे नही मिली। मुझे अिस पितृ-ऋणसे अुऋण होनेकी भगवान शक्ति दे यही प्रार्थना है।

मुझे मगनवाडीसे भागते समय किसीने शुभ हेतुसे रोकनेका प्रयत्न नही किया था। लेकिन मेरे खिलाफ अमतुलबहनने शिकायत की और मै रुक गया। मै अुनका मजाक किया करता हू कि देखो तुमने मेरी रोटीके बारेमें बापूजीसे शिकायत की थी। वे भी हसकर कहती हैं, अजी अुसका तो आभार मानना चाहिये। अुसीके कारण तो आप बापूजीके पास ठहर गये, नही तो आप तो भाग रहे थे।

यह बात तो बिलकुल सच्ची है कि यदि वे मेरी रोटीकी शिकायत न करती तो न मालूम आज मै कहा होता? अीश्वर अपना काम अजीब ढगसे करता है। क्योकि अुस समय कोअी मुझे समझानेकी कोशिश भी करता तो मेरा मन किसी भी बातको समझनेके लिअे तैयार नही था। अिसके लिअे सिर्फ यही अेक रास्ता था जिसके कारण मुझे अुस वक्त लाचारीसे रुकना पडा। मेरा दिल अमतुलबहनको तो आज भी धन्यवाद नही देता। लेकिन अुस अीश्वरको मै जरूर धन्यवाद देता हू जिसने अैसे अजीब ढगसे मुझे बापूजीके पाससे नही भागने दिया। फिर तो अैसे अनेक प्रसग आये और गये। लेकिन ज्यो ज्यो मै बापूजीके नजदीक पहुचता गया, त्यो त्यो मै आश्रमके जीवनका महत्त्व समझता गया और अुत्तरोत्तर वह मेरा घर जैसा बनता गया।

२

बापूकी नम्रता

बापूके साथ या बापूके आसपास रहनेका मेरा अेक सालका करार हुआ था। अिसीलिअे नालवाडीको पसन्द किया गया था। लेकिन नालवाडीमें

बुनाओीका काम व्यवस्थित नहीं चलता था, अिसलिअे किसीने मुझे सावली जानेकी बात सुझायी। तीसरे दिन मैं बापूजीसे मिलने महिलाश्रम गया। बापूजीने हंसकर कहा, "क्यों, दिन गिनते हो? तीन दिन तो कम हो गये न?"

मैंने कहा, "अपील करने आया हूं।"

बापू — अच्छा करो।

मैंने बताया कि नालवाडीमें बुनाओीका काम व्यवस्थित नहीं है। मुझे सावली भेज दीजिये। बापूजीने कहा, "ठीक है। जाजूजीसे बात करूंगा।" जाजूजी आश्रममें ही घूम रहे थे। बापूजीने अुनके साथ बात की और मैं दूसरे ही दिन सावलीके लिअे चल दिया और वहां जाकर अपने काममें लग गया। यों बापूके साथ पत्रव्यवहार तो चलता ही रहा।

अेक रोज बापूका चमत्कारी पत्र मिला.

चि० बलवन्तसिंह,

चार दिन हुअे जेठालाल अनन्तपुर गये। अुनको रास्तेमें चार मीलकी भाखरी चाहिये थी। स्टेशनने कुछ लेते नहीं हैं। अमतुस्सलामने मुझे पूछा। मैंने कहा, हां भाखरी बना दो। तुम्हारा किस्सा याद आया। तुमको मैंने डांटा था। स्मरणने मुझे दुःख दिया। मैं जानता हूं तुम्हारा तो भला ही हुआ। लेकिन मेरा दोष मिथ्या नहीं हो सकता। मेरा हेतु निर्मल था, लेकिन यह बात मुझे मुक्त नहीं कर सकती। क्षमा करना। अैसा अपूर्ण बापू है। बाकी तो किशोरलालभाअीने लिखा है न?

१५–८–'३५ बापूके आशीर्वाद

बापूके आशीर्वादका यह पत्र पाकर मेरे दिलकी प्रसन्नताका पार न रहा। अब तक अपने हठका जो अभिमान था कि मेरी बात सही है वह बापूकी नम्रताकी बाढ़में सब बह गया। मैंने बापूको अिसके जवाबमें अेक लंबा पत्र लिखा। अुसमें यह भी लिखा.

"मैं जानता हूं कि आपका मेरे अूपर कितना प्रेम है। आप मुझसे अितने त्यागकी आशा रखते हैं कि मुझे रास्तेके लिअे अपने खाने वगैराकी चिन्ता भी न हो। मैं अितना भी सग्रह करके क्यों चलूं? मैं आपकी अिस आशाको पूरी नहीं कर सका और अपने हठके कारण अपनी बातको सही

समझता रहा अिसका मुझे दु ख है। आपने क्षमा माग कर तो मुझे और भी शर्ममें डाल दिया है और प्रेमकी रस्सीसे मजबूत बाघ लिया है। अिसका असर मेरे चित्त पर गहरा पडा है। मैंने सागभाजीकी शोध कर ली है।"

बापूका अुत्तर आया.

चि० बलवन्तसिंह,

अीश्वरभाअीका खत अुसे दे दो, कान्तिका कान्तिको। तुम्हारे खत मिले है, हिसाब पढ लिया। पैसे तो है ना? चाहिये तब लिखो। हिसाब अच्छा है। भाजी अित्यादिकी शोध की सो अच्छा किया। मैंने माफी माग ली वह तो आत्म-कल्याणके लिअे। अुसका असर तुम्हारे पर गहरा पडा यह समझकर मुझे आनन्द होता है। तुममें काम करनेकी शक्ति तो काफी है ही। सावलीमें तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जायगी।

वर्धा, ३०–८–'३५ बापूके आशीर्वाद

४

लोगोका भ्रम दूर करनेका अुपाय

सावलीमें अेक विशेष दिन देवीके सामने बकरेकी बलि चढानेका काम सामूहिक रूपसे होता था। सब लोग गावमें अेक अेक बकरा लेकर जाते थे और देवीके निमित्तसे वही पर अुसे काटकर और अुसका मास बनाकर खाते थे। अिसका सब वर्णन मैंने बापूजीको लिखा था। बडा भयानक दृश्य था। पेड पेड पर बकरे टगे थे। दूसरी घटना थी अेक बहनकी। अुस बहनने कुछ चुरा लिया था और लोग अुसको सता रहे थे। भाजीके कुछ बीज भी भेजनेको लिखा था। अुसके जवाबमें बापूने लिखा.

चि० बलवन्तसिंह,

देवीके सामने बकरोंके भोगका बयान दु खद है। हम अिन सदियोकी भ्रमणाको क्षणमें दूर नहीं कर सकते। लोग समझ सकें अैसी सेवा जब तक हमने नहीं की है, तब तक हमारी बात सुननेके लिअे अुनके हृदय तैयार नही होगे। बुद्धिका विकास अिसमें भी कठिन है। और अहिंसक प्रवृत्तिमान कम हृदयस्पर्शी है। हृदयस्पर्श नि स्वार्थ सेवासे बहुत जल्दी हो सकता है। अिसलिअे आज तो हमें अिन देवियोको बकरोंका भोग चढानेवालोमें सेवाकार्य करना है। और मौका मिलनेसे अुनका भ्रम

दूर करायेंगे। याद रखो कि जो दृश्य तुमने अनपढ लोगोंमें देखा वही दृश्य पढे हुअे लोगोमे कलकत्तेमें देखा जाता है और वहा वहुत पैमानेमें।

दूसरी घटना भी अुसी प्रकार समझो, अगरचे अितनी दुखद अितनी असह्य नही है। अुसमें भी अिलाज वही है। मुझे पता नही कि कृष्णदास वीज अित्यादि ले गया है कि नही। तुम्हारा खत अुसके जानेके वाद मेरे हाथमें आया।

* * *

मगनवाडी, वर्धा — वापूके आशीर्वाद

ता० १७-९-'३५

१०

स्नेहनिधि बड़े भाअी पू० किशोरलालभाअी

सावलीमें रहते समय मेरा पूज्य वापूजीके साथका पत्रव्यवहार पूज्य किशोरलालभाअी ही किया करते थे और मैं भी अुनको वहुतसे पत्र लिखा करता था। यहा पू० किशोरलालभाअीका अत्यत अल्पसा परिचय कराये विना तथा अुनके कुछ वहुमूल्य पत्रोंको प्रकाशमें लाये विना आगे वढना अशक्य-सा लगता है।

वापूजी तो वापू थे ही, लेकिन पू० किशोरलालभाअीने आश्रम-जीवनमें वडे भाअीका स्थान ले लिया था। जिस प्रकार मैंने वापूजीको सताया और वापूजीने मेरा दुलार रखा, अुसी प्रकार वडे भाअीका जो फर्ज होता है अुसे किशोरलालभाअीने अतकी घडी तक निभाया और मेरी भी अुनके प्रति वैसी ही श्रद्धा वनी रही जैसी कि छोटे भाअीकी वडे भाअीके प्रति रहती है। मैंने अुनको वहुत नजदीकसे देखा। अुनकी-सी सहनशीलता, अुनका-सा धीरज, अुनका-सा प्रेमी स्वभाव और शारीरिक पीडा होते हुअे भी अितनी प्रसन्नचित्तता मैंने अपने जीवनमें अन्य किसीमें नही देखी। जव १९३४में पू० नाथजीने मेरा परिचय किशोरलालभाअीसे कराया था, तव कहा था कि देखो वहा किशोरलालभाअी रहते हैं। तुम वीच वीचमें अुनसे मिलते रहना। लेकिन अेक वातका ध्यान रखना। अुनकी तवीयत कमजोर है और अुनका स्वभाव अैसा है कि कोअी अुनके पास चला जाय तो अुनके साथ वातें करनेमें वे अपने स्वास्थ्यको भूल जाते हैं

और जब तक मिलनेवाला चला न जाय तब तक बातें करते ही रहते हैं। मैंने पू० नाथजीकी अिस सूचनाका हमेशा ध्यान रखा। लेकिन कुछ समय बाद मैं अुनके साथ अितना घुलमिल गया कि वे मेरे और बापूजीके बीचमें पड़ते ही थे। यहा तक कि मैंने भी अुनको बीचमें डालनेका अपना अधिकार-सा मान रखा था। मैं अुनके साथ मजाक तक करनेमें नही चूकता था और अुनका भी स्वभाव अैसा ही था। अेक बार अुन्होंने मेरे खराब अक्षर सुधारनेकी सूचना बड़े मनोरजक ढगसे की, तो मैंने लिखा कि आपकी तरह मैं सफेदको काला करना भले न जानता होअू, लेकिन सूखी और खाली जमीनको हरीभरी करनेमे मेरा कुदाल काफी सुन्दर रेखायें खीचना जानता है। आपकी काली रेखाओंके बिना मेरा काम चल जाता है, लेकिन मेरी रेखाओंके बिना आप भूखे ही रह जायेंगे।

विवेक और स्नेहके वे भडार थे। वे खूब कठोर सत्य कह सकते थे, लेकिन 'कहहि सत्य प्रिय वचन विचारी'—अुनका वचन सत्य, प्रिय और विचारयुक्त होता था। किसी साथीको कितना भी कठोर सत्य स्पष्ट कहनेकी अुनमें हिम्मत थी। अुनको जो लगता था अुसे मनमें न रखकर सामनेवालेको वे सुना देते, लेकिन अुसके प्रति स्नेहमे जरा भी फर्क नही आने देते थे। जिन्हे अुनका परिचय हुआ था वे सब अैसा अनुभव करते थे। वे जितने विचारक और गभीर थे, अुतने ही विनोदी भी थे। अगर मैं अुनके साथके मधुर सस्मरण लिखने बैठू तो जैसी पू० नरहरिभाओीने बहुत मेहनतके बाद 'श्रेयार्थीकी साधना' लिखी है, वैसी अेक-दो पुस्तकें सहजमे लिख सकता हू। लेकिन अुनका और मेरा सबध अितना घनिष्ठ था कि अुनकी मृत्यु पर सिवा पू० गोमती-बहनको अेक तार देनेके मेरी कलम ही अुनके बारेमे नही अुठी। तारमें मैंने लिखा था . 'पूज्य गोमतीबहन, भाओीके स्वर्गवासके समाचार सुने। अन्त समयमें अुनके दर्शन और सेवासे वचित रहा, अिसका मुझे दु ख रह गया। भाओी तो जीवन्मुक्त थे। हसते-हसते गये होगे।—बलवतसिह।' अिससे भी बड़े दु खकी बात यह थी कि बेचारी गोमतीबहन भी अतिम क्षणोमें अुनकी सेवा और दर्शनसे वचित रह गअी। वे किसी कामसे अन्दर गअी अितनेमें ही किशोरलालभाओीके प्राणपखेरू अुड गये।

बापूजीके बाद वे हमारी ढाल थे। वे भी अुठ गये तो रोनेसे क्या लाभ? लेकिन जब मैं बापूजीके साथके सस्मरण लिखने बैठ गया और कलमने अिजनकी तरह अपनी पटरी पकड ली, तो सबसे बड़े जकशन स्टेशन पर

किशोरलालभाओके मधुर संस्मरण रूपी थोडासा पानी लिये बिना अिजन आगे कैसे चल सकता है? अुनके साथ मेरा जो पत्रव्यवहार हुआ और जो चर्चाओं हुओ, अगर अुन सबका संग्रह मैंने संभालकर रखा होता तो अितनी पूंजी बन जाती कि अुससे मैं अनेक गरीब लोगोंका भला कर सकता था। लेकिन थोडेसे कण कंजूसकी तरह मैंने अपनी गुदडीमें छिपाकर रख ही छोडे थे। अगर मैं आज भी अुन्हें छिपे ही रखकर चला जाअू तो कंजूसीकी हद हो जायगी और कितने ही गरीब लोग भूखे रहकर मुझे गालियां देंगे। सबसे अधिक गाली तो पू० गोमतीबहन ही देंगी, जिनसे भी छिपाकर रखनेका मैंने अतिलोभ किया है। जहां बापूजीके परिवारमें मेरे जैसे क्षणभरमें आपेसे बाहर हो जानेवाले लोग थे, वहां किशोरलालभाओ जैसे हिमालयकी तरह अचल और शीतल रक्षक भी थे।

'सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती।
सरल सुभाअु सबहीं सन प्रीती॥'

शम्भुके संघमें जहां वीरभद्र थे वहां गणेशजी भी तो जरूरी थे। अुनका स्वभाव जहां आकाशकी तरह खुला था, वहां अपनी व्यक्तिगत सुविधा और सेवा लेनेमें संकोची भी था। मर्यादाका पालन वे कडाअीसे करते थे। अेक बार जमनालालजीने अुनके सामने गोमतीबहनको अिलाजके लिअे वियेना भेजनेकी बात निकाली, तो अुन्होंने कहा कि जो सुविधा मैं अपने व्यक्तिगत जीवनमें प्राप्त नहीं कर सकता, अुसका लाभ सार्वजनिक जीवनमें अुठानेका मुझे क्या अधिकार है? जमनालालजीका अुनके प्रति अगाध स्नेह था। वे अपनी बात कितने प्रेम और आग्रहके साथ रखनेकी योग्यता रखते थे, अिसका सबको अनुभव है। वियेना जानेकी बात मेरे सामने ही चल रही थी और मैं दोनोंके मुंहकी तरफ देख रहा था। मुझे लगता था कि ये अगर कबूल कर लें तो कितना अच्छा हो। किशोरलालभाओ बोले, "देखो अगर मैं वकालत करता तो अितना पैसा नहीं कमा सकता था कि गोमतीको वियेना ले जाकर अिलाज करा सका होता। तो आज मैं कैसे भेज सकता हूं? आपका प्रेम और भावना मैं जानता हूं। लेकिन मुझे अपनी मर्यादाका भी तो भान है। आप फिर किसको वियेना भेजेंगे?" बिचारे जमनालालजी चुप हो गये।

अुनका धीरज और सहनशीलता तो गजबकी थी। यों तो वे हमेशा बीमार ही रहते थे, लेकिन अुनकी बीमारीका अेक दृश्य मैं कभी नहीं भूल

सकूगा। १९३८की बात है। हरिपुरामें काग्रेस थी। अुसमें मैं भी गया था। बापूजीके कैम्पमे ही ठहरा था। किशोरलालभाओीको बुखार चढा। बुखार १०४ डिगी था। अुधर गोमतीबहनको भी बुखार चढ गया। अब कौन किसकी सेवा करे? दोनोंके सेवक और डॉक्टर तो बापूजी ही थे। वे दोनोकी सभाल करते थे। दोनोकी खाटे अेक ही तनूमें थी। दोनो अेक-दूसरेकी तरफ देखकर हसते थे। मुझे लगता था कि दोनो जानेकी तैयारी कर रहे हैं तो भी कितने प्रसन्न हैं। हरिपुराकी हवा अितनी खराब हो गयी थी कि वहा पर १०-१५ लोग मर चुके थे। साबरमती आश्रमके पडित श्री नारायण मोरेश्वर खरे वही चल बसे थे। बापूजीको डर हो गया था कि कही अिनको भी न खो दें। अिसलिअे दोनोको बारडोली भेज दिया। अच्छे हो जाने पर मैंने अेक रोज किशोरलालभाओीसे पूछा कि आप बीमारीमें भी अितने कैसे हस लेते हैं? वे बोले, "देखो, जहा चमडा कमाया जाता हैं वहा अगर तुम जाते हो तो कैसा लगता है? तुम नाक बन्द क्यो करते हो? लेकिन चमडा कमानेवालेसे पूछो। वह क्या कहता है? अिस प्रकार बीमारी तो मेरी साथिन है। अेक रोज थोडी अधिक हुअी तो क्या, और थोडी कम हुअी तो क्या?" यह थी अुनकी सहनशीलता और धीरजकी पराकाष्ठा।

अुनके शरीरमें कितनी पीडा होती रहती थी, अिसका पता अुनके ही पत्रसे चलता है। मैंने अुनको लिखा था कि आपको शारीरिक सेवा लेनेमें सकोच नही करना चाहिये। तब अुन्होने लिखा, "देखो मेरे शरीरको जितना दबानेकी जरूरत है अुतना दबानेवाला मुझे कोअी नही मिला, और न मिलनेकी आशा है। तो फिर थोडासा अुपकार लेकर ही मैं क्या करू?" यह अुनका अतिम पत्र था। जब अुनका स्वर्गवास हुआ तब मैं राजस्थानके बासवाडा जिलेके अकाल-पीडित क्षेत्रोमें घूम रहा था और यह सोच रहा था कि बहुतसे समाचार अेकसाथ ही अुन्हे लिखूगा। अितनेमें अेकाअेक मुझे अुनके चले जानेका समाचार मिला और मेरे दिलमें यह दर्द रह गया कि मैंने अुनको पत्र लिखनेमें देर कर दी।

अेक बार मैं कुछ नाराज-सा हो गया तो वे बोले, "देखो, अपने सुरेन्द्र और तुमको मैं अिसीलिअे कुछ सुना देता हू कि तुम लोग मेरी बात सुनते हो।" अुस दिन मुझे पता चला कि अुनके दिलमें मेरे प्रति कितना स्नेह भरा था।

अब मैं अुनके कुछ कीमती पत्रोंके नमूने पूर्वापर सदर्भके साथ यहा पेश करता हू।

१

सावलीसे मैंने बापूजी और किशोरलालभाअीको पत्र लिखे। अक्षर तो खराब थे ही। सावलीमें दूध और घी मिलनेमें कठिनाअी थी। सागभाजी भी नही मिलती थी। दातुनके लिअे नीमके वृक्ष भी नजर नही आते थे। वहाका पानी भी खराब था। मैंने ५ रुपये मासिकमें गुजारा चलानेका भी लिखा था। अिस पर अुनका विवेचनापूर्ण पत्र आया।

वर्धा, ८-७-'३५

भाअी श्री बलवन्तसिंहजी,

मेरा पहला पत्र मिला था न?

पू० बापूका कलका पत्र मिला होगा। साथ मेरी चिट्ठी भी। पू० बापू आपका सब पत्र ठीक निकाल न सके थे। अिससे अुन्होंने वह मेरे पास फिरसे सुना। बाद अपने पत्रकी पूर्तिमें यह पत्र लिखनेकी आज्ञा दी है।

अिधर-अुधर तलाश करनेमें दूधकी व्यवस्था हो जाना सभव है। कुछ श्रम ले करके अुसको प्राप्त करनेका प्रयत्न करें। पर्याप्त दूध मिल जाय, तो अुसका दही बनाके अुसमें से मक्खन आप ही तैयार कर सकेंगे। मक्खनका घी बनानेकी आवश्यकता नही है। ज्यादा दिन मक्खन रह नही सकता अिसमे हम अुसका घीमें परिवर्तन करते हैं। परन्तु ताजे मक्खनकी अपेक्षा घीके गुण कम ही है। मक्खनमें जो प्राणतत्त्व रहते है, वे घीमें नही पाये जाते। अैसा भी हो सकता है कि रोज तो दूध खायें और हफ्तेमें अेक या दो दिन दूधकी छाछ कर डालें और मक्खन तैयार करें। थोडासा ज्यादा दूध मिल जाय तो अुस दिन मक्खन निकालके केवल छाछका ही अुपयोग करें। और अिस सब झझटमें से बच सकते हैं, यदि काफी दूध मिला लें और अलग मक्खनकी अिच्छा ही न रखें। दूधमें वह प्राप्त हो ही जायगा।

अिन दिनोंमें घासके बीचमें अनेक प्रकारकी भाजिया अपने आप पैदा होती हैं। अुनमें खाने लायक अनेक पत्तिया रहती हैं। अुनमें ढूढा जाय तो आपको अवश्य भाजी प्राप्त होगी। देहातियोंने अब तक भाजीकी आवश्यकता ही कम समझी है। वे मानते हैं कि भाजीकी आवश्यकता धनिकोंको ही रहती है। वह आवश्यक आहार नही है। अिसके सिवा जहा

पर जो भाजी बेची जाती हो अुसीको वे भाजी समझते हैं। अपने आप जगलमें अुगती हो अुसे नही जानते। आप खोजेंगे तो जरूर मिलेगी।

नीमके वृक्ष वहा नही पाये जाते, यह जानकर कुछ आश्चर्य होता है। सामान्यत हिन्दुस्तानमे सब जगह नीम होता है।

पानी चाहे कितना गदा हो, अुसे २०–२५ मिनट अुबालकर, छानकर अुपयोगमे लाया जाय तो अुसमें जन्तु नही रहने पाते। बरसात आता हो तब अेक बरतनके अूपर शीशीमे तेल भरनेके लिअे जैसा नलीदार फूल होता है वैसा फूल रखकर बरसातमें खुलेमे छोड दी जाय तो पीनेके लिअे स्वच्छ पानी मिल जाना सभव है। लाल दवाअीका अेकाध कण पानीमें छोड दिया जाय तो वह पानी जन्तुहीन हो जायगा। और निर्मलीका अेक छोटासा टुकडा पानीमें थोडी देर हिलाया जाय तो सब मैल जल्दी नीचे बैठ जायगा। फिर अूपरसे पानी दूसरे बरतनमे निकाल लिया जाय।

अिनमें से कअी सूचनाये मेरी हैं। कुछ पू० बापूजीकी हैं। अिन्हे पढ़कर कदाचित् आप यह महसूस करे कि अितना सब मैं करू कौनसे समय? परन्तु सभव है धीरे धीरे यह सब व्यवस्था हो सकती है।

पू० बापूजीने लिखाया है कि स्वास्थ्यको बिगाडकर पाच रुपयेकी मर्यादामें रहनेका आग्रह न रखें।

आप प्रसन्न होगे।

आपका
किशोरलाल

२

मैंने अपने जीवनमे पहली बार नावलीके साप्ताहिक बाजारमें अितने अर्धनग्न स्त्री-पुरुषोको देखा अुतनोको अेक ही जगह पर अितनी सस्यामें पहले कभी नही देखा था। वहाकी गरीबी, अपनी कठिनाअिया और सतोषका समाचार मैंने किशोरलालभाअीको लिखा था। अुनका अुत्तर आया.

वर्धा, २१–७–'३५

प्रिय श्री बलवन्तसिहजी,

आपका पत्र परसो मिला। भाअी दौलत आज नावली जा रहे हैं। अिनसे अुनके साथ ही पत्र भेज रहा हू। पू० बापूजीको आपका पत्र पढ़कर सुनाया। वे कदाचित् आज ही अुत्तर न दे सकेंगे।

आपका काम ठीक चल रहा है, और आपको वहा सतोष है, यह जानकर खुशी हुअी। यहाकी अपेक्षा वहा जीवनकी कठिनाअिया ज्यादा है। परन्तु मानसिक अुत्साहके कारण वे आपत्तिरूप नही मालूम होंगी।

वहाकी गरीबीका वर्णन पढकर दुःख होता है। आजकल पू० बापूजी भी अिसीका विचार करते हैं। शीघ्र ही वहाकी कार्यप्रणालीमें परिवर्तन होनेका सभव है। जिसको अत्यधिक लिखना पडता है अेव जिसको क्वचित् ही लिखना पडता है — अिन दोनोंके हस्ताक्षर खराब हुआ करते हैं। पहले मनुष्यका दिमाग अितना जोरसे चलता रहता है कि हाथको बहुत वेगसे चलाना पडता है। अिसमे अुसके हस्ताक्षर बिगडते हैं। दूसरेको अक्षर लिखनेकी आदत न होनेके कारण आकृति बिगड जाती है। स्याहीसे रोज थोडा थोडा लिखनेका अभ्यास करनेसे अक्षर सुधर सकते हैं। अभ्यास करनेमें अितनी सावधानिया रखनी चाहिये (१) लकीरोवाले कागज पर ही लिखना। (२) छापे हुअे नमूनेके अनुसार ठीक आकृति निकालनेका प्रयत्न करना। (३) लपेटवाले अक्षर, अेक-दूसरेसे जोडे हुअे अक्षरोको कलम अुठाये बिना लिखनेका आग्रह न रखना। हाथको मुहावरा हो जाने पर लपेट अपने आप मिल जाती है। (४) लपेट सीखनेमें सुन्दर अक्षर लिखनेवालोंके हस्ताक्षरो पर ध्यान देना चाहिये। (५) आपको कदाचित् मालूम न होगा कि हस्ताक्षर और चरित्रका सबध है। हस्ताक्षर परसे मनुष्यके चरित्र और स्वभावको पहचाना जा सकता है। अिसमे हमारे मन और बुद्धिकी व्यवस्था और अव्यवस्था हमारे हस्ताक्षरोंमें भिन्न भिन्न तरहसे अुठती है।

श्री सुरेन्द्रजी, पूज्य नाथजी और श्री गगाबहनके पत्र २-३ दिनमें ही आये हैं। सब आपको याद करते हैं और खबर पूछते हैं। सुरेन्द्रजी आचार्य या पडितजी बननेके रास्ते पर हैं।

मैं अभी तक बहुत परेशान नही हू। गोमती भी साधारण ठीक है। जल्दीके सबब आज न लिखेगी। आपको प्रणाम लिखाती है।

आपका

किशोरलाल

३

मैंने अपने पत्रमें कअी बातें लिखी थीं, जिनका अुत्तर अुन्होंने प्रथम दिया था। मुझे बापूजीका पत्र मिलनेमें देर हुअी थी। अबकी बार मैंने

स्नेहनिधि बडे भाअी पू० किशोरलालभाअी

अक्षर सुधार कर लिखनेकी कोशिश की थी। खराब अक्षरोका कारण भी बताया था। दूसरे, मैंने लिखा था कि

> अिन्द्रियाणा हि चरता यन्मनोऽनुविधीयते।
> तदस्य हरति प्रज्ञा वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ *

गीताके अिस श्लोकसे मेरा अनुभव अुलटा है। अशुभसे शुभकी तरफ खीचनेवाली शक्ति अधिक बलवान है। तीसरे, जिस बुनकरके घरमें बुनाअी सीखता था अुसके घरकी मोरी गदी थी। स्त्रिया खुलेमे बैठकर स्नान करती थी। मैंने सफाअी की और घासफूसका स्नानघर बना दिया था। चौथे, सावलीमें कुष्ठरोग बहुत ही फैला हुआ था। अुसका वर्णन लिखा था और बचनेका अुपाय पूछा था। पाचवें, मुझे वहाके देहातियोका सहज और स्वाभाविक जीवन प्रिय लगता था। छठे, सावलीके खादी-अुत्पत्ति केन्द्रके कुअेंके पास मैंने जो भाजी अुगाअी, वह बापूजीके पास भेजी थी। अिसके अुत्तरमें किशोरलालभाअीने लिखा

वर्धा, १०-८-'३५

भाअी श्री बलवन्तसिहजी,

सप्रेम प्रणाम। आपका ता० ५ का पत्र मिला। पू० बापूजीका अेक भी पत्र आपको आज तक नही मिला, यह आश्चर्यकी बात है। पू० बापूजीने मेरे सामने ही आपको अेक विस्तृत पत्र लिखा था अैसा मुझे और अुन्हे दोनोको याद आता है। हा, अभी थोडे दिनोमें आपको अुन्होने पत्र नही लिखा है। मेरे खयालसे तो आपका जो पिछला पत्र था वह अुन्हीके पत्रके अुत्तरमें था। खैर। यह पत्र अुनका और मेरा दोनोका आप समझियेगा।

अिस समयके आपके हस्ताक्षर पढनेमें कुछ भी तकलीफ नही हुअी। पू० बापूजीने स्वय ही सब पत्र पढ लिया। लिखनेका कम मुहावरा होनेसे अक्षरोंमें सुरूपता और लिखनेकी गतिमें शीघ्रता कम रहती है, यह बात ठीक है। परन्तु सुरूपता और सुवाच्यता ये भिन्न गुण हैं। अिससे सुरूप न हो तो भी सुवाच्य अक्षर निकाले जा सकते है, यदि अक्षरोकी आकृतिका अच्छा परिचय हो।

---

* विषयोमें भटकनेवाली अिन्द्रियोके पीछे जिसका मन दौडता है, अुसका मन वायु जैसे नौकाको जलमें खीच ले जाती है वैसे ही अुसकी बुद्धिको जहा चाहे वहा खीच ले जाता है।

लिखनेमें शीघ्रता अभ्याससे ही आती है, तो भी शीघ्रलेखनसे अक्षर बहुत बिगड भी जाते हैं। अिनसे सुवाच्य अक्षर लिखते लिखते जितनी शीघ्रता प्राप्त हो अुतनीसे ही संतोष रखना चाहिये।

परन्तु आप लिखते हैं कि दिमाग जोरसे चलता है और हाथ पीछे रह जाता है। यद्यपि अनेक लोग अिस प्रकार अपना अनुभव बतलाते हैं, पू० बापूजी मानते हैं कि अिसमें दोष हाथका नहीं है, दिमागका ही है। दूसरेको लिखाते समय यदि वह धीरे धीरे काम कर सकता है, विचारको स्थगित रख सकता है, और लिखनेवालेकी गतिके साथ चल सकता है, तो अपने हाथके साथ भी चलनेका अुनको सुलभ होना चाहिये। अिस पर हम प्रयत्न नहीं करते, अिसीसे यह भ्रान्ति अुत्पन्न होती है कि अपना हाथ अपने दिमागसे कुछ पीछे ही रह जाता है। और यही कारण है कि विचारोंमें अव्यवस्था अुत्पन्न होती है। अच्छे लेखकोंमें भी यह दोष प्रायः दिखाओ देता है, और यही कारण है कि अुन्हें अपने लेखोंमें बारबार संशोधन करना पडता है।

अशुभकी अपेक्षा शुभकी तरफ खींचनेवाली शक्ति अधिक बलवान है, यह आपका अनुभव बहुत हर्षप्रद है। यह अनुभवजन्य श्रद्धा ही आपका शुभ करती रहेगी। बिना कोओी बड़े अुदात्त और बलवान संकल्पके यह अनुभव होना दुष्कर है। आप भाग्यशाली हैं। सामान्य जनताका अनुभव वही रहता है जो कि गीतामें लिखा है। और यह भी तो गीतामें ही लिखा है न

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यक् व्यवसितो हि सः ॥
शीघ्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥*

* भारी दुराचारी भी यदि अनन्य भावसे मुझे भजे तो अुसे साधु हुआ ही मानना चाहिये। क्योंकि अब अुसका संकल्प अच्छा है। अुसकी अनन्य भक्ति दुराचारको शान्त कर देती है।

वह तुरन्त धर्मात्मा हो जाता है। और निरन्तर शांतिको पाता है। हे कौन्तेय, तू निश्चयपूर्वक जान कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता।

पू० बापूजी आपके पत्रसे बहुत प्रसन्न हुअे। आपके पत्रका कुछ अंश मैं कदाचित् 'हरिजनसेवक' में दूंगा।

आपने जिस तरह अपने गुरुकी फीस देनेका मार्ग निकाला है, वह अनुकरणीय है। गुरुके घरका पानी भरना और लकड़ी फाड़ना अितना तो पुराने जमानेमें भी कहा था। आपने अुसकी मोरी साफ करना वगैरा सेवा ठीक ही की है। आपको धन्यवाद है।

और मान्त्रिकके ढोंगको भी आपने अच्छी तरहसे सिद्ध कर दिया।

महारोगका प्रश्न बड़ा विकट है। चारों ओर वह महत्त्वका बन गया है। अुसको केवल खानगी संस्थायें तय नहीं कर सकतीं। न केवल सरकारी संस्थायें ही कर सकती हैं। दोनोंका और साथमें जनताका सहयोग होना आवश्यक है।

फिलहाल तो पू० बापूजीकी ओरसे अितनी ही सूचना दे सकता हूं :

(१) महारोगियोंको दूसरोंके संसर्गमें न आनेके लिअे सतत समझाते रहना चाहिये। कुछ बुरा भी मान लें तो भी संकोच छोड़कर अुन्हें दूर रहनेका अभ्यास करा देना चाहिये।

(२) लोगोंको भी समझाना चाहिये कि वे खुदको और अपने बच्चोंको अुनके संस्पर्शसे बचाकर रखें।

(३) संयोग अुनके और समाजके लिअे हानिकारक है, यह अुन्हें बार-बार समझाया जाय। यद्यपि यह बात समझानेसे ही अमलमें लाअी जा सके अितनी आसान नहीं है। वीर्यको दग्धबीज करनेका अेक आपरेशन होता है। परन्तु अिससे केवल संततिकी अुत्पत्ति अटकाअी जा सकती है। दूसरे व्यक्तिको रोगी होनेसे बचाया नहीं जा सकता। और फिर अैसा मनुष्य प्रायः अधिक कामातुर बनता है, जिससे अनेक स्त्रियोंको अुससे धोखा होनेका डर रहता है। अिससे अिस अुपाय पर विचार नहीं बैठता। यदि वैसे मनुष्य अपनी खुशीसे नपुंसक बनें तो अलग बात है। परन्तु अैसा करनेके लिअे तैयार हो अैसा व्यक्ति मिलना कठिन है।

(४) नीमके तेलकी मालिश अिन रोगियोंके लिअे अच्छी है, अैसा वैद्यक ग्रन्थोंमें कहा जाता है। पू० बापूजीको अिस विषयमें कोअी साक्ष्य कारण तो मालूम नहीं है। परन्तु अिनमें कोअी दोष नहीं हो सकता अितना जरूर है।

(५) चोल मोगरेके तेलके अिंजेक्शन यह आयुर्वेदिक अुपाय है। अिसकी प्रशंसा बहुत सुनी गअी है। युरोपीय डॉक्टर अिसीको आज अच्छेसे अच्छा अुपाय बता रहे हैं। अिससे रोग बिलकुल अच्छा हो जाता है, यह तो नहीं कहा जा सकता। लेकिन रुक जाता है। और जिसने यह अुपाय लिया है अुसके द्वारा चेप फैलनेका संभव कम होता है। अितने वे जन्तु निर्बल हो जाते हैं। प्रारंभिक दशामें रोग-निवारण होना भी संभव है। ये अिंजेक्शन सरकारी अस्पतालोंमें कहीं कहीं दिये जाते हैं। वर्धा जिलेमें अिसके लिअे कुछ प्रबन्ध है। वहांके सरकारी दवाखानेमें तपास करनी चाहिये। अिसके अतिरिक्त पू० बापूजीने डॉ० महोदयको अिस रोगका विशेष अध्ययन करनेके लिअे प्रेरणा की है। अुनके द्वारा स्थानिक कार्यकरोंको अिसकी जानकारी देनेका प्रबन्ध होनेकी आशा है।

(६) कार्यकरोंको अपने शरीरको संसर्गसे अवश्य बचा लेना चाहिये। अिसके लिअे बापूजीने निम्न अुपाय बताये हैं

(क) महारोगियोंके स्पर्शसे बचे रहें।

(ख) स्नानके पानीमें 'कान्डीका फुलअिन' नामक औषधि आती है अुसके कुछ चम्मच डाल दिये जायें। गुलाब जैसा पानीका रंग हो अुतना डालना आवश्यक है। अुस पानीमें स्नान किया जाय।

(ग) सूतको गंधकके धुअेंसे शुद्ध करके फिर छुआ जाय। अेक चलनीमें सूत रखकर अुसको अेक बरतन पर रख देना चाहिये और अूपरसे ढांक देना चाहिये। बरतनके अंदर थोडासा गंधक जलाना चाहिये और अुसका धुआं अच्छी तरहसे सूतमें फैलने देना चाहिये। वह सूत फिर जन्तुहीन हो जायगा। अिसके अतिरिक्त कार्बोलिक अेसिड अथवा मरक्युरिक परक्लोराअिड नामकी दवाओंकी पिचकारीसे फुकारनेसे भी जंतु मारे जा सकते हैं।

(घ) और अंतमें हमारा रक्त शुद्ध रखनेकी हर तरहसे कोशिश रखनी चाहिये। शुद्ध रक्तमें जन्तुनाश करनेकी शक्ति रहती है।

आश्रमकी अपेक्षा वहांका वायुमंडल आपको अधिक सात्त्विक और शुद्ध मालूम हुआ, जिसमें आश्चर्य नहीं है। वहां जो अच्छी या बुरी बातें हैं वे स्वाभाविक हैं। अच्छी बातको विशेष अच्छी बनानेका कृत्रिम अुपाय नहीं किया जाता, न बुरी बातको टालनेका। सत्य बोलनेवाला स्वभावसे सत्य बोलता है। असत्य बोलता हो तो बिना संकोच असत्य बोलता है। आश्रममें अच्छी बातें भी हों तो वे प्रयत्नपूर्वक हैं। बुरी बातें न हों तो भी प्रयत्नसे

हैं। यह जो निष्कपट — नैसर्गिक — जीवन है वह आपको आनद दे रहा है। जब तक यही आपका अभिप्राय रहे तब तक अुसमें से आपको लाभ ही मिलता रहेगा।

आपकी भाजी तो लूणीकी ही जात है। पू० बापूजीने अुसका भोजन किया।

पू० नाथजीकी तबीयत अभी अच्छी नही है। पैरका दर्द कष्ट दे रहा है। मैंने यहा आनेके लिअे प्रार्थना की है, परन्तु वे अिच्छा नही बता रहे हैं।

सुरेन्द्रजीका बोरियावीमें ठीक चल रहा है। अुन्हे सतोष है। गगाबहन भी अपने कार्यमें सतुष्ट हैं। रमणीकलालभाओीको अभी पूर्ण स्वास्थ्य नही प्राप्त हुआ है पर तो भी पहलेसे कुछ ठीक है।

गोकुलभाओी आपको हरअेक पत्रमें याद किया करते हैं।

अब और कामके कारण यहा पर ही बद करता हू। कुछ रह गया हो तो फिर दूसरे समय लिखूगा।

आपका सप्रेम
किशोरलाल

पुन — आपने जिस पुस्तकके विषयमें लिखा है वह अब तक नही मिली है। शायद श्री दातार देना भूल गये हो या लाना भूल गये हो। गाधी-सेवा-सघका वार्षिक अधिवेशन आगामी मार्चमें सावलीमें ही रखनेका अिरादा है। तब आपका केन्द्र सब लोग अच्छी तरह देख सकेंगे।

४

सावलीमें अेक त्योंहारके अवसर पर सब लोग अपने बकरे देवके सामने खडे करके अुसकी पूजा करते, अुसका वध करते और जगलमें करीब करीब सारा गाव मासाहारका वनभोजन करता था। अिसका रोमाचकारी वर्णन मैंने पू० बापूजी और किशोरलालभाओीको लिखा था। और भी प्रश्न पूछे थे। अुनके जवाबमें अुन्होंने पत्र लिखा। बापूजीने भी लिखा था, जो पृष्ठ ९३ पर दिया गया है। किशोरलालभाओीका पत्र अिस प्रकार है :

वर्धा, २१-९-'३५

प्रिय श्री बलवतसिहजी,

सप्रेम वन्दे। आपके सब पत्र बराबर मिले। मुझे अभी बिलकुल आराम तो नही हुआ है, लेकिन पहलेसे कुछ ठीक है। अभी थोडा थोडा ज्वर, थोडी खासी आदिकी शिकायत है। २-४ रोजमें आराम हो जानेकी आशा है।

बकरोंकी हिंसाका प्रश्न यों भी जटिल तो है ही, परतु कदाचित् हमारी अुस प्रश्नके प्रति देखनेकी दृष्टिमें भी कुछ दोष होना सभव है।

जो मासाहार नही करते परतु देव-देवीको भोग चढानेमें मानते हैं और कुछ कामना सफल होने पर अमुक प्रकारका भोग देनेकी प्रतिज्ञा करते हैं, वे मानिये कि देवके लिअे मिष्टान्न ले आवें तो आप अुन्हें मना करेंगे? क्योंकि हमारे वैष्णव-मदिरोमें भक्त लोग बडे दिनो (त्यौहार)के रोज भाति भातिके मेवा, मिठाअी, मिष्टान्नके भोग बनाकर ठाकुरजीके सामने रखते हैं। देव बकरा, हेला (भैंसा) आदि नही चाहता तो क्या मिष्टान्नोंको भी चाहता है? हजारो लोगोको खानेको अेक समयका भी अन्न नही मिलता, तब मदिरोमें कितना नैवेद्यके नाम पर व्यय किया जाता है? दोनोमें से कौन ठीक करता है, यह कहना मुश्किल है।

बात तो यह हैं कि यदि देवको कुछ भोग चढानेमें हमको श्रद्धा हो, तो वही पदार्थ हम ला सकते हैं, जिसका आहार हमें विशेष प्रिय है। जो त्यौहार पर मिष्टान्न खाता है, वह मिष्टान्न बनाकर देवके आगे रखता है। जो मासाहार करता है वह मास लाता है।

अिससे मुझे तो यह लगता है कि यदि हम मासाहार छुडा नही सकते, तो हम प्राणि-बलिदान भी बन्द नही करा सकते।

हा, यह हो सकता है कि हम लोगोको कहें कि मासाहार अच्छी बात नही हैं, फिर भी यदि आप मासाहार नही छोड सकते तो कमसे कम त्यौहारके पवित्र दिनको वह नहीं करना चाहिये। अैसे दिन निरामिष भोजनके व्रतके लिअे रखने चाहिये। सभव है कि जिस पदार्थको वे स्वय चख नही सकेंगे अुसका नैवेद्य भी न हो। यह भी होना सभव है कि भोग तो दिया जाय, और दूसरे दिन अुसे प्रसाद मानकर खाया जाय। अर्थात् बासी बनाकर खाया जाय, जो विशेष बुरा है।

साराश, मास-भोजन और मास-बलिदान दोनोको अेक-दूसरेसे अलग नही कर सकेंगे।

बडे राजा-महाराजा महज दावतके लिअे कितने ही प्राणियोका कत्ल कर डालते हैं। ये लोग वर्षमें दो चार रोज दावत करते हैं। देवको बीचमें से हटा दें और अुसी दिन दावतके लिअे जितने प्राणियोंकी हिंसा यदि करें, तो आपको क्या आपत्ति नही मालूम होती? आप यही क्यो नही समझ लेते

कि देव तो नाममत्र है, वास्तवमें यह अुनका दावतका दिन होता है। यह बात अेक विचारके लिअे रखता हूं। सिद्धान्तके स्वरूपमें नहीं।

चोरीके मामलेमें आप जिस तरह पड़े वह ठीक न हुआ। मुझे डर है कि कबूली करानेमें आपने अुस बाअीको खतरेमें डाल दिया है। पुलिस आपकी ही गवाही पर अुस बाअीका चालान कर दे यह संभव है। आपको पुलिसको यह कहना चाहिये था कि बाअीको मारना-झोड़ना बेकानून है। यह नहीं कर सकते। यदि अुस बाअीको अब छोड़ दें तब तो ठीक है, नहीं तो आपको भी अुसके पीछे खराब होना होगा। खैर, जो हुआ सो हुआ।

पू० नाथजीका पोस्टकार्ड परसों आया था। अुनके पैरको अभी ठीक आराम नहीं हुआ है। आज अुन्हें मैंने पत्र लिखा है। आपका पत्र भी भेज दिया है।

पू० नाथजीके पास आजकल मैं नहीं जा सकता हूं।

सौ० गोमती आपको प्रणाम लिखाती है।

आपका
किशोरलाल

५

सावली गावमें तालाब पर स्नान करती अेक बहनकी दूसरी बहनने सोनेकी कुछ चीज चुरा ली थी। लोग अुसे सता रहे थे। मैं बीचमें पड़ा और अुसे समझाकर चीज वापिस करा दी। जिस पर किशोरलालभाअीने लिखा था — 'बाअीसे (आपने) चोरी कबूल कराअी। अगर पुलिस अुसको फसानेमें आपकी ही गवाही दे तो?' लेकिन अैसा कुछ नहीं हुआ। यह भी मैंने अुनको लिख दिया था। मांसाहारका प्रश्न तो चल ही रहा था। जिस पर अुनका अुत्तर आया

वर्धा, १२-१०-'३५

प्रिय श्री बलवंतसिंहजी,

आपके सब पत्र मिले हैं। परंतु बहुत दिनसे आपको अुत्तर भेज नहीं सका। मेरी तबीयत अब पहलेसे अच्छी तो है, फिर भी दमेकी शिकायत अभी बन्द नहीं हुअी।

अुस चोरीके विषयमें पड़नेसे कुछ खतरा नहीं हुआ, यह जानकर खुश हुआ। शुभ निष्ठासे किये हुअे कामका फल शुभ हुआ यह ठीक ही है।

जो लोग स्वयं मांसाहारी न होते हुअे भी मांसका बलिदान करते हैं वे कम हैं। अुन लोगोंने कुछ ही समयसे मांसाहार छोड़ दिया है। अुनकी २-३ पीढ़ीके पूर्वज मांसाहारी रहे होंगे। जिन लोगोंमें मांसका बलिदान छुड़ानेमें कामयाबी प्राप्त होती है। मैं मानता हूँ कि मांसका बलिदान छुड़ानेके पहले मांसाहार छुड़ानेकी आवश्यकता है। और मांसाहार छुड़ानेकी हम चेष्टा न करें तो बलिदान छुड़ानेमें विशेष सफलता न मिलेगी।

आप अपना बगीचा खूब अच्छा बना लें। हम आयें तब हमको शाकभाजी खिलायेंगे न?

बम्बअीमें गंगाबहनके भतीजे श्री वनुभाजी बहुत बीमार हो गये थे। आपरेशन करना पड़ा था और स्थिति काफी गंभीर थी। दूसरे पुरुषका रक्त भी भरना पड़ा। समाचार है कि अब भयमुक्त हैं, अैसा डॉक्टर मानते हैं। गंगाबहन बम्बअी गअी हैं। पू० नाथजी भी जाया करते हैं।

श्री सुरेन्द्रजीका आपके नामका पत्र बहुत दिन पर आया था। साथमें भेज रहा हूँ।

साथका पत्र भाअी दौलतको दीजियेगा।

गोमतीका प्रणाम स्वीकार करें। बहुत करके यह महीना खतम होते ही मैं अेक-डेढ़ महीनेके दौरे पर जाअूगा। पटरपुर और भावनगर ये दो निश्चित हैं। बीचका समय जहा जा सकू वहा ही सही।

आपका

किशोरलाल

६

मेरा बुनाअीका काम पूरा हो चुका था। बुखारके कारण कमजोरी थी। मैं सावलीके बारेमें अपने पत्रोंमें संतोष प्रगट किया करता था। अिन परसे बापूजीको लगा कि सावली मुझे प्रिय है, अिसलिअे अगर सावलीमें ही रहनेकी मेरी व्यवस्था हो जाय तो मुझे पसंद आयेगी। अिसलिअे अुन्होंने अिस प्रकारका प्रबंध करनेका विचार किया और मुझे भी लिखा कि तुमको सावलीमें शांति मिले तो वहा रहनेका प्रबंध किया जा सकता है। अिसका अर्थ मैंने यह किया कि बापूजीके मनमें मेरे प्रति असंतोष है और वे मुझे अपनेसे दूर रखना चाहते हैं। बापूजीके आसपास १ साल रहनेकी बात भी पूरी होने जा रही थी। अिस परसे मैंने बापूजीको लंबा पत्र लिखा था। अुसका जवाब किशोरलालभाअीने लिखा

वर्धा, १–४–'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र कल मिला। आज श्री रामदासभाअीका पत्र भी मिला है। मेरे पहले पत्रसे आपको बहुत शोक हुआ यह जानकर कष्ट हुआ। मैं मानता था कि पू० बापूजीके पत्रसे आपका समाधान हुआ होगा और आप सावलीका काम पूरा करके आपकी अनुकूलतासे वहासे निकलेंगे। पर श्री रामदासभाअीके पत्रसे मालूम होता है कि पू० बापूजीके पत्रसे आपका असतोष हटा नही है और अुस पत्रके पीछे पू० बापूजीका या मेरा आपके विषयमे कुछ असतोषका भाव है अैसा आप मानते है।

अिस विचारमें भूल है। पू० बापूजीने जो कुछ लिखा है और मैंने भी जो कुछ लिखा था अुसके पीछे आपके विषयमें किसी प्रकारका असतोष, अविश्वास या प्रेमकी न्यूनता नही है। बल्कि आपकी कठिनाअिया और विचार-पद्धतिको मान्य करके ही पू० बापूजीने सावली छोडनेकी बात मजूर की है। आपने तो मुझे लिखा था न कि मैं पू० बापूजीसे आपकी ओरसे वकालत करू? मैंने जोरसे आपकी वकालत तो न की, पर सिद्धान्त रूपसे पू० बापूजीने आपको सावलीमे रहनेकी जो सूचना की थी अुसका विरोध किया था। अिसमें मैंने यह मान लिया था कि पू० बापूजी अपनी ही ओरसे आपको सावलीमें रखना चाहते थे। पर पू० बापूजीकी मान्यता थी कि आपको सावलीमें समाधान और सतोष प्राप्त हुआ है, अिससे यदि सावलीमें रहनेके लिअे प्रबध हो जाय तो आपको बहुत हर्ष होगा। अिससे अुन्होने अुस तरहकी सूचनायें दी। आपकी तबीयत वहा नादुरुस्त हुअी है सही, पर पू० बापूजीका अुस विषयमें अितना ही खयाल पहुचा था कि वह अेक प्रासगिक बीमारी है। कुछ दिनमें ठीक हो जायगी। आपको वहाका जलवायु अनुकूल नहीं है, अितना पू० बापूजीके खयालमें नही आया था। मैंने जो पू० बापूजीके पास दृष्टि रखी थी वह केवल स्वधर्माचरणके विचारसे। मेरा अुनसे यह निवेदन हुआ कि सावलीका जलवायु अनुकूल भी हो फिर भी आपका अपने प्रान्तमें काम करना विशेष रूपमें स्वधर्म है और आपका पहलेसे अैसा विचार भी था। तब आपको सावली रहनेकी सूचना करना अयोग्य है। पू० बापूजीने अिस बातको मान लिया है।

सक्षेपमें आप बिलकुल अैसा न समझें कि आपको सावली छोडनेकी अिजाजत देनेमें किसी प्रकारका पू० बापूजीके मनमें असतोष है। मैं तो अुसको

कर्तव्य-सा ही मानता था और मैंने आपसे वैसा कहा भी था। पू० बापूजीको आपसे सतोष है अिसीलिअे अुन्होंने लिखा है कि मेरा आशीर्वाद लेकर जाओ। पू० बापूजीके पत्रसे पता लगता है कि आपको सावलीमें ही रहना चाहिये अैसा अुनका स्वतत्र अभिप्राय न था, बल्कि आपको प्रिय मालूम होगा अैसे खयालसे ही वह सूचना की थी। आपका अपने गावके पासमें ही काम करना अुनको बिलकुल पसद और प्रिय है।

आशा है अितनेमें आपका समाधान होगा। आप सावलीके कामसे अपनी अनुकूलतासे निवृत्त होकर यहा पर आअियेगा। यहासे पू० नाथजीके पास जाअियेगा। या पू० बापूजी यहा आवें तब तक यहीं ठहरियेगा और फिर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर दम्बलीमें पू० नाथजीसे मिलकर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर अपने गावकी ओर जाअियेगा। मनमें से सदेहका भाव निकाल दीजियेगा। आपके पत्र तो पू० बापूजीके पास रह गये हैं। पू० बापूजी काग्रेस तक यहा न आवेंगे और यहा भी थोडे ही दिन ठहरकर पचगनी जायेंगे।

आपके पत्रसे हमें कोअी आघात नहीं पहुचा। पू० बापूजीको अितनी-सी बात पर आघात पहुच ही नहीं सकता। आपने अैसी कोअी बुरी बात तो कही ही न थी, न दुराग्रह भी बताया था। केवल अत्यत सकोचपूर्वक, नम्रतासे अपनी कठिनाअिया बताअी थीं। क्या बापू जैसे अुदार पुरुषको अितनेमें ही आघात लग जाय अैसा हो सकता है? आप तनिक भी अिसका विषाद न रखें, और अिसे मनमें से निकाल ही दें।

गोमतीका प्रणाम स्वीकारियेगा। आपका अुन पर पत्र है, पर पत्रका अुत्तर देना तो अुनके लिअे आसान बात नहीं है। वह तो कहेंगी बातें हो जायगी, फिर सब ठीक हो जायगा।

पू० नाथजीको भी आज पत्र दिया है। आपकी ओरसे लिखा है।

आपका
किशोरलाल

७

बापूजीको कष्ट देनेके कारण मुझे भी कष्ट और ग्लानि होती थी। अिसलिअे मैं अपने पत्रोंमें पश्चात्तापसे अपने आपके लिअे कुपात्र आदि विशेषण लिखता था। मैं अपने प्रान्तमें जाना चाहता था, यह तो पुरानी बात थी।

वापूजीने तो पहले भी कहा था और अब भी लिखा, लेकिन मुझे सतोष नही हो रहा था। अपने मनका सारा हाल मैंने अुनको लिखा था। अुसके अुत्तरमे किशोरलालभाओीने लिखा

वर्धा, ७-४-'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र मिला। पू० वापूजीको अुनका पत्र अभी नही भेजता। वे काग्रेसके कार्यमें बहुत निमग्न होंगे, अिससे अुन पर अधिक भार डालना योग्य नही है। और आपको जल्दी भी नही है। आप शान्त भी हुअे हैं।

शात हुअे है यह जानकर सतोष हुआ। पर अभी आपकी अुलझन सुलझ गअी हो अैसा मालूम नही होता है। पिछले पत्रके बाद आपको कोअी प्रश्न नही अुठना चाहिये था। सावलीकी आवोहवा आपको अनुकूल नही होती है, यह आपने जो बताया है वह केवल कल्पना ही है, अैसा किसीका अभिप्राय नही है। अिस कारण आपको वहा रहनेमें क्या तकलीफ है, अिसका यदि आपने जिक्र किया तो अुसमें आपकी कोअी भूल नही है। वह स्पष्ट रूपसे बता देना योग्य ही था।

पर अिसके अलावा आपका जो मूल सकल्प अपने प्रान्तमे अपने वतनके पास ही कार्यमें लग जानेका था अुसे मैं तो स्वधर्माचरण ही मानता हू। पू० वापूजी भी वैसा ही मानते हैं। तब आपकी वहा जानेकी अिच्छा होना धर्मानुकूल है। वहा जानेके लिअे पू० वापूजीकी समति ही है। जब समति है तब अुनका आशीर्वाद भी है, और अपने समीपसे दूर करनेका भाव नही हो सकता है। आपमे किसी प्रकारका असतोष पू० वापूजीके दिलमें मैंने नहीं पाया है, न मेरे मनमे भी कभी आया है।

मैं जो आपको लिखता हू वह आपको दोष देनेके लिअे नही लिखता हू। आपके गुण और श्रद्धाको अधिक बलवान करनेके लिअे लिखता हू। आप अपने पत्रोमें सदैव आत्मनिंदा किया करते हैं। खुदके लिअे कुपुत्र, कुपात्र आदि तिरस्कारके शब्द लगाया करते हैं। यह नही होना चाहिये। अुनकी जरूरत ही नही है। अिस आत्मनिंदामें हमारा पुरुषार्थ कम हो जाता है। किसी विषयका अपनी बुद्धिसे निश्चय करनेकी ताकत ही चली जाती है। हरअेक विषयमें दूसरेकी तरफसे आज्ञा, सूचना, मार्गदर्शनकी अपेक्षा की जाती है। सदैव परावलबी, पराश्रयी रह जाते हैं। प्राय हमारे धर्मगुरु भी शिष्यमें

अिनी वृत्तिका पोषण करते हैं। अपने शिष्य अपने ही पर हमेशा निर्भर रहें, अपनेको बिना पूछे कुछ भी न करें अैसी वे अिच्छा रखते हैं। पू० बापूजी या पू० नाथजीका यह अभिप्राय नहीं है। अिसीसे तो वे किसीको अपना शिष्य नहीं बताते हैं। अुनको साथी कहा करते हैं। शिष्य हरअेक बात गुरुको पूछ कर ही करे, यह अुनकी अिच्छा नहीं है। पर समझने योग्य हो वह समझ लिया, पूछने योग्य पूछ लिया, सलाह ले ली — फिर अुन पर विचार करके अपने आप निर्णय कर ले, अैसा गुरु-शिष्य संबंध होना चाहिये। गीतामें भी तो श्रीकृष्ण द्वारा अुपदेश दिलाकर आखिरमें यही कहा है कि 'अिस प्रकार मैंने तुझे गुप्तसे गुप्त सब ज्ञान दिया। अब तू अिस पर गौर कर और फिर जैसा ठीक जचे वह कर।' आज्ञा देनेके प्रसंग हमेशा नहीं होते हैं। जहां आज्ञा देनेसे शिष्यके द्वारा कोअी महत्त्वका कार्य होना, अथवा शिष्यका किसी बड़ी आपत्तिमें रक्षण होना या किन्हीं दूसरे लोगोंके साथ अपनी आपत्ति निवारण होना संभव हो वहां आज्ञा भी दी जा सकती है। वरना मौके पर धर्म अथवा व्यवहारकी सामान्य राय देकर शिष्यको स्वतंत्रता देना यही गुरुका धर्म होता है। अैसा विवेक न करें तो गुरु और शिष्य दोनोंके लिअे बड़ी आफत हो जाती है। आपमें आत्मविश्वास बढ़ानेके लिअे और विचार करनेके लिअे यह लिखता हूं। आप अिस पर दुःख न मानें। अपनी अयोग्यता न मानें। आत्मनिंदा न करें।

श्री रामदासभाअीकी तबीयत खराब हो गअी, यह सुनकर रंज होता है। अुपचार करते ही होंगे। अुन्हें अभिवादन।

आपका
किशोरलाल

* * *

बापूजीके आसपास मेरे रहनेका करीब करीब अेक वर्ष पूरा हो चुका था। और अब मुझे कहां जाना चाहिये यह प्रश्न मेरे सामने था। लेकिन मेरे मनकी गति बड़ी विचित्र थी। बापूजीको छोड़ना मनको चुभता था और रहनेकी अिच्छा भी नहीं होती थी, क्योंकि अुनके काममें मेरे मनको शांति नहीं मिलती थी। अिसलिअे कहां जाना यही चर्चा बापूजीके साथ चलती थी। मैंने देखा कि बापूजी मुझे छोड़ना नहीं चाहते। अूपरसे तो मुझे कहते थे कि जहां जाना चाहो जा सकते हो, लेकिन मेरे जानेसे अुनके मनमें पीड़ाका अनुभव

हो रहा है अैसा मुझे लगता था। अिस पीडाको न तो बापूजी ही प्रगट कर सकते थे और न मैं ही अपनी दुविधा अुनके सामने रख सकता था। बापूजी मुझे विचार करनेके लिअे कहते थे और मैं अुनको कोअी निश्चित जवाब नही दे सकता था। किशोरलालभाअीके साथ बात करनेके लिअे कहते थे। मैंने अुनके साथ बात की। मेरी बातोसे अुनके दिल पर अैसा असर हो गया कि बापूजी तो मुझे खुशीसे अिजाजत देते है। लेकिन अब मेरे सामने यहासे गया तो कल रोटी कहा मिलेगी अैसा प्रश्न होनेसे मैं अिधर अुधरकी बहानेबाजी करता हू। जब अुन्होने मुझे यह बताया तो अुनकी बातसे मुझे धक्का-सा लगा और मैं अुनके पाससे चुपचाप चला आया।

"क्यो किशोरलालके साथ मिलकर क्या फैसला किया?" बापूने पूछा।

मैंने कहा, मैं आपसे अेक प्रश्नका अुत्तर चाहता हू, अिसके बाद मेरा फैसला हो जायगा। मैंने किशोरलालभाअीका शक अुनको बताया और कहा कि अगर आपके दिलके किसी कोनेमे अैसा थोडा भी शक हो कि मेरे सामने रोटीका सवाल है तो मेरा फैसला है कि अिसी वक्त चला जाअूगा। मैं तो सिर्फ अिसलिअे हिचक रहा हू कि मैं देख रहा हू कि आप मुझे प्रसन्नतापूर्वक अिजाजत नही दे रहे है और आपको अप्रसन्न करके जाना मुझे जन्मभर दु ख देगा। अिसलिअे आपको छोडकर जानेकी मेरी हिम्मत नही होती। मेरा हित किसमें है अिसे आप भलीभाति समझते है और अुसी दृष्टिसे आप विचार करते है। आपके अिस प्रेमके कारण ही मैं दुविधामें पडा हू। अगर मेरे मन पर यह असर हो जाय कि आपके मनमें भी किशोरलालभाअी जैसा विचार आया है तो मैं आपके पास अेक रोज भी नही रह सकूगा।

बापू खूब जोरसे हसे और बोले:

"हा, मुझे भी किशोरलालभाअीने कहा है। लेकिन तुम्हारे बारेमें मेरे मनमें अैसा लेशमात्र भी शक नही है। मैं तो यही देख रहा हू कि अभी तक तुम्हारा चित्त स्थिर नही है और तुम यहासे जाओगे तो दो महीने भी शातिसे नही रहोगे। या तो नाथके पास भागोगे या मेरे पास। अिसलिअे मैं चाहता हू कि तुम स्थिरचित्त होनेके बाद मेरे पाससे कही जाओ तो मुझे

निश्चिन्तता रहेगी। जितना तुमको मैं पहचानता हूं अुतना किशोरलाल नही पहचानता।"

जिस प्रकारका मेरे दिलमें शक था वही बापूजीके दिलमें निकला। मैं खुद अपनी अस्थिरता समझ रहा था, और जिसीसे बापू परेशान हैं यह भी समझ रहा था। बापूका जितना प्रेम देखकर भला मैं अुनको छोड़नेकी हिम्मत कैसे कर सकता था? तो भी मूटनाने मुझे अितना घेर रखा था कि मैं कोअी साफ निर्णय नहीं कर सकता था। बापूने कहा, "सोचो और विचार निश्चित करके मुझे बताओ।"

पू० किशोरलालभाओकी रोटी न मिल सकनेकी बात मुझे अितनी चुभी कि मैंने अुनको अेक भिनभिनाता लंबा पत्र लिखा जिसमें कहा कि मुझे अब तक पता नही था कि अर्थ आप जैसे साधु पुरुषको भी अितना नीचे ले जा सकता है। अुनके अुत्तरमें अुन्होंने लिखा

दिनांक, १६-५-'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र कल शामको मिला। मेरे शब्दोंने आपको बडा दुःख हुआ है। अिन दोषके लिअे क्षमा कीजियेगा। मेरे मनमें जो विचार आ-गये वे रख दिये। ये विचार मनमें आने पर भी आपको कह न देता तो और भी अधिक दोष हो जाता। अैसे विचार करनेमें आपके प्रति अन्याय हुआ हो यह संभव है। मुझमें है अुससे अधिक साधुताका आप मुझमें आरोपण न करें। अैसा करनेसे ही आपने मेरे अभिप्रायको ज्यादा महत्त्व दिया, और दुःखित हो गये। खैर। अब शान्त हो जाअियेगा। पू० बापूजीकी आज्ञाको अुठाते रहनेमें संतोष रखियेगा। जैसा वे चाहें वैसा ही करते रहियेगा। श्री मीराबहनको प्रणाम। गोमतीने आपको प्रणाम लिखाया है। दोनों कुशलसे प्रवास कर रहे हैं। आज श्री मथुरादास भाअीके मधुबनी आश्रमकी ओर जा रहे हैं।

आपका
किशोरलाल

पू० किशोरलालभाअी स्पष्टवक्ता थे और कठोर सत्य कहनेकी क्षमता रखते थे। लेकिन अुनका हृदय स्फटिक जैसा निर्मल था। सरलता और नम्रताकी वे मूर्ति थे। जिसे वे कठोर सत्य कहकर तिलमिला देते थे [illegible] अुनकी

सहानुभूति और स्नेहमें जरा भी अन्तर नही पडता था। मेरा और अुनका सवध सगे भाओीसे भी अधिक घनिष्ठ था, क्योकि वे नाथजी और बापूजी दोनोका प्रतिनिधित्व मेरे प्रति निभानेमे कुछ भी अुठा नही रखते थे। और अुसे अन्त समय तक अुन्होने पूरी तरह निभाया।

११

सेवाग्राम आश्रमकी नीव

अिन्ही दिनो (सन् १९३६) यह तय हुआ कि बापूजी मगनवाडीसे जाकर सेगाव रहेंगे और मीराबहन पासके ही दूसरे गाव वरोडामे अपनी कुटिया बनाकर रहेंगी।

मीराबहन बापूको सेगावमे बसानेकी व्यवस्था करने लगी। बापूजी सेगावको देखना चाहते थे। ३० अप्रैलको वहा जानेवाले थे। रातको मगनवाडीकी छत पर मैं सो रहा था। मुझसे श्री अमृतलालजी नाणावटीने आकर कहा, आप बापूसे बात करना चाहते थे, अिसलिअे कल बहुत अच्छा मौका है। बापूजी कल सुबह पाच बजे सेगाव जा रहे हैं। अिसलिअे रास्तेमें आपसे सब बात हो जायगी। अिस कार्यक्रमका मुझे बिलकुल पता नही था। बस, मै बापूजीके साथ हो लिया। बापूजी जब वर्धासे गुजर रहे थे तो जमनालालजीके पुरोहित प० रोडमलजी मिले। वे पहले जमनालालजीकी मगनवाडीकी खेती सभालते थे और बादमें सेगावमें जाकर अुन्होने अपना काम जमाया था। बापू अुन्हे देखकर हसे और बोले, "आज सेगाव जा रहा हू।"

रोडमलजीने कहा, "मगनवाडी तो छीन ली, अब सेगाव भी ले लीजिये।"

बापूने कहा, "मेरा और काम ही क्या है?"

अुस समय जमनालालजीके मुनीम श्री चिरजीलालजी बडजाते बापूके साथ थे। और लोग भी थे। गाडीका साधारण रास्ता था सो भी हम भूल गये थे। साथमें बैलगाडी थी, लेकिन बापू पैदल ही गये।

मीराबहनने बापूजीके लिअे कुअेके पास अमरूदके बगीचेमें बासकी चटाओीकी अेक झोपडी, चलता-फिरता अेक पाखाना, और चार खभोंके आसपास बासकी चटाओी लपेटकर स्नानघर बनाया था। अेक बकरी

भी रखी थी। मीराबहनकी अेक गाय और अेक घोडा भी था। घोडेका नाम सजीला था। अेक बिल्ली और अेक कुत्तेका बच्चा भी अुन्होंने पाल रखा था। बापूके लिअे अेक पेडके नीचे चटाओी बिछा दी। अुस पर अुनका सब सामान रख दिया। बापूने स्नान किया, नब्ज देखा और अपने काममें लग गये। शामको प्रार्थना बस्तीमें हुओी। श्री जमनालालजी भी पहुच गये थे। बापूने हिन्दीमें भाषण दिया। अुसका मराठीमें अनुवाद करके लोगोको सुनाया गया। अनुवाद करनेवाले कौन थे यह मुझे पता नही था। लेकिन सीकरमें पूज्य जाजूजीने बताया था कि अनुवाद अुन्होंने किया था। बापूजीने अपने भाषणमें कहा कि "मैं आपके गावमें आ गया हू, आप लोगोंकी सेवाकी दृष्टिसे। मीराबहन, जो आप लोगोंके बीचमें रहती हैं, यहा हमेशाके लिअे बस जानेका अिरादा लेकर आओी थीं। मगर मैं देखता हू कि अुनकी वह मशा पूरी नहीं हो रही हैं। कमी अुनमें अिच्छाशक्तिकी नही है, पर शायद अुनका शरीर अशक्त है। यह तो आप जानते हैं कि हम दोनों जितने समयसे अेक सामान्य सेवाके बधनसे बधे हुअे है। अिसलिअे मैंने सोचा कि जो काम मीराबहन न कर सकीं, अुसे पूरा करना मेरा धर्म हो जाता है।

"परतु बचपनसे ही मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि मुझे अुन लोगो पर अपना भार नही डालना चाहिये, जो अपने बीचमें मेरा आना अविश्वास, सन्देह या भयकी दृष्टिसे देखते हैं। अिस भयके पीछे यह कारण है कि अस्पृश्यता-निवारणको मैंने अपने जीवनका अेक ध्येय बना लिया है। मीराबहनसे तो आपको यह मालूम हो ही गया होगा कि मैंने अपने दिलसे अस्पृश्यता सपूर्णतया दूर कर दी है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, महार, चमार सभीको मैं समान दृष्टिसे देखता हू। और जन्मके आधार पर माने जानेवाले अिन तमाम अूच-नीचके भेदोको मैं पाप समझता हू। पर मैं आपको यह बता दू कि अपने अिन विश्वासोंको मैं आप पर लादना नही चाहता। मैं तो दलीलें देकर, समझा-बुझाकर और सबसे बढ कर अपने अुदाहरणके द्वारा आप लोगोंके हृदयसे अस्पृश्यता या अूच-नीचका भाव दूर करनेका प्रयत्न करूगा।

"आपकी सडकों और बस्तियोंकी चारों तरफसे सफाओी करना, गावमें कोओी बीमारी हो तो यथाशक्ति लोगोंको सहायता पहुचानेकी कोशिश करना और गावके नष्टप्राय गृह-अुद्योगों या दस्तकारियोंके पुनरुद्धारके काममें

सहायता देकर आप लोगोको स्वावलवी बननेकी शिक्षा देना — अिस तरह मैं आपकी सेवा करनेका नम्र प्रयत्न करूगा। आप मुझे अिसमें अपना सहयोग देंगे तो मुझे प्रसन्नता होगी।"

सभाके वाद सेगावके दो सज्जनोने वापूजीके अिस निश्चयका हार्दिक स्वागत किया और सहयोगका वचन दिया। परन्तु वूढे पटेल श्री काशीरावने खडे होकर कहा, "महात्माजी, आप यहा आये है अिससे हमें आनद होता है। आपकी सव वातें हमें कवूल है, लेकिन हरिजनोके साथ मिलनेकी आपकी वात हमको कवूल नही है।" वापूजी खूव हसे और वोले, "धीरे धीरे आपको सव वात समझमें आ जायगी।" लेकिन वादमें काशीराव पटेल वापूके भक्त वन गये। यह थी वापूजीकी लोगोका हृदय-परिवर्तन करनेकी खूवी।

अुसी दिन गावमें अेक फौजदारीका केस हो गया था। किसीने अेक आदमीका सिर फोड दिया था। जव प्रार्थना हो रही थी, तभी लोग खूनसे लथपथ अुस आदमीको वापूके पास लाये। वे लोग मामला पुलिसके हाथोमें सौंपना चाहते थे। प्रार्थना पूरी होनेके वाद वापूजीने अुन्हे समझाया कि यह मामला पुलिसके हाथमें देनेसे दोनो पक्ष हैरान होंगे। जिसने अिस भाअीका सिर फोडा अुसने वडी भूल की। लेकिन आपको अुसे माफ कर देना चाहिये। अपने गावके झगडे आप आपसमें शातिसे निवटा लिया करेंगे तो ही गावमें प्रेम और मेल रहेगा और गाव अूचा अुठेगा। लोग वापूकी वात समझ गये और शान्त हो गये। अिस प्रकार पहले ही दिन वापूजीको नोटिस मिल गया कि गावमें कैसी-कैसी समस्याओंका सामना करना पडेगा और गावके प्रश्नोको किस प्रकार शाति और समझौतेकी भावनासे निवटाकर गावके लोगोमें प्रेम और हेलमेल वढाना चाहिये।

अुस रोज मैंने सेगावसे लौटकर महिलाश्रममें अपने मित्र सत्यदेवजीके यहा भोजन किया और सो गया। सुवह फिर सेगाव गया। वापूजीके साथ काफी चर्चा हुअी। जव शामको चलने लगा तो वापूजीने पूछा, "कहा जाते हो?"

मैंने कहा — महिलाश्रम।

वापू — वहा क्या करोगे?

मैं — भोजन करूगा और वही सोअूगा। कल सुवह फिर आ जाअूगा।

वापूने कहा — क्यों, क्या सिर्फ भोजन करनेके लिअे जाते हो?

मैंने कहा — हा जी, आपने तो यहा किसीको भोजन न देनेका निश्चय किया है न?

वापूजीने अैसा कहा था कि वे सेवाग्राममें अकेले ही रहेंगे। ज्यादासे ज्यादा वा अुनके साथ जा सकती है और लीलावती वहन। और कोअी आयेगा तो वे अुसे खाना भी नहीं देंगे। अिसलिअे मैं खाना महिलाश्रममें खाता था और वात करने वापूजीके पास आ जाता था।

मीरावहनके पास सेगावका अेक गोविन्द नामका लडका था, जिसे वह वापूजीकी सेवाके लिअे तैयार कर रही थी। क्योंकि मीरावहनको तो वहा रहनेकी अिजाजत नहीं थी। अुन्हे पासके ही वरोडा गावमें जाना था। वापूजी जव गये तव दूसरा अेक लडका दशरथ वापूजीके पास आया और कहने लगा, "मुझे तकली सीखनी है।" वापूजीने मुझसे कहा "अच्छा तुमको रोटी यहीं मिल जायेगी। मीरावहनके पास थोडा आटा होगा। तुम यहा रहकर अिन दोनों लडकोंको धुनना और कातना सिखा दो।"

मुझे तो अितना ही चाहिये था। अुन दोनोंको धुनना और कातना सिखाना और अुसके वदलेमें रोटी। दूसरे दिन भाअी मुन्नालालजी वजाजवाडीसे वापूजीके पास आ गये थे। अुन्होंने मीरावहनके लेख 'हरिजन' में पढे थे और वे मीरावहनके साथ सत्संगके लिअे सेगाव रहना चाहते थे। वापूके साथ अुनका परिचय पुराना था। जव अुन्होंने सेवाग्राममें रहनेकी वात की तो वापूने अुनसे कहा कि अगर मीरावहन स्वीकार करें तो मुझे कोअी हर्ज नहीं है। मीरावहनने अुनकी वात कवूल की और वे सेगावमें रहने लगे। अिस प्रकार सेवाग्राममें हम दोनोंका प्रथम प्रवेश हुआ।

अभी वापूजी दोचार दिन रहकर सिर्फ सेगाव देखने गये थे। जिस स्थान पर अभी आश्रम है वहा जमनालालजीका वडा खेत था और वहा पर अुनकी खेती चलती थी। अुनमें से अेक अेकड जमीन अुन्होंने आश्रमके लिअे दी थी। मिट्टीकी दीवारका जो आदि-निवास है अुसकी नींव वापूजीका निवास-स्थान वनानेके लिअे खुदी थी। मीरावहनने वा और वापूके लिअे रस्सीकी दो खाटें वनाकर तैयार करा रखी थीं। खुदी हुअी वुनियादके वीचमें वापूजीकी खाट विछाअी गअी और वुनियाद पर तख्ता रखकर आने-जानेका मार्ग वनाया गया। वापूजी दिनमें वगीचेमें काम करते और रातको वहा सोते थे। शामकी प्रार्थना सेगावमें होती थी और प्रातःकालकी वहीं पर। अुसी समय पू० वावा-

साहव और नाणावटीजी भी अेक रोज वापूजीसे मिलने आ गये थे और वही सोये थे। मेरे वापूजीके पास रहने न रहनेका कोअी निश्चित निर्णय नही हुआ था। लेकिन वापूजीने कहा कि अभी तो मै नन्दी हिल जाता हू, तव तक तुम मीरावहनके साथ रहकर मकान और रास्ता वनवानेमें मदद करो। वहासे लौटकर आने पर विचार करेगे। तुमको भी तव तक विचार करनेका मौका मिलेगा। अिस प्रकार अेक महीना मीरावहनके काममें मदद करनेका निश्चित हुआ। ५ और ६ मअीको पवनारमें खादीयात्रा थी। वापूजी सेगावसे सीधे पैदल ही पवनार आये और खादीयात्रामें अपना भाषण देकर वर्घा चले गये। वहासे अुस दिन या दूसरे दिन नन्दी हिल चले गये। पू० वा भी अुस समय वापूजीके साथ थी।

मेरा सामान मगनवाडीमे था। अुसे लेकर मैं निश्चित रूपसे सेगाव रहनेके लिअे चला आया।

सेगावका मकान और रास्ता वनाना था। क्योंकि वर्धासे टेकरी तक तो गाडीका रास्ता था, किन्तु अुनके आश्रमके साथ मिलानेका कोअी रास्ता नहीं था। वीचमे लोगोंके खेत पडते थे अिसलिअे सीधा रास्ता तो नही वन सका। परन्तु जहा जमनालालजीके अधिकारकी वजर भूमि थी वहासे रास्ता वनाया, जो आज भी टूटी-फूटी हालतमें वगीचे और गोशालाके दक्षिणसे घूमकर आता है। मकानका काम मुझे और रास्तेका काम श्री मुन्नालालजीको सौंपा गया। हम दो सिपाही और मीरावहन हमारी जनरल। अिस तरह हमारी फौज तैयार हुअी। अेक महीनेमें वापूजीके आनेसे पहले रास्ता और मकान तैयार करना था। अुस समय वहा मजदूर तो काफी मिलते थे, लेकिन चूकि मकानकी दीवार मिट्टीकी थी अिसलिअे अुसके सूखने पर धीरे धीरे काम चलना था। दिन निकलनेसे पहले ही स्त्री और पुरुष मजदूरोंकी जरूरतसे ज्यादा भीड हो जाती थी।

अधिकाश लोगोंको वडी कठिनाअीसे और दु:खसे वापस करना पडता था। अुस समय अेक पुरुषकी मजदूरी ढाअी या तीन आने और अेक स्त्रीकी मजदूरी पाच या छ पैसे थी। सुवहसे शाम तक हम काम करते रहते और रातको आठ वजेके वाद हमारा भोजन होता। सचमुच ही वे दिन हमारे अुत्साह और आनन्दके दिन थे। जव आधी-तूफान व वर्षा आती तो मीरावहनकी गाय और घोडेको जमनालालजीके वैलोंके साथ और वापूजीकी वकरीको किसी अेक कोनेमें वाधते और हम तीनोकी खाटे अुस कोठरीमें रहती, जो आज कुअेके

पास अुत्तर-दक्षिणमें बनी हुअी तीन चार कोठरियोंमें से अुत्तरकी अन्तिम कोठरी है। जब हम तीनों अुस कोठरीमें पहुंच जाते तो अैसे आनन्दका अनुभव करते मानो किसी राजाके महलमें पहुंच गये हों। आज अुन बेचारोंको कोअी पूछता नहीं। यों ही टूटी-फूटी हालतमें पड़ी हैं। समयकी बलिहारी है!

अुसी समय मेरा मीराबहनसे निकट संबंध आया। हम तीनों सगे भाअी-बहनकी तरह काममें जुटे रहते थे। कभी कभी हमारी आपसमें चकमक भी झड़ जाती थी। परन्तु अधिकतर दिन कामके आनन्दमें और रात नींदके आनन्दमें बीतती थी।

अुसी समय मीराबहनको दौड़-धूपमें बुखार आ गया। बापूजीने अुन्हें वर्धा जानेकी सलाह दी थी, मगर अुन्होंने सेगांव नहीं छोड़ा और हमारी सेवासे ही संतोष माना। अिसका बहुतसा स्पष्टीकरण मीराबहनके पत्रोंसे हो जाता है। बरसात सिर पर झूल रही थी और कभी कभी पानीके झोंके भी आ जाते थे। अेक रोज तो बापूके स्नानघरका बना-बनाया काफी हिस्सा पानीसे गिर गया। अगर अुस समयका पूरा वर्णन लिखने बैठूं तो अेक स्वतंत्र पुस्तक बन सकती है। अैसे अुत्साह और आनन्दके दिनोंका फिर अनुभव नहीं हुआ। पू० बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

मीराबहनने खबर दी है कि सेगांव पहुंच गये हो। अच्छा हुआ। अब मीराबहनकी सेवा करो और प्रफुल्लित रहो। मेरी आशा है कि वहीं जानेकी अिच्छा मेरे आने तक नहीं होगी। गोविन्द और दशरथको अच्छी तरह प्यार करो। शरीर अच्छा रखो।

नन्दीदुर्ग, १८–५–'३६ बापूके आशीर्वाद

बाकी पत्र तो मीराबहनके नाम आते थे। अुनमें ही जो कुछ सूचना हमारे लिअे होती थी बापूजी लिखते थे। अुनमें से अेक महत्त्वपूर्ण पत्र जनताके लिअे बोधप्रद होनेसे यहां देता हूं, जिसकी नकल मेरे पास है। अिसके लिअे मीराबहनकी अिजाजत नहीं ले सका हूं। लेकिन मुझे विश्वास है कि मीराबहन आपत्ति तो कर ही नहीं सकती। बापूजीने अुन्हें लिखा:

चि० मीरा,

आशा है नन्दीसे भेजे मेरे पत्र तुम्हें मिल गये होंगे। डा० अन्सारीकी मृत्यु मेरे लिअे अेक भारी व्यक्तिगत हानि है। जन्म और

मृत्यु दोनों ही महान रहस्य हैं। यदि मृत्यु दूसरे जीवनकी पूर्वस्थिति नहीं है, तो बीचका समय अेक निर्दय अुपहास है। हमें यह कला सीखनी चाहिये कि मृत्यु किसीकी और कभी भी हो, अुस पर हम हरगिज रंज न करें। मेरे खयालसे अैसा तभी होगा जब हम सचमुच अपनी मृत्युके प्रति अुदासीन होना सीखेंगे। यह अुदासीनता तब आयेगी, जब हमें सचमुच हर क्षण यह भान होगा कि हमें जो काम सौंपा गया है अुसे हम कर रहे हैं। लेकिन यह कार्य हमें कैसे मालूम होगा? वह अीश्वरकी अिच्छा जाननेसे होगा। अीश्वरकी अिच्छाका पता कैसे चलेगा? वह प्रार्थना और सदाचरणसे चलेगा। असलमें प्रार्थनाका अर्थ ही सदाचरण होना चाहिये। हम रामायणसे पहले हर रोज प्रार्थनामें अेक गुजराती भजन गाते हैं, जिसकी टेक यह है 'हरिने भजता हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे' प्रार्थनाका अर्थ अीश्वरके साथ अेक होना चाहिये।

खुशी है कि मकान बनानेमें प्रगति हो रही है। कमसे कम फिल-हाल बरोडाकी जमीन और मकान बनानेके लिअे ३०० रुपये काफी होने चाहिये। मैं चाहता हूं कि तुम बाडको तंग कर लो। अुसके लिअे मज-दूरी देनेकी आवश्यकता न होनी चाहिये। तुम्हारी देखरेखमें बलवन्तसिंह और मुन्नालालको बाड लगा लेना चाहिये। सामान पर तो लगभग कुछ भी खर्च न होना चाहिये। बाड और थोडीसी छाया ही मुख्य चीज है।

सस्नेह

बापू

हमारा मकानोंका काम चल रहा था। जिसको आदि-निवास कहते हैं वह मकान बन गया था। अुसके पश्चिममें दो छोटी कोठरियां थीं, जिनमें से अेकमें शौचालय और अेकमें स्नानघर था। मकानके ठीक पश्चिममें अेक छोटीसी गोशाला बनाअी, जो कोने और बडी कतारके बीचमें नीचा-सा मकान है। प्रार्थना-भूमि तैयार की, जो आज भी वैसी ही है और वहीं प्रार्थना होती है। वर्षाका मौसम आ रहा था। हम लोग मकान पर छत डालनेकी बहुत जल्दी कर रहे थे।

ज्यों ज्यों बापूजीके आनेकी तारीख नजदीक आती जाती थी, त्यों त्यों हमारे कामकी तेजी और घबराहट बढती जाती थी। कहीं अैसा न हो कि मकान तैयार न हो और बापू आ जायं। १५ जूनको बापूजी नन्दी हिलसे मगनवाडी आ गये और हमको खबर दी कि मैं कल सेगांव

पहुंच रहा हूं, रेल्वेकी चौकी पर रास्ता बतानेके लिअे अेक आदमीको भेज देना। मकानके नीचेकी जमीन गीली थी। हमने अुसे रातभर लोहेके तसलोंमें आग जलाकर सुखानेकी कोशिश की। अुसी रातको १० बजेसे भयानक तूफान और बरसात शुरू हुआी और लगातार गिरती रही। हमने सोचा कि अैसे तूफानमें बापूजी नहीं आ सकते। अिसलिअे हमने चौकी पर आदमी नहीं भेजा। अूपर वर्षामें दस पांच मिनटके लिअे पानी थम गया। बापूजीने कनुभाअीसे कहा, "देखो निकल सकते हैं क्या?" कनुभाअीने कहा, "हां, अब तो पानी बंद है।" लेकिन बापू मगनवाड़ीसे निकले त्यों ही पानी फिर शुरू हो गया। बापूने कहा, "कुछ भी हो अब वापिस नहीं लौटो।" अिधर हम तीनों मकानके किवाड़ बन्द करके अन्दर बैठे थे। हमारे मनमें खयाल भी न था कि बापूजी आ सकते हैं। थोड़ा किवाड़ खोला और रास्ते पर हमारी नजर पड़ी तो हममें से शायद मीराबहन ही चिल्ला अुठीं, "अरे, बापूजी आ गये!"

मैं छाता लेकर दौड़ा। बापूजी बोले, 'अरे अब तेरा छाता क्या करेगा?" बापूजी पानी और कीचड़में लथपथ हो गये थे। अुनके साथ श्री कमलनयन बजाज और सुशील श्री चिरंजीलालजी बड़जाते भी थे। अुनके पास बरसाती कोट थे, परन्तु बापूजी तो अपनी लंगोटीमें ही थे। हमने आदमी नहीं भेजा अिसलिअे दुःख हुआ। लेकिन हमको क्या पता था कि अिस तूफानमें भी वे आ सकते हैं। बापूजीने कपड़े बदले और हमने अुनको कम्बल वगैरा ओढ़ा दिये। अुनको खूब ठंड लग रही थी।

बापूजीने कहा, 'यों तो मैंने दक्षिण अफ्रीकामें बहुतसी मुसीबतें अुठाअी हैं, मगर अितने भयंकर तूफानमें अितना लंबा रास्ता तय करनेका मेरे जीवनमें यह पहला मौका है।' मानो गांवमें रहनेकी कठिनाअियोंका प्रथम दर्शन भगवानने बापूको करा दिया। गांवमें रहनेमें जिन जिन मुसीबतोंका सामना करना पड़ेगा, अिसकी कल्पना अिस तूफानने पहले ही दिन बापूजीको करा दी। अुस दिनका चित्र आज भी वैसाका वैसा मेरी आंखोंके सामने नाच रहा है। बापूजीको हमने जब लिटाया था और कम्बल ओढ़ाया था, वे कैसे कांप रहे थे और हमको भी अुन्हें देखकर कितनी मानसिक ठेस लग रही थी, यह सब आज भी वैसा ही ताजा है। अगर मैं चित्रकार होता तो आज बापूका सारा चित्र कैनवस पर खींचकर बता सकता था।

अिस तरह भारी रूपसे बापूजीके सेवाग्रामनिवासका श्रीगणेश हुआ।

१२

कार्यका आरंभ और विस्तार

बापूजीका फैसला

जैसा कि अूपर लिखा जा चुका है, बापूजीकी व्यक्तिगत सेवाके लिअे मीराबहनने गोविन्द नामक अेक हरिजन लड़केको तैयार किया था। बापूजीको कब खाना देना, कब क्या करना, आदि सब बातें अुसे समझा दी गअी थी। मेरे जिम्मे सहज ही मीराबहनकी गाय और बापूजीकी बकरीकी सेवाका काम आया। पाखाना-सफाअी, बापूजीके कमोड वगैराकी सफाअी मैं ही करता था। क्योंकि यह तय था कि मीराबहन बापूजीके आते ही वरोडाकी झोपडीमें चली जायेंगी। तदनुसार वे वहा चली गअी और हमने बापूजीका सब चार्ज सभाल लिया। अभी तक मेरे सेवाग्राम रहने न रहनेका कोअी निश्चय नही हुआ था। ता० १८ को बापू आगेके कामके बारेमें सोचने बैठे। मुझसे कहा "मैं तुमसे खुश हू। मीराबहनको तुमने काफी सतोष दिया है। अिसलिअे मैं तुमको कहता हू कि तुम्हारी जहा भी जानेकी अिच्छा हो जा सकते हो।" मेरी जानेकी तैयारी तो थी ही, लेकिन अपनी जिम्मेवारी पर मैं जाना नही चाहता था। अुसका अर्थ यह होता कि मैं खुद ही बापूको छोडकर चला गया। अिसलिअे मैं चाहता था कि बापू अपनी तरफसे मुझे कहें कि तुम फला जगह जाओ तो अच्छा हो। अिससे मुझे अेक प्रकारका अुत्साह रहता। मैं यह भी देख रहा था कि बापूजी मुझे दिलसे छोडना नही चाहते थे। अिसलिअे मैंने कहा कि मैं अपने लिअे कुछ भी निर्णय नहीं करता हू। सब आपके अूपर छोडता हू। मेरे लिअे जो ठीक हो आप ही करें।

बापूजी गभीर हो गये और बोले — अैसी बात है?

मैंने कहा — हा, जी।

बापू — देखो, खूब सोच लो।

मैंने कहा — खूब सोच लिया है।

बापू — अगर मैं तुमको काश्मीर या कन्याकुमारी भेजू तो जाओगे?

मैंने कहा — हा, जी।

बापू — और मैं यहा रहनेके लिअे कहू तो?

मैंने कहा — यहां रहूंगा।

बापूने कहा — तो मैंने फैसला कर दिया। तुमको यहीं रहना है।

मैंने कहा — ठीक है।

बापूने कहा — अब हमको आगेके कामके बारेमें सोच लेना चाहिये। अगर हम अिसी अेक अेकड जमीनमें घिरे पडे रहे तो हमारा यहां आना व्यर्थ होगा। हमको तो देहातकी सेवा करना है। वह हम कैसे कर सकते हैं यह सोचो। अुसके लिअे जो साधन-सपत्ति चाहिये वह मैं जुटा दूंगा। हम देहातके जीवनमें कैसे प्रवेश कर सकते हैं और अुनकी आमदनी बढानेमें क्या मदद कर सकते हैं? सफाअी और आरोग्यके लिअे क्या करना होगा? ये सब सोचनेकी बातें हैं।

बापूजीने अुन मकानके अेक कोनेमें अपना डेरा जमाया। पूर्व-दक्षिणके कोनेमें बापूजी रहते थे। अिस समय बा बापूजीके साथ नहीं थी। बापूजीने तय किया कि सुबह रोज अेक घटा वे सेगावके रोगियोको दिया करेंगे। हमने गावमें खबर कर दी। सवेरे रोगी आते और बापूजी अुन्हें देखते। बापूजीके दवाखानेमें तीन चीजें मुख्य थी। सोडा-बाअी-कार्ब, केस्टर ऑअिल और अेनीमा। और समझानेके लिअे अुनकी वाणी तो थी ही। रोगी आते, बापू अुनको देखते, हाल पूछते, और किसीको केस्टर ऑअिल, किसीको नींबूके साथ सोडा और जिसका पेट बहुत खराब हो अुसे अेनीमा देते थे। किसीसे कहते, भाजी खाओ, किसीसे कहते, छाछ पीओ, किसीको मिट्टीका प्रयोग बताते, तो किसीको टब-बाथका।

प्रार्थना

बापूने सोचा था कि मीराबहनके लिअे अेक गाय रखेंगे और अपने लिअे बकरी। हम लोग गावमें से कुछ दूध लेते थे। अुस समय सारे सेगावमें सिर्फ ३ सेर गायका दूध होता था। शामकी प्रार्थना हम सेगावमें करते थे। लोग आते थे। बापूजी कुछ कहते थे। सुबहकी प्रार्थना आश्रममें होती थी। अेक प्रसग अैसा भी याद है जब कि प्रार्थनामें मैं और बापूजी सिर्फ दो ही आदमी थे। श्लोक बापूजीने बोले थे और भजन 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' मैंने गाया था। गाते गाते मेरा गला रुध गया था, मानो मैं बापूजीसे क्षमा माग रहा था। बापूजी रोज सुबह घूमते समय ग्रामसेवा पर चर्चा करते थे और हमारे मनमें जो प्रश्न हो अुनका अुत्तर देते थे।

रोज सुवह वापू मीराबहनकी झोपडी तक जाते, अुनकी खैर-खबर पूछते और अुन्हें दूध पहुचाते थे।

प्रार्थना वापूजी ही कराते थे, क्योकि हममें वापूजीका ही स्वर अच्छा था। हम अुनका साथ देते थे। गीता भी वापूजी ही बोलते थे। बादमें भाअी मुन्नालालजीने बडी मेहनतसे गीता बोलनेका अभ्यास कर लिया था। अुनकी जहा भूल होती वापूजी नोट कर लेते और बादमें बताते थे। बादमें कनुभाअी गाधीने भी गीताका अभ्यास कर लिया। वर्धाके अेक संस्कृतके पडित अिनको सिखानेके लिअे सुवह पैदल चलकर आते थे और जो सीखना चाहे अुसका पाठ शुद्ध कराते थे। मुझे तो समय ही नही मिलता था। लेकिन मुन्नालालभाअीने अुनका बहुत लाभ अुठाया और अुनका पाठ काफी शुद्ध हो गया था। बोलनेकी गति भी सवा घटेमें सारे गीता-पारायणकी हो गअी थी। अुनकी आवाज मेरे कानोको सहन नही होती थी। मैंने वापूजीको अपनी कठिनाअी बताअी। वापूजीने गीता बोलनेके समय मुझे प्रार्थनासे अुठकर चले जानेकी अिजाजत दे दी। अत गीता प्रारम्भ होने पर मै प्रार्थनासे अुठकर चला जाता था। मुन्नालालजीने गीताका अितना अभ्यास किया कि अुससे अुनके कठमें भी काफी सुधार हो गया और मुझे भी वह अच्छा लगने लगा।

खुलेमें सोनेके लाभ

मैं वापूजीका पीर तो नही, लेकिन ववरची-भिश्ती-खर जरूर था। भोजन बनाना, पाखाना-सफाअी करना, गोसेवा करना, दूसरी सफाअी करना, रातको सोते समय वापूजीके पैरोकी मालिश भी करना। वापूजी तो खुले आकाशके नीचे सोते थे। जब रातको पानी आता तो अुनका बिस्तर भी भीतर करता और बरामदेमें टट्टे लगाता। अनेक बार अदर बाहर जानेका कार्यक्रम रातमें तीन चार बार तक भी चलता। क्योकि वापूजी कहते कि खुलेमें दो तीन घटेकी नीद छतके नीचे ली गअी रात भरकी नीदकी पूर्ति कर देती है। दूसरी बात यह कि खुलेमें थोडी जगहमें बहुत आदमी सोयें तो कुछ भी नुकसान नही होता। छतके नीचे अधिक आदमी सोनेसे वहाकी हवा खराब होती है। जब मैंने गोशालामें अपने लिअे कमरा बनानेकी बात की, तो वापूजीने कहा, "बरसातसे बचनेके लिअे अूपर छत भले बनाओ, लेकिन आसपासकी दीवारोकी क्या जरूरत है? खुली छतके नीचे जितने आदमी सो सकते है अुतनी जगहमें दीवारोंके अन्दर नही सो सकते है। क्योकि खुलेमें सोनेसे हमारे अदरसे जो गदी हवा निकलती है वह खुले आकाशमें चली जाती है और हमको ताजी

हवा मिलती रहती है। सबसे बड़ा लाभ तो खुलेमें हमको आकाश-दर्शनका मिलता है। वह मन और तन दोनोंके लिअे लाभकारी है। जिनको ब्रह्मचर्यका पालन करना है अुनको तो खुलेमें ही सोना चाहिये। बरसातसे बचनेके लिअे हमको छतकी जरूरत ही नहीं है।"

बापूजीकी बात तो मुझे ठीक लगी, लेकिन मैंने कमरेको बिलकुल खुला नहीं रखा। कमरेमें दोनों तरफ दरवाजे बनाये, जिससे अिधरकी हवा अुधर निकल सके। अिससे भी मुझे तो बहुत ही लाभ हुआ। अब कहीं भी बन्द मकानमें सोनेका प्रसंग आता है तो मेरा दम घुटने लगता है और गंदी हवासे नाक फटने लगती है।

बापूकी अुदारता और कंजूसी

बापूजी खुलेमें प्रार्थना-भूमि पर सोते और अुनके आसपास दूसरे लोग सोते थे। जब लोगोंकी संख्या बढ़ी तो प्रार्थना-भूमि रेलका मुसाफिरखाना बन गअी। कोअी बापूजीके अिधर, कोअी अुधर, कोअी पैरोंके पास। अितने नजदीक सोते कि वह तो मुझे भी अखरता। बापूजीकी कुटीमें भी यही हाल रहता। जो आता अुसीको कहते, तुम भी यहीं पड़े रहो। दूसरे मकानमें दूसरेके पास जगह भी हो तो, बापूजी अुनकी सुविधाका ध्यान रखते, लेकिन अपनी कुटियामें असुविधा होने पर भी आनेवालोंको टिका लेते थे। लोगोंको भी अुनके पास रहने और सोनेमें अड़चन महसूस होनेकी अपेक्षा आनन्द ही अधिक होता था।

आजकलके बड़े लोग? जिनके पास कोअी डिग्री हो, किसी बड़े पद पर हों, पास अधिक पैसा हो, अजी कोअी बड़े महात्मा भी हों, अुनके लिअे आरामका अलग, कामका अलग, दूसरोंसे मिलनेका अलग और खानेका अलग कमरा चाहिये! लेकिन बापूजीका बिस्तर जितनी जगहमें आता था वहीं पर अुनका सब काम बड़ी आसानीसे हो जाता था। नया मकान बनाने या पुराने मकानमें कुछ सुधार करनेकी अिजाजत वे बड़ी अड़चनके बाद कठिनाअीसे ही देते थे। आश्रमके मकान बापूजीकी कंजूसी और सादगीकी गवाही दे रहे हैं। अुनकी मरम्मत करने और दीमकसे मुकाबला करनेमें हमको किन किन मुसीबतोंका सामना करना पड़ा है, यह तो हम ही जानते हैं। मैं बापूका नाम लेकर तो जोरसे भी कुछ करा लेता था, लेकिन अपने लिअे कुछ सुविधा मांगनेकी हिम्मत नहीं थी। बापूजी कहते थे, हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं। हमको जो पैसा मिलता है वह हमारी सुविधाके लिअे नहीं

गरीबोंकी सेवाके लिअे मिलता है। सेवक सेव्यसे अधिक सुविधा पानेका विचार कैसे कर सकता है? मुझे लोग मेरे विश्वास पर पैसे देते हैं। अुनका हिसाब भी कोअी मुझसे नही मागता है। कोअी भले न मागे लेकिन भगवान तो मागेगा। अगर हम पैसा अपनी सुख-सुविधामें अुडाने लगेंगे तो लोग भी हिसाब मागेंगे। मागनेका अुन्हे अधिकार भी है। अिसलिअे सयमसे खर्च करनेमें ही हमारी शोभा है।

संसारीका टूकडा नौ गज लम्बे दात,
भजन करे तो अुबरे नहि तो काढे आत।

कबीरके अिस वचनका दृष्टात बापूजी अनेक बार देते थे। अगर हमसे छोटीसी पेन्सिल गुम हो जाय या अेक पैसा भी व्यर्थ खो जाय तो बापूजीको जवाब देना बिल्लीके गलेमें घटी बाधनेसे भी कठिन पडता था। अिसलिअे बापूजीके पास रहनेका जितना लोभ होता था, अुतना अिन सकडी गलियोंमें से गुजरते समय कही फस न जाय अिसका डर भी बना रहता था। अिसलिअे बापूजीको कभी किसीसे यह कहनेका प्रसग भी नही आता था कि तुम यहा रहने लायक नही हो, चले जाओ। लोग अपने आप ही अपना माप समझ लेते थे। जो सकडी गलीमें से गुजरनेके लिअे अपने शरीरको पतला करनेकी या अुसमें अुलझ गया तो मरनेकी भी तैयारी रख सकता था, वही अुनके पास टिक पाता था।

कबिरा भाटी प्रेमकी बहुतक बैठे आय,
सिर सोपै सो पीवअी और पै पियो न जाय।

यह कसौटी थी बापूजीके पास रहनेकी।

साथियोंकी भूलोंके लिअे क्षमावृत्ति

अेक रोज बापूजीके पास ही भाअी मुन्नालाल प्रार्थना-भूमि पर सो रहे थे। ३ बजे पेशाबके लिअे अुठे। नीदमें वही नजदीकमें पेशाबके लिअे बैठ गये। दैवयोगसे बापूजी देख रहे थे। जब वे वापिस आये तो बापूजीने पूछा, मुन्नालाल, वहा क्या कर रहे थे? बस मुन्नालालजीके तो देवता कूच कर गये। जडवत् बनकर चुप रहे। थोडी देरमें अपनी भूलका भान हुआ तो बोले, "बापूजी, भूल हो गअी। मै आधी नीदमें था। आगेसे अैसी भूल नही होगी।" बस बापूजीको अितना ही चाहिये था। मुन्नालालजीको कायमका पाठ मिल गया। अुनके ही हाथसे अेक रोज दूसरी अेक बडी भयानक भूल हो

गअी। अेक रोज सुबह ४ की घटीके बाद बापूजी अुठे। दूसरे लोग भी अुठे। जो बहन बापूजीकी सेवामें थी वह बापूजीका पेशाबपॉट खाली करने और खुद भी निबटने गअी। और मुन्नालालभाअीसे कह गअी कि बापूजीको मंजनकी शीशी दे देना। बापूजी सोते समय अपने पास दतमंजन, पुटाश परमेंगनेट, चाकू या ब्लेड, थूकदानी, पेशाबका बरतन, मुंह साफ करनेका बरतन अित्यादि जरूरी चीजें रखकर सोते थे। मुन्नालालभाअीको अंधेरेमें पता न चला। जब बापूजीने मंजन मांगा तो अुनके हाथमें लाल दवाकी शीशी दे दी। बापूजीने अुसे खोलकर जब मंजन करनेके लिअे अुसे मुंहमें डाला तो अुनको अटपटा लगा। अुन्होंने पूछा, "मुन्नालाल, तुमने मुझे कौनसी शीशी दी है?" मुन्नालालभाअीने विश्वासके साथ कहा, "बापूजी, मंजनकी ही शीशी दी है।" थोडी देरमें बापूजीके मुंहने जवाब दिया और लाल दवा थूक दी। जिससे बापूजीकी जीभ और होठ भी जल गये। जिससे पोंछा वह कपड़ा भी खराब हो गया। जब मुन्नालालजीने यह दृश्य देखा तो अुनमें काटो तो खून नहीं रहा। अुनके होश अुड गये। अगर यह दवा बापूजीके पेटमें चली जाती तो? परिणामका विचार करके शर्मसे अुनका सिर जमीनमें गड गया। अीश्वरकृपासे दवा बापूजीके पेटमें नहीं गअी थी, क्योंकि मंजन खानेकी चीज तो थी नहीं। तो भी दवा पेटमें जा सकती थी। अगर अुतनी चली जाती जितनी बापूजीने मुंहमें डाली थी, तो बापूजीकी मृत्यु तक हो सकती थी। लेकिन 'जाको राखे साअियां मारि सके नहिं कोय' के न्यायसे बापूजीको कुछ भी नहीं हुआ। हां, जले मुंहके निशान तीन चार रोज तक बने रहे।

बापूजीसे अिसका कारण पूछा गया तो सहज भावसे अुन्होंने कारण बताया। लेकिन मुन्नालालजीके खिलाफ नाराजीका अेक भी शब्द अुनके मुंहसे नहीं निकला। अिन दोनों घटनाओंका मुझे तो आज तक पता ही नहीं था। जब मैंने मुन्नालालभाअीसे पुस्तकके लिअे कुछ जानकारी मांगी, तो अुन्होंने ये घटनायें लिख भेजीं। यों तो मेरा और अुनका अेकसाथ ही सेवाग्राममें प्रवेश हुआ। अुनके अनुभवोंकी भी अेक स्वतंत्र पुस्तक बन सकती है। क्योंकि अुनका भी बापूजीके साथ वैसा ही निकट संबंध रहा है जैसा मेरा। वे तो बापूजीकी रिजर्व फौजके सिपाही थे। जहां कोअी जानेवाला न मिले वहां बापूजी अुन्हें भेजते थे। जब बापूजी प्रवासमें जाते तो स्टेशन तक अुनका सामान पहुंचाना और वापिस आने पर लाना, यह काम तो अुनके लिअे ही रिजर्व था। कभी कभी मैं भी थोडी मदद कर देता था।

नुकसान सहनेकी अद्भुत शक्ति

अेक दिनकी बात है। सेवाग्रामके नाले पर बडे बडे ड्रमोका पुल बनाया गया था। अिसमें म्युनिसिपैलिटीके ओवरसियरकी सलाह थी। जब पानी आया तो ड्रमोके मुहमे कचरा भरकर पानी रुक गया। बस, गावमें पानी घुसने लगा और लोगोके घर गिरनेका खतरा पैदा हो गया। शामके भोजनका समय था। मैं कही अिधर-अुधर था। मुन्नालालजी भोजन कर रहे थे। जब गावके लोगोंने अिस खतरेकी सूचना आश्रममे दी तो बापूजीने कहा, "मुन्नालाल, जाकर देखो क्या हो सकता है।" मुन्नालालजी गये और जाकर देखा तो अुनको लगा कि पुलको तोडकर पानी निकाल देना ही अेक-मात्र अुपाय है। अुन्होने गावके लोगोकी मददसे पुल तोड दिया और पानी निकाल दिया। जब अिसकी सूचना बापूजीको दी तो अुनको खुशी हुआी। बापूजीने पुल तोड देनेके नुकसानकी तरफ ध्यान नही दिया। लेकिन मुन्नालालजी और गावके लोगोको तुरत मिलनेवाली सकटमुक्तिका अुन्हे आनन्द हुआ। बापूजीके स्वभावमें जहा हद दर्जेकी कजूसी थी, वहा अुदारता और नुकसान सहनेकी शक्ति भी अदभुत थी।

मच्छरदानीका किस्सा

अेक समय मलेरिया हो जानेके कारण बापूजीको मच्छरदानी लगानेकी सलाह डॉक्टरोने दी। अुस समय तख्त भी नही था। बापूजी बरामदेमें सोनेको तैयार न थे, वर्ना बरामदेके खम्भोसे मच्छरदानीकी डोरी बाघी जा सकती थी। मुझे बुलाकर बोले, देखो प्रार्थनाकी जगह मच्छरदानी लगानेकी तजवीज कर दो। मुझे मच्छरोंसे तो बचना है लेकिन मच्छरदानीके सिवा अुनके लिअे कुछ खर्च नही करना है। गरीब लोग क्या कर सकते हैं? वही हमको करना चाहिये न? मैंने कहा, ठीक है, कर दूगा। मैं विचारमे पड गया। यदि प्रार्थनाकी जगह पर चार खम्भे गाडू तो अेक तो प्रार्थनाके स्थान पर बीचमें गडे खम्भे विचित्र लगेंगे। अुनको रोज गाडना और रोज अुखाडना भी अच्छा न होगा। कही बापूजी खम्भोकी कीमत और गाडने-अुखाडनेकी मजदूरीका हिसाब पूछ बैठे तो मुझे अेक नया बुखार चढ जायगा। अिससे बचनेका कोअी दूसरा रास्ता खोजना ही होगा। तुरन्त मेरे ध्यानमें जगली लोगोंके तम्बू आ गये। दो बासके टुकडे लिये। अुनको मच्छरदानीके दो सिरो पर बाधकर अुनमें रस्सी बाधी और दोनो तरफ तान कर दो बडे कीले जमीनमें

गाड दिये। मच्छरदानी तम्बूनुमा थी सो ठीकसे तन गयी। यह क्रिया मैंने शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीके सोनेके पहले कर दी। मनमें अुसका ढांचा पहले ही बना लिया था। अेक बार तानकर भी देख लिया था। बापूजीने देखी तो बोले, बस यही मैं चाहता था। अब जो चाहेगा वही मच्छरदानी चाहे जहां लगाकर सो सकता है।

कैसा समभाव!

गोविन्द बापूजीका खाना तैयार करता था। अेक रोज अुसने कहा, मुझे वर्धा जाना है।

बापूने पूछा — क्यों?

गोविन्द — हजामत बनवानेके लिअे।

बापू — तो क्या गांवमें नाअी नहीं है?

गोविन्द — हरिजन नाअी नहीं है और सवर्ण नाअी हमारी हजामत बनाते नहीं हैं।

बापू — तुम्हारी हजामत नहीं बनाते तो मैं कैसे बनवा सकता हूं?

अुस रोजसे सेगांवके नाअीसे बापूजीने हजामत बनवाना बन्द किया और खुद अपनी हजामत बनाने लगे। जब सिरके बाल बढ़ते थे तो मैं या मुन्नालालजी काट देते थे।

तुकड़ोजी महाराज

अेक रोज नागपुरसे श्री बाबूराव हरकरे आये और बापूजीसे कहने लगे कि तुकडोजी महाराज बड़े ही साधु पुरुष हैं। अुनके विचार राष्ट्रीय हैं और अुनके भजनोंका प्रभाव ग्रामीण जनता पर बड़ा अच्छा पड़ता है। मैं चाहता हूं कि वे थोड़े दिन आपके पास रह जायं तो अुनके विचार और भी परिपक्व हो जायेंगे और देहातमें वे अेक बड़ा लाभकारी काम कर सकेंगे। बापूजीने अिस विचारको पसन्द किया और अुनको रखनेकी मजूरी दे दी। अेक मास तक रहनेकी बात तय हुअी थी। ता० १४–७–'३६ को श्री तुकडोजी महाराज आश्रममें आ गये।

बापूजीने अुनके रहनेकी व्यवस्था आदि-निवासमें अपने पास ही कर दी। हमारे पास दूसरा और मकान भी कहां था? अिसलिअे जो भी मेहमान आते अुनको अुसी मकानमें स्थान देना पड़ता। तुकड़ोजी महाराजके साथ नारायण नामका अेक सेवक भी था। अुसको भी अुसी मकानमें स्थान मिला।

महाराजको सूत कातना तो आता था, लेकिन रुअी धुनना और पूनी बनाना नहीं आता था। अुन्होंने ये क्रियाअें भी सीखनेकी अिच्छा प्रकट की, तो बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो महाराजको धुनना व पूनी बनाना सीखना है। अिसलिअे अुनके साथ बात करके समय तय कर लो। अगर वे धुनना सीख जावेंगे तो अेक बडा काम हो जावेगा। अुनका शिष्यमंडल विशाल है। वे दूसरोंको भी अिसका महत्त्व समझा सकेंगे और सिखा भी सकेंगे।" अगस्तका महीना था। पानीकी झडी लगी थी। अैसे मौसममें धुनकी चलाना कठिन था। लेकिन बापूजीके फरमानको टाला नहीं जा सकता था। वे किसी कामके लिअे नकार तो सुनना ही नहीं चाहते थे। अिसलिअे मैंने राजीसे या बेमनसे कहा, जी हां, सिखा दूंगा। मुझे यह लोभ भी हुआ कि अगर अितना बडा सन्त चेला बननेको मिले तो कौन अैसा मूर्ख होगा कि अवसर चूक जाय। अब जब कोअी महाराजकी तारीफ करता है तो मैं मजाकमें कह देता हूं कि वे तो मेरे शिष्य हैं, क्योंकि मैंने अुनको तथा अुनके शिष्य नारायणको धुनना सिखाया है। अगस्तकी गीली हवामें रुअी तातसे चिपकनेकी कोशिश करती, लेकिन मैं बहुत सावधानीसे धुनकी चलाता। अिससे मेरी धुननेकी कला बढ गअी। करीब दस बारह दिनमें महाराजको भी अच्छा धुनना और पूनी बनाना आ गया। मेरी शिक्षा अैसी फली कि अपने आश्रममें पहुंच कर महाराजने अपने भक्त कार्यकर्ताओंका अेक शिविर चलाया, जिसमें पचास विद्यार्थियोंने अेक मास तक भजन-कीर्तनके साथ साथ धुनना, पूनी बनाना और सूत कातना सीखा। अिस शिविरके लिअे महाराजने मुझे ही वहां बुलाया था। लेकिन मैं बीचमें ही बीमार हो गया और विवश होकर वापस लौट आया। तो भी शिविरका काम निश्चित समय पर पूरा हुआ।

श्री तुकडोजी महाराजके कीर्तनमें भक्तिभावसे भगवानका हृदयस्पर्शी गुणगान होता था, जिससे श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे। सेवाग्रामके सैकडों आदमी प्रतिदिन प्रार्थनामें अुनका कीर्तन सुननेके लिअे आया करते थे। प्रार्थनाके बाद वे खडे होकर अपने गुरुदेवकी रोज नियमपूर्वक आरती अुतारते थे। बापूजीका अितनी देर तक अेक आसनसे खडे रहना हम लोगोंको अखरता था, लेकिन बापूजी तो स्वयं बडे नियम-पालक थे। अिसलिअे सीधे ध्यानमग्न खडे रहते थे। बीचमें दो-तीन दिनके लिअे महाराज किसी गांवको चले गये तो सब सूना-सूना लगने लगा था। कुल मिलाकर अुनका यह क्रम

अेक मास तक चला और ता० १३–८–'३६ को वे बापूजीसे आशीर्वाद और विदा लेकर अपने आश्रम मोझरी चले गये। बापूजीको अुनका नीचे लिखा भजन बहुत प्रिय था। वे कहते थे कि यह भजन तो मेरी ही जीवनकथाका द्योतक है।

किस्मतसे राम मिला जिसको, अुसने यह तीन जगा पाओी।
पहले तो धन सुत दार गया, अरु शाल दुशाला छूट पडा।
सब मजिल हाथी घोडोंसे, नहीं पास रहा आवन कोअी।
दूजेसे जग अपमान हुआ, अरु आदर तो सब जाय भगा।
नहीं कीमत जात बिरादरमें, साथी न रहा कुछ समझाओी।
तीजेसे आफत तन भोगी, दिन रात रहा जैसे रोगी।
नैनोंसे सुख नहीं देखा, सब अुमरी दुखमें जा खोओी।
ये तीनहुंसे कंगाल हुआ, पर याद अुनोकी करता था।
बिन नाम प्रभुके झूठ सभी, यह भाव हमेशा नैन रही।
ये तीन जगह जिसको न मिली, अुनको न कभी दीदार हुआ।
कवी जन्म जरा मरते मरते, तुकड्याको गुरुपद यह छाओी।

अेक दिन बापूजी महाराजसे कुछ बातें कर रहे थे कि बीचमें बापूजीने अेक दृष्टान्त सुनाया। अेक गरीब और धनिकका घर पास पास था। अेक दिन गरीबके घरमें चोर आ घुसे। जब गरीब जागा तो अुसने देखा कि चोर अुसके घरमें कुछ ढूंढ रहे हैं। अुसने सोचा कि ये बेचारे व्यर्थ ही परेशान होंगे, क्योंकि अिनको यहां कुछ मिलनेवाला नहीं है। वह अुठा और बडी शांति व धीरजसे अुसने चोरोंसे कहा कि आप अधिक परेशान न हों। जो कुछ मेरे पास है वह आपको दिये देता हूं। यह कह कर अुसने चिथडोंमें से निकाल कर अेक दस पांच रुपयोंकी पोटली अुनके हवाले कर दी। चोरोंको बडा विस्मय हुआ। लेकिन लोभसे अुनकी आंखें बन्द थीं, अिसलिअे अुन्होंने अधिक धन पानेके लालचसे पडोसी धनिकके घर पर हमला बोल दिया। वह धनिक जाग रहा था और अुसने सारी चर्चा सुनी थी। वह आश्चर्य कर रहा था कि देखो चोर अुस गरीबके घरसे खाली हाथ ही जानेवाले थे, लेकिन अुसने अपने ही हाथसे अपनी संचित रकम चोरोंके हवाले कर दी। तो मैं भी अपनी पूंजी चोरोंके सुपुर्द क्यों न कर दूं? अितनेमें ही चोरोंने अुसके घरका दरवाजा खटखटाया। धनिकने तुरन्त दरवाजा खोल दिया और चोरोंसे कहा कि आअिये आपको जो चाहिये सो मैं दूंगा। चोर घरमें घुस गये लेकिन

अुनके हृदयमें यह मन्थन चलने लगा कि यह क्या हो रहा है। अुस धनिकने अपना सारा धन चोरोंके सामने लाकर रख दिया। बस चोरोंके मनमें राम जगा और अुन्होंने अुस धनिक और गरीबका सारा धन वही छोड दिया और भविष्यमें चोरी न करनेकी प्रतिज्ञा करके वे साधु हो गये। मै हिंसाके मुखमें अहिंसाको अिसी तरह झोक देना चाहता हू। आखिर कभी तो हिंसाकी भूख शान्त होगी ही। अगर दुनियाको शान्तिसे जीना है तो मेरे ज्ञानमें दूसरा रास्ता नही है। आप अपनी सीधीसादी भाषामें अपने मधुर भजनोंके द्वारा देहातकी जनता तक अहिंसाके अिस सदेशको पहुचा सकें तो मेरा बहुत बडा काम हो।

महाराजने कहा, आपकी बात तो ठीक है। मेरी श्रद्धा भी अहिंसा पर दिनोदिन बढती जा रही है। आपके आशीर्वादसे वह दृढ बनेगी और मै अपनी सारी शक्ति लगाकर आपका सदेश लोगो तक पहुचानेका प्रयत्न करूगा।

जब मै १८ सालके बाद मोझरी गया तो मैने देखा कि श्री बाबूरावजीका तुकडोजी महाराजको बापूजीके पास लानेका प्रयत्न सफल हुआ। महाराजने बापूजीकी कल्पनाको मूर्तरूप देनेका पूरा पूरा प्रयत्न किया है। अिसका दर्शन अुनके गुरुसेवा मडलके सगठन और अुसके सेवाकार्यसे होता है। आज मोझरीमें सुन्दर खेती और गोशाला चलती है। विद्यार्थियोका छात्रावास चलता है। प्रसूति-गृह, अस्पताल, नअी तालीमका विद्यालय, हाअीस्कूल, कताअी, बुनाअी, तेलघानी, पुस्तकालय, प्रार्थना-भवन आदि सारी प्रवृत्तिया देखकर मुझे बडा आनन्द हुआ। आज तो महाराजका स्थान अखिल भारतीय हो गया है। साधु-समाजके अध्यक्षका सम्माननीय पद अुन्हें प्राप्त हुआ है। अुनके विचारोंमें क्रान्तिकारी प्रगति तथा गभीरता देखकर मेरे सामने अुस दिनका चित्र स्पष्ट हो आया जिस दिन बापूजीने अुनसे कहा था कि 'आप मेरी बात समझ लें और अपनी सीधीसादी भाषामें अपने मधुर भजनो द्वारा जनता तक अहिंसाके अिस सन्देशको पहुचा सकें तो मेरा बहुत बडा काम हो।' मै देख रहा हू कि तुकडोजी महाराज गुरु-दक्षिणा (अपने गुरु अडकुजी महाराजकी) और पितृऋण (राष्ट्रपिता बापूजीका) चुकानेका भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। अैसे गुरु-शिष्य दोनों धन्य है।

हिंसाके मुखमें अपने आपको झोंक देनेकी बापूजीकी कितनी तत्परता थी, यह अुनकी मृत्युसे स्पष्ट हो गया। सीने पर धडाधड तीन गोलियां खाकर भी अुनके मुखमें रामनामके सिवा अेक आह तक न निकली। अिसका नाम है 'अन्ता मता सो गता'। मनुष्यकी परीक्षा अुनके अंत समयकी मति परसे होती है।

अुन दिनों लीलावती बहन रसोअीका काम संभालती थीं। मेरा और अुनका झगडा हो गया और मैंने अपनी रसोअी अलग बनानेके लिअे बापूजीके सामने सूचना रखी।

बापूजीने मंजूर किया और मैं अलग भोजन बनाने लगा। लेकिन आश्रममें जो कुछ भी फल वगैरा आते थे, अुनमें से मेरा हिस्सा बापूजी किसीके साथ मेरे पास भेज दिया करते थे।

मैं तुकडोजी महाराजको बुनना और पूनी बनाना सिखाता था। अुन्होंने अेक दिन कहा, भाअी, तुम क्या खाते हो, हमको भी खिलाओ। मैंने अुनको खिलाया। अिसका पता बापूजीको चला। दूसरे दिन मेरी पेशी हुअी। बोले, मैंने तो सिर्फ तुम्हारी तदुरुस्तीकी दृष्टिसे तुमको अलग खाना बनानेकी अिजाजत दी है, नहीं तो तुम्हारे पास दूसरोंको खिलानेके लिअे समय कहां है? तुम्हारा सारा समय गोमाताके लिअे है। अुसमें से अेक मिनट भी दूसरेको देना गोमाताकी चोरी है। अिस प्रकार काफी बोले। मैंने अपनी भूल कबूल की और आगेसे अैसा न करनेका वचन दिया।

विनोबाजी कहा करते हैं कि मेरे दिल पर सबसे अधिक असर बापूजीके प्रेमसे भोजन करानेका पडा था। रास्ता चलतेको भी बापूजी भोजनका निमंत्रण दे दिया करते थे। लेकिन मैंने जब तुकडोजी महाराजको दो मोटी रोटियां खिला दीं तो लम्बा भाषण सुनना पडा। अगर किसी अन्य प्रसंग पर मैं अुनको न खिलाता तो भी शायद अिससे ज्यादा लम्बा भाषण सुनना पडता। यही तो मर्यादा-पालनकी बापूजीकी खूबी थी। मुझे तो केवल अनिवार्य कारणसे सिर्फ मेरे लिअे अलग भोजन बनानेकी अिजाजत मिली थी। यदि मैं किसी प्रकार लोगोंको खिलाने लगता तो अुनमें समय तो जाता ही, मर्यादाका भी भंग होता। अिसमें तुकडोजी महाराजको भी चेतावनी थी। बापूजीके विविध पहलुओंको समझना बडा कठिन काम था। यह तो वही जान सकते हैं जिन पर बीती हो। बांझ क्या जाने प्रसूतिकी पीर?

व्यवस्थापकके रूपमें

बापूजीका यह आग्रह कि मैं सेवाग्राममें अकेला ही रहूंगा पहले ही मेरे व मुन्नालालजीके प्रवेशने ढीला हो गया था। लेकिन थोडे दिनों तक अैसा लगता रहा कि हम तो तत्कालके समयके लिअे हैं। बाहरके किसी भी आदमीको वहां विश्राम नहीं मिलता था। पहले दिन किसको रोटी मिली अिसका मुझे स्पष्ट खयाल है। धुलियामें श्री पारनेरकरजी बापूजीसे बात करने आये। बात करके जब वे वर्धा लौटने लगे तो बापूजीने कहा कि यहां तो किसीको खाना नहीं मिलता है, लेकिन तुम्हें मिल जायगा। पूछो बलवन्तसिंहको अगर अुनके पास कुछ आटा हो तो।

अुन्होंने मुझसे पूछा — भाअी मुझे खिलाओगे? मैंने कहा — जरूर। अुस समय हमारे पास आटा भी सेर सवा सेरसे ज्यादा नहीं रहता था। मैंने अुनको खाना खिलाया।

हमें गायोंके लिअे जो चारा वगैरा चाहिये था, वह जमनालालजीकी खेतीमें से मांग लाते थे। जैसे जैसे बापूका परिवार बढता गया वैसे वैसे गायका परिवार भी बढाना पडा और अुनके लिअे मकान और अधिक खेतीकी भी जरूरत पडती गयी। शुरूमें तो हमने अुसी अेक अेकड जमीनमें जहां खाली जगह थी सागभाजी लेना आरंभ कर दिया था। बापूजीने यह भी निश्चय किया था कि वर्धासे सागभाजी, जो गांवमें पैदा होनेवाली चीज है, न मंगायी जाय। मगर बरसातके शुरूमें तो अैसा मौका आता था जब गांवमें भी कोअी सागभाजी नहीं होती थी। बापूजी कहते, "जंगलमें भी बहुतसी पत्तियां होती हैं, जिनका साग बन सकता है। अुनकी जानकारी करो, तोड़ कर लाओ और साग बनाओ।" देहातके लोग तो अुन पत्तियोंकी भाजी बनाते ही थे। हम टोकरी लेकर निकलते और पत्तियां चुनकर लाते तब हमारी भाजी बनती।

आश्रमके नामकरणके बारेमें प्रश्न खडा हुआ। किसीने गांधी आश्रम सुझाया, किसीने मीरा आश्रम, किसीने सेवाश्रम। अैसे कअी नाम सुझाये गये। आखिर बापूजीने गांवकी सेवाके लिअे आश्रम बना है अिस आधार पर सेवागाम आश्रम नाम रखा। वास्तवमें सिर्फ बापूजी ही वहां रहते थे और अुनके साथ हम कुछ लोग थे। जब बापूजीसे कोअी वहां आनेके लिअे पूछता तो वे कहते, "यह आश्रम थोडा ही है, यह तो मेरा परिवार है। जो लोग मुझसे अलग रह ही नहीं सकते या जिनको मैं नहीं छोड सकता, वही

लोग मेरे पास रहते हैं। अिसलिअे अिसको संस्था समझना ही नहीं चाहिये। वैसे साबरमती आश्रमके सब नियम यहां लागू हैं। और वही यहां रह सकता है जो आश्रमके सब नियमोंका पालन कर सकता हो।"

सचमुच सेवाग्राम आश्रम बापूके आज तकके अनुभवोंका निचोड़ था। वहां कोअी नियम नहीं था और सब नियम थे। आश्रमके व्यवस्थापक, संचालक जो भी कहिये बापूजी ही थे। दूसरे लोग तो सिर्फ हिसाब-किताब रखना, बाजारसे सामान खरीदकर लाना, रसोअी बनाना वगैरा काम किया करते थे। यह काम कुछ रोज लीलावती बहनने किया, कुछ दिन नाणावटीजीने किया। लेकिन दूसरी सब जिम्मेदारी बापूजी पर थी। बापूजी आश्रमके छोटेसे छोटे काममें खूब ध्यान देते थे। भोजन परोसनेका काम तो बापूजीका ही था। हम भोजन बनाकर बापूजीके सामने रख देते थे और अपनी अपनी थाली अुनके पास ले जाते थे। बापू अुसमें परोस देते थे। थाली लाने ले जानेकी झंझटसे बचनेके लिअे मैं बापूजीके बिल्कुल सामने ही बैठता था। अुस समय बापू परोसते जाते और कुछ मनोरंजन भी करते जाते। साथ साथ भोजनकी मात्रा और अुसके गुण आदिके बारेमें भी सूचनाअें करते जाते। यह क्रम बहुत दिनों तक चला।

प्रार्थनामें रामायण

मैंने मगनवाड़ीमें बापूजीसे कहा था कि मैं आपको रामायण सुनाया करूं तो कैसा रहे? बापूजीने कहा — हां, पर मुझे वह स्वर प्रिय लगता है जिसमें मेरे पिताजीको अेक पंडितजी सुनाया करते थे। अुनको देवदासने ग्रहण कर लिया था, और अुनके पाससे बालकोबा[1] ने। अगर तुम अुनको सीख सको तो मुझे रामायण सुनना प्रिय है। अिसलिअे मैं बालकोबाजीके पास गया, लेकिन मुझे संगीतका ज्ञान नहीं था। मुझे अुनका राग अच्छा तो लगा लेकिन अुस रागको मैं खुद नहीं सीख सका। जब नाणावटीजी मगनवाड़ीमें बापूजीके पास रहने आये थे तबसे सुबह नौ बजे बापूजीको रामायण सुनाना शुरू हुआ था। कभी मैं और कभी नाणावटीजी सुनाते थे। लेकिन अभी तक रामायण प्रार्थनामें शुरू नहीं हुअी थी। जब नाणावटीजी सेवाग्राममें आकर रहने लगे तब मैंने बापूजीको सुझाया कि जैसे सुबहकी प्रार्थनामें गीता

---

[1] आचार्य विनोबा भावेके छोटे भाअी। अिनका ज्यादा परिचय आगे 'सेवाग्रामके सम्पर्कमें कुछ विशिष्ट व्यक्ति' नामक प्रकरणमें दिया गया है।

पढी जाती है वैसे सायप्रार्थनामें रामायणका भी पाठ हो तो कैसा रहे? बापूजीने पसंद किया और नाणावटीजी द्वारा शामकी प्रार्थनामें रामायण प्रारंभ हुआ।

कामका विस्तार

अब कामकी योजना बनानी थी। मुन्नालालजीको गांवके बच्चोंको पढानेका काम सौंपा गया और नाणावटीजीको ग्रामसफाईका। नाणावटीजीने गांवमें चलने-फिरने पाखाने और स्त्रियोंके लिए आड करके नालिया खोदकर कुछ पाखाने बनाये। शुरूमें ही गांवकी आम सफाईके लिए एक भंगी भी रखा गया था, लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी भंगीका काम संतोषजनक न रहा और उसको बंद करना पडा। इसी बीचमें चकैया नामका लडका आ गया। उसको बुनाई सिखानी थी और आश्रममें बुनाई जारी भी करनी थी। इसलिए नाणावटीजीने बुनाईका काम भी शुरू किया।

इस चकैयाके आनेके दिन भी बडी बोधप्रद घटना हुई। एक दिन बापूजीने महादेवभाईको बुलाकर कहा, 'देखो, सीताराम शास्त्रीका पत्र आया है। उनके आश्रमका एक हरिजन लडका कल सुबहकी गाडीसे आनेवाला है। तुम स्टेशन जाकर उसे ले आना।' महादेवभाई हां कहकर चले गये। दूसरे दिन सुबहकी मद्रास एक्सप्रेससे चकैया सेवाग्राम पहुंचा और बापूजीको प्रणाम करके बोला, 'मैं आ गया।' बापूजी 'तुम्हारा नाम चकैया है?' 'जी हां।' 'तो महादेव स्टेशन पर पहुंच गया था न?' 'जी नहीं।' बापूजी 'तो तुम यहां कैसे पहुंचे?' 'पूछते पूछते।' बापूजी गंभीर हो गये और बोले, महादेवको बुलाओ। महादेवभाई आये। बापूजी गंभीरतासे बोले, 'क्यों महादेव, तुम स्टेशन नहीं पहुंच सके?' महादेवभाई चौंक उठे और बडी नम्रतासे बोले, 'बापूजी भूल गया था।' बापूजीने कहा, 'ऐसी भूल तुमसे कैसे हो गयी? देखो यह तो बच्चा है। यह प्रदेश इसके लिए नया है। हमारी भूलके कारण यह कितनी मुसीबतोंमें पड सकता था?' महादेवभाई शरमा गये और बोले, 'इसको कष्ट तो हुआ ही होगा।'

बापूजीके चेहरे पर यह भाव था कि हम बडे लोगोंकी आवभगत तो मर्यादासे अधिक कर जाते हैं और एक लडकेकी, सो भी हरिजनकी, आवभगत करना भूल जाते हैं। यह हमारी गंभीर भूल है।

जैसे जैसे हमारी गायोंकी संख्या बढती गयी, वैसे वैसे हमने पैर फैलाना शुरू किया। पहले तो जमनालालजीसे चारेके लिए थोडीसी जमीन

और नये कुओंकी मांग की थी। परन्तु अब सबकी सब जमीन मांगनी पडी। वे तो अिसके लिअे तैयार ही थे। लेकिन अुनके काम करनेवालोंका थोडा ममत्व था, जो स्वाभाविक था। लेकिन क्या करते? जमनालालजीने तो जिस रोज बापू सेवाग्राम आये अुस रोजसे ही सेवाग्राम मनसे बापूजीको समर्पण कर दिया था। अिसलिअे अुन्होंने अपना सारा काम समेट लिया। विस्तर-बोरिया अुठा लिया और अुनकी सारी जमीनका कब्जा आश्रमने ले लिया।

अब तक वहाके मकान वगैरा पर जो कुछ खर्च होता था, वह सब जमनालालजी ही करते थे। क्योंकि अुनका खयाल था कि कल बापू यहांसे अुठकर चले गये तो सार्वजनिक पैसेका क्या होगा? अिसलिअे मेरी जमीन पर मेरा ही पैसा खर्च हो तो अुसका कुछ किया जा सकता है। अुसको मैं सह लूंगा। लेकिन अब तो स्थायी रूपसे आश्रम बन गया था, अिसलिअे अुनका खर्च बन्द कर दिया गया और बापूजीने सारा खर्च आश्रमसे देना शुरू किया।

पारनेरकरजी भी धुलिया छोडकर स्थायी रूपसे वहा आ गये थे। खेतीका चार्ज अुन्हें दिया गया और गोशालाका मेरे पास रहा। स्कूलके लिअे नये मकानकी जरूरत पडी। तालीमी सघके कुअेके पास अुत्तर-पश्चिमके जिन मकानमें स्कूल है वह मकान आश्रमने स्कूलके लिअे बनाया और तालीमी सघके मकानके पूर्वमें बडा हॉल, जिसमें भोजन होता है और सभा वगैरा होती है, बुनाअी-घरके लिअे बनवाया गया। अुस वक्त तालीमी सघकी वहा स्थापना हो चुकी थी और आर्यनायकम्‌जीको अुसका चार्ज देना था, जो १९३७ के नवम्बरमें सेवाग्राम आ गये थे। बापूजी चाहते थे कि नअी तालीमका प्रयोग अुनके नजदीक हो तो अच्छा। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जीको वहा बुलाया गया। तालीमी सघके मकान वगैराके लिअे शिवरामवाली बरडी, जिसमें आज सनरे और सोमडीका बगीचा है, खरीदी गयी। लेकिन आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी बापूजीसे अितनी दूर रहना नहीं चाहते थे, अिसलिअे आश्रमने कुछ ही दूरी पर अुनके मकान बनानेकी व्यवस्था हुअी।

वात्सल्यमूर्ति बापू

सचमुच आज जब अुन दिनोंकी याद आती है तो मनमें अनेक प्रकारकी लहरें अुठती हैं। अुस समय धीरे-धीरे हम यह भूलने लगे थे कि बापूजी अेक बडे महापुरुष हैं और अुन पर देशकी बहुत बडी जिम्मे-

दारी है, अिसलिअे हम अुनके साथ अमुक मर्यादासे बरताव करें। बस अैसा ही लगता था कि बापू हमारे बापू है और हम अुनके बच्चे हैं। अुनके साथ हम खेलते थे, खाते थे, झगड़ते थे और मजा करते थे। गीताके

> यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि।
> विहार-शय्यासन-भोजनेषु ॥
> अेकोऽथवाप्यच्युत तत् समक्ष।
> तत् क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥*

श्लोकका प्रत्यक्ष दृश्य वहा दीखता था। हमारे आपसमें झगड़े होते तो बापूजीकी अदालतमें हमारी वैसी ही पेशी होती थी जैसे मा या पिताकी अदालतमें बच्चोकी होती है और हम भी बच्चोकी तरह ही अपनी बात पेश करते थे। बापूजी पिताकी तरह ही किसीको डाटते, किसीको पुचकारते, किसीको कुछ कहते और किसीको कुछ। अिस तरह हमारा फैसला करते। बाहरके लोग हम पर नाराज होते कि ये लोग बापूजीको तग करते हैं और अुनका समय बरबाद करते हैं। मगर अुनको कहा पता था कि हमारी और बापूकी भूमिका क्या है। अगर हममें से किसीके कानमें दर्द हुआ, हमने बापूजीको नही कहा और फिर बापूजीको पता लग गया, तो वे बहुत नाराज होते और डाटते कि तुमने मुझको क्यो नही बताया? और अिसी पर अेक लबा भाषण सुना देते। अिसलिअे बापूके सामने हमारी कोअी बात न छोटी थी न बडी।

गोकशी कैसे बन्द हो?

तारीख २६-७-'३६ की बात है। बापूजीने कुछ विद्यार्थियोको समय दिया था। अुन्होने अनेक प्रश्न पूछे और बापूजीने अुनके अुत्तर दिये। मेरी डायरीमें अुनके अेक प्रश्न और अुसके अुत्तरका नोट है जो अिस प्रकार है

प्रश्न — गोकशी कैसे बन्द हो?

अुत्तर — गोकशी होती क्यो है? गायको कसाअीके हाथ बेचता कौन है?

---

* हे कृष्ण, विनोदार्थ खेलते, सोते, बैठते या खाते आपका जो कुछ भी अपमान हुआ हो अुसे क्षमा करनेके लिअे मैं आपसे प्रार्थना करता हू।

प्रश्न — अुनका मूल्य कम होनेसे हिन्दू ही गायोंको कसाअियोंको देते हैं और गायें अधिकतर फौजके लिअे काटी जाती हैं।

अुत्तर — कम नस्ली गायको हम महंगी बना सकें तो गाय बच सकेगी। और अुनको महंगी बनानेका यही अेक तरीका है कि मरी हुअी गायके सब अंगोंका अच्छेसे अच्छा अुपयोग होने लगे। जब तक वह जिन्दा रहे अुसीके दूध व घीका हम अुपयोग करें, अुनकी नस्लमें सुधार करके अुनका दूध बढावें और बढिया बैल अुत्पन्न करें। हमारे पास पशुपालनके लिअे जितना चारा-दाना नहीं है कि जिससे भैंसें व गायें दोनों निभ सकें। अिसलिअे हम गायको ही पूरा न्याय दें तो गाय बच सकती है। अगर हम भैंस और गाय दोनोंको बचाने जायेंगे तो अेक भी न बचेगी। हम टीका तो गोवधकी करते हैं लेकिन सेवा भैंसकी करते हैं। जितनी दुर्दशा गायकी आज हिन्दुस्तानमें है अुतनी शायद ही कहीं हो। दूसरे देशोंके लोग चाहे गायको काटकर खा जाते हों लेकिन जब तक अुसे जिन्दा रखते हैं तब तक पूरे आरामके साथ अुसे स्वस्थ अवस्थामें रखते हैं। हम गोकशीका विरोध कर रहे हैं लेकिन हमारी गाय हमारी अुपेक्षाकी शिकार होकर रोज भूखसे तिल तिल करके मर रही है। यह कितना बडा अपराध है? आज गायकी दुहाअी देनेवाले काफी संख्यामें हैं, लेकिन अुनकी सच्ची सेवा करनेवाले सेवक बहुत कम मिलते हैं।

अहिंसाकी सूक्ष्म व्याख्या

अुस समय सेवाग्राममें साप और बिच्छू खूब निकलते थे। बरसातमें नयी छतमें से रोज दस दस बिच्छू निकल आते थे। साप और बिच्छू पकडनेके लिअे हमने दो चिमटे बनवाये थे। बापूजी यह पता लगाना चाहते थे कि कितने फी सदी साप जहरीले होते हैं। अिसलिअे अुनको पकडकर पिंजरेमें रखते और जहरीले सापके लक्षणोंसे अुनका मिलान करते। वर्धाके डॉक्टरके पास भी अेक साप भेजा था। सेवाग्राममें साधारण सांप तो थे ही, लेकिन नाग और कोबरा भी मिलता था।

अेक रोज अेक बडा भारी नाग पिंजरेमें था। अुसने पिंजरेमें अपना सिर मारमार अुसे काफी घायल कर लिया था। जब मैं अुसे जंगलमें छोडने गया तो अुसे देखकर मुझे काफी दुःख हुआ और मैंने निर्णय किया कि अब मैं साप पकडनेमें मदद नहीं करूंगा। सारा प्रकरण कैसे हुआ यह तो मुझे

याद नहीं है, लेकिन मैंने अपनी डायरीमें जो नोट किया है वह यहा देता हू।

सेगाव, ता० २३-८-'३६ जब सापको खोला तो अुसकी हालत देखकर मनको वुरा लगा और यह विचार किया कि अब साप पकडनेमें मदद नही करूगा। सापका प्रकरण लीलावती वहनने वापूजीसे छेडा था। वापूजीने मुझे समझानेका प्रयत्न किया, लेकिन अुनकी वात मेरे गले न अुतरी और मैंने कह दिया कि अब मैं साप पकडनेमे आपकी मदद नही करूगा। अुस रोज तो वात टल गअी, लेकिन २६ तारीखको फिर घूमते समय वापूजीने मुझसे कहा, "तुमको सापकी वात समझा देना मेरा धर्म है। मैं सापसे डरता हू। अपनी यह कमजोरी स्वीकार करता हू, लेकिन मैं सापके साथ अेकरूप होना चाहता हू। मै अभी तक यह नही जान सका हू कि भगवानने साप और विच्छूको जहर क्यो दिया होगा। लेकिन साप-विच्छूमें जो जहर दीखता है वह तो मनुष्यके स्वभावका प्रतिबिंव है। अगर मनुष्य काम, क्रोध, द्वेपका त्याग करे तो सर्पसृष्टि वदल सकती है। मेरा पशुसृष्टिके साथ अेक-रूपता साधनेका प्रयत्न है। मै जितना अहिंसाकी सूक्ष्मता समझता हू अुतना अुसका पालन नही कर सकता हू, यह मेरी कमजोरी है। आज लोग जिसको अहिंसाके नामसे पुकारते हैं वह किसीका खून न करना ही है। परतु दूसरी प्रकारसे खून पी जाते हैं, जैसे गरीवका खून चूसकर रुपया जमा करना और अुस रुपयेसे पिंजरापोल आदि खोलकर अहिंसाका ढोग करना। 'खटमल चराओ' की वात जानते हो?"

मैंने कहा—जी नही।

वापू—वम्बअी आदिमें लोग प्रभातमें पुकारते फिरते है 'खटमल चराओ'। यानी खटमलोंसे भरी खाट पर भाडेसे सो जाओ तो अुसको अहिंसा कहेंगे। अगर मैं अहिंसाका पूरा विकास न कर सका यानी साप-विच्छूकी सृष्टिके साथ अेकरूप न हो सका तो मैं सतोषसे नही मरूगा। जिसका मुझे दुःख रह जायगा।

मनोरंजनमें छिपा आशीर्वाद

अुसी दिन वापूको दो-चार दिनके लिअे मगनवाडी जाना था। पू० वाने वापूजीके साथ मगनवाडी चलनेकी वात निकाली। वापूजीने कहा, "जिस प्रकार तुम अपने चलनेकी वात करती हो वैसे वलवन्तसिंहकी क्यों नही

करती?' बाने कहा, "बल्वर्तसिंह तो स्वतन्त्र है। कल जाना चाहे तो कही भी जा सकता है।"

अिस पर बापूजीने खूब जोरमें हंसकर अपनी लाठी अुठाकर बाको दिखाअी और कहा, "अच्छा बलवन्तसिंह जाय तो खरा, अेमना टांटिया भांगी नाखु" (बलवन्तसिंह जाय तो सही, अुसकी टंगडी तोड दू।) सब लोग खूब जोरमें हंसे।

बापूके अिस मनोरंजनमें बडी गंभीरता थी, मेरे लिअे अेक बडी चेतावनी थी।

बाने कहा, "तमारी पासे तो सेंकडो आव्या ने चाल्या गया- हुं तो जीवनभरथी जोती आवी छुं" (तुम्हारे पास सैकडो आये और चले गये। यह मैं जीवन भर देखती आयी हूं।)

बापूजी मौन रहे। लेकिन बापूजीके चेहरे पर मैंने अैसा भाव पढा मानो वे कह रहे हो, यह बात तो ठीक है कि मेरे पास सैकडों आये और चले गये, लेकिन ये जानेवाले नहीं हैं।

अुस समय मैंने कुछ गंभीरतासे विचार किया था, अैसा तो नहीं कह सकता और मैं बापूजीके जीवनकाल तक सेवाग्राम नहीं छोडूंगा अैसा भी नहीं मानता था। लेकिन सचमुच ही अुनके अुस मनोरंजनमें मेरे लिअे जो गहरा आशीर्वाद भरा था वह सत्य सिद्ध हुआ। अुसने मुझे अंत तक अुनके चरणोंसे अलग नहीं होने दिया। सचमुच, महापुरुषोंके वचनमें कितना चमत्कारिक असर होता है, अिसका भान मुझे जितना आज होता है अुतना बापूजीके जिन्दा रहते नहीं हुआ था। अब अुस पर दुःख करनेसे भी क्या लाभ है? जितना मिला अुसके लिअे भी मेरा हृदय भगवानको अनेक धन्यवाद देता है।

श्रेष्ठ अेक अीश्वर ही है

ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बापूजीसे मिलने आये। अेक विद्यार्थीने प्रश्न किया, "गीताके अध्याय ३ के श्लोक 'यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः' का क्या अर्थ है?"

बापूजी, "भगवान कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करता है वैसा ही जनसाधारण करते हैं। अिसका अर्थ यह है कि मानव-समाजका स्वभाव ही अैसा है कि लोग श्रेष्ठ पुरुषोंके आचरणकी तरफ देखते हैं। अिसलिअे भगवानने अैसा नहीं कहा कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा कहते हैं वैसा अन्य

लोग करते है, बल्कि यह कहा है कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा करते है वैसा अन्य लोग करते है। अिसीलिये भगवानने कहा है कि मेरे लिओ कोओी कर्म बाकी नही है, फिर भी मै लोकसंग्रहके लिओ अतन्द्रित रहकर काम करता रहता हू। नही तो जगतका नाश हो जायगा। सब लोग आलसी बन जायेगे। अब सवाल यह अुठता है कि श्रेष्ठ पुरुष कौन है? किसके आचरणका अनुकरण करें? मै, जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाओी जो आचरण करें अुसका अनुकरण करना चाहिये? कदापि नही।

"मै कुछ कहता हू, जवाहरलाल कुछ कहते है। अिस प्रकार अेक-दूसरेमें विरोध है तब किसका अनुकरण करे? अैसा श्रेष्ठ पुरुष आज दुनियामें मिलना असंभव है। दुःखकी बात तो यह है कि आज मेरी ६७ वर्षकी आयु हो गओी और अभी तक मुझे अैसा पुरुष नही मिला जिसके सामने मै सिर झुका दू। तब क्या करे?

"जो अन्तरात्मा और बुद्धि दोनोंसे ठीक जचे सो करें। श्रेष्ठ तो अेक ओश्वर ही है। अुसको अन्तरात्माके सिवाय कहा ढूढे?"

अहिंसाका व्यापक क्षेत्र

मुझसे अेक दिन घूमते समय अहिंसाके विषयमें बापूजी कहने लगे, "सत्य और अहिंसाकी जितनी खामी थी अुतना ही सत्याग्रह असफल रहा। यही कारण है कि मै सेगावमें बैठ गया हू। यह भी अेक प्रकारका तप नही तो और क्या है? अिधर अुधर घूमकर कुछ आन्दोलन कर सकता था, लेकिन मैंने समझ लिया कि जब तक अंतःशुद्धि नही है तब तक सत्याग्रह करना निरर्थक है। यद्यपि अहिंसासे आज तक कोओी लडाओी राजकारण या सामाजिक ढंगसे नही हुओी यह बात सच है। व्यक्तिगत तो अैसे अुदाहरण बहुत मिलते है। मेरा काम यह है कि अहिंसाका राजकीय और सामाजिक विकास करना। हा, अिस जन्ममें कर सकूगा या नही, यह तो कौन जानता है? अिसीलिओे तो मैंने तुम्हें अपने सान्निध्यमें रखा है कि तुम मेरा तर्ज समझ जाओ। और गोसेवा भी तो तुम्हारे ही भरोसे पर आरंभ की है। बस, यह जो आपसके तुम्हारे झगडे होते है अुनको सहन करो और यहा शून्यवत् होकर पडे रहो।

बापूका सर्टिफिकेट

हमने आश्रमकी सडक जहा तक बनाओी थी वहासे आगे अेक अैसा टुकडा था जहा बहुत कीचड हो गया था। आदमियोंको तो तकलीफ थी ही

किन्तु गाडियां फंस जानेके कारण बैलोंके लिअे भी वह अत्यन्त कष्टदायक थी। बापूजीने मुझसे कहा कि यहां अगर सडक बन सकती है तो बनाना अच्छा है, लेकिन पचास रुपयेसे अधिक खर्च नहीं होना चाहिये। मैंने स्वीकार किया और कार्य आरंभ हो गया। रुपये तो अस्सी खर्च हो गये लेकिन बापूजी और खानसाहब दोनों अुसे देखकर बहुत खुश हुअे। बापूने मुझसे कहा, "तुम अिंजीनियर तो नहीं लेकिन काम तुमने अिंजीनियरका किया है। तुमको दूसरा कोअी शाबाशी दे या न दे, बैल तो देंगे ही।"

ज्वरका प्रकोप

बापूने मुझसे कहा कि तुकडोजी महाराजका पत्र आया है। विद्यार्थियोंको धुनना-कातना सिखानेके लिअे किसीको बुलाया है। लिखा है कि अगर बलवन्तसिंहको ही भेज दें तो अच्छी बात है।

मैंने कहा — आपकी अिच्छा।

बापू — मेरी अिच्छाकी बात नहीं है। तुम्हारे जिम्मे जो काम है अुनकी क्या व्यवस्था होगी, अिसका विचार करना होगा। सडकका काम तुम्हारे बिना न होगा। गाय-बकरीका क्या होगा? अिन सबकी व्यवस्था हो सकती हो तो मुझे अिनकार नहीं है।

मैंने कहा — सडकका काम तो दो रोजमें खतम कर दूंगा और गाय-बकरीको चम्पत संभाल लेगा। धुननेवाला तो कोअी भी जा सकता है, परंतु मैं जाअूंगा तो अुनके समाजमें मेरा परिचय हो जायगा और कुछ विचार-विनिमय भी हो जायगा।

बापूजी — अगर तुम गोशालाकी व्यवस्था कर सको तो मुझे अच्छा लगेगा कि तुम जाओ। तुम बारीकीसे और कामको भी देख सकोगे और मुझे सारी रिपोर्ट दे सकोगे, क्योंकि कुछ लोग तुकडोजी महाराजके खिलाफ शिकायत कर रहे हैं।

बापूकी आज्ञा लेकर मैं २२ सितंबर, १९३६ को तुकडोजी महाराजके आश्रममें मोझरी पहुंचा। अुनका कार्यक्रम बडा ही सुन्दर चल रहा था, और ५०-६० विद्यार्थी थे। अुनका भजन-कीर्तन तो होता ही था, साथ ही धुनना-कातना भी चलता था। वहांसे भेजे हुअे मेरे पत्रके अुत्तरमें बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। क्या जानू यह कब मिलेगा? वहा तो सब ठीक चल रहा है। रोज छाछ होती है और मक्खन निकलता है। २॥ सेरमें से आज १४ तोला निकला, अुसका घी १० तोला। प्यारेलाल अिस बारेमें अुस्ताद बन गया है। मुन्नालाल दूधकी देख-भाल कर रहा है। आज तो बहुत पानी आया। किशोरलालका खत अिसके साथ है। अब तो ठीक है, दुर्बलता काफी है। महाराजसे कहो अुनका खत मिल गया था।

हा, सफाओीका काम भी अच्छी तरह सिखा दो।

सेगाव, वर्धा बापूके आशीर्वाद

२४-९-'३६

वहा मैं मुश्किलसे ८-१० दिन ठहरा कि मुझे बुखार आ गया और वह भी बहुत सख्त। तुकडोजी महाराजने तारसे बापूजीको मेरी बीमारीकी खबर दी तो अुनका अुत्तर आया, अुसे तुरत सेगाव भेज दो।

मेरी हालत बहुत खराब थी। मोझरीसे सेगाव लगभग ५५ मील है। ३ अक्तूबरको मोटरकारसे मुझे लाया गया। मोटर आकर खडी हुआी और बापूजी तुरत मेरे पास आये। (नाणावटीजी टाअीफाअिडसे बीमार थे। फिर मैं आया। बादमें मीराबहन बीमार पडी।) सोमवारका मौन तोडकर बापूने मुझसे हसकर कहा, "क्यो खूब मिर्च खाअी? बीमार क्यों पड गये?" मैंने कहा, "मिर्च तो नही खाअी लेकिन वहा खाने-पीनेकी व्यवस्था अच्छी नही थी अिसलिअे मैंने केले खूब खाये, जिससे मुझे कब्ज हो गया। मुझे लगता है कि मेरे पेटमें कुछ जहर पैदा हो गया है। आप अुसे निकालनेका प्रबंध कीजिये।"

मा की तरह बीमारोंकी सेवा

मैं बापूजीसे बात तो कर रहा था, लेकिन शरीरमें अितनी पीडा हो रही थी कि आधा बेहोश-सा था। बापूजी मुझे अुठाकर अपने स्नानघरमें ले गये और अपने हाथसे अेनीमा दिया। बुखार खूब था। मेरे शरीरसे बदबू आ रही थी। क्योंकि जबसे बुखार आया था तबसे स्पंज नहीं किया था। बापूजीने स्पंज किया, मेरे कपडे बदले। बादमें डॉक्टर महोदयको बुलाया गया। अुन्होंने देखकर बापूजीसे कहा कि अिनका हृदय बहुत कमजोर हो

गया है। बहुत सभालकर रखनेकी जरूरत है। कभी भी बन्द हो सकता है। मैंने बापूजीसे कहा कि आपके पास बहुत काम है। मेरे कारण आपको काममें बहुत अड़चन होगी। अिसलिअे मुझे सिविल अस्पतालमें वर्धा भेज दें तो कैसा रहे?

बापूजीने कहा, "कोअी भी मा अपने बच्चेको अपनेसे दूर करना पसद करेगी? या कोअी भी लडका माको तकलीफ होगी, अिसलिअे दूर जानेका विचार करेगा? तो तुम ही अैसा क्यों सोचते हो? मेरे पास कितना भी काम हो तो भी तुम्हारी सेवामें किसी प्रकारकी कमी नहीं आयेगी। हा, तुमको मेरी सेवामें विश्वास नही हो तो मै तुमको रोकूगा नही। तुरन्त जा सकते हो।"

मैंने कहा, "मै तो आपके कामके कारण सकोच करता था, लेकिन वैसे मै जाना पसद नहीं करता।"

बापूजीने डॉक्टरको दिखाया तो सही, लेकिन अिलाज डॉक्टरका शुरू नहीं किया। प्यारेलालजीको सिर और पेट पर मिट्टीकी पट्टी देनेका काम सौंपा और खानसाहबको फलोंका रस देनेका। मेरे पास कमोड, पानीकी बाल्टी, पीनेका लोटा, कटोरी, चम्मच सब रख दिया गया तथा मुझे किसी बातकी जरूरत पडे तो बजानेके लिअे घंटी भी रख दी गअी।

मुझे खूब प्यास लगती थी। पेशाब बार बार होती थी। मेरे पास सारी व्यवस्था थी। जब जरूरत होती घटी बजाता और अगर कोअी दूसरा न होता तो बापूजी खुद आते। मुझे खुदको डर हो गया था कि शायद मेरा शरीर चला जायगा। और डॉक्टरके कहनेसे बापूजी भी घबरा गये थे। बापूका नर्सिंग, प्यारेलालजीकी मिट्टीकी पट्टी बनानेकी कुशलता, खानसाहबका रस निकालकर व अपने मातृस्नेहकी मिठास घोलकर प्रेमपूर्वक मुझे पिलाना और मीराबहनकी देखरेख — अिस प्रकार मुझे सेवाके सर्वश्रेष्ठ साधन मिले थे। सर्वोपरि औषधि बापूका प्रेम तो मुझे प्राप्त था ही। आज जब अुन दिनोंकी याद करता हू तो अपने सद्भाग्यके लिअे आश्चर्य होता है। अगर अिस प्रकारकी सेवाकी व्यवस्था नहीं हुअी होती तो मेरा क्या होता, कौन जानता है। अिस सेवासे मैं जल्दी ही बीमारीके पजेसे निकल गया और मेरा बुखार अुतर गया।

ज्यों ज्यों मेरी तबीयत सुधरने लगी त्यों त्यों मेरी भूख भी बढने लगी। मैंने बापूजीसे रोटी खानेकी आज्ञा मागी। बापूजीने कहा कि अगर

तुम दस सेर भी दूध पियोगे तो मैं खुशीसे पिलाअूंगा, लेकिन तुम अेक भी रोटी मांगोगे तो मुझे दुःख होगा। मैं चुप हो गया। जब भूख लगती तो वापूजीके सामने जाकर खड़ा हो जाता। बापूजी पूछते, क्या बात है? मैं कहता भूख लगी है। बापू कहते "अच्छा, मोसंबी ले लो, मीठा नींबू ले लो, संतरा ले लो।"

जब मैं कहता कि कोअी ठोस चीज दीजिये तो वे कहते, अच्छा सेब ले लो।

यह क्रम करीब तीन महीने तक चला। अिस बीचमें मैंने पानी भी शायद ही पिया हो। अेक रोज थककर मैंने विजयाबहनसे रोटी मांगी और शायद अुनकी आंख बचाकर मैं आधी रोटी खा भी गया। विजयाबहनने हंसकर बापूजीसे शिकायत की। बापूजी बोले, "अरे, बलवंतसिंह, चुराकर रोटी खाता है?" और हंसे। मैंने कहा, "बापूजी चोरी नहीं की लेकिन जोरी जरूर की है। क्या करता रोटी खाये बिना मेरा शरीर खेतीका काम नहीं देता है। और अिस तरह बैठा तो कब तक रहूं?" तब बापूने अिसको हंसकर टाल दिया। लेकिन रोटीकी अिजाजत नहीं दी। जब बापूजी प्रवास पर जाने लगे तो मैंने कहा कि अब तक आपके लिअे जो फल आते थे अुनसे मेरा भी गुजारा हो जाता था, लेकिन जब आप यहां नहीं होंगे तो फल कोअी भेजेगा नहीं और मैं भूखों मरूंगा। बापूजीने हंसकर कहा, "बात तो ठीक है, लेकिन जितना फल मिले अुतना खाकर यदि भूख बाकी रहे तो अुतनी रोटी खा सकते हो।" मुझे तो यही आज्ञा चाहिये थी।

जब मैं आगाखां महलमें अुपवासके समय बापूजीसे मिलने गया था, तब देवदासभाअीने कहा था कि बापूजीने सरोजिनीदेवीसे अेक बार कहा था कि बलवन्तसिंहकी सेवा मैंने देवदाससे भी ज्यादा की है। सचमुच बापूजीने अपनी सेवा और प्रेमके बलसे ही सबको जीता था। न मालूम कितने लोगों पर अुनका अिस प्रकार निकटका प्रेम बरसा होगा।

मेरे चार रोज बाद ही मीराबहनको भी बुखार आ गया और वे सख्त बीमार हो गअीं। अुनकी सेवाका भार बापूजीके अूपर ही पड़ा। अुनको मोतीझरा (टाअीफाअिड) था। बापूजी अेनीमा देते, स्पंज करते और सारी व्यवस्था करते। नाणावटीजीको टाअीफाअिड पहलेसे ही था। अभी मैं कुछ कुछ ही घूमने-फिरने लगा था कि अिन लोगोंको बहुत सख्त बीमारी हुअी। मीराबहन कमजोर तो बहुत हो चुकी थीं, किन्तु बेहोशी तक नहीं पहुंची थीं।

नाणावटीजी तो बेहोश हो गये थे और भय हो गया था कि कहीं चल न जायँ। अुन्होंने भी बापूजीका बोझ देखकर अस्पताल जानेकी बात कही, किन्तु बापूने अुन्हें भी वही जवाब दिया जो मुझे दिया था। सारी दुनियाका काम करते हुअे भी बापूजी बीमारोंकी पूरी सेवा करते थे। अुसके कुछ दिन बाद ही चिमनलालभाअीको टाअीफॉअिड हुआ। जिसका टाअीफॉअिड सबसे खतरनाक था और खुद बापूजीको शक हो गया था कि अिनका शरीर चला जायगा। अुनकी पत्नी पू० शकरीबहन अहमदाबाद थीं। बापूजीसे किसीने सुझाया कि शकरीबहनको बुला लिया जाय।

बापूजीने कहा, "मुझे मददकी जरूरत नहीं है और न अुनका आना मैं यहां ठीक ही समझता हूं। हां, अगर चिमनलाल चाहें तो जरूर बुला सकता हूं।" चिमनलालभाअीने अिनकार कर दिया था।

मुझे बापूजीकी यह कठोरता अच्छी नहीं लगी थी। मैं सोचता, चिमनलालभाअी जानेकी तैयारी कर रहे हैं और ये अुनकी पत्नीको अुनके पास नहीं आने देते। लेकिन बापूजीकी मनोभूमिकाको मैं कैसे समझ सकता था? बापूजी बीमारोंकी पत्नी थे, अुनकी मां थे और अुनके डॉक्टर थे। तब फिर दूसरोंकी जरूरत ही कहां रह जाती थी? सबकी आकर तो मोह ही पैदा कर सकते थे।

चिमनलालभाअीकी तबीयत अितनी कमजोर थी कि बापूजीने मुझे भी पहरा देनेको कहा, यद्यपि मैं कमजोर था। बापूजीने कहा, "हो सकता है आज रातको ही चिमनलाल चला जाय। हम सबको सावधान रहना चाहिये। हमारी सेवामें किसी प्रकारकी कमी न रहे तो हमारे लिअे बस है।" बड़ी कठिनाअी और सेवासे चिमनलालभाअीकी तबीयत सुधरी।

अिस प्रकार आश्रम पर बीमारोंका अेक बड़ा प्रकोप आया था, जिसका सामना बापूजीने बड़ी कुशलता और धीरजके साथ किया।

मैं अब भोजनालयमें ही भोजन करने लगा था। बापूजीको यह अच्छा लगा। वे कहने लगे, "तुम जो अलग बनानेका आग्रह रखते थे वह मुझे अच्छा नहीं लगता था। हमको तो सबके साथ कुटुम्बका-सा बरताव करना है। हर स्थानमें आनेवालोंके साथ प्रेमसे रहना सीखना है।"

मैंने कहा, "अबकी बार मैं भोजन अलग करना नहीं चाहता था लेकिन अेक दिन दो-तीन बातें अैसी हो गयी जिससे मुझे लाचार होकर अलग होना पड़ा।"

बापूने कहा, "अैसी बातोंको तो हसकर टाल देना चाहिये। तुम अधिकारपूर्वक कह सकते हो कि मुझे यह चाहिये और यह नही चाहिये। शरीरको जिस जिस चीजकी आवश्यकता है वह अुसे देना चाहिये। क्रोधको अक्रोधसे जीतना, कामको सयमसे जीतना और मूर्ख भी कह सकता है कि आगको पानीसे जीतना है। जैसे आग और पानी दीखते है, वैसे क्रोध और अक्रोध दीखते नही है। लेकिन वे आग और पानीसे भी ज्यादा प्रत्यक्ष है।"

अहिंसा तथा अन्य चर्चाअें

ग्रामोद्योग सघके विद्यार्थी बापूजीके पास अक्सर आया करते थे। अेक रोज अुन्होंने प्रश्न किया कि अहिंसात्मक साधनोंसे हम सामाजिक विग्रहको कैसे दूर कर सकते है? बापूजीने अुत्तर दिया

"सामाजिक विग्रह मिटानेका अर्थ है अपने आपको शुद्ध करना, अपनी दसो अिन्द्रियो और मन पर काबू रखना। हमारी नजरमें मनुष्यमात्रके लिअे समभाव हो, चाहे वह किसी भी मजहबका माननेवाला हो। अुसके दोषोंको जानते हुअे भी अुसके नाशकी बुद्धि हम न करे। अुसके दोषोंको दूर करनेकी प्रभुसे प्रार्थना करे। मेरे चार लडके है मगर मेरे दिलमे अैसा नही है कि देवदास मुझे प्यारा है और हरिलाल कुप्यारा। भले वह मेरी और अपने भाअियोंकी नदामत-बदनामी करता है। अगर मै हरिलालको खत नही लिखता हू तो अिसका अर्थ यह नही है कि मै अुससे प्रेम नही करता हू। समझो कि देवदासको टाअीफाअिड हो गया है और हरिलाल चगा है, तो जो खुराक मै हरिलालको दूगा वह देवदासको नही दूगा। जहा चगेको रोटी खूब खिलाना धर्म है वहा बीमारको केवल पानी पर रखना धर्म हो जाता है। अिसका अर्थ यह नही है कि दोनोंमें कुछ फर्क है। मै चाहता हू कि हरिलालका नाश न हो, अुसके दोषोका नाश हो। अिसी प्रकार मै जानता हू कि मेें दगेकी शुरुआत मुसलमानोंने की है। हिन्दू भी निर्दोष नही है, अुनकी तरफसे भी हिंसा होती है। दोनो अेक-दूसरेको खानेके लिअे अपना अपना सगठन करनेकी फिक्रमें है, जिसका नाम गुडाशाही है। अग्रेजोंने भी अिसी प्रकार दूसरोको दबानेके लिअे गुडाशाहीका सगठन कर रखा है। गुडे कभी अपने आप सगठित नही होते। फौज गुडाशाही नही तो और क्या है? अिस प्रकारकी गुडाशाहीका बोलबाला अधिक टिकाअू नही होता। कितनी सल्तनतें आअी और बरबाद हो गअी। अिस प्रकार यह भी बरबाद हुअे बिना नही रहेगी। हा, रह सकती है अगर अग्रेज लोग

समझ जायें और अुनके पास जितने हथियार हैं अुनको फेंक दें, हवाअी जहाजोंको फूक दें, बारूदमें आग लगा दें और कह दें कि जिनको लूटना हो हमको लूट लो। तो अंग्रेज जिन्दा रह सकते है, नही तो नही।"

घूमते समय मेरी बापूजीके साथ चर्चा होती थी। बापू गावके लोगोंको गोपालनका महत्त्व समझाते थे। परन्तु लोगोंने कहा कि गावमें कीचड बहुत रहता है और चारा भी कम है। बापूजीसे मैंने गावके दूधके बारेमें पूछा तो अुन्होंने कहा कि जैसा अुचित लगे वैसा भाव ठहरा लो, लेकिन अैसी कोशिश न करना जिससे गावके लोगोंको अेक पैसा भी कम मिले।

मैंने बापूजीसे आगे प्रश्न करते हुअे कहा, कल मेरी सत्यदेवजीके साथ बात हुअी थी। अुनका मानना है कि आपने मीराबहन पर जितना प्रेम किया है जितना हिन्दुस्तानमें किसी पर नही किया, तो भी अभी तक वह स्वाव लम्बी नही बन सकी। अिस प्रकार आपके आश्रित रहना मोहकी निशानी है। ब्रह्मचर्यके बारेमें अुन्होंने कहा कि आज तक आपका जो शिक्षण रहा है वह बाहरी दबाव-सा रहा है। यह बात स्वाभाविक होनी चाहिये, अैसा आश्रमके लडकोको देखकर अनुभव होता है।

बापूजीने कहा, "बात तो सच है, लेकिन मीराबहनका मोह निर्विकार है। वह मेरे पास कैसे आयी और अुसके जीवनमें क्या क्या तबदीली हुअी यह जानने लायक बात है। अिसीसे आज भी मुझसे सीखनेकी दृष्टिसे ही वह मेरे पास रहनेका आग्रह रखती है। मैं जानता हू कि यह दोष है, लेकिन मैं अुसे मरने भी नही दूगा।

"ब्रह्मचर्यके बारेमें मैंने अपना विचार स्पष्ट लिखा है। जिसका मनसे पतन हुआ अुसका पतन हो चुका। यह बात ठीक है कि आश्रमके सब लडके भाग गये, लेकिन अिससे मैं असफल हुआ हू अैसा भी नही है। जो दो चार सभले हुअे हैं अुनसे मुझे वस्तुकी सिद्धताका भरोसा हो गया है। मैं खुद अपूर्ण हू तो दूसरोको पूर्ण मार्ग कैसे बता सकता हू? मैं कुछ पारस पत्थर तो नही हू जो दूसरोको स्पर्श करते ही ब्रह्मचारी बना दू। मेरा तो नम्र प्रयत्न है। जो लोग काल्पनिक गाधीको मानते है अुनको भी लाभ होता है। मेरे पास तो दूर दूरसे खत आते है कि आपके लेखोंसे हमको बहुत लाभ हुआ है। जो लोग मेरे नजदीक आ जाते है अुनको मालूम हो जाता है कि मैं तो अेक हाडमासका पुतला हू। मैंने कभी गुरु बननेका दावा तो किया ही नही है। मैं तो अल्पज्ञ हू। सर्वज्ञ तो अीश्वर ही है।"

दूसरे दिन फिर वैसी ही चर्चा चली। बापूजी कहने लगे, "मै जो धूलमें से धान पैदा करनेकी बात कहता हू अुसे तुम ध्यानसे सुनते हो न? तुम तो किसान हो। हरअेक चीजका ध्यान रखना और किसका क्या अुपयोग करना है वैसा जान-बूझकर करना।"

बापूजीकी बीमारी

हम लोग तो बीमार पडे ही, लेकिन बापूजीको भी बुखार आ गया। जमनालालजी सोचने लगे कि यहा पर मलेरिया है, अिसलिअे बापूजीके लिअे अूपर टेकरी पर मकान बनाना चाहिये। अिसके लिअे बापूजीकी अिजाजत लेने आये। बापूजीने कहा, "जब मेरे लिअे बनाओगे तो बलवत-सिंहके लिअे भी बनाना होगा और जब बलवन्तसिंहके लिअे बनाओगे तो अुसकी गायोंके लिअे भी बनाना होगा। क्योंकि मै अुसको छोडकर नही जा सकता और वह अपनी गायोको छोडकर नही जा सकता। अिसलिअे तुम अिस झझटमें ही मत पडो।"

जमनालालजीको बापूकी बात माननी पडी। परन्तु बापूजीकी तबीयत अधिक खराब हो गअी। अतमें बहुत आग्रहसे जमनालालजी बापूको सिविल अस्पताल वर्धामें ले गये। अिसी बीचमें मेरा कमरा लीपते हुअे प्रह्लादके हाथमें सुअी टूट गअी और अुसे मैंने बापूजीके पास वर्धा अस्पतालमें भेज दिया। मै सेवाग्रामके सब समाचार बापूजीको भेजता रहता था। मुन्नालालजीको बुखार था। अिसलिअे अुनको भी वर्धा भेजना चाहता था। बापूजीको पूछवाया तो अुन्होने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे तीन कागज मिले है। मुन्नालालके खतमें तुम्हारे खतोकी पहुच दी है। हा, रमणीकलालका खत भी मिला। मैने तुमको धन्यवाद भी भेजे है। मेरी अुम्मीद है कि शायद परसो मै वहा पहुच जाअूगा।

मुझको आराम है।

मुन्नालालको अब तो नही बुलाता हू, लेकिन डॉक्टर महोदयको भेजनेकी कोशिश करूगा। दरमियान सिर्फ दूध पर रहे। दस्त साफ न आवे तो दीवेल (अेरडी) तेल लेवे और कमसे कम दस ग्रेन क्विनीन लेवे। अुसकी सेवा तो तुम करते ही हो।

गंगाबहनका खत नहीं मिला है, न मुन्नालालका। प्रह्लाद या किसीके बगैर मांगे दूध मत भेजो। प्रह्लादको दूध कल भी दिया था और आज भी दिया है मगनवाडीसे। प्रह्लाद अच्छी तरह है। दस दिन कमसे कम रहना होगा। पुरी (अनन्तराम पुरी) को आज नहीं लिखूंगा। बाकी कल।

दो बोतल तो वापिस आती हैं, बाकी कल भेजनेकी कोशिश करूंगा।

२०-९-'३६, वर्धा अस्पताल — बापूके आशीर्वाद

मगनवाडीमें

बापूजी कुछ दिन बाद सेगांव आ गये। कुछ ही दिन पश्चात् मेरे पैरमें फोडे हो गये। अुनके अिलाजके लिअे मैं वर्धाके सिविल अस्पतालमें ड्रेसिंग करा आता था और मगनवाडीमें रहता था। अिसीके साथ मुझे ज्वर भी हो आया। मैंने बापूजीको लिखा कि "फोडे तो थे ही, बुखार और आ गया। मैं रोगी बनता जा रहा हूं। आपने कहा था कि जो सेगांवमें रहकर बीमार पडेगा अुसको सेगांव छोडना पडेगा। अिसलिअे मुझे आपके अुस निर्णयके पालनके लिअे भी सेगांव छोडना चाहिये।" वर्धासे मैंने अेक गाय भेजी थी। अुसके दूधका हिसाब रखनेके लिअे भी लिखा था। बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा पत्र मिला। गाय आ गयी है। हिसाब रखा जायगा। डॉक्टर कहे सो करना। तुम्हारे सेगांव छोडनेका प्रश्न अुपस्थित होता ही नहीं है। तुम्हारी व्याधि असाध्य नहीं है। बहुत दिनों तक चलने-वाली भी नहीं है। दो तीन दिनमें हार क्यों गये? तुम्हारे खतमें मुझे अश्रद्धाकी बू आती है। थोडे फोडे हो जाते हैं, अुनका पूरा अिलाज भी नहीं हुआ है। अितनेमें वह न मिटनेका डर पैदा हो जाता है। यह कहांकी बात? तुम्हारे दिलको निश्चित करना है कि मैं अच्छा हो जाअूंगा, शीघ्र ही जाअूंगा। अच्छा होनेके लिअे डॉक्टर-वैद्यकी आज्ञा पालन भक्तिभावसे करना। दिलमें अमंगल तरंग पैदा नहीं होने देना चाहिये। मेरे निर्णयके पालनकी फिक्र तुम क्यों करोगे? और मेरे निर्णयमें कोअी भरनेकी बात तो है ही नहीं। माना कि मैंने किसी व्याधिग्रस्तकी

सेवा ही करनेके लिअे अुसे सेगाव रखा, तो मेरा कुछ अनिष्ट तो नही होगा। तुम्हारे फिकर करना है अच्छे होनेकी, शीघ्रतासे आ जानेकी और गायोकी सेवा करनेकी। तुम्हारे फिकर करनी है तुम्हारे स्वभावकी अुग्रताकी।

७–२–'३७ वापूके आशीर्वाद

मेरी वीमारी मुझे वढती ही नजर आती थी। मैंने वापूजीको अिस वारेमे लिखा। वापूजीका अुत्तर आया

चि० वलवतसिंह,

व्याकुल होनेकी कोअी वात नही है। डॉक्टरके सुपुर्द किया है सो ठीक ही है। वहींसे आराम होगा। धीरज नही छोडना।

गलतिया तो हकीम, वैद्य, डॉक्टर सव कर लेते है। गलती हो ही नही सकती है अैसी पद्धति सिर्फ नैसर्गिक अुपचारकी ही है। अुसे चलानेकी श्रद्धा वहुत कम लोगोमें रहती है और अुसके अनुभव भी वहुत कम मनुष्योमे देखनेमें आते हैं।

१४–२–'३७ वापूके आशीर्वाद

मैं अस्पतालसे देरसे आता था, अिस कारण प्रभुदयाल विद्यार्थी मेरे लिअे रोटी वना देता था। अेक रोज वह सेगाव गया और वापूजीने अुसके कामका हिसाव पूछा। अुसने हिसावमें मेरी रोटी वनानेका काम भी वताया। वापूजीने अुससे कहा कि तुम्हे रोटी वनानेकी जरूरत नही है, वह खुद वना लेगा या किसी दूसरेसे वनवा लेगा। अुसने वापूका यह संदेश कुछ अिस प्रकारसे कहा जिससे मेरे दिलको लगा कि वापू यह समझते है कि मैं आलस्यके कारण अुससे रोटी वनवा लेता हू। मुझे वापूके अूपर वहुत गुस्सा आया। मैंने क्रोधसे भरा अेक पत्र लिखा कि "मुझे आपकी गरज नही है। मैं कही भी चला जाअूगा। अपनी रोटी मैं खुद वना सकता हू और अपना सब काम कर सकता हू।"

यह पत्र लिखते समय मैं क्रोधसे वेहोश-सा हो गया था। जो मेरे मनमे आया था सब वापूको लिख दिया था। पत्र हाथसे निकलते ही मेरा गुस्सा अुतरा तो मुझे वडा अफसोस हुआ। लेकिन तीर कमानसे निकल चुका था। वापूजीने लिखा.

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारे क्रोधकी कुछ सीमा ही नहीं है? अेक बेहोश, आलस लडकेके कहने पर अितना क्रोध, अितना अविनय? सब प्रतिज्ञाओंका भग? तुमको क्या पता प्रभुदयालके साथ क्या बात हुअी? मैं तुम्हारे खत पर हसू, रुदन करू, कि प्रतिक्रोध करू? रुदन करने योग्य तुम्हारा खत है। लेकिन रुदन नहीं करूगा। क्रोध करना पाप होगा और बुरा दृष्टात होगा। बस तुम्हारी अिस मूर्खता पर हसूगा। अगर थकान है तो अवश्य सेगाव छोडोगे। लेकिन प्रभुदयालको साथ लाकर मुझसे सुनो क्या हुआ? बादमें जो करना है तो करो। आज ही आनेकी आवश्यकता नहीं है। अच्छे हो जाने पर आना। प्रभुदयालके हाथकी रोटी हराम समझो। चचलसे* कहो।

१५–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

दूसरे दिन बापूका पत्र फिर आया

चि० बलवंतसिंह,

कल तो तुम्हारे खत पर हस दिया। लेकिन अुस खतको भूल नहीं सका। अिसलिअे अभी दुःख हो रहा है। अितने क्रोधकी मैंने कभी आशा ही नहीं रखी थी। मैंने झवेरभाअीके मारफत सदेशा भेज दिया है। अुसके मुताबिक किया होगा। चचलबहन तुम्हारी रोटी पकायेगी। वह नम्रतामें खाओ।

डॉक्टर कहे वही करो और जल्दी अच्छे हो जाओ। अच्छे होने पर दिल चाहे सो करना। अब तो कुछ अैसा ही मुझको लगता है कि तुम्हारी दुर्बलताका कारण क्रोध ही है। क्रोध और किसीको नहीं जलाता है। क्रोध करनेवाला ही जलता है। अेक नालायक बच्चेकी बातें सुनकर अेक क्षणमें तुमने अपना अनिष्ट कर दिया है और क्योंकि अुनकी बातें तुमने मान ली।

१६–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

* श्री झवेरभाअी पटेलकी पत्नी श्री चचलबहन। श्री झवेरभाअी गुजरात विद्यापीठके स्नातक है। मगनवाडीमें तेलघानी विभागके सचालक थे। आजकल भारत सरकारके तेलघानी और ग्रामोद्योगोंके सलाहकार है।

बापूजीके अिस दुःखसे मुझे बहुत दुःख हुआ और शरम भी आअी। लेकिन अब क्या कर सकता था? बापूजीका खत आया :

चि० बलवर्तसिंह,

तुम्हारे खत आते रहते है। बिचारा लाखा बछडा तुम्हारी अिंतजारीमें रोता है। तो भी डॉक्टर साहब छुट्टी न दें तब तक वहीं रहो। हम लोग किसी न किसी तरह निभा लेंगे। मीराबहनकी झोंपडी शुरू हो गयी है।

२०-२-'३७ बापूके आशीर्वाद

शामको ही बापूजीका दूसरा खत आया :

चि० बलवर्तसिंह,

आज फजरमें दो लाअिन भेज दी। मैं कुमारप्पाकी गाडी रोकूं तो ज्यादा लिख सकता हूं। लेकिन मैंने रोकना दुरुस्त नहीं माना। बायें हाथसे लिखनेकी गति बहुत मंद चलती है।

अधीराअीसे आराम होनेमें देर ही होनेवाली है। धीरजसे ही बन सकता है। सिविल सर्जनका कहना है कि तुम्हारे खूनकी अशुद्धि आजकलकी नहीं है, बहुत दिनोंकी है। अिसलिअे देर होती है। वहां क्या काम करते हो? समय कैसे व्यतीत होता है? खुराक क्या चलता है? चित्तकी प्रसन्नता भी आराममें मदद देनेवाली वस्तु है। गीताभ्यासीको तो 'येन-केनचित्' संतुष्ट होना चाहिये, यह १२वें अध्यायका वचन है।

२०-२-'३७, सेगांव बापूके आशीर्वाद

मैंने बापूको लिखा था कि खजूर और शहदसे शायद फोडे हुअे हों और यह भी पूछा था कि ग्रामसेवकके लिअे अंग्रेजी जानना क्या जरूरी है? बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

खत मिला। शहद या खजूरसे फोड़े होनेका कोअी कारण नहीं पाता हूं। तब भी डॉक्टरसे पूछा जाय। दूध या भाजीका अभाव या अुसकी कमी और अधिक गेहूं यह कारण तो ये ही। और सबसे ज्यादा तुम्हारा अुग्र स्वभाव।

अंग्रेजी जाननेकी ग्रामसेवकोंके लिअे कोअी आवश्यकता नहीं है। यों तो भाषाका ज्ञान अच्छा ही है। तुम्हारा प्रश्न अिस दृष्टिसे पूछा नहीं गया है।

२१-२-'३७, सेगाव बापूके आशीर्वाद

आश्रममें अब दूधकी कमी थी, क्योंकि बापूका परिवार बढने लगा था। अिसलिअे मैंने गाय भेजनेके बारेमें बापूसे पूछा तो अुन्होंने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

हां, गाय तो दूसरी अवश्य चाहिये, यदि अच्छी हो तो। डॉक्टर कहते हैं जल्दी अच्छे हो जाओगे।

२२-२-'३७, सेगाव बापूके आशीर्वाद

मुझे फिर ज्वर आ गया। मैंने बापूजीको लिखा कि मैं रोगी तो बना हूं लेकिन राम मिलेगा या नहीं यह कौन जानता है। 'किस्मतसे राम मिला जिसको' अिस भजनका मनन करता हूं। बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

मेरी कलकी चिट्ठी मिली होगी। बुखार आया, वो अब तो गया होगा। घबराहटकी कोअी आवश्यकता नहीं है। धीरजसे सब अच्छा ही हो जायगा। हां 'किस्मतसे जिसको राम मिले' भजन अवश्य मनन करने योग्य है। अगर मच्छर कष्ट देते हैं, तो मच्छेरीका अुपयोग करना चाहिये।

२३-२-'३७, सेगाव बापूके आशीर्वाद

परस्परावलंबनकी आवश्यकता

मैं वर्धा अस्पतालके अिलाजसे अच्छा होकर बापूजीके पास सेगाव आ गया और बापूजीके साथ सारी बातें हुअीं। अेक रोज शामको घूमते समय मैंने बापूजीसे कहा कि मेरे अुन रोजके पत्रमें क्रोध तो था ही आत्मश्लाघा भी थी, अैसा विचार करनेसे पता चला। मनुष्य दूसरेकी सहायताके बिना अेक क्षण भी नहीं टिक सकता। बापूजीने कहा :

"ठीक है। जो हम खाते हैं जैसे गेहूं किसी दूसरेने पैदा किया, दुकानदारने नहीं। फर्ज करो कि अगर वह हमको पैसेके बदलेमें गेहूं न दे तो हम क्या करेंगे? और किसीने गेहूं भी पैदा कर लिया तो अुनके लिअे

औजार किसने बनाये थे? हम अेक-दूसरेके आश्रित है। अगर वेदकी दृष्टिसे विचार करे तो हम अेक ही है। अितना ही नही जिसको हम जड़ पदार्थ कहते है, जैसे लकडी आदि, वह और हम सब अेक समान ही है। सब अेक ही जमीनसे पैदा हुअे हैं। जो सेवाभावसे परावलम्बी बनता है, मनसे सेवाके स्वाधीन रहता है, वह स्वावलम्बी है। मगर जो सेवा करते हुअे कुछ कष्ट पडने पर दूसरोकी तरफसे सहायता न मिलने पर नाराज होता है वह गिरता है। मान लो कि अेक आदमी प्यासा पडा है। अुसके पाससे सैकडो आदमी निकल जाते है और कोअी आदमी अुसे पानी नही पिलाता है। अगर अुसे अुन पानी न पिलानेवालो पर गस्सा आये तो अुसका अज्ञान है। वह समझ ले सब लोग अपने अपने काममें लगे है। अगर अीश्वरको मजूर होगा तो पानी मिल जायगा, नही तो पडा रहूगा। आखिर तो कोअी आदमी आता है और पानी पिलाता है। अुसका भी वह अहसान न मानेगा। अहसान तो वह अीश्वरका मानेगा, क्योकि हम सब अीश्वरके ही अश तो है।"

आश्रमवासियोंसे अपेक्षा

अेक रोज मैंने बापूजीसे पूछा कि आप सेगावके भविष्यके बारेमें क्या आशा रखते है? आप बार बार कहते है कि मेरे बाद सेगावमें क्या होगा, कौन जाने? तो यहा जो आदमी है अुनसे आप क्या चाहते है? बापूजीने कहा

"सेगावमें अेक अच्छी दुकान चले। सबको घानीका तेल मिले। और भी आवश्यक वस्तुओंके लिअे वर्धा न जाना पडे। गोपालन हो, यहाके सब बच्चोको दूध मिले। भले दो पैसा या अेक पैसा सेरकी कीमतसे लें। खेतीकी पैदावार बढाअी जाय। शायद बा न रहे, लीलावती जाय। तुम हो, मुन्नालाल है, नाणावटी है। अगर सब भाग जाओगे तो मीराबहन तो है ही। वह तो यही मरेगी। तुम सबमें अैक्य नही है, यह अच्छी बात नही है।"

मैंने कहा — अिसी कारणसे तो यह प्रश्न अुठता है।

बापूजीने कहा, "यह भी तो अेक काम है कि हम आपसमें मधुर सम्बन्ध बाधे। तुमको अितना अक्षरज्ञान तो नही है लेकिन बुद्धिज्ञान तो है। व्यवहारज्ञान भी है ही। अक्षरज्ञान भी बढा सकते हो।"

बादमें मीराबहनकी बात चली। बापूने कहा, "मीराबहन बहुत गरीबीसे रह सकती है। अुसकी कहींसे भी शिकायत नहीं आयी कि मीराबहनने हमको तंग किया। खैर, कुछ भी हो मीराबहन सेगाव नहीं छोडेगी।"

अितनेमें लीलावती बहन बीचमें बोल पडी और पूछने लगीं, "क्या बात हुअी?" बापूजीने हंसकर कहा—यह बात हुअी कि मेरे मरनेके दूसरे ही दिन पहले लीलावती भागेगी या बलवन्तसिंह। यह तो मैं जानता हूं कि पहले रोज तो कोअी नहीं भागोगे और झगडा भी नहीं करोगे। अेक अेक लकडी तो मेरी चिता पर अवश्य डालोगे। याद रखना मुझे तो सेगावमें ही जलाना है। कोअी कुछ भी कहे तो कहना हमको बापूने सेगावमें जलानेको कहा है।

ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

अिसके बाद ब्रह्मचर्यके अूपर चर्चा हुअी। मैंने कहा, "आप कहते हैं कि संतानके लिअे स्त्रीसंग धर्म है, बाकी व्यभिचार है, और निर्विकार मनुष्य भी संतान पैदा कर सकता है। वह ब्रह्मचारी ही है। लेकिन जिसने विकारके अूपर काबू पाया है वह क्या संतानकी अिच्छा करेगा?"

बापूजीने कहा, "हां, यह अलग सवाल है। लेकिन अैसे भी लोग हो सकते हैं जो निर्विकार होने पर भी पुत्रकी अिच्छा रखते हैं।"

मैंने कहा, "अधिकतर तो संतानकी आडमें कामकी ही तृप्ति करते हैं।"

बापूजी, "हां, यह तो ठीक है। आजकल धर्मज संतान कहां है? मनुकी भाषामें अेक ही संतान धर्मज है बाकी सब पापज हैं।"

मैंने पूछा, "कुछ लोग वासनाका क्षय करनेके लिअे विवाहकी आवश्यकता मानते हैं। क्या भोगसे वासनाका क्षय हो सकता है?"

बापूजी, "हरगिज नहीं।"

स्वावलम्बनका पाठ

अेक बार ठंडके मौसममें लोगोंकी संख्या अधिक हो गअी और ओढनेके कपडे कम थे। बापूजीने अेक तरकीब निकाली। बहनोंकी पुरानी साडियां लेकर अुनके बीच बीचमें कागज रखकर वे रजाअी बना देते और कहते रातभर टंड रुकती है। जो रजाअीकी मांग करता अुसे कागजकी

रजाअी दे देते। अिस प्रकार कम खर्चमें काम कैसे चलाया जा सकता है, अिसका बापूजीका प्रयत्न रहता था। बापूने खुद भी अिस युक्तिका खूब अिस्तेमाल किया।

अेक बार अेक शीशीका डाट बनानेके लिअे बापूजीने मुझसे कहा। मैं गया और जो बढअी आश्रममें काम कर रहा था अुसको डाट बनानेके लिअे शीशी दे दी। अुसने अेक खूबसूरत-सा डाट बना दिया। मैं शीशी बापूजीको देने गया। बापूजीने डाट देखा तो बहुत खुश हुअे। मैं समझ गया कि बापूजी अिसको मेरा बनाया हुआ समझते हैं, अिसलिअे अधिक खुश हो रहे हैं। मैंने बापूजीके सामने तुरत ही अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुअे कहा कि यह डाट मैंने नहीं बनाया है। बापूजी गंभीर हो गये और बोले, "अरे, मैं तो तुझे शाबाशी देना चाहता था, लेकिन तूने तो बड़ा गुनाह किया। मैंने कब कहा था कि बढअीसे बनवाना। मैंने तो तुझको बनानेके लिअे कहा था। भले आज खराब ही बनता लेकिन हाथमें अेक कला तो आती। औजार पकड़ना सीखता, दुबारा अुससे भी अच्छा बनाता, तिबारा अुससे भी अच्छा और अिस तरह डाट बनानेका कारीगर बन जाता। जो काम अपनेको सौंपा गया है अुसकी जवाबदारी दूसरे पर डालना यह तो अच्छी बात नहीं है।" मैं बहुत शरमाया और मैंने अपनी भूल कबूल की। पहले जो बात छोटी लगती थी वह अब बहुत बड़ी नजर आती है। बापूजीके अुस डाटके सबकको मैं कभी नहीं भूल सका। अब यह चीज मेरे स्वभावमें दाखिल हो गअी है कि जो काम हमें सौंपा जाता है वह हमें ही करना चाहिये। अैसी छोटी छोटी बातोंमें बापूजी हमें कितना अुपदेश देते थे अुसकी कल्पना आज जितनी आती है अुतनी अुनके सामने आती तो हम अुनसे बहुत कुछ सीख सकते थे।

१३

गोशाला और अुसका परिवार

बापूका गोप्रेम

बापूजी जहां बैठते थे वहांसे गायें बिलकुल अुनके सामने दीखती थीं। यह बापूजीको बहुत प्रिय था। मेरा रिवाज यह था कि जब कोअी नअी गाय या बकरी ब्याती तो अुसका बच्चा सुबह जब बापूजी घूमने निकलते थे तब अुनको दिखाता था। बापूजीके साथ मैंने यह शर्त की थी कि घूमने जाय तो वे गोशालामें हो कर ही जाय। अिस वजहसे मैं गोशालाकी सफाअीके बारेमें हमेशा सावधान रहता था। बापूजी बच्चा देखकर खूब खुश होते, हसते, बच्चेको प्यार करते और कहते, "अरे, तेरा परिवार तो बढता ही जाता है।"

अेक बार पूज्य राजाजीसे मेरा परिचय कराते हुअे बापूजीने हसकर कहा, "देखो राजाजी, मेरे पास भी अेक राजा है। अिसका परिवार रोज बढता रहता है और नित्य नअी माग मेरे सामने पेश करता रहता है। देखो तो सही अिसका गोपरिवार कितना बडा है।" राजाजी मेरी तरफ देखकर हस दिये।

अेक रोज आदि-निवासके बरामदेमें बापूजी कुछ लिख रहे थे। रातको अेक गाय ब्यायी थी। अुसका बच्चा बापूजीको दिखानेके लिअे मैं वहीं ले गया। बच्चा मेरे हाथसे छटक कर बापूकी गादी पर चढ गया। बापूजी अुसे प्यार करते हुअे हस रहे थे कि बच्चेने पेशाब करना शुरू कर दिया। जब मैंने अुठानेकी कोशिश की तो बापूजीने कहा, "नहीं, पेशाब कर लेने दो।" मुझे तो सकोच हुआ। लेकिन बापूजीके चेहरे पर मैंने अैसा भाव नहीं देखा कि मुझसे गलती हो गयी है।

मिट्टीका चमत्कार

गोशालामें अेक बछडेके जुअें पड गअी थी। मैंने अेक रोज बारह बजेके करीब तम्बाकूका चूरा, राख और मिट्टीका तेल मिलाकर अुसके शरीरको पोत दिया और मैं आराम करने लगा। मुझे थोडी देर नींद आ गयी।

जब मै अेक बजे अुठा तो मैंने देखा कि बछडी बिलकुल बेहोश पडी है, मरनेके बिलकुल नजदीक है। मै दौडता हुआ बापूके पास पहुचा और कांपते हुअे बोला कि 'मुझसे आज गोहत्याका अपराध हो गया।' बापूजीने चौंककर पूछा, क्या हुआ? मैंने सारा किस्सा सुनाया। बापूजी अुठकर मेरे साथ आये और बछडीको देखकर बोले, "हा, गलती तो हो गअी है, लेकिन क्या किया जाय? अेक अुपाय है वह करके देखो। अगर अिसका जीवन होगा तो बच जायगी। अिसके सारे शरीर पर मिट्टी लगा दो और देखो अिसका क्या परिणाम होता है।" बापूजी यह कहकर चले गये और मैंने अेक बाल्टीमें घोलकर अुसके शरीर पर मिट्टी लगायी।

बापूजीने तो सिर्फ लगानेको ही कहा था, पर मैंने १५ मिनटके बाद अुसको साफ कर दिया और दूसरी बार लगा दी। पहली मिट्टीके साथ अुसका तम्बाकूका और तेलका काफी अश निकल गया। मैंने देखा कि बछडीकी आख जहा बद हो गअी थी वहा अुसने पलक अुठाये। मुझे आशा हो गअी और मैंने तिबारा मिट्टी लगाअी। तिबारा मिट्टी लगाने पर अुसने कान हिलाये। अिस प्रकार मैंने दो तीन बार और मिट्टी लगायी और निकाली। पाच बजे तक बछडी खडी हो गअी, यद्यपि अभी तक बेहोशीसे ही अिधर-अुधर पैर डालती थी। जैसे तैसे मैंने अुसको थोडा दूध पिलाया। दूसरे दिन तक वह बिलकुल स्वस्थ हो गअी। अुसके खडे होनेकी खबर मैंने बापूजीको दी तो वे बहुत खुश हुअे। अुन्होने कहा, "यह मिट्टीकी करामात है।"

अुस रोजसे मिट्टीके अूपर मेरा यह विश्वास हो गया कि अुसमें जहर खीचनेकी अजीब ताकत है। अुस बछडीको डॉक्टर या वैद्यकी कोअी दवा बचा नही सकती थी, अैसा मुझे आज भी लगता है। बादमें वह बछडी बडी हुअी और अुसने कअी बच्चे दिये। अुसको जब मै देखता तो मुझे मिट्टीकी बात हमेशा याद आ जाती।

शुभ भावनाओंका सिंचन

अेक रोज बापूजीकी बकरी जगलमें ब्याअी। बकरीने बच्चेकी नाभी अितनी चाटी और अुसका नार मुहसे पकडकर अितना खीचा कि बच्चेका पेट फट गया और अुसकी आतें निकल आयी। बकरी चरानेवाला अुसे लेकर मेरे पास आया। वह दृश्य देखकर मेरे तो होश अुड गये। बापूजी देखेंगे तो कहेंगे कि तुम सावधानी नही रखते हो।

आखिर में अुसे लेकर बापूजीके पास गया। अुसकी करुणाजनक दशा देखकर बापूजीको बहुत ही दया आअी और बोले, क्या किया जाय? बकरीने तो प्यारसे ही चाटा था, लेकिन अैसा परिणाम आ गया तो बकरी बिचारी क्या करे? वह तो पशु है। लेकिन मनुष्य मोहवश अपने बच्चोंको कितना नुकसान पहुचाते हैं? अिसका भी तो हमारे पास क्या अिलाज है? मिर्ची-मसाले, चाय, मिठाअी, अरे बीडी-तम्बाकू भी अुनको पीना सिखाते है या पीने देते हैं। यह अुनकी पेटकी आन निकालना नही तो और क्या है? यह तो मैं दूसरी बात कह गया। अब तो अिसे सुशीलाके सुपुर्द करो। देखो वह क्या कर सकती है। अुसकी डॉक्टरीकी भी परीक्षा हो जायगी। देखें वह सिर्फ मनुष्यका ही अिलाज कर सकती है या हमारे पशु-धनका भी।

मैं तुरत दवाखानेमें, जो पास ही आखिरी-निवासमें था, अुसे सुशीला-बहनके पास ले गया। सुशीलाबहनने अुसकी आतें अदर करके पेटके टाके लगा दिये। मैंने बापूजीको दिखाया तो बोले, "ठीक है अगर अिसकी जिंदगी होगी तो बच जायगा। तुमसे जो बन सका किया और अिसकी सेवा भी करोगे। आगे हमको अनासक्तिकी साधना करनी है। अगर अब यह मर भी जाय तो दुःख क्या करना?"

मुझे लगता था बापूजी मुझे डाटेंगे कि जब तुमको पता था कि बकरी ब्यानेवाली है तो तुमने सावधानी क्यों नही रखी? लेकिन बापूजीने मेरी भूलकी तरफ अिशारा भी नहीं किया, अुल्टे मुझे आश्वासन दिया कि मैं अिसका दुःख न मानू। साथ ही बहुतसा अुपदेश भी दे गये। सचमुच बापूजी जैसे पिता बड़े पुण्यके प्रतापसे ही मिल सकते है। मैं मन ही मन बापूजीके मधुर स्नेह और अुपदेशका मनन करता हुआ गोशालामें आया। और जितनी सभाल सभव थी अुतनी मैंने अुस बच्चेकी रखी। लेकिन आखिर वह दो-तीन रोजमें मर गया।

अेक रोज अेक गाय ब्याअी तो अुसके बच्चेने गोबर नहीं किया और अुसका पेट फूल गया। मैंने बापूजीको खबर दी तो बोले, जाओ सुशीलाको पकडो। मैं सुशीलाबहनके पास गया और अुन्हें गोशालामें ले गया। अुन्होंने दवा दी और पानीमें घोलकर पिलानेको कहा। मैंने पिला दी। दवा पिलानेसे या पेटकी ही गर्मीसे अुसके मुहमें छाले हो गये। सुशीलाबहनने अुसे डिपथेरिया रोगका नाम दिया और छूतका रोग बताया। गोशालासे अलग रखनेकी सलाह दी। मैंने अुसे गोशालाके पीछे खेतमें अेक घासके

पेडके नीचे रख दिया और खुद भी अुसके पास सोने लगा। अुसका पेट बार बार फूलता था, जिसलिअे मुझे अेनीमा देना पडा। खुराकमें थोडा माका दूध तो देता ही था, लेकिन मोसम्बीका रस भी देता था। किसीने बापूजीके पास शिकायत की कि बलवतसिह तो गायके बच्चोको भी मोसम्बीका रस पिलाता है। बापूजीने कहा, "अरे, अुसके लिअे तो गायका बच्चा मनुष्यके बच्चेसे भी प्यारा है। तो मै अुसे मोसम्बीका रस पिलानेसे कैसे रोकू?" जब यह बात मेरे कान पर आअी तो मै बापूजीके प्रेमसे अितना दब गया कि अपने आपको खोया-सा अनुभव करने लगा। मेरी गोसेवाकी भावनाको अितने मधुर और जीवनदायी जलका सिचन मिला है, यह मेरे पूर्वजोंके पुण्यका ही प्रताप हो सकता है। बापूजी जिस प्रकार आश्रमवासी रोगियोकी सुबह घूमनेके बाद सभाल करते थे, अुसी प्रकार मेरे गायके बीमार बच्चेको भी देखते थे। अुनके बारेमें सब हाल पूछते थे। अुस बच्चेकी बीमारीके कारण ही मै गावी-सेवा-सघकी सभामें जानेके लिअे बापूजीसे अिजाजत न माग सका था।

जिस प्रकार माली छोटेसे पौधेको खब सावधानीसे सीचता है, अुससे भी अधिक सावधानीसे बापूजी हमारी शुभ और सेवा भावनाओको सीचते थे, और अशुभ भावनाओको डॉक्टरके आपरेशनकी तरह प्रेमसे ही काट फेकनेमें सतत लगे रहते थे। नही तो मै आज यहा बैठा अुनके प्रेमकी पवि स्मृतिका लेखक बनकर रसपान करनेके बजाय कही विषपान करता होता। अैसे महान बापूका ऋण मै कैसे चुकाअू, यह जटिल प्रश्न मेरे सामने है।

गोशाला और खेतीके लिअे नियम

अुस समय मैने गोशालाके लिअे अैसा नियम बनवाया था कि जितने भी आश्रमवासी है वे सब आधा घटा रोज गोशालाको दें और अुसकी सफाअी करे। सब लोग रोज आधा घटा गायो और अुनके बच्चोको साफ करते थे। अुस समय विजयाबहन पटेल खास तौरसे गोशालामें मेरी मदद करती थी। खेतीके कामके लिअे भी मुझे कभी अरूरत पडती तो बापूजीके पास जाता और बापूजी सबको खेतीके कामके लिअे भेज देते।

अेक बार हमारा गेहू पका खडा था। बादल हो रहे थे। बारिशका डर था। मजदूर नही मिल रहे थे। मैने बापूजीसे कहा तो अुन्होने सबको गेहू काटनेके लिअे भेज दिया। राजकुमारी बहन, महादेवभाअी, विजयलक्ष्मी पडित तथा दुर्गाबहन भी थी। खास तौरसे दुर्गाबहनका चित्र

मैं नहीं भूल सका हूं। अुनका शरीर भारी था। लेकिन सबके साथ बड़े अुत्साह और प्रेमसे गेहूं काटनेमें अुन्होंने पूरी पूरी मदद की। राजकुमारी बहन, जहां तक मेरा खयाल है १९३५ में जब बापूजी दिल्लीकी हरिजन बस्तीमें अेक महीना ठहरे थे, तब मिली थीं। बीच बीचमें मगनवाड़ीमें भी आती थीं। सेवाग्राममें अुनका बापूके पास रहनेका समय अधिकाधिक बढ़ता गया और फिर करीब करीब वे बापूके पास ही ठहर गयीं।

वर्षाका कष्ट

गोशालामें मकानोंकी कुछ कमी थी। मैंने कुछ नये मकान बनानेकी मांग की तो बापूजीने गरीबीमें काम चलानेका अुपदेश दिया। यह मुझे रुचा नहीं। लेकिन यह सोचकर मैं चुप रहा कि कष्ट होने पर देखा जायगा। बरसातके दिन थे। पानीकी झड़ी लगी थी। साथमें हवा भी थी। गोशालामें बौछार आ रही थी और अूपरसे भी पानी टपक रहा था। मैंने बापूजीको लिखा :

परम पूज्य बापूजी,

आपने मेरे मकानका बजट स्वीकार न करके मुझे गरीबीमें काम चलानेका अुपदेश दिया। आपकी आज्ञाका अुल्लंघन तो कैसे किया जाय? लेकिन आपके गरीबीमें रहनेके सिद्धान्तको गाय बिचारी क्या समझे? वह तो चुपचाप कष्ट ही सह सकती है। आप आरामसे सूखी कुटियामें बैठे हैं। आपके पास अनेक सेवक-सेविकाअें सेवाके लिअे प्रस्तुत हैं। कहीं अेक भी बूंद टपके कि तुरन्त अुसे रोकनेके लिअे दौड़ पड़ेंगे। लेकिन यहां मेरी और गायोंकी पुकार कौन सुने? चारों ओरसे पानीकी बौछारसे गोशालामें पानी ही पानी हो गया है। गायें ठंडसे ठिठुर रही हैं। और बछड़ोंमें कैसी क्या दशा हो रही होगी, जिसकी कल्पना आप कर सकते हैं। अधिक क्या लिखूं?

अभी हाल बुलाकर आपका पत्र पढाया और कहा कि 'अभी जाकर देखो अुनकी गायोंका क्या हाल है तथा जो करना हो वह जल्दीसे जल्दी करवा दो। अुनका कहना ठीक है। मैं तो महात्मा ठहरा, अिसलिअे मेरे सुख-दुःखकी चिन्ता तो तुम सब लोग रखते हो, लेकिन गायके सुख-दुःखकी चिन्ता अुनके बिना कौन करे?' तो अब आप बताओ कि आप क्या चाहते हैं। यह बात सुनकर तथा बापूजीकी तत्परता देखकर मेरे आनंदका पार न रहा। मैंने अपनी कठिनाअी रामदासभाअीके सामने रख दी। अुसके अनुसार अुन्होंने नये मकान बनानेकी योजना बनाकर बापूके सामने पेश कर दी और तत्काल टट्टे बनाकर जो सुविधा की जा सकती थी वह करवा दी। थोडे दिनोंमें ही मेरी कल्पनाके अनुसार मकान बनकर तैयार हो गये। यह था बापूजीकी गरीबी और अुदारताका अद्‌भुत नमूना।

गोपरिवारकी वृद्धि

अिस समय हमने गांवकी गायोंका दूध भी खरीदना शुरू कर दिया था। पहले तो सीधा भोजनालयमें ही लेते थे, लेकिन बादमें पारनेरकरजीने आश्रमके दरवाजेमें प्रवेश करते ही बायें हाथको जो अूंचा-सा मकान है अुसे दूधघर बनाया। आगे चलकर अुसमें भी काम नहीं चला तो तालीमी संघकी ओर बनाया। गांवमें अब काफी दूध होने लगा था। तालीमी संघका भी विस्तार बढा और चरखा संघ भी आ गया। अिस कारण दूधकी खपत भी काफी होने लगी थी। आश्रमवासियोंकी संख्या ज्यों ज्यों बढती जाती थी, त्यों त्यों गायोंकी संख्या भी बढानी पडती थी।

बापूजी चाहते थे कि व्यक्तिगत गाय कोअी न रखे। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जी और मगनवाडीसे झवेरभाअीकी गाय भी आश्रम गोशालामें आ गअी।

गायकी समझदारी और स्नेह

गायकी समझदारी और स्नेहके विषयमें मैं पहले भी विश्वास रखता था, लेकिन अुसका मूर्तिमान विकास तभी हुआ जब सेवाग्रामकी गोशालाका संचालन करते समय मेरा सारा ध्यान गायों पर ही केन्द्रित हो गया। मैं तूफानीसे तूफानी गाय खरीदकर ले आता और थोडे ही दिनोंके स्नेहसे वह मेरे साथ हिल जाती और मेरी भाषा (संकेत) समझने लगती। अुसके कुछ मोटे अनुभव यहां देता हूं।

अेक बार आश्रममें दूधकी कमीको पूरा करनेके हेतुसे आठ-दस गायें खरीदनेके लिअे मैं और पारनेरकरजी यवतमाल जिलेके पाटणबोरी तहसीलमें गये। वहां मैंने अेक गाय पसन्द की। गायवालेने साठ रुपये मांगे। हमने पचपन रुपये कहे, लेकिन सौदा न बना। हम आगे बढ़ गये। बीस पच्चीस मील जाकर हमने अेक वैसी ही गाय पचास रुपयेमें खरीद ली। मेरा मन पहली गायमें भी फंस गया था। दोनोंकी सुन्दर जोड़ी बन सकती थी। अिसलिअे साठ रुपये देनेके लिअे पारनेरकरजीकी सहमति लेकर मैं अकेला ही प्रथम स्थान पर गया। गाय खरीद ली लेकिन लेकर चलते समय वह छूट कर भाग गअी और फिर दिनभर नहीं मिली। जब शामको भी न लौटी तो गायवालेको सन्देह हो गया कि कहीं शेरने न मार दी हो। अिस लिअे अुसने रुपये वापस करनेसे अिनकार कर दिया। दिनमें वह रुपये वापस देनेको राजी था। दूसरे दिन गाय मिल गअी और अुसे अेक बैलके साथ गलेमें बांधकर अुसने तीन मील दूरके अेक गांव तक पहुंचा दिया। गाय पहलौन जोरदार थी और मजबूत थी। पारनेरकरजी अुस गांवसे आगे चले गये थे लेकिन वह भाअी अपना बैल लेकर वहींसे लौट गया। मैंने गाय पर हाथ फेरा और रामनाम लेकर अुसे वहांसे खोलकर अेक स्कूलमें ले जाकर बांध दिया। दूसरे दिन अुस गांवसे अेक और आदमी और बैलके लिअे खोज की लेकिन सफलता नहीं मिली। सिर्फ अेक आदमी जमींदारकी जबरदस्तीका शिकार होकर मिला। अुसे साथ लेकर मैं चल तो दिया लेकिन शीघ्र ही अुसकी हालत जानकर कि अुसकी स्त्री सख्त बीमार है और अुसे वहां जाना जरूरी है मैंने अुसे छोड़ दिया। मैंने फिर रामनाम लेकर गायसे बात की और अुसे लेकर अकेला ही चला। गाय चुपचाप मेरे पीछे चली आअी और दोपहर तक हम गन्तव्य स्थान पर पहुंच गये। रास्तेसे तीन और गायें खरीदीं जिससे कुल पांच गायें हो गअीं। हम अुसी दिन सेगांव पहुंचना चाहते थे। रास्तेमें शामको अेक गांवमें लोगोंकी टोली गायोंको देखनेके लिअे जमा हुअी। अिससे तीन गायें चमक कर भाग गअीं। अुनका पीछा करनेमें मुझे कटीले तारोंमें अुलझ जानेसे गहरी चोट आ गअी। लेकिन सौभाग्यसे सवेरे गांवके पास ही वे तीनों गायें मिल गअीं और सेवाग्राम पहुंच गअीं। मैं अेक मास तक बिस्तरमें रहा।

साठ रुपयेवाली गायका नाम चन्द्रभागा रखा और दूसरीका साबरमती। ये दोनों नाम साबरमती आश्रमकी स्मृतिमें रखे गये थे। चन्द्रभागा नदी आश्रमके

पास ही साबरमतीमे मिलती है। चन्द्रभागा सफेद कपडोंसे भडकती थी और हमला कर बैठती थी। अेक दिन अेक दर्शक महोदय मेरे साथ खडे बातें कर रहे थे। अुधरसे गायें चरकर लौटी। चन्द्रभागा अुन दर्शक पर दौड पडी और आगेके दोनो पैर अुठाकर वह अुन पर छलाग मारनेवाली ही थी कि मेरी आवाज 'अरे, चन्द्रभागा यह क्या करती है?' अुसने सुनी और लौट पडी। वे भाअी अचम्भेमें रह गये कि अभी अभी तो यह शैतानकी तरह चली आ रही थी और तुरन्त ही आदमीकी तरह रुक गअी। अुनके लिअे यह बडी अद्भुत घटना थी। मुझे भी यह पक्का विश्वास तो नही था कि चन्द्रभागा मेरा कहना मान ही लेगी। परन्तु मैं खाली हाथ खडा था। जो शब्द मेरे मुहसे निकल गये अुनके सिवा और करता भी क्या? चन्द्रभागाने अुस दिन मेरी बात मानकर मेरी गोभक्तिकी बेलमें पानी सीचनेका काम किया।

अेक दिन बछडे चरानेवाले लडकेने आकर कहा कि आज बलराम (बछडेका नाम) कही खो गया है, मिलता नही है। मैं खोजने चला। काफी दूरी पर गावके पशु चर रहे थे। मैंने दूरसे पुकारा, 'अरे बलराम, तू है क्या यहा?' अुत्तरमे अुसने हुकार की, 'हू तो यही।' मैंने फिर कहा, 'तू यहा क्यो भटकता है?' अिस शब्द पर वह दौडा और अुसके बीचमें अेक काटेदार बाड थी अुसे अेक छलागमें पार करके मेरे पास आ गया और मेरे पीछे पीछे चला आया।

अेक दिन अेक बछडी बीमार हो गअी थी। अुसे ज्वर हो गया था। अुसने अपनी माके पास न जाकर मेरे पास बैठना पसन्द किया। अिसलिअे मैंने तख्ते पर बिस्तर लगाया, ताकि वह जमीन पर बिछी हुअी चटाअी पर बैठ सके। लेकिन जब वह तख्ते पर मुह रखे खडी ही रही तब लाचार होकर मुझे चटाअी पर सोना पडा। वह मेरे पास शातिसे बैठ गअी।

अेक बैलके पैरमें चोट लगी थी। वह बैठा था। जब मैं दवा लेकर अुसके पास गया तो वह अुठकर खडा हो गया। मैंने कहा, भले आदमी (बैल), मैं तो तेरे लिअे दवा लाया तेरे पैरमें लगाने और तू खडा हो गया। और अुससे बैठ जानेके लिअे कहा। वह तुरन्त ही बैठ गया। जब मैंने अुसका पैर पकडा तो अुसने अपनी आखे बन्द कर ली और दवा लगाकर पट्टी बाधने तक चुपचाप बैठा रहा। मेरे हटते ही वह फिर खडा हो गया।

सन् १९४४ में मैं बंगालमें पूज्य सतीशबाबू (बाबा) के पास अनुके लिअे गायें खरीदकर अनुकी गोशाला चालू करनेके लिअे गया था। अेक देहातमें, जहां अनका काम चल रहा था, अेक भाओी अपने बीमार बैलको लेकर आया और मुझसे बोला, बाबा कहते हैं कि आप पशुओंकी भाषा पहचानते हैं। यह सुनकर पहले तो मुझे बाबा पर गुस्सा आया कि वे अैसी गलत बातें गांवके भोलेभाले लोगोंसे क्यों कहते होंगे। लेकिन जरा सोचने पर मैंने अनका रहस्य समझ लिया कि अनका आशय जानवरका दर्द समझ लेनेसे होगा। तब मैंने अुत्तर दिया कि बाबा सच कहते हैं और अुसे अुपचार बता दिया। वह बैल अच्छा हो गया। तबसे वहांके लोग मुझे गोरुबाबूके नामसे पुकारने लगे (गोरु अर्थात् पशु)। मुझे भी यह नाम प्रिय लगा। यह बात सच है कि मेरा दिल गायके साथ अितना अेकरूप हो गया है कि गाय जब हरी हरी घास चरती है तब मुझे अैसा अनुभव होता है कि वह घास मेरे ही पेटमें जा रही है।

१४

आश्रमका विस्तार

आश्रम-परिवारमें वृद्धि

अेक रोज परचुरे शास्त्री दूधघरके पास छिपे बैठे थे। मीराबहनने अंदर आनेको कहा। वे अन्दर खडे हो गये और बापूजीसे कहने लगे कि मुझे तो आपके सान्निध्यमें रहना है और यहीं मरना है। अुनको कुष्ठ हो गया था। कहने लगे, "मुझे कुछ नहीं चाहिये। अेक झाडके नीचे पड़ा रहूंगा। दो रोटी मिल जाये तो बस है।" बापूजी गंभीर विचारमें पड गये। अुनको हां भी कैसे कहें? जितना समाज आता है, जाता है और रहता है। किस तरह अुनको संभालेंगे? और अुनको ना भी कैसे कहें? लेकिन दूसरे दिन बापूजीने कहा कि अगर मैं आज शास्त्रीको ना कह देता हूं तो अपने धर्मसे च्युत होता हूं। मेरी कसौटी करनेको ही अीश्वरने अिन्हें भेजा है। बस, बापूजीने अुन्हें आश्रममें रखनेका निश्चय कर लिया और आश्रमके पासमें ही अुनके लिअे अेक झोंपडी बनवा दी। अितना ही नहीं, बापूजी हमेशा अुन्हें कुछ न कुछ समय देते ही थे। जब अुनका रोग भयानक स्थितिमें पहुंचा तो बापूजीने स्वयं ही अुनकी मालिश करना भी शुरू कर दिया।

अब महादेवभाअीका काम बहुत बढ गया था और अुन्हें वर्धासे आने-जानेमे बहुत अडचन होने लगी थी। अिसलिअे महादेवभाअीके लिअे अलग मकान बनाना पडा। फिर किशोरलालभाअीके लिअे भी अेक मकान बनवाया गया। आश्रमके कुअेंके पानीमें कुछ खराबी थी, अिसलिअे सीमेंट कांकरीटका अेक नया कुआ बनाया गया, जो अभी तालीमी संघके अधिकारमें है। दूध-घरके लिअे भी अलग मकान बनाना पडा, जो अभी श्री आशादेवीके मकानके पीछे है और जिसमें लडकियोंका छात्रालय है।

नअी तालीम

आरंभमें बापूजी नअी तालीमका काम भी आश्रमके मार्फत ही करना चाहते थे। अुसके लिअे जरूरी मकान बनाये गये, जो आज तालीमी संघमें विलीन हो गये हैं। शिक्षकका काम श्री मुन्नालालभाअीको सौंपा गया था। अिसलिअे अुनका नाम गुरुजी पडा था, जो सेवाग्राममें आज भी प्रचलित है। श्री अमृतलाल नाणावटीने भी कुछ दिन यह काम किया। फिर 'तो बडे गुरुजी आर्यनायकम्‌जीको यह सारा काम सौंप दिया गया। अुनका मकान तो बन ही गया था। आश्रमने बुनाअी, धुनाअी और पढाअीके लिअे जो मकान बनाये थे वे भी अुनको सौंप दिये गये। आश्रमको जो जमीन जमनालालजीने सौंप दी थी, अुसका दानपत्र आश्रमके नाम अभी तक नही हुआ था। अुस जमीनमें से ८ अेकड जमीनका दानपत्र तालीमी संघके नाम जमनालालजीने लिख दिया। तो भी तालीमी संघका विस्तार बढता जा रहा था और वह आश्रमकी तरफ सरकता ही जा रहा था। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीकी 'जमीन चाहिये, मकान चाहिये' की मांग बढती ही जा रही थी। अिससे तंग आकर अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा, आखिर अिसकी कही हद भी है? ये तो रोज रोज मांगते ही रहते हैं।

बापूजीने कहा कि हमको तो अपरिग्रह व्रतका पालन करना है। जो दूसरोंको चाहिये वह हमको नही चाहिये। अुनको तो नअी तालीमका काम मैंने सौंपा है। अिसलिअे अुनको आश्रममे जो चाहिये वह देनेको मैंने कह दिया है। और हमारा दुनियामें है भी क्या? जिस जगह हम बैठे हैं वह भी हमारी नही है। हमको तो जलानेके लिअे साढे तीन हाथ जमीन मिलनेवाली है। और वह जमीन भी कहा रहनेवाली है? हमारे शरीरकी राख हो जायगी। और वह राख भी मुट्ठीभर हो जायगी। यह कहते हुअे बापूजीने मुट्ठी

बाधी, मुहके सामने हाथ खोलकर जोरसे फूक मारी और फर्रर किया। और जोडा, वह राख भी कहा रहनेवाली है? यों अुड जायगी। और हसने लगे।

मैं गया तो था शिकायत करने, क्योंकि जमीन और मकान छोडना सबसे अधिक मुझे ही कष्टदायी था। मुझे अुनकी माग गैरवाजिब लगती थी। लेकिन मेरा पासा अुलटा ही पडा। बापूजीने तो ज्ञान और वैराग्यकी कथा छेड दी। फिर बोले, "देखो, यह नअी तालीमका काम मेरे जीवनका आखिरी काम है। अगर अिसे भगवानने पूरा करने दिया तो हिन्दुस्तानका नकशा ही बदल जायगा। आजकी तालीम तो निकम्मी है। जो लडके स्कूल-कॉलिजोंमें शिक्षा पाते हैं अुनको अक्षरज्ञान भले हो जाता हो लेकिन जीवनके लिअे अक्षरज्ञानके सिवाय और भी तो कुछ है। अगर यह अक्षरज्ञान हमारे दूसरे अंगोको निकम्मा बना दे तो मैं कहूगा मुझे तुम्हारा यह ज्ञान नहीं चाहिये। हमको तो लुहार चाहिये, सुतार चाहिये, तेली चाहिये, राज चाहिये, पिंजारा चाहिये, कातनेवाला और मजदूर चाहिये। सारांश यह कि सब प्रकारके शरीर-श्रम करनेवाले चाहिये और अुसके साथ साथ अक्षर-ज्ञान भी सबको चाहिये। जो ज्ञान मुट्ठीभर लोगोंके पास ही हो वह मेरे कामका नहीं है। अब सवाल यह है कि सबको यह सब ज्ञान कैसे मिले? अिन विचारोंमें से नअी तालीमका जन्म हुआ है। मैं जो कहता हू कि नअी तालीम सात सालके बच्चेसे नहीं, माके गर्भसे आरंभ होनी चाहिये — अिसका रहस्य तुम समझ लो। अगर मा परिश्रमी होगी, विचारवान होगी, व्यवस्थित होगी, संयमी होगी तो बच्चे पर अिसका संस्कार माके गर्भसे ही पडेगा।

"तुमने तो अभिमन्युकी कथा पढी है न? तो जो अुसका रहस्य है वही नअी तालीमका है। यह अलग बात है कि अभिमन्युका जमाना हिंसाका था। लेकिन हमको तो कविकी मूल कल्पनाको ही लेना है, बाकीको फेंक देना है। तो मैं यह कह रहा था कि जब मैंने यह काम आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीको सौंपा है तो मैं यह सुनना नहीं चाहता कि बापूने हमको यह सुविधा नहीं दी, अिसलिअे हम जो करना चाहते थे वह नहीं कर सके। हा, अुनको अपना स्वभाव भी बदलना होगा और मैं देख रहा हू कि वह बदल भी रहा है। आशादेवी तो गजबकी बाअी है। बच्चों पर कितना प्यार करती है और सदा नअी तालीमका ही चिन्तन करती है। मेरी स्वराज्यकी कल्पना भी तो नअी तालीममें छिपी है। सिर्फ अंग्रेज यहासे चले जाय और हम जैसे हैं वैसे ही

रहे तो वह स्वराज्य मेरे क्या कामका? मेरी नअी तालीमकी व्याख्या यह है कि जिसको नअी तालीम मिली है अुसे अगर गादी पर बिठाओगे तो वह फूलेगा नही और झाडू दोगे तो शरमायेगा नही। अुसके लिअे दोनों काम अेक ही कीमतके होंगे। अुसके जीवनमें फिजूलके मौजशौकको तो स्थान हो ही नही सकता है। अुसकी अेक भी क्रिया अनुपयोगी और अनुत्पादक न होगी। नअी तालीमका विद्यार्थी बुद्धू तो रह ही नही सकता है। क्योंकि अुसके प्रत्येक अगको काम मिलेगा, अुसकी बुद्धि और हाथ साथ साथ चलेंगे। जब लोग हाथसे काम करेंगे तो बेकारी और भुखमरीका तो सवाल ही नही रहेगा। मेरी नअी तालीम और ग्रामोद्योग अेक ही सिक्केकी दो बाजुअें हैं। अगर ये दोनों सफल होंगे तो ही सच्चा स्वराज्य आयेगा।

"खैर, तुमको तो मैं यह समझाना चाहता हू कि आर्यनायकम्‌जी जो मागें वह हमें देना है और यह समझकर देना है कि आखिर वह काम भी तो हमारा ही है। अगर अुनके लडके खेती और गोशालामें काम मागें तो तुमको देना ही पडेगा। क्योंकि जब मै तालीमको अनिवार्य बनानेकी बात करता हू तो वह तालीम स्वावलबी होनी चाहिये। सरकार तो जितने स्कूल खोलना भी चाहे तो आज अुसके लिअे शक्य नही है। आजकी बात तो छोड़ ही दो, क्योंकि अग्रेजोको हमारे शिक्षण और स्वावलबनकी कहा पडी है। लेकिन स्वराज्य-सरकार भी छूमतर नही कर सकेगी। हा, नअी तालीमसे छूमतर जरूर हो सकता है। आजके शिक्षाशास्त्री कहते हैं कि शिक्षाका खर्च विद्यार्थियोंसे निकलवाना योग्य नही है, निकलेगा भी नहीं। मैं कहता हू कि तब सबको शिक्षित करनेकी बात भूल जाओ। जब गाव गावमें स्कूल चलाना है तो अुनको अपना खर्च निकालना ही होगा। आज यह खर्च भले कुछ कम भी निकले, लेकिन अतमें हमें शिक्षाको स्वावलबी बनाना ही होगा। यह अलग बात है कि सब अेक ही प्रकारका काम नही सीखेंगे। हमारे गावोंमें तो अनेक अुद्योग पडे हैं। आज अुनमें सुधार भी तो किसीको नहीं सूझते हैं। नअी तालीमका विद्यार्थी सोचेगा — अगर अेक घटेमें १ सेर कपास रेची (ओटी) जाती है तो हम दो सेर कैसे रेचें? अरे, वह तुम्हारी गायका दूध कैसे बढे यह भी तो सोचेगा। खेतीकी पैदावार बढायेगा तब तुम अुसे गोशाला और खेतीमें काम क्यों न दोगे? अिसीलिअे मैं कहता हूं कि हमारे सब काम अेक-दूसरेसे अलग किये ही नही जा सकते हैं। अेक लोटा पानीका भी मोहताज रहे अैसा विद्यार्थी मेरे किस कामका?"

बापूजीकी बातमें रस तो आ रहा था, लेकिन मेरे पास अितना लंबा भाषण सुननेका समय नहीं था। खेतोंमें आदमियोंको काम बताना था। मैंने जैसे तैसे पीछा छुड़ाया और अपने काम पर चला गया। आज सोचता हूं तो लगता है कि सचमुच ही बापूजीकी मुट्ठीभर राख ऐसी अुड़ी कि सारे देशके तीर्थस्थानों पर छा गअी। जब मैं हिमालयमें श्रीकेदारनाथजी पर पहुंचा और पंडेने बताया कि यहां अुस कुण्डमें बापूजीकी अस्थी प्रवाहित की गअी थी, तो मैं वहां बर्फ जैसी नदीके अूपरसे जानेका खतरा अुठाकर भी अुस स्थानका दर्शन करने गया। अुस दृश्यको देखकर और बापूजी तथा किशोरलालभाअीका स्मरण करके मुझे रोमांच हो आया और वहां थोड़ी देर बैठकर बापूजी और किशोरलालभाअीको मैंने श्रद्धांजलि दी। बापूजीने अुस रोज नअी तालीमके बारेमें जो कुछ कहा था आज सेवाग्राममें अुसका काफी विकास हो गया है। यह बापूजीके शुभ संकल्पका ही फल लगता है। और शुभ संकल्प पर मेरी निष्ठा बढ़ती ही जा रही है। बापूजी जो ज्ञान हमारे लिअे अच्छा समझते थे वह बराबर आप ज्ञान हमारे मगजमें ठूंस-ठूंसकर भर देनेकी कोशिश करते थे।

तुकाराम महाराजने ठीक ही कहा है:

कृपेचे सागर हे तंव साधुजन। तिहीं कृपादान केलें मज ॥१॥
बोबडे वाणीचा केला अंगीकार। तेणें माझा स्थिर केला जीव ॥२॥
तेणें सुखें मन स्थिर झालें ठायीं। ठावीं दिला पायी ठाव मज ॥३॥
ना भी ना भी ऐसे बोलिले वचन। तें माझें कल्याण सर्वस्व ही ॥४॥
तुका म्हणे झालों आनंदनिर्भर। नाम निरंतर घोष करूं ॥५॥

अर्थ — ये सन्त पुरुष ही कृपाके सागर हैं। अुन्होंने मुझ पर कृपा की है। मेरी तोतली बोलीको स्वीकार कर लिया है। अुससे मेरा चित्त स्थिर हुआ है। अुस सुखसे मेरा मन ठिकाने पर स्थिर हो गया है (लग गया है)। संतोंने मुझे चरणोंमें आश्रय दिया है। 'मत डरो, मत डरो' ऐसा अभय-वचन दिया है। अिसीमें मेरा कल्याण है और यही सर्वस्व है। तुकाराम कहते हैं मैं आनंदविभोर हो गया हूं और सदा प्रभुनामका घोष करता हूं।

बापू-कूप

आज जहां गोशालाके पूर्वमें तालीमी संघका दफ्तर और मोनदीका बगीचा है वह जमीन तालीमी संघके मकानोंके लिअे खरीदी गअी थी। जब

तालीमी संघ आश्रमकी ओर बस गया, तो मैंने अुसमें बगीचा लगानेकी बात की। अिसका मेरे कुछ मित्रोंने विरोध किया। मैं नागपुरसे सरकारी अुद्यान-विशेषज्ञको लाया, अुन्हें जमीन बतायी, और बापूजीसे अुनकी मुलाकात करायी। विशेषज्ञने वह जमीन पसन्द की और अुसमें बगीचा लगानेका निश्चय हुआ। अुसमें बापूजी खुले पैर घूमते थे।

अुस जमीनमें कुआ बनानेका मुहूर्त बापूजीके हाथसे ९ सितम्बर १९४०को हुआ। सोमवारका दिन था। बापूजीने अपना गमछा वगैरा अुतारकर रखा और कुदाली हाथमें ली। अुन्होंने मजदूर जैसे खोदना शुरू करता है वैसे ही जोरसे जमीनमें कुदाली मारी और खिलखिलाकर हंस दिये। बापूजी हंसते तो हमेशा ही थे, लेकिन अुस दिनका वह मुक्तहास्य मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। मुझे तो अेक विशेष प्रकारका आनंद था ही, क्योंकि मुझे अुस काममें विशेष रस था और बापूके हाथसे अुसका श्रीगणेश हो रहा था। किन्तु बापूको भी विशेष प्रकारका आनंद हुआ, क्योंकि वे अेक अैसे कामका मुहूर्त कर रहे थे जो हमेशा पशुओं और मनुष्योंके जीवनधारणके साधन अुत्पन्न करनेमें मददगार साबित होता रहेगा। सचमुच ही अुस कुअेका पानी वहांके अन्य सब कुओंसे श्रेष्ठ निकला। २५ सितम्बरको अुसमें पानी निकल आया। पहले पहल पानी भी परचुरे शास्त्रीने वेदमंत्रोंके अुच्चारके साथ बापूजीके ही हाथसे निकलवाया।

अैसी चीज जब जब मैं लिखता हूं, तो सेवाग्रामका सारा चित्र मेरी आंखोंके सामने नाचने लगता है। अितने प्रकारकी विचित्र घटनाअें आंखोंके सामने आकर खड़ी हो जाती हैं कि क्या लिखूं और क्या न लिखूं। मनमें आता है कि भगवान अेक बार फिर अैसा अवसर दे तो अबकी बार खूब सावधानीसे सोच सोचकर बापूजीके अुपदेशोंका संचय करूं और अुनके प्रेमका स्वाद चखूं। लेकिन आज तो स्मृतिका रस ही पिया जा सकता है।

अुस बगीचेमें पेड़ लगानेका मुहूर्त भी बापूजीके हाथसे ही कराया गया था और अुनके घूमनेके लिअे खास रास्ते बनाये गये थे। अुसके कोनेमें जो अेक मकान है वह मीराबहनके लिअे बनाया गया था। बादमें अुसमें बालकोबा रहे थे। अुस कुअेंका नाम हमने 'बापू-कूप' रखा था। अेक रोज चिमनलालभाअी बापूजीको खर्चका हिसाब बता रहे थे। अुनमें अुस कुअेका हिसाब बताते हुअे 'बापू-कूप' नाम आया। चिमनलालभाअीसे बापूने कहा कि मेरे नामसे कोअी भी चीज न रखी जाय। मैं नहीं जानता कि किसी

भी चीजके साथ मेरा नाम जोड़ा जाय। अुसी रोजसे हमने वह नाम छोड़ दिया।

आश्रममें विवाह

लोगोंको आश्चर्य हो सकता है कि अेक तरफ तो आश्रममें अेकादश व्रतोंका कड़ाअीसे पालन होता था, जिनमें ब्रह्मचर्यका प्रधान स्थान था, और दूसरी तरफ विवाह भी कराये जाते थे। आश्रममें कअी विवाह हुअे। सबसे पहला चिमनलालभाअीकी सुपुत्री शारदाबहनका सूरतके भाअी गोरधनदास चोखावालाके साथ और विजयाबहन पटेलका मनुभाअी पाचोलीके साथ। अिन दोका कन्यादान बापूजीने दिया था। शादीके लिअे चार-पांच आदमी आये थे और हम लोगोंसे बापूजीने कह दिया था कि शादीके समय तुम लोगोंके आनेकी जरूरत नहीं है। मानो कुछ हो ही नहीं रहा है, अिस प्रकारसे विवाह-संस्कार बापूजीने करा दिया और अेक रोज रोटी खिलाकर सबको विदा कर दिया।

पारनेरकरजीकी लड़की चि० शरदका विवाह भाअी प्रभाकर माचवेके साथ आश्रममें ही हुआ। पारनेरकरजीकी अिच्छा थी कि अुनकी लड़कीका कन्यादान भी बापूजीके हाथसे हो। लेकिन पारनेरकरजीकी माताजी छुआ-छूतमें विश्वास करती थीं, अिसलिअे बापूजीने अुनकी भावनाका आदर करके कन्यादान पारनेरकरजीको ही देनेके लिअे कहा। विवाहके समय बापूजी वहां अुपस्थित रहे और सारे काम अुनकी सूचनाके अनुसार ही सम्पन्न हुअे। अितना ही नहीं, जब पारनेरकरजीकी माताजीने अपना रसोअीघर आश्रमसे अलग चलाया तो बापूजीने पारनेरकरजीको आश्रममें भोजन बन्द करके आग्रहपूर्वक अपनी माताजीके साथ भोजन लेनेके लिअे राजी किया। दूसरेके विचार जब तक बदले न जा सकें तब तक अुनके विचारोंकी रक्षा करना, लेकिन स्वयं अुनके विचारोंके साथ सहमत न होना — यह बापूजीकी अद्भुत कला और महानता थी।

श्री जी० रामचन्द्रन्‌का विवाह भी सुन्दरम् बहनके साथ सेवाग्राम आश्रममें ही हुआ था। अेक मुस्लिम बहनका विवाह भी बापूजीके हाथों ही सम्पन्न हुआ था। बादमें तो बापूजीने निश्चय किया था कि वे हरिजन और सवर्णोंके विवाहमें ही आशीर्वाद देंगे। प्रो० रामचन्द्रनने अपनी पत्नी अेक हरिजन लड़कीको देनेका निश्चय किया था। अुन लड़कीका

नाम अर्जुनराव था। अुसका विवाह प्रो० रामचन्द्ररावकी लडकीके साथ करनेके पहले बापूजीने अुसे आश्रममें रख कर अच्छे संस्कार देना और अुसकी योग्यता बढाना अुचित समझा। अिसलिअे विवाहसे पहले करीब दो साल अुसे आश्रममें रखा। लेकिन अुनके विवाहके समय बापूजीके आशीर्वाद नहीं मिल सके। बापूजी अुन्हीं दिनों अिस दुनियासे विदा हो चुके थे। तो भी पूज्य ठक्करबापा जैसे महान सेवकके आशीर्वाद तो मिले ही। यह विवाह आश्रममें ही हुआ था। अुस समय बापाने कहा, यह काम तो बापूका था लेकिन हमारे दुर्भाग्यसे आज मुझे करना पड रहा है। यह कहते कहते बापाका गला भर आया। वे बालककी तरह रोने लगे। वह दृश्य बडा ही करुण था।

कनु और आभाका विवाह आश्रममें बापूजीके सामने हो चुका था। अिस प्रकार आश्रम अेक विचित्र ही ढगसे विकास तथा विस्तार कर रहा था।

बाका महल!

शुरूमें हमारा अेक ही मकान था, जिसके अेक कोनेमें बापूजी, अेकमें बा, अेकमें खानसाहब और अेकमें मुन्नालालजी थे। और भी जो मेहमान आते थे अुसीमें ठहरते थे। पू० बाको आराम करनेके लिअे बहुत संकोच होता था। अुन्होंने बापूजीसे कहा, "आपको तो कुछ नहीं लगता है। लेकिन हमारा क्या हो? हमको यहा सराय जैसी जगहमें डाल दिया है। कपडा बदलनेके लिअे और आराम करनेके लिअे कुछ आडकी जगह तो चाहिये।"

बापूने कहा, "हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं, अिसलिअे हमेशा [illegible] ही रहना हमारे लिअे शोभाप्रद है। हा, थोडीसी आड करा दूगा।" बापूजीने मुझे बुलाया और कहा, "देखो, बाको बडी तकलीफ होती है। बरामदेमें अुसके लिअे अेक टट्टेकी कोठरी-सी बना दो।"

अुत्तर-पूर्वके खाली बरामदेमें मैंने दीवारमें दो छेद कर दिये। अुनमें बास डाले। बासोंको बरामदेके खंभोंसे बाधकर टट्टा बाध दिया और अेक दरवाजा रख दिया। करीब आधे या पौन घटेमें सब तैयार हो गया। मैंने बापूजीसे कहा कि बाके लिअे महल बन गया है। बापूजी अुठकर आये और बाको भी साथ लाये। बोले, "अरे, यह तो बहुत अच्छा बन गया!" बा बिचारी क्या बोलती? कह दिया "ठीक है।" मैं मन ही मन हंस रहा था कि बापूजी बाको बच्चोंकी तरह कैसे फुसला रहे हैं।

अन्तमें, बाकी यह असुविधा जमनालालजीसे नहीं देखी गअी और अुन्होंने हठ करके अेक छोटासा मकान बनवा दिया, जो आज 'बा-निवास' कहलाता है।

कुछ और सदस्य जुडे

मीराबहन वरोडाकी झोपडीमें गअी तो सही और थोडे दिन अुनकी तबीयत वहा अच्छी भी रही, लेकिन बादमें अुनको बुखार आने लगा। अुनकी झोपडी जगलमें और रास्ते पर थी, अिस कारणसे दिन भर लोग कुतूहलसे भी वहा आते रहते थे। सबसे प्रेम तो वे करती ही थी, अिसलिअे लोग घटों बैठकर फिजूलकी बातें अुनसे किया करते थे। अिससे भी मीराबहन दु खी हो गअी थीं। अिस कारण लाचार होकर अुन्हें सेवाग्राम लाना पडा। आज जो बापू-कुटी है अुसका मध्यवर्ती भाग प्रारभमें मीराबहनके लिअे बनाया गया था और अुसमें वे बच्चोंको कातना-बुनना सिखाती थी। बादमें बापूजीकी तबीयत खराब हुअी तब अुन्हें आदि-निवाससे यहा लाया गया और अुस झोपडीके अुत्तरी भागमें बरामदा और दक्षिणी भागमें सेप्टिक टैंक बढाये गये।

हमारा मकान अैसा था, जिसमें ५ दरवाजे थे और किसीको किसी भी समय अन्दर आनेमें कोअी रोकटोक न थी। दिनभर किसी भी समय कोअी न कोअी अदर घुस जाता था और अिससे बापूजीके कार्यमें बाधा पडती थी। बापूजीकी तबीयत बिगडी अिसलिअे अुन्हें वहासे हटाना पडा और मीराबहनकी झोपडीमें रखना पडा। बस, तबसे बापूजीका सबको परोसना बद हुआ, क्योंकि बापूजीका भोजन वही जाता था। परतु जब अुनकी तबीयत अच्छी होती थी तब तो वे सबके साथ पगतमें ही बैठते थे। अब समाज भी बढ गया था। किन्तु जिनकी तबीयत कुछ खराब रहती थी, अुन्हें बापूजी ही परोसते थे।

कृष्णचन्द्रजी पहले १९३५ में मगनवाडीमें बापूजीसे मिलने आये थे। बादमें १९३८ में स्थायी रूपसे सेवाग्राममें रहनेके लिअे आ गये। सुशीला-बहन डॉक्टरी पास करके आ गयी थीं। अिसलिअे दवाखानेका चार्ज अुन्होंने लिया। बाके मकानके पीछे जो मकान है, वह जमनालालजीने अपने लिअे बनवाया था। जमनालालजी तो शायद ही अुसमें रहे होंगे। किन्तु बादमें अुसमें आश्रमका दवाखाना शुरू हुआ। शंकरन्जी पहले नालवाडीके चर्मालयमें

काम सीखते थे। ये भी बापूजीके सान्निध्यमें रहना चाहते थे। बापूजीने अुनको रख लिया और यह काम सौंपा कि जो लोग पाखाना जाय अुनका पाखाना देखें और अुस पर मिट्टी डालें। सबसे कह दिया गया कि अपने पाखाने पर कोअी मिट्टी न डाले, ताकि अुन्हे पाखानेकी परीक्षा करनेकी आदत पड जाय। यह काम मीराबहनको बिलकुल पसद नही था। मीराबहनको छोडकर हमारा सबका पाखाना शकरन्‌जी देखते थे, अुसके बारेमें रिपोर्ट लिखते थे और पाखाने पर मिट्टी डालते थे। बापूजी अुनसे कहते, "तुमको तो रहना भी वहीं चाहिये। अेक झोपडी पाखानेके पास ही बनवा लो। तुम्हारी सफाअी अितनी आदर्श होनी चाहिये कि पाखानेके पास रहते हुअे भी जरा बदबू न आये।"

आश्रम-परिवारके दिल पर गहरी चोट

आर्यनायकम्‌जीकी दो सन्तानें थी। मितू लडकी अभी मौजूद है। अुससे छोटा लडका आनन्द था जिसके अनेक नाम थे। अपने नाम भी वह खुद ही रख लेता था। मैं अुनको तागेवालेके नामसे पहचानता था। अेक रोज मैंने सब लोगोंको बनकरीके कुअें पर हुरडा (हरी ज्वार) खानेकी पार्टी दी। अुसमें जमनालालजी भी थे। सब लोगोंने बडे प्रेमसे खूब ज्वार खाअी। तागेवाला भी अुसमें था। अुसने भी खाअी। थोडी देरमें पता चला कि लडका बेहोश हो गया है। मैं घबराया कि कहीं अधिक ज्वार खानेसे तो कुछ गडबडी नही हो गअी है। लेकिन बादमें पता चला कि वह ६० ग्रेन कुनैनकी गोलिया चाकलेट समझकर खा गया था। अुसीकी गर्मीने अुसके प्राण ले लिये। अुस रोज आर्यनायकम्‌जी वहा पर नही थे। बापूजी तुरत ही वहा पहुच गये और काफी अुपचार किये। डॉ॰ सुशीलाबहनने भी काफी कोशिश की, लेकिन कुछ भी बस नही चला। और वह बालक १९ दिसबर १९३९ को हम सबको छोड कर चला गया। सेवाग्रामके जीवनमें यह बडा भारी आघात था। आर्यनायकम्‌जी दूसरे दिन आये। अुनके आने पर बालकका दाह-सस्कार किया गया। आशालताबहन तो काफी दुखी थी, लेकिन आर्यनायकम्‌जीने बडे धीरजका परिचय दिया। बापूजीने दोनोको सात्वना देते हुअे कहा, "अब तक तो तुम्हारे अेक ही बच्चा था। आजसे सारे ग्रामके बच्चे तुम्हारे हैं। नअी तालीममें तो सारा हिन्दुस्तान आ जाता है। अिसलिअे सारे हिन्दुस्तानके बच्चे तुम्हारे ही हैं। अब तुम्हारी जवाबदारी और भी बढ गअी है। अिनकी सेवा

करो और जिसको अपना बच्चा कहते थे अुसे भूल जाओ या अुसीका रूप सब बच्चोंमें देखो। यही शान्ति और सेवाका मार्ग है।"

अुन बच्चेका वियोग मा-बापको तो रुलानेवाला था ही, लेकिन सारे सेवाग्राम परिवारके दिल पर भी अुसकी गहरी चोट लगी। मेरी तो अुसके साथ जितनी दोस्ती थी कि अुसका वियोग आज भी मुझे सताता रहता है। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीने सचमुच सेवाग्रामके ही नहीं आसपासके सब बच्चोंको अपना बच्चा बना लिया है और अुनका प्रेम हिन्दुस्तानभरके बच्चों तक फैल गया है। महापुरुषोंके आशीर्वादमें कितनी शक्ति होती है, जिसका अन्दाज लगाना कठिन है।

१५

सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति

काशीबा

पू० काशीबा दक्षिण अफ्रीकामें ही बापूजीके साथ रहीं। नअी तालीम माके गर्भसे आरम्भ होती है, बापूजीके जिस वचनका मिलान मैं करता ही रहता हूं। जब मैं काशीबाको देखता हूं और अुनके दोनों पुत्रों भाअी कृष्णदासजी व प्रभुदासजी गांधीको देखता हूं, तो बापूजीके कथनकी सत्यताका प्रत्यक्ष अनुभव करता हूं। काशीबाकी सरलता, अुनकी नम्रता, अुनकी व्यवहार-कुशलता और भक्तिभावका वारसा जिन दोनों सतानोंको मिला है। सचमुच जैसी माके गर्भसे जन्म मिलना बड़े पुण्यके प्रतापका फल हो सकता है। अुनका कंठ कितना मधुर है! 'कहांके पथिक, कहां कीन्ह है गवनवा' भजन बार बार अुनके मुंहसे सुननेकी अिच्छा होती है। अुनके दर्शनसे ही अेक प्रकारकी सात्विक खुराक मिलती है। अुन्होंने बापूजीसे बहुत कुछ सीखा है। सीखकर अुसे पचाया है। कीमत खानेकी नहीं पचानेकी ही है। 'दरस परस अरु मज्जन पाना। हरहि पाप कहहि वेद पुराना।' यही अनुभव काशीबाके दर्शनसे होता है।

दादूजी

दादूजी (जान कॉर्डिस) बापूजीके दक्षिण अफ्रीकाके साथियोंमें से अेक हैं। वे कहीं शान्तिपूर्वक रहना चाहते थे। बापूजीसे मिलकर स्थानका निश्चय करना था। लेकिन बापूजीने सेवाग्रामकी तरफ अुंगली अुठाओ और कहा कि मेरा

भमी ठिकाना नही है, लेकिन आप सेवाग्राम पहुच जाअिये। वे सन् १९४६ में सेवाग्राम आये। वापूजीने आश्रमको लिखा कि अुनकी सेवामें किसी प्रकारकी कमी न रहे। अुनकी अुम्र ८४ के लगभग है। वापूजीके प्रति अुनकी प्रगाढ श्रद्धा है। वे वडे ही व्यवस्थित और कार्यकुशल व्यक्ति है। अेक मिनट भी खाली रहना अुनके स्वभावमें ही नही है। वडे कलाप्रेमी है। आजकल पू० किशोरलालभाअीवाले घरमें रहते है। अुसमें अुन्होने मदिरकी तरह कुछ अच्छी अच्छी सामग्रियोको सजाकर रखा है। आनेवाले दर्शकोको वे वडे प्रेम और अुत्साहसे सब वताते है। आजकल तालीमी सघकी लायब्रेरीका काम सभालते है। घडीके काटेकी तरह वे ठीक समय पर लायब्रेरी पहुचते है और पुस्तकालयको वहुत ही स्वच्छ और व्यवस्थित रखते है। वापूजीने लिखा था कि दादू आश्रमकी शोभाको वढायेंगे। सचमुच ही दादूजीने आश्रमकी ही नही, समग्र सेवाग्रामकी शोभाको वढाया है। वापूजी कहते थे, आश्रमके अस्तित्वकी सार्थकता ही अिसमें है कि अैसे सत्पुरुषोकी सेवा करनेका अुसे अवसर मिले।

चाचा खानसाहब

सन् १९३६ के अगस्त महीनेकी वात है। हमारे प्यारे वादशाह खान, सीमात गाधीको सरकारने जेलसे छोडा तो था, पर अपने सूवेमें रहनेकी मनाही कर दी थी। वापूजीने अुनको सेवाग्राम आनेका प्रेम और आग्रहभरा निमत्रण भेजा था। खानसाहवने अुतने ही प्रेमसे अुसे मजूर भी किया। खानसाहवके सेवागाम आनेसे अेक रोज पूर्व वापूजीने मुझे वुलाकर कहा, "देखो, खानसाहव और अुनकी लडकी आ रही है। अुनकी तवीयत खराव है। तुम जानते हो, पठान कितना दूध पी सकते है। अुनके लिअे पाच सेर दूधका प्रवध कल शाम तक हो जाना चाहिये। कल ही नअी गाय ले आओ।" अैसी गाय, जैसी वापू चाहते थे, वाजारमें सहज मिलनेवाली चीज तो थी नही। तीन समय अुसका दूध देखना होता था। दस जगह तलाश करना पडता था। लेकिन वापूके पास अिन दलीलोको सुननेका समय कहा था?

दैवयोगसे दूसरे दिन पानीकी अैसी झडी लगी कि वाहर निकलना असभव हो गया। वापूजीका फरमान मेरे पेटमे वायुगोलेकी तरह दिनभर दर्द करता रहा। आखिर, शामकी प्रार्थनाके वाद जव पेशीका हुक्म आया, तो मैं अपनी सारी हिम्मत और दलीलोंके साथ हाजिर हुआ।

बापूजीने पूछा, "क्यों आ गयी गाय?"

मैंने कहा, "बापूजी, आज तो दिनभर पानी बरस रहा था।"

बापू बोले, "तो मैं खानसाहबको दूध कहांसे दूंगा?"

मैंने देखा यहां तो सबके आगे रोना अपनी ही आंख खोना जैसा है। 'अच्छी बात है, कल खानसाहबके आनेसे पहले गाय आ जायगी' कहकर मैं चला तो आया, लेकिन गाय लाना तो फिर भी आसान कहां था? दूसरे दिन भाओी पारनेरकरजीको साथ लेकर वर्धाका रास्ता लिया। कओी जगह ढूंढा। अेक ग्वालेके पास दैवयोगसे या मेरे नसीबसे दो अच्छी गायें मिल गयीं, जिनके दस सेर दूध था। हम दोनों गायें खरीद लाये और विजयी योद्धाकी तरह बापूजीको सुना दिया कि दस सेर दूधकी दो गायें हाजिर हैं। बापू खुश हो गये।

बापूजीने खानसाहबके आने पर अुनके भोजनके बारेमें सब कुछ जान लिया और अुनकी रुचि व अपनी प्राकृतिक चिकित्साके अनुसार अुनके भोजनका प्रबंध कर दिया। दिनमें तीन बार दही देना तय हुआ। खानसाहबको बिलकुल मीठा दही पसंद था। दही जमानेका काम मुझे सौंपा गया। अेक तरफ अुनकी सेवाके लाभके आनंदसे और दूसरी तरफ दही खट्टा होने या न जमनेके डरसे मेरी 'सांप-छछूंदर' के जैसी गति कर दी। पर परीक्षामें मैं पास रहा। अपनी आदतके अनुसार कओी बार बापूजी पूछते, "क्यों खानसाहब, दही कैसा है?" मैं अुनके मुंहकी तरफ देखता और जब तक जवाब न मिलता, मेरा सांस लेना बंद-सा रहता। खानसाहब जब कह देते कि महात्माजी, दही बिलकुल अच्छा है, तब मैं आरामसे सांस ले पाता।

अिस सेवाका बदला भी मैंने ब्याजसहित वसूल कर लिया।

मैं जब सख्त बीमार पड़ा, अुस समय आश्रममें गिने-चुने ही आदमी थे। भाओी प्यारेलालजी और खानसाहबने अद्भुत प्रेम और तत्परतासे मुझे सम्हाला अेव मौतके मुंहसे बचा लिया। बापूजीकी तो बात ही क्या कहूं? वे अेनीमा देते, स्पंज करते और जब मैं घंटी बजाता तो मेरे पास ही खड़े दीखते। सचमुच ही अुस समयका वह छोटासा लेकिन महान पारिवारिक जीवन कितना सुमधुर था! बापूजी तो बाप और मां सब कुछ थे ही, लेकिन खानसाहबने सचमुच चाचाका स्थान ले लिया था। वे हमारे साथ अितने घुलमिल गये थे कि न तो अुनको और न हमको कभी अैसा अनुभव होता था कि खानसाहब कोओी बड़े आदमी हैं और हमको अुनके साथ

अदबसे रहना चाहिये। जितना चाचाका अदब करना चाहिये अुतना तो हम करते ही थे। खानसाहबके साथ अुनकी लडकी मेहताजबहन भी आयी थी। वह बडे सरल स्वभावकी भोलीभाली लडकी है। वह भी बहनकी तरह हमारे साथ घुलमिल गयी थी। शाक काटना, अनाज साफ करना, झाडू लगाना आदि सब काम आश्रमवासीकी तरह खानसाहब करते थे। खानपानके मामलेमें बापूजीने खानसाहबको पूरी आजादी दे दी थी। यहा तक कि मास लेनेकी भी छूट दे दी थी। किन्तु आश्रमके नियमोका ध्यान रखते हुअे जरूरत होने पर भी अुन्होने मास लेना कभी पसद नही किया।

अुनके हाथमें फावडा और झाडू बहुत ही फबता था। अेक-दो दिनके लिअे भी जब अुन्हें बाहर जानेका प्रसग आ जाता, तब वापिस आने पर वे हमसे पठान-रिवाजके अनुसार कौली भरकर ही मिलते थे। हमारा सिर तो अुनके पेट तक ही रह जाता था। और हमारी कौलीमें भी वे कैसे समाते ? अुस वक्त हमको महसूस होता था कि खानसाहब हमसे कितने बडे है। अुनकी कमखर्ची और सादगी तो गजबकी थी। अेक कुरता और पाजामा अुनकी पोशाक और अुसमें हलका-सा नीला रग अिसलिअे कि अधिक साबुन खर्च न करना पडे। अेक साधारण किसानसे अधिक अच्छे कपडे खानसाहब पसद नही करते है।

फैजपुर-काग्रेसके अध्यक्षपदके लिअे खानसाहबको राजी करनेके लिअे पू० राजेन्द्रबाबू और जवाहरलाल नेहरू सेवाग्राम आये थे। वर्धामें वर्किंग कमेटीकी बैठक चल रही थी। वे आये अुस समय मै और भाअी मुन्नालालजी भी बापूजीके पास बैठे थे। राजेन्द्रबाबू और जवाहरलालजी अपनी बात कहनेमें हिचक रहे थे। बापूजीने अुनकी अिस हिचकको ताड लिया। वे बोले. "आप सकोच न करें। ये दोनों अपने ही आदमी है। आपको जो भी कहना हो नि सकोच भावसे कहें।" अिससे पता चलता है कि बापूजी महत्त्वके राजनैतिक प्रश्नोके बारेमें भी अपने साथियोंसे कोअी दुराव-छिपाव नही रखते थे। दोनोंने खानसाहबको अध्यक्ष बनानेकी अपनी सूचना सामने रखी। खानसाहब बोले, "यह मेरा काम नही है। मै तो सिर्फ खिदमतगार सिपाही हू। मुझे अिसमें रुचि भी नही है। आप किसी दूसरेको बनायें।" अुनकी बातका समर्थन करते हुअे बापूजीने जवाहरलालजीसे कहा, "खानसाहब ठीक कहते है। मै अिनको अिस झझटमें डालना नही चाहता। अिनसे तो दूसरा ही काम लेना है। अिनके लिअे दूसरे बहुत काम

हैं, जिन्हें अिनके सिवा दूसरा कर ही नहीं सकता। कांग्रेसका भार तो तुमको ही अुठाना होगा और आज यही ठीक भी है। अिसलिअे खानसाहबका विचार छोडो और तुम तैयार हो जाओ।" खानसाहब भी खुश-खुश हो गये और बोले, "महात्माजी ठीक कहते हैं। यह भार जवाहरलालजीको ही लेना चाहिये।" आखिर पंडितजीको कबूल करना ही पडा।

खानसाहब सीमाप्रान्तके और जेलके अपने अनुभव बताया करते थे कि कैसे जेलमें अुन्होंने साक-भाजीका बगीचा लगाया, वहां पर हिन्दू-मुसलमानोंके भेदभाव मिटानेके लिअे क्या-क्या किया, अित्यादि।

खानसाहबने अहिंसाकी लडाअीमें अपना सब कुछ तो समर्पण कर ही दिया था, साथ ही साथ हिंसक प्रवृत्तिवाले पठानोंको अहिंसाका पाठ पढाकर अहिंसाका बेजोड दृष्टांत भी देश और दुनियाके सामने रखा। अुनका दिल स्फटिक जैसा निर्मल और पारदर्शक है। अुनकी अुदारता और गंभीरता सागर जैसी महान है। अुनका धीरज हिमालय जैसा अचल है। अुनकी सरलता, नम्रता, सादगी और निरभिमानिताकी सुगंधने भारतवासियोंके मनको अितना सुगंधित किया है कि अुनका पावन प्रेम कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। अुसे पाकिस्तान और हिन्दुस्तानकी बनावटी सीमारेखायें रोक नहीं सकतीं। हो सकता है कि आज हमारे प्रत्यक्ष मिलनमें ये सीमायें बाधक हो जायं, लेकिन हृदयोंके मिलनको रोकनेकी शक्ति किसी भी सरकारके किसी भी कानून या फौजी ताकतमें नहीं है। आज खानसाहबका घर भले ही पाकिस्तानकी सीमामें आ गया हो, लेकिन अुनके प्रेमका बटवारा थोडे ही हुआ है? अुनकी महानता और हमारे पारिवारिक जीवनके वे मधुर संस्मरण जब आज याद करता हूं और अुनके प्रेम, सौहार्द आदिके बारेमें जब सोचता हूं, तो मेरे श्रद्धापूरित आंसू रोके नहीं रुकते हैं। पर चाचा खानसाहबको अुनकी सरकार शायद यहां न आने दे! काश, वह अैसी अुदारता बरतती! बादशाह खान जैसा भी कोअी अुनका हितैषी हो सकता है? अुनसे खतरा काहेका? वे तो टूटे दिलको जोडनेवाले सरेस हैं, कडवेको मीठा बनानेवाले शहद हैं और रोनेवालोंको हंसानेवाली मां हैं। अैसी विभूतिको भी अपना शत्रु मानकर पाकिस्तान सरकारने आज जेलके सीखचोंके भीतर बन्द कर रखा है, और वह भी अुनके भाअी डॉ० खानसाहबके प्रधानमंत्री होते हुअे, यह अेक अनोखी और करुण घटना ही कही जायेगी।

अुनके कानो तक अगर मेरी आवाज पहुच सकती हो, तो दुर्गापुरा आनेका मेरा आदरभरा निमत्रण और शत-शत प्रणाम अुन्हे स्वीकार हो।

बालकोबा

विनोबा जैसे विनायकसे विनोबा बने वैसे ही बालकोबा, विनोबाजीके छोटे भाअी, बालकृष्णसे बालकोबा बने। अिनसे छोटे भाअी शिवाजी है। शुकदेवजीकी तरह जन्मसे ही तीनो भाअी साधु, भक्त, ज्ञानी, सन्यासी और देशभक्त तो थे ही, तिस पर कडवी और नीमचढी अिस नियमके अनुसार तीनो ही बापूजीके जालमें आ फसे।

कुल पवित्र जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।

अिसी आशयका तुलसीदासजीका भी अेक वचन है पुत्रवती युवती जग सोअी, रघुपति भगत जासु सुत होअी। सचमुच ही अैसा दृष्टान्त दुनियाके अितिहासमें मिलना दुर्लभ है। अुस माका पवित्र स्मरण करके आज भी विनोबाजीकी आखोसे गगा-जमुना बहने लगती है। अिनके माता-पिता तो धन्य थे ही, लेकिन अिन तीनोको पाकर बापूजीने भी धन्यताका अनुभव किया। तभी तो बापूने विनोबाजीको सारे देशके सामने १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रहका प्रथम सत्याग्रही घोषित करके अपने अत्यन्त प्रेम और विश्वास-पात्रताका प्रमाणपत्र दिया था।

पहले बापूजीके पास विनोबाजी आये और बादमें जैसे रामके पीछे लक्ष्मणने वनका रास्ता पकडा था अुसी प्रकार अिन दोनो भाअियोने भी विनोबाका पीछा पकडा। बालकोबाजीको भी विनोबाजीने घर पर रहनेको समझाया था। धमकाया भी था। लेकिन —

अुतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाअि।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु तो कहा बसाअि॥

अिन दोनो छोटे भाअियोका भी अैसा ही हुआ। सबसे छोटे भाअी शिवाजीको बहुत कम लोग जानते है। वे प्रसिद्धिसे बिलकुल दूर भागते है। बापूजीके 'गीतापदार्थकोश' की तरह अुन्होने विनोबाजीकी मराठी 'गीताअी' का बडी मेहनतसे शब्दकोश तैयार किया है। महाराष्ट्रकी जनतामें घूम घूम कर 'गीताअी' की लाखो प्रतियोका प्रचार किया है। रामायणका भी अुनका गहरा अध्ययन है। जीवन और जनसेवाकी दृष्टिसे अुन्होने जो साधना की है वह प्रशसनीय कही जायगी।

तीनो भाअियोने बापूजीकी प्रयोगशालाको सजानेमें जो पार्ट अदा किया है वह अितिहासके पन्नोको दीपस्तम्भकी तरह प्रकाशित करता रहेगा। खैर, मैं कहने कुछ जा रहा था और वह गया दूसरे पानीके साथ। यह भी अच्छा ही हुआ। अिन त्रिमूर्तिका स्मरण भी तो त्रिवेणी-सगममें स्नान करने जैसा ही है।

वालकोवाजीको क्षय रोगने पकड लिया था। दोनो फेफडे खराब हो चुके थे। दस-बारह सालसे सतत बुखार बना रहता था। पहले महिलाश्रम वर्धामें बापूजीकी ही देखरेखमें अुनका अिलाज चलता रहा। जब बापूजी सेवाग्राम आये तो अुनको भी सेवाग्राम बुला लिया और अुनके अिलाज आदिकी सारी व्यवस्था अुन्होने अपने हाथमें ले ली। बालकोवाके रहनेकी व्यवस्था आश्रमसे दूर मीराबहनवाली वरोडाकी झोपडीमें थी। अुनके खाने-पीनेका जरूरी सामान आश्रमसे जाता था। सुबह शाम घूमते समय बापूजी अुनकी झोपडी तक जाते थे, जो आश्रमसे करीब डेढ मीलकी दूरी पर थी। सुबह रातके और शामको दिनके सब समाचार बापूजी अुनसे पूछते थे। नीद कितनी आअी, दस्त कैसा और कितना हुआ, बुखार कितना रहा, कितने कदम और कितनी देर घूमे, खुराकमें क्या क्या चीजें ली, कितनी कितनी मात्रामें ली — अित्यादि अित्यादि।

२४ घटेका अपना कार्यक्रम वालकोवाजीने अिस प्रकार बना लिया था कि वह घडीके काटेकी तरह ही नही बल्कि सूर्यकी गतिकी तरह नियमित चलता था। कितना और कितनी बार खाना लेना, अुसमें क्या क्या और कब कब लेना, कितना सोना, अगर नीद न आये तो चुपचाप बिस्तरमें पडे रहना, अमुक समय पर ही और बहुत कम बोलना, बिस्तरको रोज धूपमें सुखाना, कितना घूमना, किस समय बुखार नापना, कितना काम खुद करना और कितना सेवकसे कराना — अिसका भी बराबर हिसाब था। अुनकी झोपडी और सामान सब अितना सुव्यवस्थित और स्वच्छ रहता था कि देखकर आनन्द होता था। कहनेका अर्थ यह कि अुनका आत्मसशोधन और स्वास्थ्य-सुधारका प्रयत्न और निरीक्षण अितना सूक्ष्म था कि अुसमें अुपेक्षा, आलस्य, निराशा आदिका नाम भी न था। मैं भी अुनके पास जाया करता था। अुनकी छोटी छोटी बातोमें अितनी बारीकी मुझे बालकी खाल निकालने जैसा लगता था। और मैं मानता था कि यह आदमी मृत्युदेवके दरवाजे पर खडा है तो भी जीनेके

लिअे अितनी चिन्ता और खटपट क्यो करता है? बात तो ज्ञान, वैराग्य, अुपनिषद्, योगदर्शन आदिकी करते हैं और जीनेका अितना लोभ? मैंने अपना यह विचार अेक आश्रमवासी भाअी कृष्णचन्द्रजीको बात बातमें कह डाला। अुन भाअीने बात ही बातमें मेरी बात बालकोबाजीको सुना दी। अैसी नाजुक बात अुनको सुनानी नही चाहिये थी, लेकिन वह भाअी अुनके भक्त थे। मेरे भी मित्र तो थे ही, लेकिन अुनके पेटमें यह बात पच नही सकी। सुनकर बालकोबाजीको बहुत ही दुःख हुआ और अुनको लगा कि अगर साथियोके मनमें अैसा विचार आता है तो मुझे यहा न रहकर हिमालयकी तरफ चला जाना चाहिये। जब तक शरीरको रहना होगा तब तक रहेगा। जब पडना होगा पड जायगा। आखिर यह बात बापूजी तक तो पहुचनी ही थी, क्योकि कोअी बात या विचार बालकोबाजीके पास पहुचे या अुनके मनमे आये और वह बापूजी तक न जाय यह सभव नही था। अुन्होंने बापूसे हिमालय जानेकी अिजाजत मागी।

मैंने तो सहज ही चर्चा करते करते अुन भाअीसे अपना विचार कह दिया था। मुझे पता नही था कि यह प्रश्न सचमुच ही अितना गभीर बन जायगा और मेरी पूरी पूरी हाजरी ली जायगी। जब मुझे पता चला कि प्रश्न बापूजी तक पहुचा है तो कृष्णचन्द्रजी पर मुझे गुस्सा आया। मेरा कलेजा धडकने लगा कि न मालूम कब मेरा वारन्ट आयगा और क्या हाल होगा। अेक कहावत है कि हाकिमके आगेसे और घोडेके पीछेसे कभी नही निकलना चाहिये, न मालूम हाकिम कब क्या पूछ बैठे और घोडा कब लात मार बैठे। अिसलिअे मैं भी बापूजीसे कतराकर निकल जाता था। आखिर दूर भी कब तक रह सकता था? मैंने यह भी समझा था कि बापूजी मेरा स्वभाव जानते है, अिसलिअे बातको टाल भी सकते हैं। लेकिन बापूजीके लिअे तो वह महत्त्वका प्रश्न था। अुसे वे यो ही कैसे छोड सकते थे?

अेक रोज घूमते समय अुन्होंने धीरेसे बात निकाली, "क्यो बलवन्तसिंह, तुमने बालकृष्णके लिअे क्या कह दिया था? तुम्हारी बातसे अुसको बडा दुःख हुआ है और वह हिमालयमें भाग जानेकी बात करता है।" मेरे अुस समय क्या हाल हुअे होगे अिसका अन्दाज पाठकगण लगा सकते है। लेकिन अदालतमें जवाब न देना भी तो गुनाह है। अिसलिअे मैंने भी धीरेसे कहा, "हा बापूजी, मैंने कहा था कि बालकोबाजी जीनेके लिअे अितनी खटपट क्यो

करते है? खुद परेशान होते है और दूसरोको भी परेशान करते है। अेक तोला दूध या अेक खजूर या मुनक्का कम हो गया तो क्या और अधिक हो गया तो क्या?"

बापूजी गभीरतासे बोले, "यह तुम्हारी भूल है। तुमको क्या पता है कि अगर मैं न रोकता तो वह कबका हिमालय चला गया होता। अुसको तो सेवा लेना और खटपट सहन ही नही हो सकती थी। वह बहुत ही सकोची और भावना-प्रधान है। तुमको क्या पता है कि अुसमें सेवा करनेकी कितनी शक्ति भरी है? अगर वह खडा हो सका तो तुम देखोगे कि वह कितनी सेवा दे सकता है। अैसा ही समझो कि अुसे जीनेका लोभ है ही नही। वह तो मेरे प्रेमके वश होकर ही मेरे हुक्मका पालन करनेके लिअे यहा पडा है, नही तो कबका हिमालयमें चला गया होता और शरीर भी पड सकता था। लेकिन मैंने अुससे कहा है कि तुमको अच्छा होना ही है और सेवा करना है। साबरमतीमें तो अुसके खिलाफ यह शिकायत थी कि वह काम बहुत करता है और खुराक बहुत कम लेता है। अुसका शरीर बिगडनेका यह भी अेक कारण हो सकता है। और भी कारण है। लेकिन अब वह समझ गया है कि शरीरको ठीक रखना भी धर्म है और जो भी नियम डॉक्टर या मैं बताता हू अुसका अक्षरश पालन करता है। डॉ० डेविडने अुनके पीछे काफी मेहनत और प्रेम बरसाया है। वह तो बडे सेवाभावी और अपनी कलामें बडे अुस्ताद है और अुनको पूरी अुम्मीद है कि बालकृष्ण ठीक हो जायगा। अगर मैं अुसे खडा कर सका तो मेरा अेक बडा काम हो जायगा। कुछ भी हो हमको साथियोंके प्रति अुदारता, सहनशीलता, और सेवाभाव रखनेका अभ्यास करना चाहिये। हम अपने आपको दूसरेकी स्थितिमें रखकर सोचना सीखें। अुसने मुझे सर्वार्पण किया है तो मेरा धर्म हो जाता है कि मैं अुसे खडा करनेका पूरा पूरा प्रयत्न करू। अितने पर भी अगर वह जायगा तो मैं रोते नही बैठूगा। आखिर तो हम सब अुसी कालके गालमें खडे है न? कोअी हट्टा-कट्टा पहलवान भी यह दावा नही कर सकता कि दूसरे क्षण अुसका शरीर रहेगा या नही? गीतामाता तो अपना कर्तव्यधर्म करके अनासक्त रहनेको कहती है न? खैर, अुनको तो मैंने समझा दिया है। लेकिन तुमको भी कर्तव्यधर्मका रहस्य और साथियोंके साथ सहानुभूतिसे बरतना सीखना है। बालकृष्णको हम जितनी सेवा और अपना प्रेम दे सकें अुतना देना हमारा धर्म है।"

मै तो वापूजीका भाषण सुनकर सुन्न रह गया। वापूजीने मुझे सब कुछ कह दिया, लेकिन अुसमें अेक भी शब्द अुपदेशसे खाली और चुभनेवाला नही था। वापूजीने गुडमें लपेटकर मुझे कुनैनकी अेक कडवी गोली खिलायी। अुसे गलेके नीचे अुतारे सिवा मेरे पास भी दूसरा चारा नही था। मैं वालकोवाजीके पास गया और मेरे शब्दोसे अुनको जो दु ख हुआ अुसके लिअे अफसोस जाहिर किया। अुनका स्वभाव तो वडा ही सरल और भोला है। अुनके मनमें मेरे प्रति द्वेष नही आने पाया था, वल्कि अपने आप पर ही ग्लानि आअी थी कि कही सचमुच ही तो मुझे जीनेका लोभ नही हो गया है। अगर अेक साथी अैसा सोचता है तो यह विचार करने लायक प्रश्न है। मेरी वातचीतसे अुनके मनसे वह असर भी चला गया और आज तक हम दोनो अच्छे मित्र है।

आज वापूजीकी अुस दिनकी दिव्य दृष्टिका मै विचार करता हू तो आश्चर्यचकित रह जाता हू। अुस निमित्तसे वापूजीने मुझे तो ज्ञान-गोष्ठी सुना ही दी। लेकिन वालकोवाजीके लिअे वापूका शुभ-सकल्प अक्षरश कितना सत्य सिद्ध हुआ, अुसका दर्शन निसर्गोपचार आश्रम, अुरुलीकाचन (पूनाके पास) में देखनेको मिलता है। अुस सस्थाके लिअे देशके कोने कोनेसे ही नही, समुद्र पार जाकर भी लाखो रुपये जमा करना वालकोवाजीकी शक्ति और स्वभावके वाहरकी वात थी। वे कभी सरदी और गरमीमें पैदल चलने लायक हो सकेंगे और अितनी वडी सस्थाको चला सकेंगे यह स्वप्न जैसी कल्पना कौन कर सकता था? कमसे कम मुझे तो नही ही थी। परतु आज वे अुसके सचालनमें प्राणपणसे जुटे हुअे है। अगर आज वापूजी जीवित होते तो मुझसे पूछते कि देखो, वालकोवाके वारेमे मैने जो कहा था वह कैसे सच सावित हो रहा है। आज वालकोवा कितनी सुन्दर सेवा कर रहा है।

मूक सेवक रामदासजी गुलाटी

भाअी रामदासजी गुलाटी सीमाप्रान्तके अेक अिजीनियर थे, जो सरकारी नौकरी छोडकर पू० ठक्करवापाकी प्रेरणासे १९३४ में सेवा और साधनाकी दृष्टिसे वापूजीके पास आये थे। वापूजीने अुन्हें पू० जाजूजीको सौंप दिया। जाजूजीने अुन्हें सावलीके चरखा सघके अुत्पत्ति-केन्द्रमें वुनाअीका अभ्यास करने भेज दिया। वे कुछ ही समयमें वुनाअीका शास्त्र समझ और सीखकर केन्द्रके

संचालक बन गये। वहीं मेरा अुनसे परिचय हुआ, जब मैं १९३५ में बुनाअी सीखने सावली गया था।

अुनका प्रेमी स्वभाव, अुनकी सत्यता, सरलता, व्यवहार-कुशलता, सूक्ष्म दृष्टि और सेवाभावना प्रशंसनीय थे। भगवद्भक्त और साधक भी वे अुच्च कोटिके थे। अुनके साथ थोड़े ही दिनोंमें मेरा घनिष्ठ संबंध हो गया। सावलीमें अुन्होंने मुझसे रामायणका अभ्यास करना शुरू कर दिया था। पाखाना-सफाअी व ग्रामसफाअीमें भी वे सबसे आगे रहते और सब काम अपने हाथसे ही करनेका आग्रह रखते थे।

जब वे सेवाग्राममें आ गये, तब हम दोनोंकी आत्मीयता और भी बढ़ गअी। अुसके बाद सेवाग्रामका जो भी मकान बनता, अुन्हींकी देखरेखमें बनता। फिर तो कांग्रेस-अधिवेशनोंमें भी सारी रचना अुनसे ही करानेका बापूजी आग्रह रखते थे, क्योंकि अुन्होंने बापूजीकी सादी ग्रामीण कलाकी दृष्टिको पूरी तरह समझ लिया था।

मेरी गोशालाके नये मकानोंकी योजना बनानेके खर्चका अन्दाज लगाने और मकान बनवानेका काम भी बापूजी अुन्हें ही सौंपते थे। और मैं अुनकी सलाह, सूचना या संशोधनको मंजूर कर लेता था।

बापूजीके अवसानके बाद श्री भाअीलालभाअी पटेलके आग्रहसे वे वल्लभविद्यानगर, आणंदमें अिंजीनियरीके प्रोफेसर हो गये थे। वहां कुछ समय बाद अुन्हें केन्सरका असाध्य रोग हो गया, जिससे बचना असंभव था। मृत्यु अुनके सामने मुंह बाये खड़ी थी। लेकिन अुन्होंने तो बापूके अुपदेशको जीवनमें ओतप्रोत कर लिया था। अिसलिअे मृत्युसे अुन्हें किसी प्रकारका भय, शोक, या ग्लानि जैसा कुछ नहीं लगता था। वे सदा प्रसन्नतासे मृत्युका स्वागत करनेके लिअे तैयार रहते थे। अन्तमें अुसी रोगने अुनके प्राण लिये।

अुनका सारा परिवार बड़ा ही सुसंस्कृत है। बीमारीमें अुनके भाअी और भाभीने अुनकी अद्भुत सेवा की।

सेवाग्राममें रहते हुअे अुन्होंने बालकोबासे पंचदशी आदि वेदान्त और अुपनिषदोंका गहरा अध्ययन किया था। वहां अुनकी साधना बीजकी तरह बिलकुल मूक अवस्थामें चलती थी।

अुनका रहन-सहन अत्यन्त सादा था। अुनके पास कुछ पैसे थे। अुन्हींसे आश्रममें रहकर वे अपना गुजर चलाते थे। आश्रम या चरखा संघसे अुन्होंने कभी अेक पैसा भी अपने निजी खर्चके लिअे नहीं लिया था।

बापूजीका अुन पर अद्‌भुत प्रेम था। अुनकी रायको बापूजी सील-मोहर मानते थे। सेवाग्रामसे अुनके चले जानेके बाद हमें अुनकी बहुत याद आती थी, और पद पद पर अुनकी सलाह और मार्गदर्शनकी जरूरत महसूस होती थी।

मुझे बडा दुःख है कि बीमारीमें न तो मै अुनकी कोअी सेवा कर सका, न अुनके दर्शन ही कर पाया। 'परुषवचन कबहू नहिं बोलहिं' तुलसीदासजीके अिस वचनका प्रत्यक्ष दर्शन रामदासभाअीके जीवनमें मिलता था। अैसे मूक सेवकोंका जीवन और मृत्यु दोनो ही भव्य होते है। आज अुनका स्मरण करके मै धन्यताका अनुभव करता हू।

धन्य घडी जब होहि सतसगा।

अप्रकट सतमालिकाके अेक मोती

सेवाग्राम आश्रमके वृद्ध श्रीपत बाबाजीने अपनी अिहलोककी यात्रा पूरी कर ली। बाबाजीका शरीर कृश हो गया था। अुनके वियोगकी छायाने मनको अुदासीन बना दिया। अुनकी पवित्र स्मृतिसे हृदय भर आया। हमारे यहा कअी प्रकारके बाबा और महात्मा होते है। लेकिन बाबाजीने तो न कपडे रगे थे, न लबी दाढी बढायी थी। वे सच्चे बाबा और महात्मा थे। अुम्र सत्तर वर्षकी थी। दरअसल वे देहातके अेक सच्चे विद्वान बुजुर्ग थे।

सन् १९४२ में जब वे 'जितना कमायें, अुतना ही खायें' सिद्धान्तके अनुसार चलनेके कारण खुराकमें कमी हो जानेसे अत्यधिक कमजोर हो गये थे, तब अुन्हें पवनारसे सेवाग्राम आश्रम लाया गया था। अितनी अुम्रमें भी वे कताअीसे जितना कमा सकते थे अुतना ही खाते थे। मुझे ठीक पता नही है, लेकिन बाबाजीकी कमाअी अितनी कम होती थी कि अनेक बार मैंने अुनको चने या अरहर अुबाल कर ही खाते देखा था। बाबाजीकी अिस कठिन तपश्चर्याका मैंने विरोध किया था और साधारण ठीक खुराक लेनेकी राय दी थी। लेकिन बाबाजीका विचार तो सही था ही कि जितना कमाओ, अुतना ही खाओ।

यद्यपि बाबाजीसे पढानेका काम अधिक नही होता था, फिर भी जिनको वे आश्रममें पढाते थे अुनको जब तक शुद्धतम बोलते न आ जाता तब तक अुन्हें सतोष नही होता था। अितनी तत्परता व लगनसे वे पढाते थे। अुनके सब

अुच्चार बडे शुद्ध होते थे — चाहे मराठी हो, चाहे संस्कृत, चाहे हिन्दी। संस्कृत मराठीके समान ही अुनकी मातृभाषा लगती थी।

मुझे 'गीताअी' पढानेके समय, मैं यदि कभी स्थान पर नहीं रहा तो वे खुद मुझे खोजने आते और नाराज तक नही होते। नम्रता भी अुनमें गजबकी थी। दरअसल बाबाजी आश्रमकी शोभा थे, आश्रमके सच्चे सेवक थे और गायकी तरह सरल और प्रेमी थे। पूज्य विनोबाकी सूचनानुसार अुन्होंने बापूजीकी कुटिया संभालनेकी जिम्मेदारी ली थी, जो अुन्होंने अपनी सेहत ठीक रहने तक पूरी तरह निभायी। वे आत्मज्ञानी और वैराग्यवान भक्त थे। अुनकी ज्ञान-पिपासा आखिर तक बनी रही। वे करीब दो बजेसे जाग जाते और तबसे सुबहकी प्रार्थनाके समय तक 'केकावली', 'अुपनिषद्' या 'ब्रह्मसूत्र' अथवा अन्य कोअी अैसा ही ग्रंथ अुनके अध्ययनका विषय रहता। अुनको गीताअी, गीताजी, अुपनिषद्, ब्रह्मसूत्र आदि अनेक ग्रंथ कंठस्थ थे। प्रार्थनामें जब ये पढे जाते तब बाबाजी बिना पुस्तकके ही अिन्हें बोलते थे। अुनका अिन पुस्तकोंसे प्रगाढ परिचय था।

बाबाजी अपनी धुनके पक्के थे। वे मानते थे कि जो अपनी कमाअीसे अधिक खाता है, वह दूसरेका पेट काटकर ही खा सकता है। यह बात बुद्धिसे माननेवाले तो बहुत मिलेंगे, लेकिन अिस विचार पर अमल करनेवाला माअीका लाल कोअी बिरला ही मिलेगा। बापूजी अुनको बहुत ही आदरकी दृष्टिसे देखते थे। आश्रमका हर काम, घंटी बजानेसे लेकर चक्की, चरखा और झाडू लगाने तकका काम, वे प्रेमसे करते थे। वे बडे व्यवस्थित रहते थे। अुनके कपड़े कभी भी बिखरे हुअे मैंने नहीं देखे। सब बडे साफ-स्वच्छ रहते थे। आश्रममें रहते हुअे अुन्होंने बापूजीका भी कम-से-कम समय लिया। बापूजी खुद जब अुनको कोअी बात पूछते, तभी वे अुतनी बात कर लेते थे।

बाबाजीकी नम्रता तुकाराम जैसी ही थी। जब कोअी आध्यात्मिक चर्चा छिडती, तो बाबाजी बालकोंकी तरह बोल अुठते, "भाअू, अितकें सर्व करूनहि आतून कोराचि राहिला!" (भाअी, अितना सब करके भी अंदरसे कोरा ही रहा!) और तुकारामके शब्दोंमें आगे सुनाते, "मापून झिजली मापाची या परी। जाळावी हे थोरी लाभ विण।" (माप-माप कर घिस गया। अिस प्रकारके बडप्पनको जला देना चाहिये। लोग मुझे महात्मा कहते हैं, लेकिन मैं तो अंदरसे खाली ही रहा।) महाराष्ट्रमें पायलीसे अनाज मापनेका रिवाज है। पायली बार बार भरती है और घिसती है और अंतमें

खाली ही रह जाती है। जब अहंभावका अत्यधिक अभाव रहता है, तब ही अैसी नम्रताकी भाषा निकल सकती है। मनुष्यकी बाह्य जगतमें ख्याति अलग चीज होती है और आतरिक साधना अलग।

स्व० श्रीपत बावाजीको चाहे कोअी जाने या न जाने, अुनका स्थान सतजनोकी गुप्त मालिकामें कायम रहेगा। आश्रममे पहली पवित्र मृत्यु स्व० धर्मानन्दजी कौशाम्बीकी हुअी थी, जिन्होंने अपना शरीर चलने लायक न समझ कर अेक मासका अुपवास करके अुसे छोडा था, और दूसरी पवित्र मृत्यु बावाजीकी हुअी।

प्रभुसे प्रार्थना है कि बावाजीके जैसी सरलता, जीवनके सबधमें जागृति और 'जितना कमाओ, अुतना ही खाओ' के सिद्धात पर अत तक अमल करनेका बल हमको भी दे।

बापूजीके बेदाग साथी

मध्यप्रान्तीय हरिजन-सेवक-सघके अध्यक्ष श्री तात्याजी वझलवारका स्वर्गवास १७ दिसम्बर, १९५५ को लबी बीमारीके बाद नागपुरमें हो गया। यह दुखद समाचार मुझे अुनके नाम लिखे पत्रके जवाबमें मिला। काफी दिनोंसे अुनकी तबीयत खराब थी। छह-सात महीने पहले अुनके पेटका आपरेशन बम्बअीमें हुआ था। अुसके बाद वे सभल ही नहीं सके। श्री तात्याजी नागपुरके अेक महाविद्यालयके मुख्य अध्यापक थे। जहा तक मुझे याद है, सन् १९३९-४० के लगभग अुन्होंने सेवाग्राम आश्रममें बापूके पास आना आरभ किया था। विद्यालयसे थोडा अवकाश मिलता तो वे आश्रममें दौड आते, बापूजीसे प्रेरणा लेते, आश्रमवासियोंको अपना स्नेह देते और चले जाते। महीनेमें दो-चार दिन आश्रममें रहनेका अुनका आग्रह रहता था।

धीरे-धीरे नौकरी परसे अुनका मन हटता गया, और बापूजीके रचनात्मक कार्योंमें दिलचस्पी बढती गअी। अुन्होंने त्यागपत्र देनेका निश्चय किया, तो विद्यालयके अुच्च अधिकारियोंने अुनका त्यागपत्र मजूर न करके सेवाके लिअे अुनको लबा अवकाश दिया। क्योंकि वे विद्यालयके प्राण थे और किसी भी कीमत पर अधिकारी और विद्यार्थी अुनको छोडना नहीं चाहते थे। थोडा समय देकर भी वे विद्यालयके मुख्याध्यापक ही बने रहें, अैसी सबकी अिच्छा थी। अिस अिच्छाके वश होकर अुन्होंने थोडे समय तक निभानेकी कोशिश की। लेकिन वे बापूजीकी तरफ अितने अधिक आकर्षित हो गये थे कि बड़े

तैसे-तैसे अुनकी सुगन्ध प्रखर होती गअी। अुनकी देह गअी लेकिन अपनी सेवा और सुगन्धरूपी बहुत बडी पूजी वे हमारे लिअे छोड गये है। हम अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग कर सकें, यही अुनके प्रति हमारी श्रद्धाजलि होगी।

मध्यप्रदेशके बाहर शायद अुनको बहुत कम लोग जानते हैं, क्योंकि वे अखबारी दुनियाके झमेलेसे बिलकुल अछूते थे। तो भी अैसे मूक सेवकोंकी सेवाकी सुगन्ध वायुके साथ सारे आकाशको सुगन्धित करनेमें समर्थ होती है। अैसे बेदाग सत्पुरुषोंका जीवन और मृत्यु दोनों धन्य होते हैं। अुनका पवित्र स्मरण मनको पवित्र बनाता है। अुनके वियोगमें भी शोकके बजाय सात्विक प्रेरणा अधिक मिलती है।

प्रभुसे प्रार्थना है कि वह हम सबको अुनके सत्पथ पर चलनेका बल दे। बापूजीके अैसे बेदाग साथी न मालूम देशमें कितने पडे होंगे।

अनोखा महापुरुष

पू० श्रीकृष्णदासजी जाजू, जिन्हें हम काकाजीके सबोधनसे पुकारते थे, सचमुच ही बापूजीके बाद हमारे परिवारके काकाजीका पूरा फर्ज अदा करते थे। सबकी सार-सभाल, सबके सुख-दु:खकी चिन्ता, सबकी कठिनाअियोंको सुलझानेमें मदद — अिसे अुन्होंने अपना ही फर्ज समझ लिया था। बापूजीके बाद हमारे परिवारमें तीन बडे बचे थे। पू० किशोरलालभाअी, पू० जाजूजी अेव पू० विनोबाजी। किशोरलालभाअीका स्थान बडे भाअीका था, जो अत समय तक अुसे निभाते हुअे हमें छोडकर चले गये। काकाजीने कुछ लम्बे समय तक निभानेकी ही गरजसे हार्नियाका आपरेशन कराना मजूर किया था। डॉक्टरकी राय थी कि यदि आरामसे अेक जगह रहा जाय तो आपरेशनकी जरूरत नहीं है। लेकिन काकाजीके लिअे तो 'राम काज कीन्हे बिना मोहि कहा विश्राम' हनुमानका यह वचन सार्थक था। तीसरे हैं विनोबाजी, जो अपने रुग्ण शरीरको लेकर केवल आत्मबलसे ही भूदानका गोवर्धन पहाड अपने सिर पर अुठाये घूम रहे हैं। लेकिन कुटुम्बके बारेमें जो दिलचस्पी और लगन काकाजीमें थी वह अुनकी अपनी निराली वस्तु थी।

बापूजी और विनोबाके कामसे अुन्हें अेक क्षण भी विश्राम लेना असह्य था। सूर्यकी गतिकी भाति अुनका कार्य सतत चलता ही रहता था। आपरेशनके बाद हार्नियाका कष्ट मिटनेसे अुस कामको और भी वेगसे कर सकेंगे,

अिस अुत्साहसे ही आपरेशनकी बात अुनके मनको रुची थी। डॉ० बलवीर नारायण शर्माकी श्रद्धा और कुशलताने भी अुन्हें राजी करनेमें मदद की थी। ता० १४–१०–'५५ को आपरेशन बडी सफलतापूर्वक सवाअी मानसिंह अस्पताल जयपुरमें हुआ। किसी प्रकारकी शकाको स्थान नही था। वे बडे आनन्दके साथ प्रगति कर रहे थे। दूसरे दिन सवेरे अुन्हें घर ले जानेकी बात थी। अिसके लिअे मैंने रातमें ही अुनके लिअे अेक तखत अपने केन्द्रसे भिजवाया था। रातको डेढ बजे वे जगे और अुन्होने पानी मागा। नारायण, अुनका कनिष्ठ पुत्र, सेवामें था। वह अुठा और अुसने पानी दिया। काकाजी बोले, 'आज कुछ गर्मी है।' नारायणने कहा, 'नही, गर्मी तो नही है।' 'अच्छा खिडकी खोल दो।' खिडकी खोली गअी। बस, गर्दन ढीली पड गअी। नारायणने डॉक्टरोको पुकारा। डॉक्टर वहा पहुचे। लेकिन वहा तो १०–१५ मिनटमें ही हस अुड चुका था।

मेरे मन कुछ और थी और कर्ताके कुछ और।

पू० काकाजीका जीवन अपने ढगका अनोखा था। अुनकी अपनी मौन साधना बडेसे बडे योगिराजोको भी मात करनेवाली थी।

शक्नोतीहैव य सोढु प्राक् शरीर-विमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भव वेग स मुक्त स सुखी नर ॥*

गीताके अिस श्लोकके अनुसार जीवनको अणिशुद्ध बनानेकी अुनकी लगन रोम रोमसे प्रगट होती थी। भूदान, सपत्तिदान तथा व्यवहारशुद्धिके लिअे अुनके मनमे जो ज्वालामुखी धधक रहा था, अुसकी आच और प्रकाश अुनके शब्द शब्दसे टपकता था। अुन्होने सालो तक मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और अखिल भारत चरखा-सघके मत्रीका काम किया। अुन्होने मध्यप्रदेशके मुख्य-मत्री और भारतके वित्तमत्री बननेसे नम्रतापूर्वक अिनकार कर दिया। अुनके लिअे यह बडी बात नही थी, सहज और सरल काम था। क्योकि अुनके जीवनका लक्ष्य अिससे कही अूचा था।

पू० काकाजी अेक अैसे सज्जन पुरुष थे जिनके दर्शनने युधिष्ठिरकी याद आती थी। लेकिन व्यासजीने युधिष्ठिरके मुखसे 'नरो वा कुजरो वा' कहला

* देहान्तके पहले जिस मनुष्यने अिस देहमें ही काम और क्रोधके वेगको सहनेकी शक्ति प्राप्त की है, अुस मनुष्यने समत्वको प्राप्त किया है, वह सुखी है।

पर अुनके जीवनको जो धब्बा लगाया है, अुस प्रकारका धब्बा काकाजीके जीवनमें मिलना कठिन है। हमारे परिवारके वे 'प्रिवी कौंसिल' थे। किसी व्यावहारिक प्रश्नके लिअे बापूजीके पास समय न होता तो वे कहते, "जाओ, जाजूजीके पास चले जाओ। जैसा वे कहें वैसा करो, फिर मेरे पास नहीं आना।"

जब सेवाग्राममें बापूजीकी लंगोटीमें से संसार बढ़ा तो मैंने पूज्य जमनालालजीके खेती-कार्यकर्ताओंको वहांसे अपना झोली-झंडा अुठानेका नोटिस दिया। अुन्होंने जमनालालजीसे कहा कि अगर मालगुजारी रखनी हो तो यहां खेती रखना भी जरूरी है। जमनालालजीने बापूजीसे सारे सेवाग्रामका कब्जा देनेकी बात की, क्योंकि वे तो बापूजीके वहां जाते ही अुस गांव पर तुलसीपत्र रख चुके थे। लेकिन बापूजी जमींदार बनना पसन्द नहीं करते थे। आश्रमको तो सिर्फ काश्तकी जमीन चाहिये थी। प्रश्न खड़ा हुआ — या तो सब लो नहीं तो जमीन भी नहीं मिलेगी। अिस पर मेरी और जमनालालजीकी बापूजीके सामने मीठी टक्कर हुअी, क्योंकि जमनालालजी मीठे थे। मामला काकाजीकी कोर्टमें गया। अुन्होंने देखा और फैसला दिया कि जमींदारीके साथ काश्तकी जमीनका कोअी सम्बन्ध नहीं है। जमनालालजीकी हार हुअी और मैं जीता।

दादाजीका प्रथम दर्शन मुझे वनस्थली (अुस समयकी जीवनकुटीर) राजस्थानमें १९३४ में हुआ था। लेकिन १९३५ में मैं जब बापूजीके साथ मगनवाड़ी (वर्धा) और बादमें सेवाग्राम गया तो वहां अुनका सच्चा परिचय हुआ। जब दादाका रस चालू होता तो मैं अुनके पास जाकर पूछता कि रस चालू हो गया है कितना भेजूं। वे पूछते, 'भाव क्या रहा है?' मैं कहता, '[illegible] भावसे अखबारमें क्यों पढ़ते हैं?' वे कहते, 'अरे भाअी, मुझे अपना हिसाब देखना पड़ता कि कौनसी चीज कम करो तब दिया जा सकता है।' अुस समय अुनका मासिक खर्चा बजट ३० रु० था। अगर मैं ज्यादा भेजता, और अुसमें डेढ़ पावभी ज्यादा होती तो दूसरे दिन अुतना कम भेजनेको कहते।

अेक बार अुन्हे सीकरसे अजमेर जाना था। मै भी अपने कामसे अुधर जा रहा था। अुनके साथ ही गया क्योकि वे किसीको सेवाके लिअे साथ नही रखते थे और जहा तक सभव होता तीसरे दर्जेमें ही सफर करते थे। फुलेरासे गाडी बदलनी थी। वहासे अजमेरके लिअे दो डिब्बे लगते थे। मैंने अेक सीट पर अुनका बिस्तर लगा दिया। देख कर वे बोले, 'अरे भाअी, तुमने मेरा बिस्तर लगा दिया तो दूसरे लोग कहा बैठेंगे? अिसे समेट लो।' मैंने समेट लिया। गाडीमे खूब भीड हो गअी। अजमेर तक काफी कष्टमें गये लेकिन अुन्होने अुफ तक न की। सीकरमें मैंने अुन्हे थोडी मालिशके लिअे राजी कर लिया और यह भी सूचना की कि आप किसीको साथमें रखा करे, अब आपकी अुम्र अकेले घूमनेकी नही है। थोडी थोडी मालिश भी कराते रहे तो शरीरको मदद मिल सकती है। वे बोले, 'भाअी, अब अिस शरीरको और कितने दिन रखना है? अिससे बहुत काम लिया है। अिसके लिअे दूसरेका समय क्यो खर्च करू?'

जब २ अक्तूबरको काकाजी जयपुर आये तो मैंने दुर्गापुरा आकर मेरी कुटी देखनेकी बात की। वे हसकर बोले, 'अरे भाअी, वह जमीन तो मैंने पवित्र की है। मै वहा गया था। अब तो समय नही है।' पर मैंने ८ तारीखको अुन्हें राजी कर ही लिया। यहा आये। डॉ० शर्मा भी साथ थे। शर्माजी अुनको अमेरिका आदिकी बहुतसी बातें सुनाते रहे। मै भोजन बनाने लगा तो बोले, 'देखो, बलवतसिंह, तुम आश्रमवासी हो और आश्रमवासियोको भोजनकी झझटमे नही पडना चाहिये। आओ, मेरे पास बैठकर कुछ बात करो।' मैंने कहा, 'आपकी बात तो ठीक है। लेकिन स्वभाव पड गया है, अुसका क्या करू?' बोले, 'अच्छा तो जल्दी खिला दो।' अुन्होने बडे प्रेमसे भोजन किया और सब देखकर चले गये। मुझे क्या पता था कि सचमुच अिस स्थानको पवित्र करनेका अुनका वह अन्तिम दिन था।

अेक बार राजस्थान गोसेवा सघकी सदस्यताका गायके घीका नियम कुछ ढीला करनेकी सूचना आअी। हम लोग कुछ ढीले पडे। प्रश्न काकाजीके पास गया तो कडक कर बोले, 'अगर तुम लोग राजस्थानमें रहकर भी गायके घीका व्रत नही पाल सकते तो गोसेवा कैसे करोगे? मै तो सारे हिन्दुस्तानमें घूमता हू और गायके घी-दूधके व्रतका पालन करता हू। अगर थोडी अडचन भी आये तो अुसे सहन करनेकी तैयारी होनी चाहिये।' हमारे पास

अिनका क्या अुत्तर हो सकता था? हम सावधान हो गये और अपने व्रतको हमने ढीला नहीं किया। यह थी अुनकी नियम-पालनकी कड़ाअी।

जब अुनके आपरेशनकी बात तय हुअी तब राधाकृष्णजीके मनमें सहज यह शंका हुअी कि कहीं आपरेशन सफल न हुआ तो? अिस खयालसे अुन्होंने काकाजीसे पूछा, "आपको कुछ कहना तो नहीं है?" अुन्होंने अुत्तर दिया, "नहीं, मुझे कुछ नहीं कहना है। मेरे मनमें अैसा कुछ कहनेको है ही नहीं।" आपरेशनसे पहले अुन्होंने कहा, 'मुझे तो सामान्य वार्डमें रहना है।' अन्तमें साथियोंके आग्रहसे अलग छोटे कमरेमें रहना अुन्होंने मान लिया। लेकिन अुस समय कमरा खाली न होनेसे अुन्हें १० रु० रोजके किरायेके बड़े कमरेमें रखा गया, जिसमें सब प्रकारकी सुविधा थी। वह कमरा अुन्हें रुचता न था। जब छोटा कमरा खाली हुआ तो साथियोंने बड़ेमें ही रहनेकी अुनसे बिनती की। वे बोले, अरे, मुझे अितने आराममें क्यों रखते हो? कहते कहते अुनकी वाणी रुक गअी और हिचकी बांधकर रोने लगे। अुनकी अिस भावनाको देखकर हमारे मुंह बंद हो गये और हम अुनको तुरंत छोटे कमरेमें ले गये। अुससे अुनको बड़ी प्रसन्नता हुअी। यह था अुनका गरीबीसे जीनेका महामंत्र। काकाजीने कभी अपने पास घड़ी या फाअुन्टेन पेन तक नहीं रखी, जो आजके जीवनकी बहुत ही जरूरी चीजें बन गअी है। गाड़ीमें जाना होता, तो हमेशा १०-१५ मिनट पहले ही स्टेशन पर पहुंच जाते। अिसलिअे गाड़ी छूट जानेका तो प्रश्न ही नहीं रहता था।

पू० काकाजीके जीवनसे हम जितना भी पाठ लें अुतना ही थोड़ा होगा। अैसे अनोखे सत्पुरुष संसारमें ही कभी कभी आते हैं। और

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥ *

का पाठ देकर चले जाते हैं। पीछे रहनेवाले अुनके आदर्शोंसे जितना लाभ अुठा सकें अुठायें।

मुझे अुनकी पवित्र आत्माकी शांतिके लिअे प्रार्थना करनेका तो क्या अधिकार है? क्योंकि अुनकी आत्मा तो शांत तथा प्रभुमय ही थी। अुन्हें अपनी नम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुअे अितना ही कह सकता हूं:

---

* जो जो आचरण अुत्तम पुरुष करते हैं, अुनका अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। वे जिसे प्रमाण बनाते हैं, अुसका लोग अनुसरण करते हैं।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुण शशाङ्क, प्रजापतिस्त्व प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्व, पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥
नम पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते, नमोऽस्तु ते सर्वत अेव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्व, सर्वं समाप्नोपि ततोऽसि सर्व ॥ *

भगवान हम सबको अुनके छोडे हुअे अधूरे कामको पूरा करनेका बल दे यही प्रार्थना है।

१६

बापूके विभिन्न पहलुओंका दर्शन

वज्रसे भी कठोर

अेक दफा वादा जिलेके कुछ हरिजन डिस्ट्रिक्ट बोर्डमें सीट चाहते थे। वह अुनको मिल नही रही थी, अिसलिअे वे बापूजीसे मिले। बापूजी अपने ढगसे अुस बातकी छानवीन करके तथा वहाके कार्यकर्ताओंसे पूछताछ करके अुन्हें न्याय दिलानेका प्रयत्न करना चाहते थे। लेकिन हरिजन भाअी अपने ही ढगसे तत्काल न्यायकी माग करने लगे। बापूजीको यह बात ठीक नही लगी। तो अुन्होंने बापूजीके खिलाफ ही सत्याग्रह कर दिया और आश्रमके दरवाजे पर अुपवास आरभ कर दिया। बापूजीने कहा, "आप लोग दरवाजे पर बैठे हैं, आपको तकलीफ होती है। आश्रममें ही बैठें तो कैसा हो? मै आपको मकान देता हू।" बाका स्नानघर अुनके लिअे खाली कर दिया और आश्रमवालोंसे कह दिया कि अिनको किसी प्रकारकी तकलीफ न हो। अुनमें स्त्रिया भी थी। वे लोग समझते थे कि शायद हमारे और विशेषकर स्त्रियोंके अुपवाससे बापूजी घबरा जायेंगे और हमको सीट दिला देंगे। लेकिन बापूजी तो हिमालयकी तरह

---

* आप ही वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्र, प्रजापति और प्रपितामह हैं। आपको हजारो बार मेरा नमस्कार है और फिर फिर आपको मेरा नमस्कार है।

हे सर्व, आपको आगे, पीछे, सब ओरसे मेरा नमस्कार है। आपका वीर्य अनन्त है, आपकी शक्ति अपार है, सब कुछ आप ही धारण करते हैं, अिसलिअे आप सर्व हैं।

अटल रहे। अुन्होंने कह दिया कि योग्य रीतिसे जितना मैं कर सकता था अुतना मैंने किया है। अिस प्रकारसे हठपूर्वक अुपवास करके यदि आप मर जायेंगे तो भी मैं परवाह नहीं करूंगा। रोज सुबह-शाम बापूजी अुनके पास जाते और अुनसे बड़े प्रेमसे बातें करते थे। अुनको किसी चीजकी जरूरत पड़े तो आश्रमसे मदद लेनेके लिअे कहते थे। आश्रममें भी कह दिया था कि अिनको किसीके बरतावसे अैसा प्रतीत नहीं होना चाहिये कि ये हमारे विरोधी हैं। आखिर वे लोग हारे और अुपवास बंद करके चले गये।

अजीब मांगोंकी पूर्ति

अेक दफा सेवाग्राममें हैजा फैल गया था। सुशीलाबहनने कहा कि सेवाग्रामके पाससे अेक नाला बहता है और सेवाग्राममें अुसमें पैर डालकर जाना पड़ता है। बरसातके दिनोंमें तो अिसीसे हैजा फैलता है। अिस पर अैसी व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे पानीमें पैर न भीगें। बापूने शामको मुझे बुलाया और कहा, "देखो, सुशीला जब सेगांव जाती है तो रोज अुसके पैर नालेमें भीग जाते हैं। कल १० बजे अुनको जाना है। अुसके पहले नाले पर पुल बंध जाना चाहिये।" बापूजीके सामने तो हां कहना ही पड़ता। अिसलिअे मैंने कह दिया, "जी, बन जायगा।"

चाहती है। तो शाम तक वहा मकान बन जाना चाहिये।" मनमें तो मुझे बहुत हसी आयी कि बापूजी कैसी शेखचिल्लीकी-सी बात करते हैं। लेकिन ना थोडे ही कह सकता था। बापूजीको हा कहकर मैं चला आया। सोचने लगा, क्या हो सकता है? विचार करते करते ध्यानमें आया कि खेतकी रखवालीके लिये मचान बनाते है वैसा गोल-सा कुछ बनाया जाय। उसके ऊपर गोल छप्पर भी बनाया जाय। बस, गाडीमें लकडी, रस्सी, छप्पर बनानेका सारा सामान और एक चलता-फिरता पाखाना ले गया। पाच बजे तक टेकरी पर मीराबहनके लिये सुदर झोपडा बन गया। इसकी रिपोर्ट मैंने बापूजीको दी। बापूजीने मीराबहनसे तैयार होकर जानेके लिये कहा। मीराबहन गयी और झोपडा उनको बहुत पसद आया।

इस प्रकारसे बापूजीके पास अजीब अजीब मागें आती थी और अजीब ढगसे बापूजी उन्हें पूरा करते थे। इसमें बापूको कितना आनद आता था, इसकी कल्पना वे लोग नही कर सकते थे जो यह मानते थे कि बापूके पास इतने बडे बडे काम है फिर भी आश्रमके लोग छोटे छोटे कामोंके लिये उनका इतना वक्त ले लेते है। इन छोटे छोटे कामोमें भी बापू बडे कामका दर्शन कर लेते थे।

'कभी नहीं हारना'

मईका महीना था। बापूजी हवापानी बदलनेके लिये तीथल जा रहे थे। मैं स्टेशन तक उनके साथ गया। आश्रममें कई प्रकारके झगडे चलते थे, जिनके कारण मैं काफी दुखी हो गया था। मैंने सब बापूजीको सुनाया। बापूजीने भुसावल जाकर मुझे पत्र लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे साथ ठीक बाते हुई। तुम्हारे समाजके साथ रहनेका इल्म सीख लेना है। और सबके गुणोको देखो। दोषोको भूल जाओ। गायोंके बारेमें सेवायज्ञ आरभ किया होगा।

१०-५-'३७, भुसावल बापूके आशीर्वाद

मैं सेवाग्रामसे कुछ ऊब गया था और वहासे जानेकी इच्छा मनमें घर करने लगी थी। मैंने बापूजीको पत्र लिखा, जिसके जवाबमें उन्होंने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। इसके बारेमें मुन्नालालसे पूछता हूं। तुम्हारी दलील सही तो लगती है।

मैं न तुमको निकालूंगा, न किसीको। अपने आप भाग जावें अुनको रोकूंगा नहीं। और सबसे यथाशक्ति सेवा भी लूंगा। यों तो कुछ न कुछ सब करते हैं, लेकिन मेरे हिसाबसे वह काफी नहीं है। 'वचन नहीं हारना भले सारी जान जावे' यह भी मेरे जीवनका अेक मंत्र है। सबको रहने दिया मैंने, अब मैं सबको रुखसत दे दूं तो मैं हारूं और मूर्ख बनूंगा। मूर्ख बनना आपत्ति नहीं है, वैसे तो मूर्ख हूं पर यह आपत्ति होगी। अिसलिअे हारनेकी बात मैं कैसे सहूं?

आज किशोरलालभाअी और गोमतीबहन बम्बअी गये।

२९-५-'३७, तीथल बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति

कुछ दिन पश्चात बापू तीथलसे लौट आये। मैंने ब्रह्मचर्यके विषयमें बापूजीसे अपने मनकी शंका लिखी थी। अुत्तरमें बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह

प्रतिज्ञाको कायम रखनेके लिये किसी भाओीका सहारा ले सकता था। लेकिन मेरी प्रतिज्ञाका अैसा व्यापक अर्थ था नही, मैंने कभी किया नही।

अब रही अमलकी बात। मैंने मेरे निर्णयका अमल शुरू किया अुसके बाद ही भाष्य चला। प्रथम भाष्यमें जो अमल तीन चार दिनके बाद करनेकी बात थी, अुसको मैंने दूसरे ही दिन शुरू कर दिया। जहा तक मेरी निर्विकारता अधूरी रहेगी वहा तक भाष्यको होना ही है। शायद वह आवश्यक भी है। सपूर्ण ज्ञान मौनसे ज्यादा प्रगट होता है, क्योकि भाषा कभी पूर्ण विचारको प्रकट नही कर सकती। अज्ञान विचारकी निरकुशताका सूचक है, अिसलिअे भाषारूपी वाहन चाहिये। अिस कारण अैसा अवश्य समझो कि जहा तक मुझे कुछ भी समझानेकी आवश्यकता रहती है वहा तक मेरेमें अपूर्णता भरी है अथवा विकार भी है। मेरा दावा बहुत छोटा है और हमेशा छोटा ही रहा है। विकारो पर पूर्ण अकुश पानेका अर्थात् हर स्थितिमें निर्विकार होनेका सतत प्रयत्न करता हू। काफी जाग्रत रहता हू। परिणाम अीश्वरके हाथमें है। मै निश्चित रहता हू। अगर अब कुछ चीज बाकी रह जाती है अथवा कुछ नयी चीज याद आती है तो मुझे अवश्य लिखो। तुम्हारा खत वापिस करता हू।

सेगाव, ११–६–'३८ बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति दोनोमें मुझे विरोध-सा लगता था। मैंने पूजीसे अिस बारेमें प्रश्न किया। अुत्तरमें बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिह,

ब्रह्मचर्यमें अेक वस्तु यह है कि वीर्य निष्फल न होना चाहिये। जब अुसकी अूर्ध्व गति होती है तब माना जाता है कि वह निष्फल नही जाता है। बात सही नही है। जो मनुष्य क्रोध करता है, वह वीर्यका दुर्व्यय करता है अथवा नाश करता है अिसलिअे वह निष्फल हुआ। अिसी कारण ब्रह्मचर्यका अितने अशमें नाश हुआ। अिसी तरह जो मनुष्य भोग-वृत्तिसे स्त्रीसग करता है अुसके वीर्यका नाश होता है। क्योकि वह निष्फल जाता है। जब मनुष्यको किसी प्रकारकी विषयवासना नही है, स्त्री-पुरुष दोनो सन्तान चाहते है और अिसी कारण मिलन होता है तब वीर्य सपूर्ण-तया सफल होता है। अिसलिअे अैसे दपति सपूर्णतया ब्रह्मचारी है। अैसे

दंपति शायद करोडोंमें अेक मिलें। तब अेक ही वक्त अुनका मिलन होता है। अुसके सिवा जैसे भाअी-बहन रहते हैं अुसी तरह रहते हैं। मनसे, वाचासे, स्पर्शसे अथवा किसी तरह विषयतृप्ति नहीं करते हैं। अुनके, संतान अुत्पत्तिके, कारण बना हुआ मिलन किसी प्रकारसे भोगकी व्याख्यामें नहीं आता है। अितनेमें तुम्हारी शंकाका समाधान होना चाहिये।

सेगाव, ८–७–'३८ बापूके आशीर्वाद

छोटी-छोटी बातोंमें बापूका अुपदेश

अेक रोज गोशालाके चरागाहमें गावके लोगोंके जानवर चर रहे थे। अक्सर ये लोग आगापीछा देखकर अिस तरहसे घास चरा लेते थे। मैंने अेक लडकेको धमकाया और अुसके साथ थोडी धक्कामुक्की भी की। अुसने जाकर अपने बापसे शिकायत की। अुसका बाप पहलेसे ही मुझसे नाराज था, क्योंकि जो जमीन हमने मालिकसे वाजिब दाम देकर चरानेके लिअे ली थी अुसको ये लोग बहुत कम दाम देकर चराते थे। लोगोंको यह पसन्द नहीं था कि जमीनके मालिकको अधिक दाम मिलें। अिसलिअे अुस आदमीने मेरे खिलाफ अेक तूफान-सा अुठाया। वह ४०–५० आदमी लेकर बापूके पास शिकायतके लिअे आया और बहुत ही बढा-चढाकर शिकायत की। मैंने जो घटना घटी थी वह सब बापूके सामने स्पष्टतया रख दी। बापूजीने अुन लोगोंसे कहा कि 'किसी भी हालतमें बलवतसिंहको तुम्हारे बच्चे पर हाथ नहीं अुठाना चाहिये था। अिस बार तो मैं अुसे माफ करता हू, लेकिन अगली बार अैसी घटना होगी तो अुसे सेगाव छोडना पडेगा। क्योंकि मैं तो तुम्हारा सेवक बनकर यहा बैठा हू, स्वामी बनकर नहीं। आप लोग जिस रोज नापसन्द करेंगे अुसी रोज मैं यहासे चला जाअुगा।' अिस घटनासे मुझे काफी दुःख पहुचा।

मैंने बापूजीको लिखा कि "अिस प्रकारकी घटना तो खेती और चरागाहके बारेमें घटती ही रहती है और लोगोंको नुकसान करनेकी आदत पड रही है। मैं भी अपने क्रोधको नहीं रोक सकता हू। . . खास तौरसे मेरे खिलाफ वातावरण तैयार करनेके लिअे लोगोंको आपके पास लाया। अब मेरी भी अिच्छा सेगावमें रहनेकी नहीं है। मैं कहीं बाहर जगलमें चला जाना चाहता हू।"

बापूजीने लिखा

चि० बलवतसिह,

अुपाय अेक ही है। कलका कडआ घूट पी जाना। क्रोधको मारनेका प्रयत्न करते ही रहना। गोसेवाके खातिर क्या नही हो सकता है? अेकांतमें तो क्रोध हो नही सकता। जहा हो सकता है वही अुसे जीता जा सकता है ना? हम सेवक हैं। सेवक स्वामी पर हाथ कैसे अुठाये?

२९-७-'३८ बापूके आशीर्वाद

आश्रमकी खेतीकी व्यवस्था के हाथमें थी और गोशालाका काम मैं देखता था। मेरी गायें कभी कभी खेतमें घुसकर फसल चर जाया करती थी। को लगता था कि मैं जान-बूझकर फसल चरवा देता हू। अिससे हम दोनोंके बीच सघर्षके मौके आते रहते थे। अिस पर मैंने बापूजीको लिखा कि आप खेती और गोशाला दोनोंका काम के हाथमें दे दें तो यह हमेशाका झगडा मिट जाय। मेरे पत्रके अुत्तरमें बापूजीने लिखा

चि० बलवतसिह,

सच्ची माता और झूठी माताकी बात सुनी है न? झूठी माताने कहा, 'अच्छा, लडकेका टुकडा करो। अेक मुझे और दूसरा दूसरी दावेदारनी है अुसे दे दो।' सच्चीने काजीसे कहा, 'अगर यहा तक नौबत आती है तो मेरा दावा मैं खीच लेती हू, भले लडकेको यह औरत ले जाय। जिंदा तो रहेगा।' देखें, अब सच्चा गोसेवक कौन सिद्ध होता है। दोनो हो सकते हो या दोनो निकम्मे भी साबित हो सकते हो या अेक सच्चा, अेक झूठा। मेरे नजदीक तीन प्रश्न हैं। 'कभी नही हारना भले सारी जान जावे।'

२०-९-'३८ बापूके आशीर्वाद

ये पत्र मैंने अिसलिअे दिये हैं कि पाठकोंको पता चले कि बापूजी छोटी छोटी बातोंमें किस तरहसे अुपदेश देते थे और हमारे जीवनको आगे बढानेकी कोशिश करते थे। अुनके पास अेक बार जो ठहर गया अुसमें अगर कोअी नैतिक दोष नही है या अगर कोअी नैतिक दोष अुत्पन्न हो जाय और अुसे स्पष्ट कबूल करके सुधारनेकी वह कोशिश करे तो मनुष्यके अूपरी स्वभावके कारण बापूजी अुसका कभी त्याग नही करते थे। अिस प्रकार अुन्होंने बडे-बडे नेताओंसे लेकर छोटे छोटे कार्यकर्ताओंको सहन किया और अुनको आगे

बढाया। आज अिसीलिअे तो छोटे और बडे सब अुनके अभावको महसूस करके दिल ही दिल रोते हैं, क्योंकि अुनके जैसा सबके जहरको पीनेवाला शिव-रूप पिता मुझे कोअी नजर नही आता है। अुन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपसे हिन्दुस्तानके अनेक स्त्री-पुरुषोंके जीवनमें अितनी गहराअीसे प्रवेश किया था जिसकी अुपमा देना कठिन है। हम शरीरसे अुनके पास थे अिसलिअे कुछ लोग जानते हैं और हम भी बता सकते हैं। लेकिन अनेक अैसे लोग हैं जिन्होंने शरीरसे अुनका दर्शन भी नही किया था, फिर भी जो अुनके बहुत नजदीक थे। हम लोग किसी निमित्तसे भले शरीरसे अुनके पास पहुच गये थे, लेकिन दूर रहनेवाले कितने ही लोग अुनके साथ बडा गहरा सबध रखते थे। जब कभी मुझे अैसे लोगोंके दर्शन हो जाते हैं तो मेरा सिर अुनके चरणोंमें झुक जाता है। सचमुच ही अीश्वर अपना काम अजीब ढगसे करता है।

अन्तमें स्थिति यहा तक पहुची कि मुझे गोशालाका काम छोड देना पडा। चार्ज देते समय गोशालाका हिसाब बनाकर मैंने बापूजीको भेजा। बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत वापिस करता हू। अक्षर पहलेसे ठीक तो है परतु सुधारके लिअे काफी जगह है। ठूस ठूसकर लिखना नही चाहिये। बायें बाजू पर हमेशा जगह होनी चाहिये। शब्द शब्दके बीचमे भी जगह रखी जाय। कलमकी नोक पतली होनी चाहिये। और यह सब सुधार भी गो-माताके निमित्त करना है, यह सकल्प करना। सकल्पकी महिमा तो जानते हो न?

जो हिसाब तुमने भेजा है वह तो अच्छा है ही। तुम्हारी प्रामाणिकताके बारेमें, तुम्हारी नि स्वार्थ बुद्धिके बारेमें कभी शका थी ही नही।

शातिसे रहते हो यह अच्छा ही है। शरीर मजबूत कर लो। हिन्दी ज्ञानमें वृद्धि करो।

बारडोली, १८-१-'३९ बापूके आशीर्वाद

अिस प्रकार बापूजी छोटीमें छोटी बातका सूक्ष्मतासे ध्यान रखते थे और हमें आगे बढनेकी प्रेरणा देते थे।

राजकोट-प्रकरण और बाका पत्र

अिसी समय राजकोटका प्रकरण शुरू हुआ। बापूजी अुसको निबटानेका प्रयत्न कर रहे थे। वहां काफी लोगोंको पकड लिया गया था। अुस समय श्री विजयलक्ष्मी पंडित भी सेवाग्राम आयी थी। अुन्होंने बापूजीसे कहा कि राजकोटकी लडाअीमें शामिल होना तो मेरा भी धर्म है, क्योंकि राजकोट हमारा पुराना घर है। पं० रणजीतके पिता राजकोटके ही अेक प्रतिष्ठित नागरिक थे और अिस दृष्टिसे वे राजकोटको अपना स्थान मानती थीं।

बापूजीने कहा, "तुम्हारी दलील तो सही है, लेकिन अभी तुमको नहीं भेजूंगा। पहले बाको भेजूंगा और फिर मैं जाअूंगा। हो सकता है तुम्हारी भी जरूरत पडे।"

बापूजीने बाको कुमारी मणिबहन पटेलके साथ राजकोट भेजा। बा और मणिबहनको गिरफ्तार करके जंगलमें अेक सरकारी बंगलेमें रखा गया। बा मणिबहनसे बापूजीको और आश्रमके लोगोंको पत्र लिखवाया करती थीं। मैंने भी बाको अेक पत्र लिखा। अुसके जवाबमें अुन्होंने जो पत्र लिखा अुनसे अुनकी विशाल दृष्टिका दर्शन होता है कि वे आश्रमकी प्रवृत्तियों और व्यक्तियोंसे कितना गहरा संबंध रखती थीं। मेरे सारे जीवनमें बाका लिखा सिर्फ अेक ही पत्र मेरे पास है, जिसका मैंने बडी श्रद्धासे संग्रह किया है। मूल पत्र गुजरातीमें है। अुसका हिन्दी अनुवाद अिस प्रकार है

मार्फत कौंसिलके प्रथम सदस्य,
राजकोट,
२७-२-'३९

भाअी बलवंतसिंह,

तुम्हारा पत्र कल मिला। पढकर आनंद हुआ। तुम तो वहां आनंदमें हो। कुछ न कुछ काम तो चलता ही होगा। तुम्हारा गायों पर बड़ा प्रेम है, कभी अीश्वर फल देगा ही।

विजया तो ससुराल गअी। मसालीभाअी वहां है, मुन्नालाल है। सब आनंदसे रहना।

मणिबहनके पत्र वहां रोज आते हैं। तुम अुन्हें पढते ही होगे। मैं अुनसे लिखवाती हूं। राजकुमारीको अंग्रेजीमें लिखती है। मि० [illegible] वहां बीमार पड गये। दो तीन दिन तुम्हें खूब तकलीफमें डाल दिया। परंतु अब ठीक हो गये हैं। दो चार दिनमें निर्मला भी चली जायगी।

मैं आभूगी तो मुझे नाणावटीके बिना बहुत सूना लगेगा। अब गावमें सवेरे पाठशाला देखने कौन जाता है? किसीको सौंपा तो होगा। देखें, काकासाहबके पास अुनकी कैसी तबीयत रहती है। काकासाहबको खूब प्रवास करना पडता है। रातको तीन चार बजे अुठने व लिखानेका काम काकासाहबके पास खतम नही होता। आदमी बिलकुल थक नही जाता तब तक लिखाया ही करते हैं।

आज तो बापूजी यहा आ रहे हैं। देखें, क्या होता है। कल शामको नारणदास मिलने आये तब खबर मिली कि बापूजी आज आ रहे हैं।

तुम लोगोंका प्रेम मुझ पर बहुत है। अीश्वर अिसे अैसाका अैसा ही रखे तो बस है।

हम सब यहा मजेमें हैं।

बाके आशीर्वाद

नाणावटीजी बाको रामायण पढाते थे और गावके स्कूल वगैराका निरीक्षण करते थे। बादमें काकासाहबने अपने कामके लिअे अुन्हें ले लिया था। बाका अुनके अूपर बहुत प्रेम था।

अुन समय मि० कैलनबेक सेवाग्राममें थे। अुनकी अुम्र साठसे अूपर थी, लेकिन वे अेक नौजवानकी तरह आश्रमके सब कामोंमें हिस्सा लेते थे। अुनको बगीचेका बडा शौक था, खास तौरसे फलके पेडोंकी कलम आदि करनेका। कैंची लेकर वे घटो बगीचेमें खर्च करते और दक्षिण अफ्रीकाके अपने अनेक अनुभव सुनाते। मैं अंग्रेजी नही जानता था और वे हिन्दी नहीं जानते थे, अिसलिअे हमारी सब बातें अिशारोंसे होती थी। बापूजीके प्रति अुनकी श्रद्धा अुनकी हरअेक हलचल, बोलचाल और अुदार भावोंसे स्पष्ट झलकती थी। बडे ही प्रेमी और अुदार पुरुष थे। वे बीमार पडे तो बापूजीने अुनकी बडी सेवा की। यह सेवा खास तौरसे लीलावती बहनको सौंपी गअी थी। अुनकी सेवासे वे बहुत सतुष्ट हुअे थे। अेक तरहसे आश्रम-जीवनमें वे घुल-मिल गये थे। आश्रमसे वे दक्षिण अफ्रीका लौट गये। वहा जाकर कुछ समयके बाद फिर बीमार पडे और अिस दुनियासे चले गये।

लाहौर जानेकी तैयारी

पू० बापूजीने ता० १८–१–'३९ के पत्रमें सकल्पकी महिमाकी ओर सकेत किया था। शायद अुस समय तो मैंने अुसको अितना नही समझा था,

लेकिन आज जब अुनका नीचेका पत्र मेरे सामने आता है तो पता चलता है कि अुन्होंने मेरे लिअे क्या सकल्प किया था। बीचमें मैं गोसेवासे करीब करीब अलग हो गया था और मनमें यह भी तय कर लिया था कि अब अिसमें नही पडूगा। और शायद अिसका प्रसग भी नही आता। लेकिन अेक अकल्पित घटनासे मैं आज यहा सीकरमें गोमाताकी सेवाका ही सकल्प लेकर बैठा हू। मैं नही जानता कि गोमाताकी मुझसे कितनी सेवा बन सकेगी, लेकिन बापूके अिस वचन पर विश्वास करके धीरजसे आगे बढनेका प्रयत्न कर रहा हू। वह वचन यहा देता हू.

चि० बलवतसिंह,

बडे शब्दोंके बीच ज्यादा अतर होना चाहिये। कैसी भी सुधारणा काफी हुअी है। अैसा ही चलता रहेगा तो अच्छा ही होगा। मेरी चली तो तुम सच्चे और कुशल गोसेवक होनेवाले हो।

यह खत यही बारडोली होकर आज आया।

३–३–'३९ बापूके आशीर्वाद

सचमुच मैं यह अनुभव कर रहा हू कि मुझमें बापूके अिन शब्दोंको पूरा करनेकी शक्ति न होते हुअे भी मेरा दिल आज गोसेवाके विचारोंसे ओतप्रोत है। अुसमें कुशलता कितनी आयी है वह तो मेरे सामने दूसरे लोग ही आक सकते हैं। लेकिन मेरा दिल गोसेवाको बडी बडी अुडानें भरता है। कभी कभी तो मनमें यह विचार आता है कि मैं मनुष्य-शरीरको छोडकर गो-शरीर ही क्यो न धारण कर लू। या किस तरहसे सब लोगोंके अदर पैठकर गोमाताकी सेवाके भाव भर दू। सचमुच ही यह बापूके अुस शुभ सकल्पका ही फल है जो अुन्होंने मेरे लिअे किया था। आशीर्वादकी शक्तिमें मेरा विश्वास बहुत बढ गया है।

अुसी समय बापूजी मुझे पजाबमें . . . की डेरीमें अनुभवके लिअे भेजना चाहते थे और अुनके साथ लिखा-पढी कर रहे थे कि मैं कब जाअू? अुधर श्री बालकोबाजी स्वास्थ्य-लाभके लिअे पचगनी गये थे। अुनके लिअे अेक सेवककी जरूरत थी। अिस बारेमें पत्र लिखकर मैंने बापूजीसे पूछा।

बापूजीका जवाब आया :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। डेरीके बारेमें सम्मति चार दिन पहले आ गयी है। मैंने तो पचगनी जानेका तार बनाकर प्यारेलालको दिया था लेकिन वह तार भेजा ही नहीं गया, ऐसा आज ही जाना। क्या कहूं? जैसा है वैसा हमारा कुटुम्ब है। इस अव्यवस्थाके लिओ मैं निजी जिम्मेदारी प्रतिक्षण महसूस करता हूं। लेकिन मेरा यह दोष अब निकल नहीं सकेगा।

अब तुमको पचगनी नहीं भेजूंगा। लाहौर जानेकी तैयारी करो। . . ने सब प्रबंध करनेका कबूल कर लिया है। कब जाओगे? मुझे तारीख भेजो तो मैं खबर भेज दूंगा।

बम्बअी, २६-६-'३९ बापूके आशीर्वाद

१७

मेरे गोसेवा-सम्बन्धी प्रवास

मुझसे बापूजीकी आशायें

निर्माण नही कर सके है जो कुछ लिख सकें। तुमको मैं लाहौर भेजनेकी बात सोच रहा हू। मैंने राजकुमारीको लम्बा पत्र लिखा है। वह . .को लिखेगी। अुनका जवाब आने पर तुमको जाना होगा।"

मैंने पूछा, आप मुझसे क्या आशा रखते है और मेरा किस प्रकारसे अुपयोग करना चाहते है? बापूजीने कहा, "जितना तुम्हारा अनुभवज्ञान है अगर अुसमें शास्त्रीयता भी आ जाय तो अच्छा हो। प्रवासमें तुम कितना ज्ञान पा सकोगे, अिसके अूपर आधार है। अगर तुम्हारा ज्ञान अितना हो जाय कि किसी भी जानकार आदमीके सामने गोसेवाकी बात अिस प्रकारसे रख सको जो अुसके गले अुतर जाय और मैं जहा चाहूं वहा तुम्हे भेज सकू और तुम सबके साथ मिलजुल कर काम कर सको तो मेरा काम निबट जायगा। मै देख रहा हू कि तुम्हारे स्वभावमें परिवर्तन तो काफी हुआ है, लेकिन अभी और भी करना होगा। मै तो तुमसे अखिल भारतीय विशेषज्ञकी हैसियतसे सारे हिन्दुस्तानकी गोसेवा करा लेना चाहता हू। मेरे पास पैसे तो काफी पडे है। परन्तु अुनका अुपयोग कैसे करू? मेरे पास अेक भी आदमी नही। दिल्लीकी गोशाला (कैटल ब्रीडिंग फार्म) के लिअे घनश्यामदासने कहा था कि अगर आप कहे तो अुसमें दो-तीन लाख रुपये लगानेको तैयार हू। लेकिन आदमी आपको ही देना होगा। तो मै आदमी कहासे दू? जब पारनेरकर धुलियामें काम करता था तब अुन्होंने पारनेरकरकी माग की थी। तब मै देनेको तैयार नही था। अब तो वह मेरे ही पास रहना चाहता है और मुझे भी यही पसद है। यों तो हिन्दुस्तानमें गोसेवा विशारद बहुत पडे है, लेकिन अुनसे मेरा काम नही चलेगा। मेरा काम तो वही कर सकता है, जिसने मेरी सब बातोंको अच्छी तरह समझा है। गुजरातमें भी गोसेवाका काम अधूरा ही पडा है। अिसीलिअे मैंने तुमसे कहा था कि भले खाली बैठना पड़े लेकिन यहीं पडे रहो। तो मै कुछ न कुछ काम ले ही लूगा। अगर आदमीमें तेजोबल है तो दूसरी चीजें तो आ ही जाती है।" अिस सिलसिलेमें बापूजी बहुतसे लोगोंके दृष्टात दे गये जिनको अुन्होंने अपने कामके लिअे अयोग्य पाया था। फिर मुझसे बोले कि तुमको अेक और भी परीक्षा देनी होगी। तुम्हारा और पारनेरकरका जो अेक-दूसरे पर अविश्वास है अुसे मिटाना होगा। आज तुम अुसके काममें बिल्कुल विश्वास नहीं करते और न वह तुम्हारेमें। जब तुम भी शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लोगे तो

वह भी समझ जायगा और तुम भी अुनके कामकी कीमत समझ सकोगे। मैंने कहा, "आपकी बात बिलकुल ठीक है।" बापूजीने कहा कि तुमको थोड़ी अंग्रेजी भी सीखनी होगी। मैंने कहा, "मुझे स्वयं अंग्रेजी सीखनेकी अिच्छा नहीं है, लेकिन आप चाहेंगे तो सीखना कठिन न होगा।" बापूजीने कहा, यह तो मैं जानता हूं।

दूसरे दिन फिर घूमते समय मैंने बापूजीसे कहा, आपकी बात पर मैंने खूब विचार किया है। मुझे अैसा नहीं लगा कि मैं पारनेरकरजीके प्रति मनमें अीर्ष्या या द्वेष रखता हूं या अुनके काममें बाधक बना हूं। यह बात सच है कि मुझे अुनके काममें विश्वास नहीं है। बापूजी बोले, "यह तो मैं जानता हूं। लेकिन मुझे अविश्वास नहीं है। मैं यह भी जानता हूं कि अुसके पास तुम्हारा जितना अनुभवज्ञान और श्रम करनेकी शक्ति नहीं है। लेकिन अुसके पास शास्त्रीय ज्ञान है जो तुम्हारे पास नहीं है। हो सकता है तुम्हारी बात ही ठीक हो। क्योंकि मैं तो अिस विषयमें कुछ भी नहीं जानता। मैंने वीरावाला*के साथ जो प्रयोग किया है वह करने जैसा है, क्योंकि मैं अहिंसाका जो अर्थ करता हूं अुसके अनुसार सांप भी मेरे हाथमें खेलना चाहिये। वह मेरे स्पर्शमात्रसे यह समझ जायगा कि मेरा अिरादा अुसको चोट पहुचानेका नहीं है। परन्तु अुसे आपको छूनेकी मैं दूसरेको अिजाजत नहीं दूगा। अहिंसाका यह अर्थ नहीं है कि हिंसक समान रूपसे सबके लिअे अहिंसक बन जाय। परन्तु जिसने अुसके साथ अहिंसाका बरताव किया हो अुनके लिअे तो वह अवश्य अहिंसक बन जायगा। वीरावाला साधु बन जायगा अैसा नहीं है। लेकिन वह मेरे साथ जरूर सीधा चलेगा। मेरा मतलब यह नहीं है कि दुष्टकी दुष्टताको नहीं देखना। मेरे जीवनमें अनुचित सहिष्णुताने प्रवेश करके मेरे कामको बड़ा नुकसान पहुचाया है। [illegible]लों मालिकोंके कड़वे कड़वे आचरणोंका मैंने कुछ भी [illegible] नहीं किया। अुससे आज मुझे नुकसान हो रहा है। आज मैं [illegible] ज्यादा ध्यान देता हूं। अगर तुम्हारी बात सच होगी तो मुझे भी पता चल जायगा। मेरा काम अिसी प्रकार चलता है। अगर तुम्हारे दिलमें अैसा लगे कि बापूने कितना अन्याय किया तो मुझे छोड़कर भाग सकते हो। दुनियामें तुम्हारे लिअे क्या जगह नहीं है? लेकिन अगर तुमने

* गांधीजीके राजकोटके अुपवासके समय राजकोट राज्यके दीवान।

यह समझकर धीरज रखा है कि बापू जो कर रहे हैं कुछ सोच कर ही कर रहे हैं तो मेरे पास बहुतसा काम पडा है। हिन्दी पढना तो है ही, अुर्दू भी पढना ही है और अंग्रेजी भी पढना है।"

तारीख २९–४–'३९ से ६–५–'३९ तक वृन्दावन (चम्पारन, बिहार) में गांधी-सेवा-संघकी सभा थी, अुसमें मैं गया। वहां भी बापूजीसे कुछ न कुछ चर्चा होती रही। अेक रोज बापूजीने कहा, "मैं तुमसे बडी आशा लगाये बैठा हूं। गोसेवाका काम बडा कठिन है। अुसके लिअे बडे शुद्ध मनुष्य चाहियें, धीरज चाहिये, सहनशीलता चाहिये। अुसका पूरा पूरा ज्ञान चाहिये। यह सब तुममें हो अैसी आशा लगाये बैठा हूं। मैं देख रहा हूं कि ये सब गुण तुममें बढ रहे हैं, लेकिन अभी बहुत कुछ करना है। मेरे सामने गोसेवाका पहाड पडा है, लेकिन आदमी नहीं हैं। तुम जहांसे भी गोसेवाका ज्ञान प्राप्त कर सकते हो वहां हिन्दुस्तानमें कहीं भी जानेकी और जितना भी खर्च करना हो वह करनेकी तुमको छूट है।" मैंने कहा, यहांसे सेवाग्राम लौटते समय अिलाहाबाद, दिल्ली, हिसार और दयालबागकी गोशालायें देखते जानेका मेरा विचार है। बापूजीने सबके नाम पत्र लिख दिये और मैं सब गोशालायें देखता हुआ सेवाग्राम पहुंचा।

भाअी गजवरजी

जब मैं आगरेमें दयालबागकी गोशाला देखने गया तो वहां भाअी गजवरजीसे परिचय हुआ। वे बडे अुत्साही और मिलनसार कार्यकर्ता थे और दयालबागके चर्मालयके संचालक थे। अुनको लकवा जाना था। बीचमें वर्धा पडता था। अुन्होंने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रकट की और मुझसे परिचयपत्र चाहा। मैंने अेक छोटासा पुरजा बापूजीके नाम लिख दिया। वे सेवाग्राम गये और बापूजीसे मिले। वहांसे अुनका पत्र आया

भाअी बलवन्तसिंहजी,

मैं सेवाग्राम पहुंचा और महात्माजीको आपका पत्र दिया। अुन्होंने बडे प्रेमसे मुझसे बात की। अपने पास बिठाकर ही खाना खिलाया और रातको अपने साथ ही सुलाया। मैं तो अुनके प्रेमसे पानी-पानी बन गया। मैं सिर्फ अुनका दर्शन और लडकेके लिअे आशीर्वाद ही चाहता था। लेकिन महात्माजीने तो मुझे प्रेमसे अितना अपना लिया कि मुझे आश्रम अपना घर जैसा और महात्माजी अपने पिता जैसे ही [illegible]

हुअे। आप लोग धन्य हैं, जो अैसे महापुरुषके चरणोंमें रहनेका सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ है। मुझे भूलना नहीं।"

यह पत्र पढकर मेरे आनन्दकी सीमा न रही। मैं सोचने लगा कि बापूजी हमारा हौसला बढानेके लिअे हमारी बातकी कितनी कीमत करते हैं। भाअी गजवरजीको अैसा आशीर्वाद मिला कि अभी तक वे लंकामें हैं और वहाकी सरकार अुनके कामसे बहुत खुश है। अुनको बडा पद मिला है और भरपूर तनख्वाह भी मिलती है।

लाहौरकी गोशालाका अनुभव

अिसी बीच जुलाअीमें लाहौरके प्रवासका कार्यक्रम बना। बापूजीने मुझे लाहौर जानेका आदेश दिया। बापूजी यात्रामें थे। मैं दिल्ली जाकर अुनसे मिला। अुन्होंने कहा कि ९ तारीखको तुम्हें लाहौर पहुचना है। वहा तुम्हारी सब व्यवस्था हो जायगी। तुमको सब प्रकारका ज्ञान देनेकी कोशिश करेंगे। मैंने पूछा कि मुझे वहा कितने दिन रहना होगा। बापूजीने कहा कि मैंने छ मासका सोचा है, लेकिन तुमको लगे कि अधिक समय रहना चाहिये तो दो-चार वर्ष भी रह सकते हो। फिर वहा किस तरह रहना होगा, अिस विषय पर अेक लम्बा भाषण सुना दिया। मैंने स्टेशन पर बापूजीको प्रणाम किया। वे बोले, देखो हारना नहीं। मैंने अुत्तर दिया, बापूजी, हारनेसे तो मेरी लाज ही चली जावेगी। फिर बापूजीने कहा, "जाओ और गोमाताका अच्छा ज्ञान प्राप्त करके जल्दी सेवाग्राम पहुंचो। वहासे सब हाल मुझे लिखते रहना।"

९ जुलाअीको मैं लाहौर स्टेशन पर अुतरा। . . भी अुसी दिन लाहौर पहुचे थे। अुन्होंने स्टेशन पर मुझे तलाश किया, परन्तु हम लोग मिल न सके। क्योंकि वे किसी जटाधारी पुरुषकी खोजमें थे और मेरा सिर घुटा हुआ था। आखिरकार मैं जैसे-तैसे अुनकी गोशालामें जा पहुचा। रास्तेमें मुझे मिले भी थे, लेकिन अेक-दूसरेकी पहचान न होनेसे वह मिलना निरर्थक रहा। गोशाला पर जाकर मैंने देखा कि वहा न तो मेरे ठहरनेका प्रबन्ध था और न खाने-पीनेका। कठिनाअीसे स्नानादि किया। खाना बनानेके साधन बडी कठिनाअीसे शामको मिले। कुछ समय बाद . . आये तो अुनसे मेरी बातें हुअीं। भोजनके प्रबंधके बारेमें अुन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की। अेक खराब-सी जगहमें मैंने जैसे तैसे खाना बनाया।

जब मुझे ठहरनेके लिअे कमरा बताया गया तब तो मैं दंग रह गया। क्योंकि कमरेमें पानी भरा था और आसपास कीचड था। मैंने अुस कमरेमें ठहरनेसे अिनकार कर दिया। सारी गोशाला ही कीचडशाला बनी हुअी थी। सब जानवर कीचडमें खडे थे। सिर्फ दूध निकालनेकी जगह पक्की थी और वहां कीचड नहीं था। गोशालामें अठारह भैंसें भी थीं। मेरे आश्चर्यका पार नहीं रहा, जब मैंने देखा कि दूध निकालनेवाले ग्वाले दूध निकालते समय थनोंमें साफ पानी या चिकनाअी न लगाकर थूकका अुपयोग करते हैं। अिस गन्दी प्रथाकी कल्पना मुझे स्वप्नमें भी नहीं थी। रातके समय जब मैंने फूका-प्रथाका शर्मनाक दृश्य देखा तो दुःखसे मेरा मगज फटने लगा। अेक भैंस कुछ गडबड कर रही थी। अुसके योनिद्वारमें अेक बांसकी पोली नली डालकर अुसमें जोरसे फूंक मारी गअी। थोडी ही देरमें भैंस लाचार बनकर खडी रह गअी और अुसने सारा दूध थनोंमें अुतार दिया। बापूजीने यही प्रथा कलकत्तेमें देखी थी और अुससे दुःखी होकर दूधका त्याग किया था। मैंने फूका-प्रथाके विषयमें पढा तो था, लेकिन समझमें नहीं आया था। अब आंखों देखकर मैं हैरान हो गया।

अभी मेरे नसीबमें अेक और भी दुःखद घटना देखनी शेष थी। जब मैं रातको सोनेका प्रयत्न कर रहा था तो अेक पाडेकी करुणाजनक आवाज मेरे कान पर पडी। मैं अुठकर अुसके पास गया तो देखा कि अेक नवजात पाडा भूखसे तडप रहा है। रातमें अुसे खिलानेके लिअे मेरे पास कुछ भी नहीं था। सुबह लोगोंसे मालूम हुआ कि वहां यह प्रथा थी कि गाय या भैंसके ब्याते ही अुसका बच्चा अुससे अलग कर लिया जाता था। गायकी बाछीको और भैंसकी पाडीको तो दूध पिलाकर पाल लेते थे, लेकिन गायके बछडेको किसी पालनेवालेको मुफ्तमें दे देते थे। वह बिचारा बैल बनानेके लोभसे अुसे कुछ न कुछ दूध, छाछ या पानीमें घुला आटा पिलाकर बचानेकी कोशिश करता था। तो भी आधेसे ज्यादा बछडे मर जाते थे। भैंसके पाडेको तो सीधी मौतकी सजा दी जाती थी। पैदा होते ही अुसे गोशालाके बाहर फेंक दिया जाता था, जहां वह दो-तीन दिनमें तडप-तडपकर मर जाता था। मैंने गोशालाके मैनेजरसे अुसे दूध पिलानेकी बात की तो अुसने आनाकानी की। तब मैंने कहा, अुसे मेरे भागका दूध पिला दो, क्योंकि अिस प्रकारका हत्याकांड मुझसे देखा नहीं जायगा। अिस पर वह बिचारा धर्मसंकटमें पड गया। अन्तमें अुसने दूध पिलाना मंजूर

किया। ग्वाले कहने लगे कि आत्माजी (महात्मा कहनेकी कोशिशमें वे आत्माजी कहते थे) यहां तो यही पाप चलता है। यह पाड़ा तो आपकी कृपासे बच जाय तो खुदाका शुक्र मानना चाहिये। यह सब देखकर मैं विचारमें पड़ गया कि 'आये थे हरिभजनको ओटन लगे कपास'। बापूजी समझेंगे कि मैं गोसेवाका ठिकेदार बन रहा हूं और यहां मेरी गांठकी पूंजी भी जानेका खतरा है। मैंने बापूजीको सारा हाल विस्तारसे लिखा और पूछा कि मैं यहां सीखूं या अिनको सिखाऊं? जवाबमें बापूजीने लिखा

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत बहुत अच्छा है। सब साफ साफ लिखा है। अैसा ही चाहिये। कुछ तो सीखोगे लेकिन काफी सिखाओगे। थोड़े ही दिनोंमें तुम्हारा मार्ग साफ हो जायगा। . . का मुझ पर खत आज ही आया है। वे अपने बड़े फार्म पर भी तुमको भेजना चाहते हैं। के हिसाबसे तुमको करीब करीब २॥ महीने लगेंगे। देखें क्या होता है।

गायका दूध अलग रखकर अुसमें से मक्खन निकाल लेना। दही बनाकर शीघ्र ही निकालोगे। धैर्यसे सब कुछ ठीक हो जायगा।

तुम्हारा खत राजकुमारीको भेजूंगा। वहांसे आश्रम जायगा और वहांसे सुरेन्द्रको। को तो कुछ भी नहीं लिखूंगा।

बा और प्यारेलाल और सुशीला वहांसे शुक्रवारकी गाड़ीमें रवाना होंगे। यह खत अुसके बाद मिलेगा।

अेबटाबाद, १२-७-'३९ बापूके आशीर्वाद

अिस विषयको लेकर . मे मेरी चर्चा और पत्रव्यवहार काफी लम्बा चला। आखिरकार अुन्होंने मरल्भावसे स्वीकार किया कि भाओ हम तो व्यापारी आदमी हैं। सब कुछ नफा-टोटा देखकर करना होता है। अेक बच्चेको पालनेके लिअे अेक सौ पचास रुपया खर्च होता है। वह कहांसे आवे? मैंने मुझे भी पसन्द नहीं है। लेकिन ग्राहकोंको खुश रखनेके लिअे रखनी पड़ती है। धीरे धीरे अुन्हें निकालनेका प्रयत्न करना है।

मॉडल टाअुनमें मेरी प्रवृत्ति

मैं कुछ न कुछ सीखनेका प्रयत्न तो करता ही था। लेकिन मेरे चरनेकी बात मॉडल टाअुनमें फैल गओ। गोशालाका प्रधान कर्मचारी मॉडल टाअुनमें रहता था। अुसने कुछ लोगोंसे मेरा परिचय कराया

जिनमेंसे चरखा चलाना और धुनना सिखाना भी मेरा अेक काम हो गया। श्री चुन्नीलालजी कपूर सी० आअी० डी० पुलिसके सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। अुनकी लडकी कान्ताकुमारी मेरी प्रचारिका बनी। वह खुद कातना-धुनना सीखती और दूसरी लडकियोंको भी बुलाकर लाती या अुनके घरो पर मुझे ले जाती। अिस प्रकारसे मेरा परिचय बढता ही गया।

अेक रोज वहाकी भगी बस्तीमें गया, तो वहाका हाल देखकर मुझे अत्यत दु:ख हुआ। अेक छोटेसे कमरेमें आठ आदमी अेकके अूपर अेक तीन खाटें बिछाकर रहते थे। न वहा पानीका प्रबध था, न रोशनीका। घरोंके सामने कीचड ही कीचड था। मॉडल टाअुनके सस्थापक दीवान-चन्दजी तथा पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री चुन्नीलालजीसे मैंने हरिजनोंकी करुण कथा कह सुनाअी। दोनोंने जाकर हरिजन बस्ती देखी तथा अुसी दिनसे अुसमें सुधार करवानेकी खटपटमें लग गये। और भी कअी भाअी-बहनोंको मै वहा ले गया। सब लोगोंने कमेटी पर जोर डालकर भगियोंको सुविधा दिलानेके लिअे कमर कस ली। रात्रि-पाठशाला चलानेका भी निश्चय हुआ। अुसमें चरखा चलवानेके लिअे भी विचार किया गया। और चरखोंके लिअे कुछ चन्दा भी हुआ। रामप्यारी बहनने बापूजीके पास रहनेकी अिच्छा बताअी। मैंने अुनको आशादेवी और बापूजीसे पत्रव्यवहार करनेकी राय दी। आजकल वह बहन माता रामेश्वरी नेहरूके साथ काम कर रही है। अेक नौजवान लडका सूरजप्रकाश भी सेवा करनेको तैयार हुआ। बहन कान्ताकुमारी, सुशीलाकुमारी, विमलाकुमारी, अुषाकुमारी और महेन्द्रकौरने कातने, धुनने और हरिजन बहनोंकी सेवामें दिलचस्पी बतायी। मॉडल टाअुनमें गाधी-जयती पर खादी प्रदर्शनी की गअी तथा खादी बेचने और हरिजन फड जमा करनेका प्रोग्राम बना। डॉ० गोपीचन्दजी भार्गवसे मिलकर खादी प्रदर्शनीका प्रबध कराया। हरिजन-फडमें ३०० रुपये मिले। जयतीके दिन काफी अच्छी सभा हुअी। मॉडल टाअुनके जीवनमें अैसा यह पहला ही प्रोग्राम था। लोगोंमें बडा अुत्साह था। लोगोंने मुझे वहा दो-तीन मास रहनेको कहा, लेकिन मेरा रुकना सभव नही था।

शुद्ध दूधकी व्याख्या

अेक दिन अेक रायबहादुर साहबने मुझे भोजनके लिअे प्रेमभरा आग्रह किया। मैंने कहा कि मेरे भोजनमे बडी खटपट है। आप अिसका विचार छोड दीजिये। जब अुन्होंने पूछा तो मैंने बताया कि अुबली भाजी और

गायका ही दूध चाहिये। वे बोले, यह तो मेरीसी बात है। रोज सुबह
मेरे घर गाय लाकर दूध निकाला जाता है और गायें बुलाना तो बहुत
मामूलीसी बात है। मैंने अुनसे घर भेजना स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन सुबह
जब मैं पूछने गया तो रायबहादुर साहबके दरवाजे पर अेक ग्वाला दुबलीसी
गाय लेकर आया। मैंने ग्वालेसे पूछा कि गाय क्या दे रहे हो। वह
बोला कि रायबहादुर साहबके यहां दूध निकाल कर देना है। गायकी हालत
देखकर मेरी आंखें खुल गयीं। ऐसी गायका दूध तो शुद्ध नहीं है
लेकिन असलमें तो यह गायका खून ही है। मेरे मनमें शुद्ध दूधकी व्याख्या
स्पष्ट हो गयी। जिस गायको पेटभर चारा, जरूरी दाना, स्वच्छ पानी
रहनेकी स्वच्छ जगह तथा ऐसी परवरिश मिलती हो और जिसके बच्चेकी
तन्दुरुस्ती अच्छी हो, जिसे किसी प्रकारका रोग न हो और जिसे देखकर
मन प्रसन्न होता हो अुसी गायका दूध शुद्ध माना जाना चाहिये। ऐसी भी
गायके थनोंमें से जो सफेद चीज निकलती है वह दूध नहीं होता, बल्कि
अुनके खूनका ही सफेद रंग हो गया होता है। यह बात मैंने रायबहादुर
साहबको और दूसरे लोगोंको समझाओी और अुस गायका दूध पीनेसे
अिनकार कर दिया। अुसके बाद मेरी गोसेवा और जनसेवा साथ साथ
चलने लगी। शायद चलते समय बापूजीने मुझे रहन-सहनके बारेमें यही
समझानेकी अिच्छासे कुछ कहा होगा। अुनके शब्दोंको तो मैं भूल गया था
लेकिन अुनका अर्थ गुप्त रूपसे मुझसे अपना काम करा रहा था।

अेक भक्त परिवारके सम्पर्कमें

मेरे लाहौर-निवासके अरसेमें लायलपुरके अेग्रीकल्चरल कॉलेजमें, जो
भारतका अुच्च कोटिका कॉलेज माना जाता था, 'अेस्टेट मैनेजर
क्लास' का १५ दिनका वर्ग चला था। अुसमें सारे पंजाबके फार्मोंके
मैनेजर ट्रेनिंग लेने आये थे। मैंने भी अुस वर्गके लिअे अर्जी भेजी थी
जो मंजूर हुआी थी। अिसलिअे मैंने १५ दिनका वह कोर्स पूरा किया
और अुसमें अच्छे नम्बरसे पास हुआ। अब यदि कोअी मुझे निरक्षर कहे
तो अुस पर बेअदबीका दावा करनेके लिअे मेरे पास लायलपुर अेग्रीकल्चरल
कॉलेजका प्रमाणपत्र मौजूद है।

कॉलेजके विद्यार्थियों और प्रोफेसरोंमें चरखा मेरा प्रचारक बना।
यों तो जितने लोग अुस कोर्समें आये थे सबके ही साथ मेरा अच्छा
परिचय हो गया था। लेकिन सरदार गुरुदयालसिंहजी मानने मुझे अपने

गाव मानावाला चलनेका आग्रह किया, जो शेखूपुरा जिलेमें था। वहा अुनकी अच्छी खेती चलती थी। सरदारजी फौजमें कप्तान थे। लेकिन अुन्हें खेतीका बडा शौक था। मैं अुनके साथ वहा गया। अुनकी खेती देखकर तो आनन्द हुआ ही, लेकिन अुनकी छोटी बहन गुरुवचन कौरसे मिलकर बहुत ही खुशी हुअी। दरअसल सरदारजी मुझे अिन बहनसे मिलानेकी ही गरजसे ले गये थे। वह बहन प्रज्ञाचक्षु थी। अुन्होंने गुरुमुखी और हिन्दीकी कअी परीक्षायें दी थी। बडी ही विवेकी, सात्त्विक और बुद्धिमान थी। अपने खर्चसे अेक कन्याशाला चलाती थी। कअी लडकिया अुनके पास ही रहती थी। अुनमें हरिजन लडकिया भी थी। छूतछात बिलकुल नही थी। नेत्रहीन होने पर भी अुत्तम सूत कातती थी। भजन-कीर्तन तथा गुरुग्रथ साहबका पाठ नियमित चलता था। अुनके आसपासका वातावरण ऋषिके आश्रमका-सा लगता था। बहनके आग्रहसे मैं दो तीन रोज वहा ठहरा। वहासे गुरु नानक साहबके जन्मस्थान ननकाना साहब भी गया। बहनकी बापूजीसे मिलनेकी बडी अिच्छा थी। वे सेवाग्राम दो बार आअी और बडे भक्तिभावसे थोडे दिन रहकर चली गअी। बापूजीको अुनका विचार और स्वभाव बहुत पसद आया। सरदार गुरुदयालसिंह भी सेवाग्राम आकर बापूजीसे मिले। सी० आअी० डी० ने अुनके खिलाफ रिपोर्ट की। जब अुनसे जबाब तलब हुआ तो अुन्होंने जबाब दिया, मैं सरकारका वफादार नौकर हू। अगर अुसमें कही फर्क पडे तो सरकार मुझसे जबाब तलब कर सकती है। लेकिन अपने धार्मिक मामलेमें मैं स्वतत्र हू। मैं महात्माजीको धार्मिक महात्मा मानता हू और अुसी भावसे अुनके दर्शनके लिअे गया था। और जब मौका मिलेगा आगे भी जाअूगा। अिसके लिअे सरकारको जो करना हो सो कर सकती है। अुनकी दृढता देखकर सरकार चुप हो गअी। पाकिस्तान बनने पर सारा मानावाला खाली करना पडा। भूपेन्द्र मान अिनके छोटे भाअी हैं जो ससदके सदस्य और पेप्सु सरकारमें मिनिस्टर भी रह चुके हैं। बहन गुरुवचन कौरसे और अुनके सारे परिवारसे आज भी मेरा वैसा ही प्रेमका सम्बन्ध है।

आजकल यह परिवार बल्कि सारा मानावाला गाव ही फतेगढ साहब, जहा गुरु गोविन्दसिंहके जिन्दा बच्चोंको दीवारमें चुनवाया गया था, तलानियामें रहते है। बहन गुरुवचन कौरकी कन्याशाला और कन्या-छात्रालय वहा भी चलता है।

अेक आदर्श गोसेवकके दर्शन

जब मैं पंजाबकी गोशालाओंका अनुभव लेते हुअे लाहौरसे माटगुमरी पहुंचा तब वहांके कुछ मुसलमान भाअियोंने अलहदाद फार्म देखनेका आग्रह किया। यह स्थान मुलतान जिलेकी जहानिया तहसीलमें है। मैं वहां पहुंचा और अलहदादजीसे मिला। अुनसे मिलकर मुझे अैसा अनुभव हुआ जैसे किसी देवतासे मिल रहा हूं। जब अुनको यह पता लगा कि मैं बापूजीके पाससे आया हूं और गोसेवामें रुचि रखता हूं, तो वे आनंदसे गद्‌गद हो गये और बोले, "देखो भाअी, मैं महात्माजीसे अेक साल छोटा हूं। अुनके लिअे मेरे दिलमें बहुत बडी अिज्जत है। वे तो खुदाके बन्दे हैं और मुल्ककी बडी खिदमत कर रहे हैं। मैं तो अेक नाचीज आदमी हूं और छोटासा गोसेवाका काम लेकर बैठा हूं, सो भी अपने स्वार्थसे। मैं तो अेक गरीब किसान था। जब पंजाब सरकारने सांड तैयार करनेकी योजना बनाअी और बीस सालके पट्टे पर जमीन देनेकी जाहिरात की तो मैंने हिम्मत करके हाथ फैला दिया। मेरे चार लडके हैं। मैंने किसीको भी अंग्रेजी नहीं पढायी। अुनको थोडासा कामचलाअू पढाकर खेती और गोपालनमें लगा दिया। अेक दूधकी गायों और दूधकी व्यवस्था करता है। दूसरा दूध पीते बच्चों और दूसरे बच्चोंको संभालता है। खेती और हरी घास पैदा करनेकी जवाबदारी तीसरेकी है। सूखी घास और सांड चौथा संभालता है। खुदाके फजलसे मुझे तो गायकी मेहरबानीसे ही रिजक मिल रहा है। मेरी अेक गाय मेरे फार्म पर २३ साल जिन्दा रही और अुसने १७ बच्चे दिये। सरकारी डॉक्टरोंने कहा कि अिसे गोलीसे मार देना चाहिये। तो मैंने कहा कि अब मेरा भी क्या बनेगा, मुझे भी क्यों नहीं गोलीसे मार दिया जाय? वह गाय मेरी ही भूलसे मरी। मैंने अुसे हर जगह चरनेकी छूट दे दी थी। अेक रोज वह चनेके कोठेमें घुस गअी और अधिक चने खाकर पेट फूलनेसे मर गअी। अुसका मुझे बडा अफसोस है।"

अलहदादजीकी सफेद चिट्टी लम्बी दाढी, अुनका हसमुख चेहरा और गोसेवाकी भावनासे ओतप्रोत अुनके मनको देखकर मुझे बहुत ही खुशी हुअी। अुनके सब जानवर हृष्ट-पुष्ट थे। अुनके फार्म पर पूरा साम्यवाद था। काम करनेवालोंको अितना अनाज, अितनी कपास और आध सेर रोजका दूध तथा अूपरसे थोडा पैसा मिलनेका प्रबन्ध था। वहां मजदूर-मालिकका भेद नहींके बराबर प्रतीत होता था। अुस समय अुनके पास कुल मिलाकर ५००

जानवर थे। अुनके लडके कहने लगे कि जब हमारे अब्बाजान गोशालामें आते है तो सबसे पहले कमजोर जानवरोका निरीक्षण करते है। अगर कोअी जानवर कमजोर मिले तो हमारे साथ लाठीके सिवा बात नही करते। अुनका कहना है कि जो जानवर बोलता नही है अुसे हम तकलीफ देते है तो खुदाके घर गुनहगार होते है। देखो, यह घोडी यही अबी पैदा हुअी थी। अिसे ९ सालसे हम खाली बधीको चुगा रहे है। सबसे पहले हमारे अब्बाजान अिस घोडीके पास आते है। अगर यह कमजोर हो जाय तो हमारी खैर नही है।

मुझे मालूम हुआ कि खासाहबने स्टेशनके पास अेक सराय हिन्दू-मुसलमान दोनोकी समान सुविधाके लिअे बनवाअी है, जहा मुसाफिरोंकी काफी सेवा की जाती है। मुसलमानी ढगके अनुसार अपनी आमदनीका दसवा हिस्सा वे अैसे ही पुण्यकार्योमें खर्च करते रहते है। बहुतसे हिन्दुओका अैसा गलत विचार बन गया है कि गायकी सेवा हिन्दू ही कर सकता है। लेकिन अैसे अनेक माअीके लाल मुसलमान पडे है जो हिन्दुओंसे कही अच्छी सेवा गायकी करते है। मै अपने अनुभवसे कह सकता हू कि सारे पजावमें हिन्दुओ और सिक्खोकी व्यवस्था और सेवासे कही अच्छी व्यवस्था और सेवा मैने अलहदादजीके यहा देखी।

चलते समय अलहदादजीने कहा, देखो, मै तो महात्माजीके पास पहुच नही सकता, लेकिन आप अुनकी खिदमतमें मेरा सलाम अर्ज कर देना। जब मैने यह सारा समाचार बापूजीको लिखा तब बापूजीने मुझको लिखा कि मुसलमान भाअियोकी कथा बडी रोचक है। अिस प्रकारके अनेक अनुभव मैने अुस प्रवासमें लिये।

बापूजीसे भेंट

अुन्ही दिनोमें आसफपुरमें श्री प्रभुदासमाली गाधी अुत्सव मना रहे थे। वर्षोसे वे किसी प्रमुख आदमीको बुलाना चाहते थे। पूज्य किशोरलालभाअीने अुनको मेरा नाम सुझाया और मुझे भी वहा जानेके लिअे लिखा। अुनका लिखना मेरे लिअे फौजी हुक्म था। मै वहा गया और वहा भी गायके ही गीत आये। वहासे दिल्ली आया और पन्द्रह दिन पूसा फार्म पर रहकर वहाकी गोशालाका सब हाल देखा। अुस समय वहा पर डॉक्टर फरनान्डीज सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। वह बडे सरल आदमी थे। अुन्होने बडे प्रेमसे मुझे सब कुछ दिखाया।

वहांसे लौटते समय फिरोजपुर छावनीकी मिलिटरी डेरी भी देखी। सरदार किशनसिंह अुसके बड़े ही योग्य मैनेजर थे। ता० ६-८-'३९ को बापूजीसे विदा लेकर गया था। ता० १-११-'३९ को दिल्लीमें लौटकर मैंने अुन्हें प्रणाम किया तो वे हंसकर बोले, "अरे, चोर फिरसे आ गया?" घूमते समय सब हाल पूछा और बोले, "दिल्लीका कैटल ब्रीडिंग फार्म भी देख लो। अगर तुमको अैसा लगे कि अुसमें कुछ किया जा सकता है तो अुसका चार्ज मिल सकता है।" अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी बापूजीसे मिलने आयी थी। अुसने बापूजीसे कहा कि मेरी अिच्छा आपके पास रहनेकी है। लेकिन पिताजी राजी नहीं होते हैं। बापूजी बोले, "मेरे पास तो तुम रह सकती हो, लेकिन पिताजीको राजी करना होगा। अगर तुम्हारा संकल्प सच्चा होगा तो तुम्हारी जीत होगी।" अुसी संकल्पने जोर मारा और पांच सालके बाद सन् १९४८ में वह बापूजीके पास सेवाग्राममें आ ही गयी।

दूसरे दिन दिल्लीका कैटल ब्रीडिंग फार्म देखने गया और वहां श्री लक्ष्मीनारायणजी गाडोदियासे बातें कीं। फार्म अिन्हींके खर्चसे चल रहा था। अुसमें भैंसोंका भी प्रवेश हो चुका था। अिसलिअे मैंने बापूजीसे कह दिया कि अिन तिलोंमें तेल नहीं है। अगले दिन जब मैं बापूजीके पास गया तो बापूजीकी मालिश की जा रही थी। मैं चुपचाप जाकर खड़ा हो गया। बापूजीने मुझे देख लिया और बोले, "देखो बलवन्तसिंह आ गया है। अैसा न समझना कि वह चुपचाप खड़ा रहेगा। अुसको मालिशमें हिस्सा दो, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।" सब लोग हंस पड़े और बापूजी भी खूब हंसे। मेरे लिअे अेक पैर खाली हो गया और मैं अपने काममें लग गया। अिस अनोखे प्रेमका स्वाद चखकर आज सब स्वाद फीके लगते हैं। बापूजीकी कल्पना बहुत अूंची थी। लेकिन तो भी अुन्हींके प्रसादसे आज मैं अितना-सा जानकार हो गया हूं कि बड़े जानकारोंके सामने भी अपनी गोसेवाकी बात अिस प्रकारसे रख सकता हूं कि अुनके गले अुतर जाती है। यदि न अुतरे तो जब तक सफलता न मिले तब तक अुनके पास डेरा डालकर अपनी बात अुनके गले अुतारनेकी हिम्मत और आत्म-विश्वास मुझमें आ गया है। यह सब बापूका ही प्रताप है।

मूक होहि वाचाल पंगु चढ़े गिरिवर गहन।

१८

विविध प्रसंग

अेक बोधपाठ

अिसी समय बगालमें गाधी-सेवा-सघकी सभा थी। बापूजी वहा जा रहे थे। मैंने बगाल जानेकी अिच्छा बताअी और कहा कि मैं वहाकी गायें देखना चाहता हू। अुस समय कृष्णचद्रजी मुझे हिन्दी पढाते थे, लेकिन ठीक ठीक समय नही दे पाते थे। अिसलिअे मैंने बापूके पास शिकायत की थी। मैंने लिखा था कि मैं अुनको खुशामद नही करूगा। बापूजीने अिन दोनोंके सम्बन्धमें लिखा

चि० बलवतसिंह,

अिस वक्त गाधी-सेवा-सघमें तुमको ले जानेका दिल नही है। बगालकी गायोकी चिन्ता हम न करे। कृष्णचन्द्रसे कहूगा। लेकिन ज्ञानके पिपासुको खुशामद करनी पडती है। जब मेरे जैसे महात्मा बनोगे तब तुमको ज्ञान देनेवाले तुम्हारी खुशामद करेंगे। दरम्यान गीताका वचन याद करो। वह यह है कि प्रणिपात (खुशामदसे), परिप्रश्न (बार बार प्रश्नसे) और सेवा करके ज्ञान सीखो। गीताका क्रम तो महात्माओंके लिअे ही शायद बदलता होगा। बाकी मुझे जो खुशामद करनी पडती है सो मैं ही जानता हू।

२७–१–'४० बापूके आशीर्वाद

अुन दिनो मेरे पास कोअी दूसरा खास काम नही था। मैंने बापूजीको लिखा कि मैं कुछ नही करता हू और करूगा भी नही। खाली बैठकर दूध पीता हू। अगर आप दूध पिलाते पिलाते थक जायेंगे तो चला जाअूगा। बापूने लिखा

चि० बलवतसिंह,

दूध पीते पीते थको तो दूसरी बात। मैं तो थकनेवाला नही हू। न मैं यहासे तुमको कही हटानेवाला हू। यही रहना और आनदपूर्वक जो काम मैं दू वह करना। अुसीमें तुम्हारी साधना है। अुसीमें गोसेवा है।

* * *

सेगाव, ८–२–'४० बापूके आशीर्वाद

मैंने हिन्दीकी पढाअीके वारेमें फिर वापूजीको लिखा। अिसलिअे वापूजीने लिखा

चि० बलवतसिंह,

अिसे देखो। गीतामाता कहती है — जिससे ज्ञान लेना है अुसको प्रणिपात करो, परिप्रश्न करो, अुसकी सेवा करो। कृष्णचन्द्रकी शक्तिका माप करके अुससे शिक्षा लो। अुससे अच्छा शिक्षक कहासे मिलेगा?

सेगाव, २०–४–'४० वापूके आशीर्वाद

छोटी वातके लिअे वड़ा कदम

अेक वार अैसा हुआ कि आश्रममें अेक वहनका पत्र गुम हो गया। अुसने अेक दूसरी वहन पर शक किया। वापूजीने पूछा तो वह वहन, जिस पर शक किया गया था, नट गअी। वापूजीको भी शक हुआ और अुन्होंने अुपवास शुरू कर दिया। मैंने वापूजीको लिखा कि आप शकके अूपर अुपवास करके किसीके अूपर दवाव डालते है। यह ठीक नहीं।

वापूजीने लिखा.

चि० वलवतसिंह,

समझना सुगम है। जव पिताको घरमें किसी लडके पर शक आता है, लेकिन कौन है अुसका पता न लगे तव वह अुपवास करके शांति पाता है। अगर लडकोंमें प्रेम है तो लडके कवूल कर लेते हैं। ठीक है कि मेरा अनुमान ही है, लेकिन हम सर्वज्ञाता नहीं है।

वापूके आशीर्वाद

अेकाध दिन अुपवास करनेके वाद आश्रमवासियोंका अिस अुपवासके लिअे विरोध होनेसे वापूने अुसे छोड दिया था और वादमें अुस वहन परकी शंका भी निर्मूल गअी थी। यह शंकानिवारणकी वात तथा शंका करनेका दुःख वापूजीने वादमें लिखित रूपमें प्रगट किया था।

अिस तरह अूपरसे छोटी दीखनेवाली वातोंमें वापू कितने भारी भारी कदम अुठा लेते थे और अुनके पास रहना कितनी सावधानीका काम था, अिसका अनुभव तो अुन्हींको होता जो अुनके निकट रहे हैं। वाहरके देखनेवाले तो समझते थे कि वापूजीके पास रहनेवाले मौज करते हैं। लेकिन सचमुच ही अनके पास रहना तलवारकी धार पर चलनेसे भी कठिन

और फूलो पर चलनेसे भी आसान था। 'साअीका घर दूर है, जैसी लबी खजूर। चढे तो चाखे प्रेमरस, गिरे तो चकनाचूर ॥' अिस दोहेका प्रत्यक्ष अनुभव अुन लोगोने किया है, जिनको वापूजीके निकटसे निकट सपर्कमें रहनेका सौभाग्य मिला है।

लार्ड लोथियन सेवाग्राममें

यो तो वापूजीके पास वडेसे वडे मेहमान आते थे और वापूजी अुनकी आवभगत और सुख-सुविधाका प्रवध अपने ही ढगसे करते थे। लेकिन लार्ड लोथियन अेक निराले ही प्रकारके मेहमान थे। वे १९४० में वापूजीसे मिलने आये थे। वापूजीने जमनालालजीसे पहले ही कह दिया था कि अुनको अपने वैलोंके तागेमें ही लाना है। अेक रोज देखा तो जमनालालजी और लार्ड साहब वैलके तागेमें फसे वैठे चले आ रहे है। दोनो पूरे लवेचौडे डील-डौलके थे, और तागेकी सीट साधारण ही चौडी थी। दोनोंको वैठनेमें कठिनाअी हो रही थी। वापूजीने प्रार्थनाकी जगह पर अुनका स्वागत किया। अेक-दूसरेसे मिलकर दोनो खूब खुश हुअे। दोनोंके चेहरेसे आनन्द ही आनन्द टपक रहा था। अुनका ठहरनेका अितजाम आखिरी-निवासमें किया गया। सोनेके लिअे तख्ता, स्नानघरमें कमोड आदि छोटी छोटी सुविधाओंका प्रवध वापूजीने खुद अपनी निगरानीमें कराया था। अुनके भोजनका प्रवध हमारे साथ पक्तिमें ही किया गया था। पतलूनके कारण जमीन पर वैठनेमें अुनको थोडी असुविधा तो होती थी, लेकिन हमारे साथ वैठना अुन्हें वहुत ही पसन्द था। वापूजी अपने पास ही अुन्हें विठाते और परोसनेका काम भी खुद ही करते थे। वीच वीचमें अुनसे पूछते जाते और भोजनकी सामग्रीके गुणोका वखान भी करते जाते। अग्रेज लोग मिर्ची-मसाला तो खाते ही नही। अिसलिअे आश्रमका भोजन अुन्हें वहुत ही पसन्द था। वे सेवाग्राममें ३ रोज रहे और हमारे साथ खूब घुलमिल गये। अुन्होने कहा, मेरे सारे जीवनमें ये तीन दिन जैसे शान्तिसे बीते हैं वैसे कभी नही बीते। अितना अेकान्तवास मुझे कभी नहीं मिला है। यहा मुझे वडी शातिका अनुभव हुआ है। हमको भी लगता था जैसे कोअी पुराना साथी हममें आ मिला हो। अुनको वापिस भेजनेका प्रवध भी अुसी वैलके तागेमें किया गया। अुनके जानेके वाद वापूजीने शामकी प्रार्थनामें कहा, "मै चाहता तो जमनालालजीकी मोटर थी ही और मैं जब वम्बअीमें था तभी अुनको मुलाकात दे सकता था। लेकिन मुझे मैंने

जानबूझ कर टाला। क्योंकि बम्बअीमें बैठकर मैं अनुको हिन्दुस्तानका वही दृश्य नहीं दिखा सकता था। हिन्दुस्तान शहरोंमें नहीं गांवोंमें बसता है। यह मैं बम्बअीमें बैठकर अनुन्हें कैसे समझाता? जो अंग्रेज भारतमें आते हैं अनुको गांवोंका दर्शन कहां होता है? लोग तो अनुके आसपास शहरोंकी ही चकाचौंध खड़ी करते हैं। अिससे वे भी भ्रममें पड़ जाते हैं। मैं जिनका प्रतिनिधित्व करता हूं अिनका पता सेवाग्राममें आये बिना कैसे चलता? अनुके यहां आनेसे हिन्दुस्तानका कुछ भला होगा सो बात नहीं है, लेकिन वह यहांसे जो विचार लेकर गये हैं अनुका असर दूसरों पर भी अच्छा होगा। अनुन्होंने देख लिया कि असली हिन्दुस्तान किसको कहते हैं। हमारे किसान मोटर कहांसे लायें? अनुके पास तो बैलगाड़ी ही हो सकती है। अिसलिअे मैंने जमनालालजीसे कहा कि अनुको बैलगाड़ीमें ही लाना चाहिये। जमनालालजीके मनमें संकोच हो सकता था, लेकिन वे तो मेरे तर्जको समझते हैं। अिसलिअे अनुको भी आनन्द ही हुआ।"

बापूजी देहातोंके साथ कितने अेकरूप होना चाहते थे यह अैसी घटनाओंसे स्पष्ट हो जाता है। बापूजी देहातोंके जीवनमें जहां तक प्रवेश करना चाहते थे वहां तक जानेका अनुको अवसर ही नहीं मिला। वे अेकमात्र ग्रामसेवककी अपनी तमन्ना पूरी न कर सके, क्योंकि देशको आजाद करानेका कार्यक्रम अनुके सहारेके बिना चल ही नहीं सकता था। अिसलिअे अनुन्हें जवाबदारीका भार भी अनुको अुठाना पड़ा।

होड़ बदना दूषित है

१९४० के मअी मासके अंतिम सप्ताहमें खेती और गोशालाका चार्ज फिर मुझे लेना पड़ा। आश्रमकी खेतीका नियम था कि कोअी बैलको आर न मारे। लेकिन हमारे खेतीवाले लोग अेक छोटीसी आर अपनी जेबमें रखते थे और जब वर्धा वगैरा कहीं जाते थे तो अुसका अुपयोग करते थे। जिसका मुझे पता नहीं था। गांवके अेक भाअीने मैं बात कर रहा था तब अुसने बताया कि आपके बैलोंके अूपर भी आरका प्रयोग होता है। मैंने अिनकार किया तो अुसने कहा, 'शर्त लगाओ।' मैंने कहा, 'अगर मेरे आदमियोंके पास आर पकड़ी जाय तो मैं ५ रुपये दूंगा।'

अुस भाअीने वर्धा जाते हुअे हमारे गाड़ीवानके पास आर पकड़ी, मुझे वह आर दिखाअी और अुस आदमीसे मेरा मुकाबला कराया। बात

सच थी। मुझे पाच रुपये देने पडे। अिसका पता बापूजीको लगा। बापूजीने लिखा "हम ट्रस्टी है अिसलिअे हमको होड बदनेका अधिकार ही नही है। क्योकि दान हमको अिस कारण नही मिलता है। तुम्हारे पास पैसे है ही नही, अर्थात् तुम्हें चाहिये नही। अिसलिअे तुम्हारी होडमें ये दोनो दोष थे। आश्रमके पैसे पर होड बदनेका तुम्हे अधिकार नही था। और होड बदना ही दूषित है, अभिमानका सूचक है।"

हृदय-परिवर्तन

सेगावमें वहाके अेक हरिजनका भानजा आया। अुसने वहा हरिजन बच्चोंको पढाना और अुनको क्रिश्चियन बनानेका प्रचार आरभ किया। अुसको नागपुर क्रिश्चियन सोसायटीकी तरफसे तनख्वाह मिलती थी। वह बहुत ही गलत ढगसे हरिजन बच्चोको बहकाता था। वह हरिजन लडका था तो नादान लेकिन लोभमें फसा था। समझाने पर भी मान नही रहा था। हम लोगोंने भी अुसे समझानेका काफी प्रयत्न किया। बापूजीको अिससे काफी दु ख पहुचा। अुन्होंने नागपुरके बिशपके साथ पत्रव्यवहार किया। लेकिन बिशपका अुत्तर सतोषजनक नही था। अन्तमें बापूजी अपने प्रयत्नमें सफल हुअे और वह प्रचार बद हो गया। अब वह लडका आश्रमका वफादार सेवक है। नाम है तुकाराम जामलेकर। गावके लोगो और आश्रमवासियोंके समझानेसे भाअी जामलेकरने पादरीकी नौकरी छोड दी और आश्रममें काम करने लगे, अिससे पादरीकी पाठशाला भी बद हो गअी।

सच्ची सलाह न माननेका फल

अेक बार गावमें कुछ झगडा हुआ। अेक सवर्णके हाथसे अेक हरिजनकी आख फूट गअी। मामला पुलिसमें जानेको था। बापूजी बीचमें पडे। अुन्होंने सवर्णोंको यह समझानेकी कोशिश की कि जिस हरिजनकी आख फूटी है अुससे सार्वजनिक रूपमें अपराधी माफी मागे और अुनको मुआवजेके भी रुपये दे। जिसके हाथसे आख फूटी थी वह पहले सेगावका मालगुजार था और माफी मागनेमें अपनी बेअिज्जती समझता था। वह रुपये देनेको तो तैयार था, लेकिन सार्वजनिक रूपमें माफी मागनेके लिअे तैयार नही था। बापूजीने कहा कि मेरे नजदीक रुपयेका बहुत महत्त्व नही है। अगर तुम नही दे पाओगे तो मैं भी दे सकता हू। लेकिन तुमने जो अपराध किया है अुसकी क्षमा तो मागनी ही होगी। तिस पर भी गरीब हरिजनके प्रति अपराध किया है।

यह दुहरा पाप है। बिना क्षमा मांगे तुम पापसे मुक्त नहीं हो सकते। वह भाअी तो सीधा था, लेकिन दूसरे कुछ अैसे लोग थे जिन्होंने अुसको माफी मांगनेके लिअे तैयार नहीं होने दिया। आखिर मामला पुलिसमें गया। बाप-बेटेको सजा हुअी, अेकको चार मासकी और दूसरेको आठ मासकी। हजारों रुपये खर्च हो गये सो अलग। तब अुनको बापूजीकी बात न माननेका खूब पश्चात्ताप हुआ।

फोटो खिंचानेसे अरुचि

बापूजीको फोटो खिंचाना पसन्द नहीं था। सिर्फ कनुको अुनके आग्रहके कारण कुछ प्रसंगों पर मौका देते थे। मगनवाडीमें अेक रोज जब हम सब लोग भोजनके लिअे बैठ रहे थे, बाहरके अेक फोटोग्राफरने फोटो लेनेके लिअे कैमरा लगाया। बापूजीकी नजर अुन पर गअी तो बहुत गंभीर होकर बोले, "तुम लोगोंको अितनी भी सभ्यता नहीं है? किसीके घरमें आकर भोजनके समय भी फोटो लेते हो?" बापूजीने अुसको खूब डांटा और वह बिचारा अपना कैमरा लेकर चला गया।

सेवाग्राममें अेक रोज बापू किशोरलालभाअीको देखने जा रहे थे। बापूका नियम था कि सुबह घूमते समय किशोरलालभाअीसे थोडी बातचीत कर लेते थे, क्योंकि तबीयत अच्छी न होनेके कारण वे बापूके पास आ नहीं सकते थे। वहां जा रहे थे अुस समय अेक आदमीने आगे आकर अेकदम कैमरा लगा दिया। बापू तेजीसे झपटे और अुसके हाथसे कैमरा छीन लिया। हम सब आश्चर्यमें पड गये कि आखिर हुआ क्या? अितना बिगडते मैंने बापूजीको पहली ही बार देखा।

अेक रोज बापू अपनी कुटियामें बैठे थे। किसी परिचित भाअीने बापूजीका फोटो लेनेके लिअे अुनके सामने जो पुस्तक रखी थी और जिसके कारण तस्वीर स्पष्ट नहीं आती थी अुसे हटानेके लिअे किसीसे कहा। पुस्तक हटा दी गअी। लेकिन बापूने वह पुस्तक अुठाकर जहां थी वहीं रख दी। वे कुछ बोले नहीं, लेकिन गंभीर हो गये।

बापूका गायमाताका प्रेम

सन् '४० की बात है। बापूजी व्यक्तिगत सत्याग्रहकी तैयारी कर रहे थे। हम सब पकडे जायेंगे अितना पता न था। हमें क्या करना होगा,

यह मैंने अुनसे लिखकर पूछा था। जमीन आदिका भी कुछ प्रश्न था। बापूजीने लिखा

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत अच्छा है। जमीन अित्यादिके बारेमें मैंने ठीक किया है। और भी अगर आजाद रहा तो करूंगा। तुम्हारे, पारनेरकरने, चिमनलाल, सुखाभाअू अित्यादिने बाहर रहना ही है।

सेवाग्राम, ११-११-'४० बापूके आशीर्वाद

दिसम्बरमें तालीमी संघके बोर्डकी सेवाग्राममें मीटिंग थी। आर्यनायकम्‌जीने बापूजीके सामने अेक मांग पेश की कि गोशालाके मकान अित्यादि तालीमी संघको दे दिये जायं। वे वहां पर छात्रालय बनाना चाहते थे। आर्यनायकम्‌जी, जाजूजी और डॉ० जाकिरहुसैन सब गोशालाका स्थान देखनेके लिअे आये। मुझे सीधा तो किसीने नहीं कहा, लेकिन मुझे अुनकी चर्चाका पता चल गया। जब वे लोग गोशालामें घुसे और सब चीजें देखने लगे तो मैं समझ गया कि वे क्यों आये हैं। मैंने सख्त टोनमें आर्यनायकम्‌जीसे पूछा, 'आप क्या देखते हैं?' अुन्होंने कहा कि हम यह स्थान छात्रालयके लिअे लेना चाहते हैं। आप अपनी गोशाला दूसरे खेतमें ले जायं। मैंने कहा, अैसा नहीं हो सकता। जाकिरहुसैन साहब व जाजूजीने भी कुछ कहा, लेकिन मैंने साफ कह दिया कि यह स्थान नहीं मिलेगा। जब वे लोग चले गये तो मैंने बापूजीको अेक लंबा सख्त पत्र लिखा। अुसमें लिखा, 'सुनता हूं कि आप गोशालाका स्थान तालीमी संघको देना चाहते हैं। आर्यनायकम्‌जी, जाकिरहुसैन साहब और जाजूजी तो आपके प्रिय सेवक हैं, अपनी जरूरत आपको समझा सकते हैं। क्योंकि भगवानने अुनको जबान दी है। लेकिन गाय तो मूक प्राणी है। अपने सुख-दुःखके बारेमें आपको कुछ नहीं कह सकती। मैं अपने आपको गायका प्रतिनिधि मानता हूं। अगर आप मेरे अिस दावेको कबूल कर सकें तो मैं आपसे कहता हूं कि गाय यहांसे हटना नहीं चाहती है। अगर आप यह स्थान तालीमी संघको दे देंगे और गायको यहांसे हटायेंगे तो मैं भी गोशालाका काम नहीं कर सकूंगा। आपको जो कुछ करना है खूब सोच-समझकर करें।'

बापूजीका अुत्तर आया :

चि० बलवन्तसिंह,

सिंहका नाद और गायोंका रुदन दोनों सुना। अब गाय जहां है वहीं रहेगी। आर्यनायकम्‌जी और आशादेवीको कह दिया है। बस ना?

सेगांव, १५-१२-'४०　　　　　　　　　　बापूके आशीर्वाद

सेप्टिक टैंकका किस्सा

कुछ डॉक्टरोंकी सलाहसे बापूजीने आश्रममें सेप्टिक टैंक शुरू किया। जब वह बन रहा था तो मैंने बापूजीको नीचेका विरोधपत्र भेजा :

सेवाग्राम
६-२-'४१

परम पूज्य बापूजी,

मैंने सुना है कि आपने पाखानेका सड़खाना (सेप्टिक टैंक) बनानेकी अिजाजत दे दी है। आपकी अिस प्रकारकी बदली हुआी नीतिको सुनकर मुझे दुःख और आश्चर्य हो रहा है। अब तक आप धूलमें से धन पैदा करनेका मंत्र हमको सिखाते आये हैं। अब सोनेका पानी करनेका मंत्र हमसे सिद्ध होगा या नहीं यह कहना कठिन है। आश्रममें आकर मैंने यों तो बहुत कुछ सीखा है, लेकिन जिसका मुझे अभिमान हो सकता है वह है पाखाना-सफाआी और अुसका सदुपयोग तथा धुनाआी। लेकिन अगर अेकको ही चुननेका अधिकार हो तो मैं पाखाना-सफाआीको ही चुनूंगा।

पाखाना-सफाआी और अुसके खादसे मेरे स्वास्थ्यका भी घनिष्ठ संबंध है। लेकिन सिद्धान्तकी दृष्टिसे भी मैं अिसको आश्रमकी नाक या आत्मा मानता हूं। यहां पर तो नित्य नये डॉक्टर और नित्य नये रोगी आते ही रहते हैं और आते ही रहेंगे। लेकिन अगर आप जैसा कोआी [illegible] तो शायद आपके मतसे [illegible] रहेंगे। [illegible] भी [illegible] बनाने या [illegible] है। [illegible] करना तो [illegible] है। लेकिन [illegible] है, [illegible] जाये तो [illegible]। [illegible] हैं कि [illegible] हिन्दुस्तानके [illegible] पाखाना [illegible] है। आपको [illegible] है। [illegible] भी [illegible] है?

जिस तिजोरीमें से हम निकालते ही रहें लेकिन रखें नहीं वह कितने दिन पैसा पुरावेगी? क्या यही हाल जमीनका भी नहीं है? जानवर वनस्पति खाकर भी बेशकीमती खाद जमीनको वापिस देते हैं, तो मनुष्य जमीनकी अुत्पत्तिका सार अनाज खाकर कितना कीमती खाद दे सकता है? अिसीलिअे तो पाखानेको सोनखाद कहा जाता है न?

पहले तो कुअेंमें धूलके साथ जन्तु जाते हैं, अिसलिअे मोट वद की, पानी गरम किया, भाजी लाल और गरम पानीमें धोअी, लेकिन टाअीफाअिड वन्द न हुआ। अब मक्खियोका नवर है। मुझे पूरा पूरा शक है कि अिस अिलाजसे भी मर्ज चला जावेगा। लेकिन हमारा खाद तो अवश्य चला जावेगा।

मुझे लगता है कि अिसका अिलाज यह है कि या तो आप सेवाग्राम छोड दें या अितने बडे समाजको छोड दें, और मुझे तो यह भी लगता है कि हमारा अधमरा समाज और जिनके मगजमें ही जतुओने घर कर लिया है अैसे डॉक्टर यदि हिमालयकी चोटी पर भी जाकर वसें तो भी अिनका पीछा टाअीफाअिड शायद ही छोडे। डॉक्टर दास सज्जन आदमी हैं और लगनके पक्के हैं। लेकिन जब वे सुखाभाअूके लडकेके अिलाजके लिअे सेवाग्राम गावमें न जा सके और अुसको यहा आना पडा तो वे हिन्दुस्तानके सात लाख गावोमें सेप्टिक टैंक बना सकेंगे यह कैसे माना जाय?

अेक तरफ तो आप गरीबीके गीत गाते नहीं अघाते और दूसरी तरफ अमीरीके साधन मुहैया करते करते आपकी अुदारता बरसाती नदीकी तरह सब कुछ वहा ले जाती है, जिसके सामने कोअी सूरा ही खडा रह सकता है। अैरे गैरे पचकल्याणीके पैर तो जम ही नहीं सकते। मुझ जैसा बिलकुल तैरना न जाननेवाला तो समुद्रमें ही जाकर दम लेगा। शायद आपको अिस पत्रमें मेरे पैने दात और नख दिखाअी दें, लेकिन मैं लाचार हूं। मेरी नम्र सूचना है कि पाखानेको थोडा दूर हटा दिया जाय या अुसे प्रतिदिन खिसकानेकी व्यवस्था की जाय, लेकिन अुसको दफना देना किसान और जमीनके लिअे अन्याय होगा। आगे राजा कहे सो न्याय।

कृपापात्र
बलवन्तसिंहके सादर प्रणाम

बापूजीने अुत्तर दिया :

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा लिखना सही है। मैं सावधानीसे काम ले रहा हूं। यदि अधूरा छोड़कर मर गया तो सब काम टीकापात्र होगा। अगर पूरा करके मरा तो सब देखेंगे। अितना कहता हूं कि खादको बरबाद नहीं होने दूंगा। मैं जो कुछ करता हूं, सब अन्तमें गरीबोंके ही लिअे है। लेकिन आज तो अिसमें मैं कुछ भी सेवाग्राममें सिद्ध नहीं कर सकता हूं।

श्रद्धा रखोगे और अपना निजी जीवन सादा और विशुद्ध रखोगे तो देखोगे कि सब ठीक ही है।

तुमने लिखा सो ठीक ही किया है। अिसमें न दांत है, न पंजा।

५-२-'४१ बापूके आशीर्वाद

आश्रम खतम नहीं होगा

आश्रममें आनेवालोंकी संख्या घटती-बढ़ती रहती थी और अुसके हिसाबसे सागभाजीकी कम-ज्यादा जरूरत रहती थी। कुछ लोग अैसा भी कहते थे कि हम यह नहीं खायेंगे, वह नहीं खायेंगे।

हमारा खेतीका गेहूं था। अुसमें कुछ कीड़ा लग गया था। भोजनालयके व्यवस्थापकने अुसे लेनेसे अिनकार कर दिया था। मैंने बापूजीको लिखा कि अेक दिन ५० सेर सागभाजी मांगते हैं तो दूसरे दिन १० सेर। मैं किस हिसाबसे पैदा करूं? और अगर आश्रमका गेहूं खराब हो गया तो अुसको कहां फेंक दूं? मैं नहीं जानता कि अिस तरह यह आश्रम कितने दिन चल सकेगा। गरीब लोग तो अिस तरह फेंक नहीं सकते हैं। हम लोग क्या अमीर हो गये हैं?

बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

सागभाजीके बारेमें थोड़ी अव्यवस्था सहन करने योग्य है। जो आश्रममें न खायें [illegible] बेचनेकी हमारी शक्ति होनी चाहिये। [illegible] पाक बनाना चाहिये। सागभाजी [illegible] हमारेमें होनी चाहिये।

गेहूं खराब हो जाय तो फेंकना ही चाहिये। गरीबको भी अैसा ही करना चाहिये। हमारे गेहूं बिगडे क्यों?

यह आश्रम खतम होनेवाला नजर नही आता है। परिवर्तन होना संभव है। जो होगा सो हमारे या कहो मेरे कर्मोंका फल होगा। धैर्य रखो।

१६-२-'४१ बापूके आशीर्वाद

जमीनका झगडा

सेवाग्रामके अेक गरीब किसान पर कभी सालका लगान चढा हुआ था। अुसकी सारी जमीन बेदखल होनेवाली थी। अुसका अेक खेत गोशालासे लगा हुआ था। अुस किसानको लेकर गांवका अेक प्रतिष्ठित आदमी मेरे पास आया और बोला, आप अिसके अुस खेतको खरीद लें तो अिनके बच्चोंके लिअे अिसकी दूसरी अच्छी जमीन बच सकती है। मुझे जमीनकी खास जरूरत नही थी। तो भी पास होनेसे अुसमें गायके दूध पीते बच्चे चरानेकी सुविधा थी। और अुसकी सारी जमीन जमनालालजीकी जमींदारीमें थी। अगर बेदखल होती तो हमारे पास ही आनेवाली थी। अुनके मुनीमजीने मुझे कह भी दिया था कि यह सारी जमीन आपको ही दे देंगे। लेकिन मुझे लगा कि अिस प्रकारका लोभ ठीक नही है। अगर अिसकी जमीन बच सकती हो तो बचानी चाहिये। अिस विचारसे मैं बापूजीके पास गया और सारी परिस्थिति अुन्हें बताअी। बापूजीने कहा, तुम्हारे पास जमीन तो काफी है। लेकिन अुसकी दूसरी जमीनकी रक्षा होती है और अुस जमीनका तुमको अुपयोग है तो भले खरीद लो। मैंने अुस जमीनको खरीद लिया।

अुस किसानके दो लडके थे। अेक बाहर पटवारी था और वहीं बस गया था। लिखापढीके समय जब मैंने अुसकी सही लेनेकी बात की तो जो भाअी बीचमें पडा था अुसने मुझे विश्वास दिलाया कि अिनकी आप चिन्ता न करें, वह भाअी अुज्र करनेवाला नही है, न अिन जमीनमें वह हिस्सा ही लेगा। क्योंकि अुसने वहां काफी जमीन कर ली है और अिस जमीनका लगान भी वह नही देता है। अिसीलिअे तो अितना लगान चढा है। अुनके विश्वास दिलाने पर मैंने आग्रह नही किया और जमीनका बिक्रीपत्र आश्रमके नाम करा लिया। जितनेमें सौदा पक्का हुआ था वह मुझे कुछ सस्ता लगा। मैंने सोचा कि अुसकी मुसीबतका लाभ अुठाना अुचित नही है। अिसलिअे लिखा-

पड़ी होनेके बाद भी अुसको थोड़ी रकम मैंने और दे दी, जिससे अुसे बड़ा सन्तोष मिला और दूसरे लोगों पर भी अिसका बहुत अच्छा असर हुआ।

८-१० मासके बाद अुस किसानका दूसरा लड़का, जो पटवारी था, नौकरी छूट जानेसे सेवाग्राममें ही आ गया और अपने लिअे जमीन खरीदनेकी कोशिश करने लगा। संयोगसे ऐसा बना कि पड़ोसके गांव नादोरामें अेक किसान अपनी जमीन बेच रहा था, अुसे वह लेना चाहता था। अुसी जमीनको मुन्नालालजी चौधरी, जो चरखा संघके कार्यकर्ता थे, लेना चाहते थे। दोनोंसे मेरा अच्छा संबंध था। अतः अुस जमीनका सौदा मुन्नालालजीके लिअे हो गया। पटवारीको लगा कि अिस सौदेमें मैंने मदद की है। अिसलिअे चिढ़कर अुसने अपने बाप और छोटे भाअी द्वारा आश्रमको बेची हुअी जमीन वापस मांगी। जब यह सवाल बापूजीके सामने गया तो बापूजीने अुसके बाप और भाअी तथा गांवके दूसरे लोगोंको बुलाकर पूछा कि अिसमें क्या किया जाय। गांवके लोग यह कैसे कह सकते थे कि जमीन वापिस कर दी जाय। अिसलिअे वे कुछ न बोले। बापूजीने अुसके बाप और भाअीसे पूछा कि बोलो क्या करना चाहिये। अुन्होंने कहा कि जमीन वापिस कर देनी चाहिये। बापूजीने मुझे आदेश दिया कि अिसकी जमीन वापिस कर दो; अुस पर तुम्हारी जो फसल खड़ी हो काट लो। अिन आदमियोंमें वह आदमी भी था जो मेरे पास अुसकी जमीनको दबानेकी वकालत करने आया था। लेकिन अुसने अिस अन्यायका प्रतिकार नहीं किया। अिससे मुझे भारी दुःख हुआ। जब वही आदमी मेरे पाससे जमीनका चार्ज और हिसाब-किताब लेने आया तो मैं अपने गुस्से पर काबू न रख सका। मैंने अुससे कहा कि आपको अिसके साथ हिसाब-किताब लेने आनेमें शर्म आनी चाहिये थी। किस मुंहसे आप मेरे पास अिसकी जमीन दिलवाने आये थे और अब अुसीको वापिस करानेमें आपको जरा भी शर्म नहीं आती? अुसको मेरी अिस बातसे दुःख हुआ। अुसके अिस दुःखकी बात बापूजीके कान तक पहुंची।

बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, “तुमने विठोबाके अूपर गुस्सा करके भारी अपराध किया है। अिसलिअे मुझे क्षमा मांगनी पड़ी। तुम भी मांग लो। हम तो सेवक हैं। अिसलिअे हमको किसी पर गुस्सा करनेका अधिकार ही नहीं है। तुम्हारी बात तो सच थी। लेकिन गुस्सेने अुसका सच्चापन मिटा दिया।” मैंने गांवमें जाकर क्षमा मांगी। साथ साथ कहा कि आपने मेरे साथ विश्वासघात तो किया है, लेकिन मैंने गुस्सेमें आपसे जो कठोर

शब्द कहे अुन्हें मैं वापिस लेता हूं। अिससे अुन लोगोंको और भी बुरा लगा। जब सारा किस्सा बापूजीके पास गया तो बापूजीने लिखा :

चि० बलवन्तसिंह,

मुन्नालाल कहते हैं कि तुम्हारी क्षमा-याचनासे शांति नहीं हुअी है। क्षमा मांगनेके समय विठोबाको सुनाया, तुमने विश्वासघात तो किया है तो भी क्षमा मांगता हूं। अगर यह ठीक है तो क्षमा-प्रार्थना निरर्थक है। विश्वासघातकी शिकायत बहुत कठोर है। मैं विश्वासघात नहीं पाता हूं, हृदय-दौर्बल्य भले कहो। यह बात सुधरनी चाहिये।

१९-५-'४१ बापू

अिस घटनासे मुझे और भी दुःख हुआ। और मैंने प्रायश्चित्तके रूपमें ३ रोजका अुपवास करनेका निश्चय बापूजीको बताया। अुन्होंने अिसे पसन्द नहीं किया और बोले, "अुपवास करना ठीक नहीं है। अिससे तुम्हारे काममें बाधा पड़ेगी। और अुपवासके लिअे अधिकार भी तो चाहिये। बस नम्र बनो। जिसे जगतकी सेवा करनी है, वह किसीके साथ घनिष्ठ संबंध न जोड़े। क्योंकि अगर हम अेकके साथ घनिष्ठता जोड़ते हैं तो स्वाभाविक है कि हम दूसरोंसे दूर जाते हैं। मैं तुम्हारा त्याग न करूंगा। हां, अेक बात है। मैंने लोगोंको पहले कहा था (गणपतरावके प्रकरणमें) कि अगर बलवन्तसिंह दूसरी बार गुस्सा करेगा तो सेवाग्राम छोड़ेगा। अिस बिना पर तुम सेवाग्राम छोड़ सकते हो और लोगोंको यह कह सकते हो कि बापूके वचन-पालनके लिअे मैं सेवाग्राम छोड़ रहा हूं।" बापूजीकी यह सूचना मुझे बहुत पसन्द आअी। मैंने अुपवासका विचार छोड़ दिया और सेवाग्राम छोड़नेका निश्चय कर लिया।

रातको सेवाग्राममें मैंने सभा की और लोगोंको सारा हाल तथा अपना सेवाग्राम छोड़नेका निश्चय बताया। मैंने कहा कि मुझे बड़ी खुशी है कि मैं बापूजीके वचन-पालनके लिअे आप लोगोंसे विदा मांगने आया हूं। जिन भाअियोंको मेरे शब्दोंसे दुःख पहुंचा है अुनसे मैं नतमस्तक होकर क्षमा मांगता हूं। अुनके आशीर्वाद लेकर यहांसे विदा लेना चाहता हूं। आशा है कि वे मुझे क्षमा कर देंगे।

मैं बापूजीके पास आया और सभाका सब हाल अुन्हें सुनाया। अुनको बड़ा आनन्द हुआ। मेरे भी आनन्द और अुत्साहका पार नहीं था।

मुझसे बापूजीने पूछा, कहां जानेका सोचते हो? साबरमती जा सकते हो। नायकके पास जाना हो तो वहां भी जा सकते हो। और भी कअी जगहोंके नाम वे गिना गये। मैंने देखा बापूजी वचनका पालन तो करना चाहते हैं, लेकिन मेरी व्यवस्थाकी चिन्तासे मुक्त होना नहीं चाहते। मैंने कहा, मैं ऐसी जगह नहीं जाअूंगा जहां पर आपके नामका सहारा हो। जब यहांसे जा ही रहा हूं तो आपके नाम और प्रभावका भी मुझे अुपयोग नहीं करना है। बापूजीने कहा, तुम्हारा विचार मुझे पसन्द है। जब मेरी और बापूजीकी बात हो रही थी तब प्रभावती बहन* वहीं बैठी थीं। मैं जा रहा हूं जिसका अुनके मनमें दुःख था। लेकिन मैं बापूजीके नामका अुपयोग भी करना नहीं चाहता जिससे अुनको बहुत ही खुशी हुआी। और जब मैं बापूजीके पाससे अुठकर आया तो वे भी मेरे साथ ही अुठकर आयीं और अपने स्वभावके अनुसार हंसकर बोलीं, आपने बहुत अच्छा सोचा है। हममें जितना आत्मविश्वास होना चाहिये कि बापूजीके नामके सहारेके बिना जगतमें अपने पैरों पर खड़े रह सकें।

वापिस नहीं मिलेगी तो अुसके दिलमें अिसका दर्द बना ही रहेगा। अिसलिये भी अुनका यहांसे चला जाना ही अुसके लिअे अच्छा है। आपका धर्म है कि अुस भाअीको धर्म समझाओ और जमीन वापिस करा दो।" गावके लोगोने कहा, हम अिसका पूरा पूरा प्रयत्न करेंगे। बापूजीने कहा, ठीक है अब बलवन्तसिंहसे बात करो। मुझे हर्ज नही है, क्योकि मेरे वचनका पालन हो जाता है।

वे लोग मेरे पास आकर बोले, बापूजीको तो हमने राजी कर लिया है। अब आपसे कहते हैं कि हम आपको किसी भी तरह नही जाने देंगे। और अूपरकी बापूजीके साथकी बातचीत सुनाअी। मैंने कहा, मैं तो बापूजीके वचन-पालन और आप लोगोंकी नाराजगीके कारण जाना चाहता था। लेकिन अगर बापूजीके वचनका पालन हो जाता है और आप लोग मुझे रोकना चाहते है तो मैं नही जाअूंगा। जमीन वापिस मिले या न मिले, अिसकी मुझे चिन्ता नही है। मुझे तो दुःख अिस बातका हुआ था कि मेरा साथ आप लोगोंमें से किसीने न दिया। लेकिन अब जो हुआ सो हुआ।

मेरे जानेका निश्चय हो जाने पर बापूजीने मुझे लिखा था:

चि० बलवतसिंह,

तुम्हारे मनमें खयाल यह रहना चाहिये कि यदि तुम्हारी तपश्चर्या शुद्ध होगी तो यहीं वापिस आओगे। कहीं भी रहो अुर्दूका अभ्यास नही छूटना चाहिये। हिन्दी अक्षर अच्छे बनाने चाहिये। खेती और गोपालनके शास्त्रका अभ्यास बढाना।

२७-८-'४१ बापूके आशीर्वाद

बापूजीने गावके लोगोंकी आग्रहकी बात मुझसे की और जमीनकी बात भी बताअी। मैंने कहा, "लोग मेरे पास भी आये थे। अगर आपके वचनका पालन हो जाता हो तो जमीन वापिस मिले या न मिले अुसकी मुझे चिन्ता नही है। क्योंकि मैं देख रहा हू कि लोगोंके दिल साफ है।" बापूजीने कहा, "मेरा वचन तो गावके लोगोंकी दया पर ही निर्भर था। वे लोग तुमको रखना चाहते है तो मेरा काम निबट जाता है।" और मैं रुक गया।

अिस सारी घटनामें मैंने बापूजीके चित्तकी अवस्थाका जो अध्ययन किया वह कभी भुलाया नही जा सकता। लेकिन मेरे हाथसे अेक बडा अवसर चला गया अिसका जरूर मुझे दुःख रह गया। अगर मुझे जाना पडता तो

मुझे आजसे भी अधिक लाभ होता और बापूजीके प्रेमका अिससे कहीं अधिक दर्शन करनेको मिलता। लेकिन अैसे अवसरके लिअे मेरे पुण्य अधूरे पड़े। जो मिलता है सो भाग्यसे मिलता है। लेकिन जो मिला वह क्या कम है? अैसा सोचकर संतोष मान लेता हूं।

मौनका आदेश और अुसका लाभ

आश्रमके अेक साथीसे मेरा कुछ झगड़ा हो गया था, क्योंकि वे गोशालाके काममें अनधिकार दस्तदाजी करते थे। यह सब मैंने डायरीमें लिखा। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा

"मैंने तुम्हारी डायरी पढ़ ली है। अुसकी गलती तो मैं कबूल करता हूं, लेकिन तुमको भी गुस्सा बार बार आना ठीक नहीं है। नहीं तो अितनी बड़ी जवाबदारी निभा नहीं सकोगे। नाव बिलकुल किनारे पहुंचकर भी अगर डूब जाय तो अुनका सारा पानी पार करना व्यर्थ हो जाता है। बात सबकी सुनना लेकिन अुनमें जितना सार हो अुतना लेकर बाकी फेंक देना। मैंने तुम्हारे बारेमें बहुत विचार किया कि तुमको कहीं बाहर भेज दूं या आश्रममें कोअी अैसा काम दे दूं जिससे किसीके साथ संघर्ष न आये। लेकिन तुम्हारे काममें तुमको अलग करना भी ठीक नहीं लगता है। अिसलिअे मैंने अैसा सोचा है कि तुमको मौन रहकर काम करना चाहिये। तुम्हारे पास पचासों आदमी काम करते हैं और बार बार बोलनेका प्रसंग आता है। लेकिन मौनसे भी बहुत बड़े बड़े काम किये जा सकते हैं। श्री अरविन्द घोष और मेहर बाबा बड़ी बड़ी संस्थाअें मौन रखकर चलाते हैं। मैंने भी कअी बार मौन रखकर काफी काम कर लिया है। प्यारेलाल पर गुस्सा करने पर मैंने तीन मास तक मौन रखा था। अुससे मुझे काफी फायदा हुआ था और मैंने काम भी काफी कर लिया था। फिलहाल तुमको अेक मासका मौन रखना चाहिये। अिसमें तुम अगर मीठी भाषा बोलना सीख गये तो ठीक है, नहीं तो और लम्बा मौन रखने देंगे। तुम्हारा बजट मैंने नामंजूर नहीं किया है। बस, आजसे ही मौन रखा जाय।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीसे [illegible] मेरा मौन आरंभ हुआ। बापूने आशीर्वाद देते हुअे कहा, "अिस मासमें अन्दर पूर्ण ही रहेगा।" मुझे भी अुस समय [illegible] था।

अुस [illegible] आज भी आंखोंके सामने नाचता है। बापूका प्रेम, [illegible] कामोंमें भी [illegible] अुनकी [illegible] और [illegible]

गिरनेसे बचानेके लिअे पत्थरसे भी अधिक कठोरता। मैं सोचता हूं कि किसी माता या पितामें ये गुण अपनी सन्तानके प्रति होते हैं तो भी अुसमें कहीं न कहीं कुछ ढीलापन आ ही जाता है। लेकिन बापू हमारे कल्याणकी दृष्टिसे ही सब कुछ सोचते और करते थे। वह हमें कडुआ लगे या मीठा लगे, अिसकी अुनको चिन्ता नहीं थी। यह मेरा मौन अेक महीनेके बजाय दो महीने तक बड़ी शातिसे चला और कोअी भी काम बोले बिना रुका नहीं, बल्कि व्यवस्थित ढगसे चला। शहरके काम भी मौनसे ही चलते थे। कअी प्रसग अैसे आये जो मौनके कारण शातिपूर्वक निबट गये। अगर अुस समय मैं बोलता होता तो कुछ न कुछ झगडा जरूर होता।

अेक दिन मैं भोजनालयमें चावल नहीं दे सका, क्योंकि मगनवाडीसे साफ होकर नहीं आये थे और अितवार होनेसे धान कूटनेवाली स्त्री भी नहीं आअी थी। अुस सबधमें भोजनालयके व्यवस्थापक मुझसे बात कर ही रहे थे कि अेक बहन बीचमें कूद पडी और अुस विषयको लेकर अुन्होंने मुझे खूब गालिया सुनाअी। यह भी कहा कि अितना भला है तभी तो मौन लेना पडा है। अुस अपमानको मैं सहन नहीं कर सका। परतु मौन होनेके कारण कुछ कह भी न सका। बापूजीको लिखा कि अपमान सहन करानेके बदले आप मुझे यहासे भगा दें तो अच्छा हो।

बापूजीने लिखा

"यह सब क्या है? अबलाके अपमानसे यह सब दुःख कैसे? मैं तो जानता भी नहीं कि . बहनने क्या क्या गालिया दी। हमारी बहन गालिया दे अुसे भी घीकी नालिया समझें। मैं तलाश तो करूंगा लेकिन किसी कारण मैं तुम्हारा लिखना पसन्द नहीं कर सकता हूं। अपमान तो सहन करना चाहिये। तुम्हारे हसना था। और भागनेकी बात कैसे अुठती है? सब अपने आपको भगा सकते हैं। आश्रम तो तुम्हारा है। . बहनका भी है। दोनों लडे तो कौन किनको भगावे? ठीक ही कहा है गीतामाताने कि जिसको क्रोध होता है अुसको सम्मोह होता है, सम्मोहसे स्मृतिभ्रश और अुसमें से बुद्धिनाश। यह तुम्हारा हाल पाता हूं। सावधान हो लो और अपनी मूर्खता पर हसो।

१-१२-'४१ बापू

अिस प्रकार मौनके कारण और बापूजीके प्रेममय व्यवहारसे यह कठिन प्रसग यों ही टल गया।

मौनके सारे समयमें सिर्फ दो बार बोलनेके अवसर आये। अेक बार जमनालालजी और मीराबहनसे ४५ मिनट बात की थी। दूसरी बार कुछ ग्रामसेवक गोशाला देखने आये थे अुनसे थोडी बातें की थीं। अिसके सिवा बडे आनदसे दो मास पूरे हुअे। ता० १६–१–'४२ को प्रार्थनाके बाद बापूजीको प्रणाम करके मैंने मौन छोडा। अुस दिन सरदार वल्लभभाअी पटेल वही थे। अुन्होंने प्रेमसे डाटते हुअे कहा कि तुम्हारे जैसे किसानका काम मौन रखनेका नही है। वह महात्मा लोगोका काम है। यदि मौन ही रखना हो तो भगवे कपडे पहनकर जगलमें भाग जाओ।

गोशाला-सम्बन्धी सूचनायें

मैं गोशालाके लिअे कुछ नयी गायें खरीदना चाहता था। बापूने नयी गायें खरीदनेका विरोध करते हुअे कहा, "समझो, यह गोशाला, मकान और जमीन तुमको दानमें मिली है और अेक भी पैसा तुम्हारे पास नही है तो तुम क्या करोगे? यही न कि जो अधिक खर्च करना हो वह अिसमें से कमाकर करो? बस, अगर तुम्हें नयी गायें खरीदना हो तो बछडे बेचो, बछडी बेचो, दूधका पैसा जमा करो और जितनी रकम बचे अुससे गाय खरीदो। यों तो मेरे पास पैसे आते ही रहते है, अुनमें से मैं खर्च भी कर सकता हू। लेकिन यह ठीक नही है। तुम्हारी खूबी तो अिसमें है कि अपने पैरो पर खडे होकर आगे बढो। मेरा तुम पर पूरा पूरा विश्वास है कि अिसमें से कुछ शुभ परिणाम लाओगे। अिसलिअे ही तो यह सब चल रहा है।"

भोजनालयमें दूध कुछ कम जाता था। अिस विषयमें भोजनालयकी शिकायत थी। मैंने बापूजीसे कहा कि अगर भोजनालयमें अधिक दूध देता हू तो बच्चोंका पेट कटता है जिससे बच्चे कमजोर होते है और गोशाला खराब होती है। बापूजीने कहा, "भोजनालयमें पूरा दूध देनेकी तुम्हारी जवाबदारी नहीं है। जितना तुम चाहते हो अुतना दूध बच्चोंको पिलानेके बाद ही जो दूध तुम्हारे पास बचे वह भोजनालयमें दो। तुम्हारा काम दूध पैदा करना नहीं है, अच्छे जानवर पैदा करना है। देखो, आज युरोपमें कैसा हत्याकाड चल रहा है? मनुष्य राक्षस बन गये हैं। नीति-अनीतिका कुछ भान ही नहीं रहा है। [illegible] हिन्दुस्तानको नही लगेगी अैसा

कहना कठिन है। देखो, गुजरातमें बरसातसे कितना दर्दनाक नुकसान हुआ है? अिन सब दातोको देखते हुअे हमें अधिक विस्तार बढानेकी झझटसे बचना चाहिये।"

खजूरी गरीबोका वृक्ष है

हमने गोशालाके लिअे जो जमीन खरीदी थी, अुसमें खजूरके बहुतसे पेड थे। अुनके कारण घास होनेमें बडी कठिनाअी होती थी। मैंने अुनको कटवानेका निश्चय किया और तदनुसार ठेका दे दिया। श्री गजाननजी नायक अुस समय ताडगुड विभागके सचालक थे। अुन्होंने अिसके खिलाफ बापूजीसे शिकायत की। बापूजीने मुझे बुलाया और अिसका जवाब पूछा। मैंने बापूजीसे कहा, वह जमीन साफ किये बिना अुसमें घास होना सभव नही है। मैं कमसे कम खजूरसे होनेवाली आमदनीकी चौगुनी आमदनी अुस खेतमें करनेका आश्वासन देनेको तैयार हू। चूकि खेतमें सुधार वगैरा करनेकी मेरी जिम्मेदारी है, अिसलिअे मैंने पेड काटते समय किसीको पूछनेकी जरूरत नही समझी।

बापूजीने लिखा

"मैंने मेरे हाथोंसे सैकडो खजूरी काटी हैं और आखोंके सामने कटवाअी हैं। वह वृक्ष मैं वापिस नही ला सकता। तुम्हारी दलीलके मुताबिक तो कोअी भी वृक्ष काट सकते हैं। हा, यह ठीक है कि तुमको अच्छा लगा सो किया। मुझे दुख तो हुआ कि तुमने अितने वृक्षोको काटा तो सबसे बहस करनी थी। खजूरी गरीबोका वृक्ष है। अुसके अुपयोग तुम्हे क्या बताअू? अगर सब खजूरी कट जाय तो सेवाग्रामका जीवन बदल जायगा। खजूरी हमारे जीवनमें ओतप्रोत है। घास अित्यादि दूसरी जमीनमें बो सकते थे। लेकिन हुआ अुसका दुख भूल जाना है। अुनमें से जो शिक्षा मिलती है लें तो अच्छा है। मैं तो वक्त नहीं निकाल सकता। गजाननसे बात करो, दूसरोको पढाओ। खजूरीके अुपयोगका हिसाब करो।"

१३-१-'४२ बापूके आशीर्वाद

जमनालालजी और गोसेवा

व्यक्तिगत सत्याग्रह समाप्त हो चुका था। अुन समयके बापूजीके विचार और प्रवचन तो महादेवभाअीकी डायरीमें छपे हैं। प्यारेलालजीके पास भी कुछ नोट होंगे। रोज कुछ न कुछ चर्चा चलती ही थी। मैं दूसरे

देखता था, क्योंकि अुनमें शामिल होनेका मुझे समय नहीं था। अब बापूजी अेक नये आन्दोलनकी तैयारी कर रहे थे। सेवाग्रामकी भूमिमें अुनको 'करना या मरना' मंत्रकी प्रेरणा भी मिली।

अुन्हीं दिनों अेक रोज जमनालालजी बापूजीके पास आये। अुन्होंने कहा कि अब मुझे राजनैतिक काममें रस नहीं रहा है। अब शांतिसे बैठकर मैं कुछ रचनात्मक काम करना चाहता हूं। आपकी अिस बारेमें क्या सूचना है?

बापूजीने कहा, "काम तो अनेक हैं, लेकिन खादीका काम चरखा-संघ कर रहा है, ग्रामोद्योगका कुमारप्पा कर रहे हैं, नअी तालीमका आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीने अुठा लिया है। गोसेवा संघका काम ही अेक अैसा है जो बढ नहीं सका है। अगर तुम अुसे बढा सको तो वह तुम्हारे लिये योग्य है।" जमनालालजीको तो यही चाहिये था। अुन्होंने बड़े आनन्द और अुत्साहसे अिसे स्वीकार किया और अुसकी योजनामें लग गये। यों तो संस्थाके नाते गोसेवा संघ बहुत दिनोंका था, किन्तु अुसका काम अुल्लेखनीय अुन्नति नहीं कर सका था। जमनालालजीने सारे हिन्दुस्तानके गोपालनके विशेषज्ञोंकी अेक सभा की। फरवरीके पहले सप्ताहमें सभा हुअी। अुस सभामें ता० १-२-'४२ को बापूजीने जो भाषण दिया, अुसके मुख्य अंश ये हैं :

'आजकल जिस तरह गोसेवाका कार्य हो रहा है, दूसरी संस्थाअें जो कुछ कर रही हैं, अुसमें और गोसेवाके काममें बड़ा अन्तर है। वह काम जनताके सामने नहीं आ रहा था। जमनालालजीके अिसमें पड जानेसे वह सबकी नजरमें आ गया है। गोरक्षाका दावा करनेवालोंको गोपालन और गोवधकी हालतका भान नहीं है। अपनेको परम्परासे गोभक्त माननेवाले लोग अेक तरफ गोसेवाके नाम पर पैसा देते हैं और दूसरी तरफ व्यापारमें बैलोंके साथ निर्दयता करते हैं। मैं किसीकी टीका नहीं करता। सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि हममें असली अुपायके प्रति कितना अज्ञान भरा है। यही बात मैंने पिंजरापोलोंमें भी देखी। वहां भी विवेक, मर्यादा और ज्ञानकी कमी पायी।

मुसलमानोंसे गोकुशी छुड़ानेके लिअे अक्सर विरोध किया जाता है और गायको बचानेमें अिन्सानोंका खून तक हो जाता है। लेकिन मैं बार-बार कहता हूं कि मुसलमानोंसे लड़कर गाय नहीं बच सकती। अिसमें तो और भी ज्यादा [illegible]

भेजें। हर पिंजरापोलके साथ अेक-अेक सुसज्जित चर्मालय होना चाहिये। अुन्हें अुत्तम साड भी रखने चाहिये, जो जनताके भी काम आ सकें। खेती और गोपालनकी शिक्षाका भी प्रबंध अुनमें होना चाहिये।

गोसेवा सघने अपने सदस्योंके लिअे यह शर्त रखी है कि वे गायका ही घी-दूध खायें और गाय-बैलका मुर्दार चमडा ही काममें लें। अिस नियमके पालनमें बडी कठिनाअी यह बताअी जाती है कि जिनके यहा हम मेहमान बनते हैं, अुनको बडी दिक्कत और परेशानी होती है। लेकिन अिन कठिनाअियोंको बहुत महत्त्व नही देना चाहिये। धर्मका पालन सदा कष्टदायी तो होता ही है। अुससे भागनेमें न बहादुरी है, न जीवदया।

आज तो गाय मृत्युके किनारे खडी है। और मुझे भी यकीन नहीं है कि अन्तमें हमारे प्रयत्न अुसे बचा सकेंगे। लेकिन वह नष्ट हो गअी, तो अुसके साथ ही हम भी यानी हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जायेगी। मेरा मतलब हमारी अहिंसाप्रधान और ग्रामीण सस्कृतिसे है। हमारा जीवन हमारे जानवरोंके साथ ओतप्रोत है। हमारे अधिकाश देहाती अपने जानवरोंके साथ ही रहते हैं और अक्सर अेक ही घरमें रात बिताते हैं। दोनो साथ जीते हैं और साथ ही भूखों मरते हैं। लेकिन हमारा काम करनेका ढग सुधर जाय, तो हम दोनो बच सकते हैं।

हमारे सामने हल करनेका प्रश्न तो आज अपनी भूख और दरिद्रताका है। हमारे ऋषियोंने हमें रामबाण अुपाय बता दिया है। वे कहते हैं 'गायकी रक्षा करो, सबकी रक्षा हो जायगी।' ऋषि ज्ञानकी कुजी खोल गये हैं अुसे हमें बढाना चाहिये, बरबाद नही करना चाहिये। हमने विशेषज्ञोंको बुलाया है और हम अुनकी सलाहसे पूरा लाभ अुठानेकी कोशिश करेंगे।"

लेकिन ११ फरवरी, १९४२ को भगवानने अचानक जमनालालजीको अुठा लिया और सारे सकल्प जहाके तहा रह गये।

१९

बापूके पांचवें पुत्रका स्वर्गवास

११ फरवरीको सुवह आठ वजे मैं वर्धा लोहेका नागर लेने गया था। भैया बबुकी दुकान पर करीव साढे तीन वजे यह दुःखद समाचार मिला कि जमनालालजीका स्वर्गवास हो गया। मुझे यह गप्प लगी, विलकुल ही विश्वास नही हुआ। क्योकि वे कल ही मेरे साथ बात करके आये थे कि परसो आकर आपसे गोसेवाकी देशव्यापी योजना पर बात करूगा। आज अुनकी मृत्यु हो जाय यह कैसे सच हो सकता है? भैया बधुने अेक आदमीको अुधर दौडाया तो अुसने भी यही समाचार दिया। मै अुनके मकानकी तरफ तेजीसे लपका तो क्या देखता हू कि अुनकी दुकानके सामने आदमियोका हुजूम खडा है। और सचमुच ही जमनालालजी अिस जगतसे विदा हो चुके हैं। मैंने देखा कि अुनका सिर बापूजीकी गोदमें है और बापूजी गभीर मुद्रामें मानो अुनसे कह रहे हैं, 'भाअी, तू मेरा पाचवा पुत्र बना था तो मुझसे पहले जाना तेरा धर्म नही था।' अुनकी मृत्यु अचानक हुअी थी अिसलिअे सब हक्केबक्के हो रहे थे। मुझे बडे जोरका धक्का लगा और मेरे सारे मनोरथो पर पानी फिर गया। अिस विचारने मेरे पैरोंके नीचेकी मिट्टी खिसका दी, क्योकि जबसे जमनालालजी गोसेवाका सकल्प लेकर बैठे थे तबसे मेरा अुनके साथ बहुत ही निकटका सबध हो गया था और मेरा पुराना मनोरथ पूरा होगा अैसी आशा बधने लगी थी। मैंने अनेक बार बापूजीके साथ झगडा किया था कि आपने जिस प्रकार चरखा सघ, ग्रामोद्योग सघ, हरिजन-सेवक-सघ, तालीमी सघ, आदिका काम देशव्यापी पैमाने पर किया है, अुस प्रकार गोसेवाके लिअे कुछ भी नही किया है, जो मेरी नजरमें अिन सब कामोंसे अधिक महत्त्वका काम है। तो बापूजी कहते, देखो मैं किसी कामका आरभ नही करता। जैसी परिस्थिति होती है और जैसे सेवक मिल जाते हैं अुसी तरह काम भी आरभ हो जाता है। गोसेवाका काम मैं करना नही चाहता हू अैसी बात नही है। लेकिन अभी तक मुझे अैसा प्रभावशाली गोसेवक नही मिला है, जिनसे मैं हिन्दुस्तानकी गायोंको बचानेका काम ले सकू।

जबसे जमनालालजीने गोसेवाका काम सभाल लिया था तबसे मुझे आशा बध गअी थी कि अब गोसेवाका काम जमेगा। क्योकि जैसे सेवकको बापूजी

तलाशमें थे, वैसा सेवक जमनालालजीमें अुन्हें मिल गया है और अुनके मार्फत बापूजीके अुद्देश्यकी पूर्ति हो सकेगी। मेरे जीवनमें जिन स्नेहियोंके वियोगका दुःख अमिट रहा है, अुनमें जमनालालजीका स्थान सबसे अूंचा है। लेकिन अुनकी मृत्युने मेरा धीरज टूट गया और मुझे आशाके प्रकाशकी जो किरणें दिखाअी देती थीं, वे फिरसे गहरे अंधकारमें विलीन हो गअीं। मैंने अनेक बार जमनालालजीको पुत्रवत् बापूजीके चरणोंमें बैठकर अुनका प्यार पाते और अुनकी फटकार भी सुनते देखा था। मैंने जब अुनकी सारी जमीनका कब्जा लिया तब मुनीमोंके कहनेसे कुछ ढीली बात करने पर जमनालालजीको बापूजीने सामने अेक मुलजिमकी तरह पेश कर दिया था। तब नम्रताने अुन्होंने सब कुछ मुझे सौंपनेका आदेश अपने मुनीमजीको दे दिया था। अितना ही नहीं, बल्कि सेवाग्रामकी सड़कके आसपास जितनी जमीन मैं चाहूं अुतनी खरीदनेका अधिकार मुझे दे दिया था और अपने मुनीमजीको कह दिया था कि जब तक अपने अिस आदेशको मैं वापिस न खींच लूं तब तक बलवन्तसिंह जिस जमीनका सौदा जितनेमें कर ले अुतनी रकम मुझसे बिना पूछे अुसे चुकाते रहना।

[illegible] लेकिन अुनके काम

है अुसको दूर कर दू। भगवानने अधिक काम लेनेकी गरजसे ही अुनको अपने पास बुला लिया। 'प्रभु तेरी गति लखि न परे।'

कुछ भी हो अुनका आरभ किया हुआ काम हर हालतमें अधिक वेगसे आगे बढेगा, असा मेरा आत्मविश्वास है। प्रभुसे प्रार्थना है कि वह मुझे बल दे, ताकि अुनकी आरभ की हुअी मशीनमे मेरा भी पुर्जेकी जगह पर अुपयोग हो सके।

बापूजीके मनमें तो अुनके चले जानेका डर था ही। वे कअी रोज पहलेसे कह रहे थे कि मुझे लगता है मैं जमनालालको खो दूगा। जब फोनसे अुनकी अकस्मात बीमारीका समाचार मिला तो बापूजी नर्पगधा औषधि लेकर ही निकले थे। लेकिन वे तो बापूजीके पहले ही चले गये। सारे वर्धामें और सेवाग्रामकी सस्थाओमे यह दुखद समाचार बिजलीकी तरह पहुच गया और हजारो लोग अुनकी श्मशान-यात्रामें शामिल हुअे। अुनका दाह-सस्कार अुमी शातिकुटीके सामने करनेका निश्चय हुआ, जहा सब छोड-छाडकर अुन्होने मात्र गोसेवाका ही ध्यान, अुसीका ज्ञान और अुसीकी भक्ति करनेका शुभ निश्चय किया था। जब अुनके पार्थिव शरीरको चिता पर रखा गया तो अुनकी धर्मपत्नी श्री जानकीबहनने अुनके साथ जलकर सती होनेका बहुत आग्रह किया। बापूजीने अुनको धीरज बधाते हुअे कहा कि "जमनालालजीके मृत शरीरके साथ जल जानेसे धर्मका पालन थोडे ही हो सकता है। धर्मका पालन तो जिस कामके लिअे अुन्होने अपना जीवन समर्पण किया था अुसको पूरा करनेसे होगा। किसीके प्रेम या मोहके वश होकर प्राण देना आसान है, लेकिन अुसके कामके लिअे जीना भारी काम है और वही अुनके प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम है। बस, आजसे यह सकल्प करो कि जमनालालजीका काम मुझे पूरा करना है।"

जब जमनालालजीका शरीर अग्निदेवकी सीढियोंने आकाशकी तरफ धाय-धाय करके अुड रहा था, सबके चेहरे मुरझाये हुअे थे, बापूजी गमगीन थे, तब केवल विनोबाजी ही अुच्च स्वरमे अीशावास्योपनिषद्का अुच्चारण जिस प्रकारसे कर रहे थे, मानो यज्ञ चल रहा हो और होता अग्निमें मत्रोकी आहुति दे रहा हो। अुनके चेहरे पर अुदासी नही बल्कि अेक प्रकारका आत्मतेज था।

अुस दिन जमनालालजीकी पवित्र स्मृति हृदयपटल पर नाचती रही और मैं सोचता रहा कि अुनके अधूरे काममें मैं कैसे मददगार हो सकता हू, गोसेवाका काम कैसे सुव्यवस्थित हो सकता है?

शानको अुनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिअे वर्धामें सभा थी। मैं भी अुसमें गया था। अुसमें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुअे विनोबाजीने कहा कि "जमनालालजीके साथ मेरा २० सालका परिचय था। लेकिन अुनके मनकी जैसी अुन्नत अवस्था मैंने अिन सवा दो महीनोंमें देखी वैसी कभी नहीं देखी थी। मनकी अैसी अुन्नत अवस्थामें मृत्यु प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है, जो जमनालालजी प्राप्त कर सके। यह सोचकर मुझे अुनकी मृत्युसे दुःख नहीं बल्कि आनंद हुआ है। अैसी पवित्र मृत्यु पानेका हम सब प्रयत्न करें। जब आत्मा अपने संकल्पको शरीरमें पूरा होते नहीं देखता तो वह अुस शरीरको फेंककर नयेमें प्रवेश करके अपना कार्य करता है। वही जमनालालजीने किया है। अीश्वर हम सबको बल दे कि हम भी जमनालालजीकी-सी मृत्यु प्राप्त कर सकें। ॐ शांति शांति शांति।"

जानकीदेवीने अपने हिस्सेकी सारीकी सारी सम्पत्ति गोसेवाके लिअे गोसेवा संघको समर्पण कर दी और अपना जीवन भी गोसेवामें लगानेका निश्चय किया। वे धीरजसे अपने काममें लग गअी। अुनके पास किस प्रकारकी शास्त्रीय योग्यता तो नहीं है जो आजकलके जमानेको चकाचौंध कर सके। अुनका समझानेका और बात करनेका तरीका बिलकुल पुराने ढंगका है। लेकिन अुनके दिलमें गोसेवाकी ही नहीं, बापू और विनोबाके हरअेक रचनात्मक काममें अपने आपको खपा देनेकी तमन्ना है। मैं तो अुनको काफी सताता हूं। और प्रेमसे वे भी मुझे काफी गालियां सुना देती हैं। लेकिन मेरी अुनके प्रति कितनी श्रद्धा है और अुनका मेरे प्रति कितना प्यार है, जिसका अन्दाजा दूसरोंको कल नहीं सकता है। दधीचिकी तरह अगर गोसेवामें अुनकी हड्डियोंका अुपयोग हो सकता हो तो वे खुशीसे दे देंगी। सारे देशमें गोसेवा, भूदान, संपत्तिदान आदिके काममें अकेली ही घूमती रहती हैं। अुनकी अिस सेवा और लगनको देखकर भारत सरकारने अुन्हें पद्म-भूषणकी अुपाधि प्रदान की है। अुनकी सादगीसे तो दूसरे भी तंग आ जाते हैं। अगर मैं यह कहूं कि अुन्होंने बापूजीके अुस रोजके श्मशानके आदेश और आशीर्वादके अनुसार काम करनेमें कुछ भी अुठा नहीं रखा है तो जिसमें कोअी अतिशयोक्ति नहीं हो सकती है। जिसमें अुनकी पतिभक्ति, गोभक्ति, देशभक्ति, गुरुभक्ति, सब कुछ आ जाता है। जिसको कहते हैं शुभ संकल्प और दृढ़ निश्चय।

२०

गोशालासे बिछोह और मेरी बेचैनी

जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद गोसेवा सघका नया सगठन बना। अध्यक्ष माता जानकीदेवी बजाज, अपाध्यक्ष श्री घनश्यामदासजी बिडला और मत्री स्वामी आनद बनाये गये। ये लोग चाहते थे कि बापूजीके आसपास ही गोसेवा सघका गोपालन केन्द्र खोला जाय। अिस दृष्टिसे अिन लोगोंने आसपासके गावोमें जमीन तलाश की, लेकिन मौकेकी जमीन नही मिली। अेक रोज सरदार वल्लभभाअीने स्वामीसे कहा, अरे भाअी तुम अिधर-अुधर क्यो घूमते हो? आश्रमकी ही खेती और गोशाला लेकर काम करो ना। अब तक अुनके मनमे अिस प्रकारका विचार था या नही यह तो भगवान जाने, लेकिन सरदारजीके कहनेसे अुनको यह विचार ठीक लगा। बापूजीसे पूछा गया तो अुन्होंने कहा, मैंने अिस प्रकार सोचा तो नही है तो भी अगर बलवन्तसिंह और पारनेरकर राजी हो जाय तो मैं राजी हो जाअूगा। स्वामीने मुझसे कहा कि हमने तलाश की है लेकिन आसपास कोअी ठीक जमीन नही मिल रही है। अगर न मिल सके तो हम आपकी जमीन और गोशालाका अुपयोग करना चाहते हैं। बापूजीने कहा है कि अगर आप और पारनेरकरजी राजी हो जाय तो मुझे कुछ भी हर्ज नही होगा। तुम बलवन्तसिंहजीसे बात करो। मैंने कहा कि अगर बापूजी चाहते है तो मुझे क्या हर्ज है। स्वामीने कहा, अगर आपको प्रयोगके लिअे जमीन चाहिये तो थोडी हम दे सकते है। मैंने कहा, मुझे कुछ व्यक्तिगत प्रयोग नही करना है।

मैंने अपनी डायरीमें लम्बा नोट लिखा कि अगर बापूजी सचमुच ही खेती और गोशाला गोसेवा सघको सौंपना चाहते हो तो भले सौंपे, क्योंकि आखिर यह सब अुनकी अिच्छासे खड़ा हुआ है। हा, मुझे दुःख तो जरूर होगा। क्योंकि मैंने अिसके निर्माणमें काफी शक्ति लगाअी है और जहा तक अिसे पहुचानेका सोचा था वहा तक नही पहुचा सका और बीचमें ही यह विघ्न आ गया। गोसेवा सघके साथ काम करना भी मेरे लिअे कठिन पडेगा, क्योंकि दो कल्पनाअे साथ साथ नही चल सकेंगी। अिसलिअे मुझे अपने आपको गोशालासे हटाना ही पडेगा। मैं अुनका रास्ता साफ कर दूगा।

जिस पर बापूजीने लिखा जिनका अर्थ जिनकार है, जिसीलिजे तो मैंने कहा कि बलवन्तसिंह और पारनेरकरको पूछो और वे लोग राजी हो तो मुझे कुछ अडचन नही होगी। वे लोग तुम्हारी बात समझे भी नहीं है। अुनसे बात करो।

२८-४-'४२ बापू

महावीरप्रसादजी पोद्दार और स्वामीने मेरे पास खबर भेजी कि आपको बापूजीने बुलाया है। जिस पर मैं मुझे लगा कि ये लोग बापूजीके मार्फत मुझे दबाना चाहते हैं। खबर लानेवालेसे मैंने कह दिया कि जब बापूजी बुलावेंगे तब चला जाअूंगा। अुन लोगोंको बीचमें पडनेकी जरूरत नही है।

मैं कामसे कहीं जा रहा था। बीचमें स्वामी और पोद्दारजी मिल गये। वहीं अुन्होंने बात दोहराअी और मुझे समझानेकी कोशिश की। साथ ही यह भी कहा कि बापूजीने हमसे कह दिया है कि तुम बलवन्तसिंहको समझानेकी कोशिश करो। अगर वह नही मानेगा तो अेक आदमीके कारण जितना बडा काम रोका नही जा सकता है। जिसलिजे आप मान जाय तो जिसमें आपकी शोभा है। जिस परसे मुझे लगा कि ये लोग मेरे साथ औपचारिक भाषाका प्रयोग करना चाहते हैं। जिसके पीछे तलवार लटकती है। अुनकी बातचीतके जिस रुखने मुझे विद्रोही बना दिया। मैंने कह दिया कि अगर सचमुच अैसी बात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नही है। क्योंकि मैं यह समझ गया हू कि मुझे केवल राजी रखनेकी कोशिश की जा रही है। होगा तो वही जो आप लोगोंने ठान लिया है। तो मैं जितना मूर्ख नहीं जो जिस डरसे राजी हो जाअू। तब तो आज तककी मेरी साधना फिजूल ही जावेगी। पोद्दारजीने कहा, भाअी आजका जमाना ही अैसा है कि औपचारिक भाषा बोलनी पडती है। जब आप जानते हैं कि काम तो होने ही वाला है तो राजीसे कबूल करनेमें आपकी भलमनसाहत होगी। जिस पर घनश्यामदासजी ३ लाख रुपये खर्च करनेवाले हैं। मैंने कहा, अैसी भलमनसाहत और घनश्यामदासजीके ३ लाख रुपयेकी मेरे पास कोअी कीमत नही है। जिस प्रकारसे मेरे साथ दबानेकी कोशिश करना बेकार है।

बादमें मैं बापूजीके पास गया और अुनसे पूछा कि आपने मुझे बुलाया था। बापूजीने कहा, मैंने तो नहीं बुलाया था। हां, अुन लोगोंको तुमसे बात करनेको कहा था। तुमको कुछ कहना हो तो कहो। जितनी बात मुझे

लगती है कि गोशाला गोसेवा सघको देनेसे मेरे सिरका भार हलका हो जावेगा। लेकिन तुम सोचो। मैंने बापूसे कहा कि मैं सब आश्रमवासियोंसे मिलकर आपको बताअूगा।

बादमें श्री चिमनलालभाअी और मुन्नालालभाअीके साथ बैठकर विचार किया। हम तीनो अिस नतीजे पर पहुचे कि अगर गोशाला अुनको देना ही हो तो मेरा समावेश अुसमें नही हो सकेगा। दोपहरके भोजनके बाद जानकीबहन आअी और कहने लगी, आप थोडे अुदार बनो। मैंने कहा, मेरा काम करनेका तरीका अलग है और अुनका अलग होगा। अिसलिअे या तो मुझे हटाकर पूरा काम ले लो या मेरे हाथके नीचे अपने प्रयोग करो। मेरे पास बीचका रास्ता नही है। मैंने अपने जीवनमे आजतक जो सीखा है अुसे मैं खोना नही चाहता हू। अिसमें बापूजीका भी काफी हाथ है। घनश्यामदासजी या और कोअी अिसमें ३ लाख खर्च करेगे अिसकी मेरे नजदीक कुछ भी कीमत नही है। हा, बापूजी मुझे योजना दें और अुसके लिअे पैसा दें तो अुसे पूरा करनेका मैं सामर्थ्य रखता हू। लेकिन कठपुतली बनकर मैं कुछ भी करनेको तैयार नही हू। बादको मैं सतरेके बगीचेमें जाकर सो गया। शामको अुडती हुअी खबर मिली कि खेती और गोशाला बापूजीने गोसेवा सघको सौंप दी है। साथ साथ यह भी खबर मिली कि गोसेवा सघ मुझे साथ रखनेके लिअे तैयार नही हैं। दूसरी खबरका तो कुछ भी अर्थ नहीं था, क्योंकि मैं खुद ही साथ रहनेको तैयार नही था। लेकिन मुझे विश्वास नही होता था कि मेरे साथ पूरी बात किये बिना बापूजी अैसा कर सकते हैं। मैंने अपने मनके विचार डायरीमें अिस प्रकार लिखे अगर बापूने सचमुच अैसा किया हो तो मेरी और बापूजीकी बडी कसौटी हो जावेगी। मैं मन ही मन कह रहा था कि देखू औश्वर क्या चाहता है। अपनी बात पर अटल रहनेका औश्वर बल दे यही प्रार्थना है। बाकी जगतके सम्बन्ध तो स्वार्थसे सने हुअे ही रहते हैं, लेकिन बापूजीका सम्बन्ध निःस्वार्थ भावसे जुडा है। अगर वह भी टूटा तो मुझे अेक बहुत बडा पाठ सीखनेको मिलेगा। मेरी औश्वर पर पूरी श्रद्धा है कि वह जहा भी मुझे ले जायगा, वहा मेरे कल्याणके लिअे ही ले जायगा। अगर मुझसे और भी शुद्ध और कठिन साधना करानी होगी तो मुझे यहासे जबरन् अुठा ले जायगा और अुसके भी लायक बनानेकी परिस्थितिमे रख देगा। अितना मुझे पूर्ण विश्वास है। हे भगवान, तू कितना ही नाच नचा लेकिन आखिर तो तुझे हैं। व्यवस्था

करनी होगी। आज तकके अनुभवके आधार पर मैं कबूल करता हूं कि तूने मेरा कल्याण करनेके लिअे ही पहले कड़आ घूंट पिलाया है। अिसलिअे अिस अंधकारकी आडमें मुझे तेरी ज्योति नजर आती है। हालांकि मैं अभी तक अुसके लायक नहीं बना हूं। तेरे अूपर विश्वास जरूर है। यह तेरी मेरी गूढ़ सगाअी किसीको मालूम न हो अिसका भी मैं ध्यान रखता हूं। और तू भी रखता है। यह बात कागज पर लिखना भी अपना भेद खोलना है। मौन में ही सब कुछ समाया है। गुड़की मिठासकी व्याख्या करने बैठना मूर्खता नहीं तो और क्या है? बन्द होने दे तमाशा और देखने दे मुझे कैसा आनंद आता है।

मैंने बापूजीको लिखा

परम पूज्य बापूजी,

गोशालाके बारेमें आपके सामने मेरे बारेमें महावीरप्रसादजीने जो बात कही है वह अेकपक्षीय है, क्योंकि अुस समय मुझे भी बुलाना चाहिये था। आपसे यह कहा गया है कि बलवन्तसिंह तो यह कहता है कि मेरे साथ संधि नहीं हो सकती है। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि अुन्होंने मुझे धमकी दी थी कि आप न मानोगे तो भी काम तो होने ही वाला है, अच्छा है आप समझ जायं। अिस पर मैंने कहा, कि अगर यही बात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नहीं रह जाता और अिस प्रकार धमकीकी तलवार मेरे सिर पर लटकाकर आप मुझे झुका नहीं सकते। अगर आपकी धमकीसे मैं झुक जाअूं तो आज तकका मेरा प्रयत्न व्यर्थ हो जायगा। अिसलिअे मैंने कहा था कि अिस मनोवृत्तिसे मेरे साथ संधि नहीं हो सकती। जब तक मुझे अैसा न लगे कि मेरी राय अमान्य हो सकती है, तब तक अिस डरसे कि अच्छा है अिनकी ही बात मान लूं, मैं क्यों अपनी बेअिज्जती करूं? यह बात मेरे स्वभावमें नहीं है कि मैं किसीके डरसे झुक जाअूं। आपने जो फैसला किया होगा वह तो ठीक ही होगा। लेकिन मुझे समझाकर और मेरी बात समझकर आप फैसला करते तो अच्छा होता। दूसरोंकी बात सुनकर किया होगा तो मुझे अिस बातका दुःख होगा कि मेरी बात बिना सुने फैसला क्यों किया। आप अपने फैसलेसे जल्दी सूचित करेंगे तो मुझे शांति मिलेगी।

कृपापात्र

बलवन्तसिंहके प्रणाम

अूपरकी डायरी और पत्र, जो डायरीमें ही था, पढनेके वाद मेरी डायरीमें वापूजीने लिखा

चि० वलवन्तसिंह,

तुम्हारा सव लेख पढ गया। मुझे वडा दु ख होता है। यहा ओीश्वरका नाम लेना अज्ञानसूचक है। तुम्हारे लेखमें अहकार भरा है। तुमको वुलाकर क्या फैसला करना था? गोसेवा सघ हमारा सव काम ले ले तो हमें खुश होना है। अुनमें से किसीको स्वार्थ नही है, तो भी तुमको स्वार्थकी वू आती है। तुमको धमकी देनेकी वात कहा है? जानकीवहनको तो वेचारीको मैंने भेजा था। तुमको विनय करने आओी थी। मैंने भी कहा, विनय करो। ठीक है जो अच्छा लगे सो करो। मै तो अव भी कहता हू कि जैसा सववाले कहें वैसा करो। अिसमें तुम्हारी शोभा है। तुम्हें मुझको कुछ समझाना है तो समझाओ। वे लोग भी तो सव मुझको पूछकर ही करनेवाले हैं। वे भी तुम्हारे जैसे ही सेवक हैं। वे भी अुसी ओीश्वरको भजते है जिसको तुम। फरक अितना है, तुम नाम ओीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। अहता अितनी है कि किसीके साथ काम नही कर सकते हो। जरा नीचे अुतरो, जरा समझो।

१-५-'४२ वापूके आशीर्वाद

अिसके अुत्तरमें मैंने लिखा

परम पूज्य वापूजी,

आपका लेख पढकर मुझे अितना दु ख हुआ कि आज तक कभी नहीं हुआ था। अिसमें अितना रोष है कि अुसे हजम करना मेरी शक्तिके वाहरकी चीज है। अहिंसाकी तो अिसमें वू तक मुझे नही आती है। 'नाम ओीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो।' यह मर्मभेदी वाक्य आपकी कलमसे!! 'तुमको वुलाकर फैसला क्या करना था?'— आपके अिस वाक्यने मेरी सारी भावनाओंको कुचल डाला है। वे सेवक नहीं है या ओीश्वरको नही भजते या ओीश्वरका काम नही करते हैं, अैसा मैंने कभी नही कहा है। चूकि आप सवके अन्तरकी वात जानते हैं अिसलिअे अैसा कह सकते है कि नाम ओीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। मेरे लिअे आपका यह वाक्य जले पर नमक डालता है।

बापू, आप मेरे प्रति कितना अविश्वास भी रख सकते हैं, अिसका मुझे आज पता चला। दरअसलमें मेरा वह प्रेम आपके लिअे नहीं, मेरे लिअे ही था। खेती और गोशालाके अेक अेक झाड और अेक अेक जानवरके साथ मेरा आत्मीय संबंध है। वह किसीको दिखानेके लिअे नहीं या अीश्वरका नाम लेकर अपना ही काम करनेके लिअे नहीं है। अुसके पीछे मैंने अपने खूनका पसीना बहाया है। वह नाम या अपने नामके लिअे नहीं। अुनके करने और सोचनेमें जो आत्मिक संतोष मिलता है, अुसके लिअे आप या और कोअी अिसमें मेरा स्वार्थ माने तो भले मानें। अगर नाम अीश्वरका और काम अपना ही किया होता तो आप या और कोअी मुझसे अिस चीजको अिस तरहसे छीन नहीं सकता था। अेक तरफ तो आप यह कहते हैं कि बलवन्तसिंहको राजी कर लो और दूसरी तरफ लिखते हैं 'तुमको बुलाकर क्या फैसला करना था?' मुझे लगता है कि आपका काम था कि मुझे बुलाकर समझा देते कि गोशालाकी भलाअी संघको ही देनेमें है और तुम संघकी दृष्टिसे काम करो। तो मैं आपकी बातका अिनकार थोड़ा ही करनेवाला था। श्री जानकीबहनको मैंने साफ कह दिया था कि अगर बापूजी चाहें तो मैं गोसेवा संघके पैमाने पर काम कर सकता हूं। संघके साथ काम करनेमें मुझे यह अड़चन थी कि अगर संघवाले . की दृष्टिसे यहांका सारा कार्यक्रम बनायें और अुसको मेरे अूपर लादना चाहें तो अिसे मेरी आत्मा बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और अिससे अुनको भी अपने विचारके अनुसार काम करनेमें अड़चन होगी और मुझको भी। अगर मैं अुनसे दबकर काम करूंगा तो मेरा तेजोवध होगा और काम भी बिगड़ेगा। अिसलिअे पहलेसे ही अलग हो जाना सुरक्षित मार्ग है। हो सकता है अिसमें मेरी भूल हुअी हो। स्वामी या पोद्दारजीके साथ काम करनेमें मुझे किसी प्रकारकी अड़चन नहीं थी।

गोसेवा संघका काम बढ़े और फले-फूले, अिससे मुझे जितनी खुशी हो सकती है अुतनी थोड़ी है। आपको याद हो तो मैं आपसे कअी बार कहता हूं कि आपने जिस प्रकार चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ अित्यादिका काम व्यापक रूपसे किया है, अुसी प्रकारसे गोसेवा संघका क्यों नहीं करते हैं। मुझे लगता है कि आपने जो लिखा है अुस पर फिरसे विचार करियेगा। मेरा लेख भी फिरसे पढ़ियेगा। अगर फिर भी अुसका अर्थ यही निकले

कि मैं नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहता हू तो अैसे स्वार्थी आदमीके लिअे आपके पास स्थान नही होना चाहिये। ”

मैं यह सब लिख रहा था कि बापूजीका बुलावा आ गया। मैं गया। बापूजीने कहना आरभ किया “देखो मेरे मनमें गोशाला सघको देनेका विचार नही था। लेकिन मेरे ही आसपास जिनकी काम करनेकी अिच्छा रही, जो ठीक भी थी। क्योकि मैं भी देखना चाहता हू कि ये लोग कितना काम कर सकते है। अिनको दूसरी अुपयुक्त जमीन न मिली तो मुझसे पूछा। मैंने कहा अगर बलवन्तसिंह और पारनेरकर राजी हो जाय तो मैं राजी हो जाअूगा। अिसलिअे ये लोग तुम्हारे पास गये। अिसमे घमकीकी क्या बात थी? तुमको तो खुश होना चाहिये था कि ये लोग गोसेवाका बडा काम करना चाहते है तो अपना भार अितना कम हुआ। मेरे सिर पर तो लडाअी झूल रही है। कब क्या होगा कहना कठिन है। तो यह भार हलका हो जाय तो अच्छा ही है। तुम्हारा धर्म है कि तुम अुनके साथ काम करो और अुनकी मदद करो। अपने अनुभवका लाभ अुनको दो। आखिरमें वे भी तो गोसेवा ही करना चाहते है। तरीकेमें फरक हो सकता है तो अेक दूसरेको अपनी बात समझाकर आगे बढ सकते हो। मेरी सलाह है कि तुम अपनी सेवा गोसेवा सघको दो। हा, यह दूसरी बात है कि वे तुम्हारी सेवाका अस्वीकार कर दें तो तुम्हारा रास्ता साफ हो जायगा। लेकिन अपनी तरफसे अिनकार करना किसी भी तरह अुचित न होगा। तुम अिस पर विचार करो। मैं कहता हू अिसलिअे नही लेकिन जब तुमको भी अैसा लगे कि तुम्हारे सहयोगसे अच्छा काम हो सकता है और गोवशकी सेवा हो सकती है तो तुम्हारा धर्म हो जाता है कि तुम अुनके साथ काम करो।”

बापूजीकी बातसे मुझे पूरा समाधान तो न हुआ, लेकिन मनमें जो अुद्वेग था वह कुछ कम हो गया। मैंने विचार किया कि अगर मुझे काम करनेकी स्वतत्रता मिली तो मैं आश्रमकी तरफसे ही गोसेवा सघके साथ काम करनेके लिअे अपने आपको तैयार कर लूगा। और जो कुछ अडचन आयेगी वह बापूजीके सामने रख दिया करूगा। आखिर सघबलसे अधिक काम बढनेकी आशा तो की ही जा सकती है।

मैंने अपना यह विचार और सारी डायरी किशोरलालभाअीको पढाअी और कहा कि आपको कष्ट देनेकी अिच्छा तो नही थी। लेकिन क्या करू?

बापूजीके फैसलेसे मुझे भारी आघात पहुंचा है। अैसा निर्णय करके बापूजीने भारी भूल की है। मेरी आन्तरिक भावनाओंके बारेमें अैसा निर्णय देना अुनके लिअे योग्य नहीं था।

किशोरलालभाअीने यह पढा और कहा कि 'अब अिसके बारेमें अधिक तुलना करनेसे कुछ लाभ न होगा। मेरा अैसा अनुभव है कि अैसी बातोंको भविष्यके अूपर छोड देना चाहिये। जिसकी भूल होगी अुसको महसूस हो जायगी। मैं अब आपका अिस संघमें रहना लाभदायी नहीं मानता हूं। क्योंकि अिसकी शुरुआत ही बिगड गअी है। अब सन्तोषपूर्वक काम कर सकेंगे अैसा मुझे नहीं लगता है। अिसलिअे अगर आपको कुछ करना है तो छोटे पैमाने पर अलग ही स्वतन्त्रतापूर्वक करना चाहिये, जो सेवाग्रामके किसानोंके लिअे अुपयोगी हो सके और आपको भी सन्तोष मिल सके।' किशोरलालभाअीकी यह बात मुझे पसन्द आअी। लेकिन यहां पर अलग काम करनेमें अनेक बाधायें आयेंगी, अैसा सोचकर अलग काम करनेका विचार मैंने छोड दिया और तय किया कि अगर संघवाले मेरी मदद चाहेंगे तो जरूर दूंगा। मैंने बापूजीको लिखा

सेवाग्राम, ३-५-'४२

परम पूज्य बापूजी,

मैंने अपनी सारी डायरी पू० किशोरलालभाअीको पढाअी है। वे मेरी और संघकी भूमिका समझ गये हैं अैसा मुझे लगता है। मैं नाम अीश्वरका लेकर काम अपना करना चाहता हूं, यह लिखकर और मुझे बिना समझाये गोशाला संघको देकर मेरे साथ आपने न्याय किया या अन्याय, अिसकी दलीलमें न पडकर अिसे मैं भविष्यके अूपर छोडता हूं। अगर अपनी भूल समझमें आवेगी तो आपसे और संघसे क्षमा मांगनेमें मुझे शर्म नहीं आयेगी। मैंने अपनी सारी कठिनाअी पू० किशोरलालभाअीको समझा दी है। मेरा गोसेवा संघके साथ कैसे मेल बैठ सकता है अिसका रास्ता आप निकालकर मुझे बतानेकी कृपा करियेगा। जब आपको समयकी अनुकूलता हो बुला लीजियेगा।

कृपापात्र
बलवन्तसिंहके प्रणाम

सेवाग्राम, ४-५-'४२. डायरीसे

आज ग्रामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे बुलाया। पू० किशोरलाल-भाओी भी वहीं पर थे। अुन्होंने संघकी और मेरी सारी मनोभूमिका समझाओी। बापूजीने कहा, गोसेवा संघने हमारा भार हलका कर दिया यह तो अच्छा ही हुआ। मेरी राय है कि बलवन्तसिंहको यहीं रहना चाहिये। कभी अैन मौके पर काम आ जायगा। जाना चाहे तो जा भी सकता है। मैंने कहा, सेवाग्राममें ही रहनेका आग्रह नहीं है, लेकिन अेकाअेक आपको छोडकर जानेकी अिच्छा भी नहीं है। अगर आप मेरी भावनाको समझ गये हैं और अुसकी रक्षा करते हुअे गोसेवा संघमें मेरी सेवा देना चाहते हैं तो मैं अपने आपको तैयार कर लूगा। बापूजीने कहा, यह तो बडी खुशीकी बात है। अगर वे तुम्हारा अुपयोग करना नहीं चाहें तो मैं अेक मिनट भी तुमको अुनके पास नहीं रखना चाहूगा। और किशोरलालभाओीसे बोले, तुम कल स्वामीसे बात करके सब तय कर देना और मुझे आखिरी खबर सुना देना। हमारी यह बात करीब अेक घंटे तक चली।

सेवाग्राम, ५-५-'४२ डायरीसे

आज पू० किशोरलालभाओीने मुझे, स्वामीको, पारनेरकरजीको और चिमनलालभाओीको बुलाकर सब बातें की। स्वामीने मेरी सेवा लेनेसे अिनकार कर दिया।

बस, मेरा रास्ता साफ हो गया। बापूजीने जो कल कहा कि तुम्हारे काममें कोओी दखल नहीं देगा यह बात गलत सिद्ध हुओी और अब यह बात नहीं रही कि मैं गोसेवा संघके साथ काम करना नहीं चाहता हू। पू० किशोरलालभाओीने हम दोनोंसे सद्भावना बढानेको कहा। गोशालाका चार्ज आज ही देनेका तय हुआ और मैंने २ बजे भाओी कमलाकर मिश्रको चार्ज दे दिया। अेक रोज स्वामीने किशोरलालभाओीसे शिकायत की कि बलवन्तसिंह गोशालाके मजदूरोंको बहकाता है, अिसलिअे वे काम छोड रहे हैं। किशोरलाल-भाओीने कहा अिसका अर्थ तो यह है कि बलवन्तसिंह सेवाग्राम भी छोड दे। स्वामीने कहा, हां यही है। किशोरलालभाओीने यह बात बापूजीको बताओी तो बापूजीने कहा, बलवन्तसिंह अैसा कर ही नहीं सकता है। स्वामी तो कल यह कहेगा कि बाको भी यहां न रहने दो तो क्या मैं बाको निकाल

दूगा? बलवन्तसिंह कहीं नहीं जायगा। बापूजीके अिस प्रेम और दृढ़ताको देखकर मेरा सारा दुःख हलका हो गया। असलमें तो मैंने अिनसे अुलटा ही किया था। सब नौकरोंको मैंने समझाया था कि कोअी काम न छोड़े और अच्छा काम करे, क्योंकि मेरे मनमें अुनका काम बिगाड़नेकी कल्पना ही नहीं थी। लेकिन वहमकी दवा तो लुकमानके पास भी नहीं होती। फिर भी बापूजीका मुझ पर विश्वास है। मेरे लिअे अितना बस है।

अन्त भला तो सब भला। गीतामाताने कहा है, 'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्।' (अ० १८, श्लोक ३७) मेरी बात अुस रोज सबको कड़वी लगी थी। और मेरे हाथसे गोशाला निकल जानेका मुझे भी दुःख हुआ था। लेकिन आज जब अपनी अिस डायरीके पन्ने अुलटता हूं तो मुझे लगता है कि मेरी बात ही सही थी। आज सेवाग्राममें न तो गोसेवा संघ है, न अुसके कार्यकर्ता हैं।

२१

सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग

१

खजूर-गुड़ और नीरा

भाअी गजाननजी नायक बापूजीके पास कैसे आये, अिसकी पूरी जानकारी मेरे पास नहीं है। लेकिन अैसा लगता है कि ये भाअी मगनवाड़ीमें ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बनकर ही आये थे। कुछ दिन तो अुन्होंने सिंदी गांवमें ग्रामसफाअीका तथा नीरा और गुड़का काम किया। लेकिन जब हमारा सेवाग्राममें डेरा जमा तो बापूजीने सेवाग्राममें नीरासे गुड़ बनानेका काम आरंभ करनेकी ठानी और अिसके लिअे भाअी गजाननजी नायक वहां आ गये। सेवाग्राममें खजूर तो काफी थी। अुससे लोग ताड़ी निकाला करते थे। चटाअी और पंखे भी बनाते थे। लेकिन बापूजी तो अुससे गुड़ बनाना चाहते थे। अिसलिअे सरकारसे खास अिजाजत लेकर मीठी नीरा लोगोंको पिलाने और गुड़ बनानेका काम आरंभ किया गया। भाअी गजाननजी खजूरका रस निकालनेवालोंके साथ खुद भी खजूर पर चढ़ते, नीरा निकालते तथा अुसका गुड़ बनाते। आश्रममें भी नीराका नाश्ता होने लगा। गांवके लोग भी वहीं आकर

नीरा पीने लगे। दो पैसे गिलासमे आधा सेर मीठे पेयके रूपमें लोगोको बडा पोषण मिल जाता था। जब गुडके अनेक नमूने भाअी गजाननजी बापूजीके सामने रखते तो बापूजी सबकी बानगी अुठा अुठा कर देखते और खुश होते थे। बापूजीकी खुशीको देखकर भाअी गजाननजी फूले न समाते। हम सब लोग अुमी गुडका अुपयोग करते थे। अेक दिन बापूजीने मुझसे कहा, "तुम गजाननके कामको देखते हो या नही? वह भी तो अेक ग्रामसेवाका ही काम है न? और तुम तो यहाके भूमिया हो। हर काममें रम लेना और अुसकी कलाको सीख लेना तुम्हारा काम है। अिससे गजाननको भी मदद मिलेगी। अरे, खजूर भी तो अेक प्रकारकी गाय ही है न? देखो तो सही अुसका दूध तो तुम्हारी गायसे भी मीठा होता है। तुम तो पीते हो न?" असलमें मै न तो नीरा पीता था, क्योकि अुसमें अेक प्रकारकी गध आती थी जो मुझे पसद नही थी, और न गजाननजीके पास ही जाता था। बल्कि मेरा और अुनका तो झगडा भी हो गया था। क्योकि मैने अपनी गोचर भूमिमे से खजूरके हजारो पेड काट डाले थे, जिसका केस मेरे अूपर भाअी गजाननजीने बापूजीकी अदालतमें चलाया था। लेकिन जब बापूजीने आग्रहपूर्वक कहा तो मै गजाननजीके पास जाने लगा और यहा तक आगे बढा कि खजूर छेदनेमे अुनका चेला बन गया। मुझे खजूर पर चढकर अुसे छेदने और सुबह नीरा अुतारनेका अितना शौक लगा कि मेरे पैरोमें फोडे होते हुअे भी शामको खजूर छेदकर मटकी बाधने और सुबह अुसे अुतार कर गुड बनानेके लिअे मै लगडाता-लगडाता भी पहुच जाता था। वह काम मुझे बहुत ही पसन्द आ गया था। नीरा पीनेका अभ्यास भी हो गया था। आज भी अगर मेरे पास खजूरके झाड हो तो नीरा निकालनेकी बात मनमें है। भाअी गजाननजी तो अिस कलामें अितने पारगत हो गये कि अुन्होने सारे हिन्दुस्तानमें अिसका प्रचार और सगठन किया। यहा तक कि दिल्लीमे भारत सरकारके ताडगुड-विभागके बडे अफसरका पद अुनको मिला। बडा पद मिलने पर भी अुन्होने न तो अुस पदका १५०० रुपया वेतन लिया, न अुसकी पहले दर्जेमें सफर आदि सुविधाओका ही अुपयोग किया। अपना वही पुराना परिश्रमी सेवकका ध्येय अुन्होने निभाया। अेक बार बात बातमें पू० श्रीकृष्णदास जाजूजीने मुझसे कहा था, देखो हमारे जो लोग सरकारमें गये अुन सबको वहाकी हवा लगे बिना न रही। अेक गजानन ही अैसा है जो अुस हवासे बचा है।

बापूजीकी प्रयोगशालामेंसे अैसे अनेक सेवक निकले, जो आज भी अुसी चक्करमें घूम रहे हैं और देशकी अमूल्य सेवा कर रहे हैं। 'निकसत नाहिं बहुत पचि हारी रोम रोम अुरझानी'। अुनका प्रेम और आशीर्वाद अनेक सेवकोंके रोम-रोममें अैसा रम गया है कि वे निकालना भी चाहें तो निकल नहीं सकता। भाअी गजाननजी नायक भी अुनमें से अेक हैं।

गजाननजी नायक शायद कोंकणके हैं। अुन्होंने मेट्रिक पास करके हाअीस्कूल छोड़ा। आजकल वे केन्द्रीय सरकारके ताड़गुड़-सलाहकार हैं। अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग बोर्डके ताड़गुड़-विभागके संचालक हैं और बम्बअीमें रहते हैं।

२

कुम्हार-काम

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल मगनवाड़ीमें कुम्हारका काम सीखते थे। अुनकी अिच्छा सेवाग्राममें बापूजीके निकट रहनेकी हुअी। बापूजीने अुन्हें अिजाजत दे दी। वे आ गये और लगे बरतन बनानेकी मिट्टी खोजने। बापूजीने कहा, "सेवाग्राममें या अिसके आसपास जहां पर भी अच्छी मिट्टी मिले तुम अुसकी खोज करो। यों तो आज भी देहातके लोग मिट्टीके ही बरतनोंका अुपयोग अधिक करते हैं। अुनके पास धातुके बरतन खरीदनेके लिअे पैसे कहां हैं? और अैसे भी मिट्टीके बरतन स्वास्थ्यप्रद होते हैं। हां, अुनमें सुधारकी काफी गुंजाअिश है। तुमको अिसमें अुस्ताद बन जाना है।"

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अपनी धुनके पक्के थे। अुन्होंने मिट्टीकी खोज तो की ही, अच्छे कुम्हारोंकी भी खोज की। क्योंकि आखिर तो कुम्हारीके ही पेशेका विकास करना मुख्य अुद्देश्य था। वे वर्धासे पांडुरंग नामक अेक कुम्हारको खोज लाये। अुनके परिवारको आश्रममें लाकर बसा दिया और खुद भी अुनके साथ कुम्हार-काममें जुट गये। खाने-पीनेके नये नये नमूने, पानीदार कटोरे, नमकदानी (क्योंकि मसाला तो हमारी रसोअीमें था ही नहीं सो मसालेदानी क्यों बनाते) वगैरा बरतन बनाने। सबसे मिट्टीके बरतनोंमें ही खाने-पीनेका आग्रह रखते। दूसरे खाते या न खाते, लेकिन बापूजी तो मिट्टीके बरतनमें ही खाते थे। [illegible] चम्मच और मिट्टीका कटोरा बापूके [illegible] रहा। जेलसे लाया हुआ लोहेका कटोरा और

पानीका टमलर भी बापूजीके साथ अन्त तक रहा। आश्रमके अेक कोनेमें कुम्हारका टडीरा, अुसके बच्चे-कच्चे, अुसकी मिट्टी, अुसकी गाडी, बरतनोका ढेर, बरतन पकानेका आवा! सारा अेक अद्भुत दृश्य था। जब नये नये नमूने बनाकर भाअी चन्द्रप्रकाशजी बापूजीको दिखाने लाते तो बापूजीकी खुशीका पार न रहता। अुनका अुत्साह बढानेके लिअे बापूजी काफी समय देकर अुनमें और भी सुधारकी सूचनायें करते। जिस प्रकार मुझे गोसेवाका ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे देशमे कही भी जानेकी छूट थी, अुसी प्रकार भाअी चन्द्रप्रकाशजीको भी कुम्हार-कामके लिअे कही भी जानेकी छूट थी। अिसलिअे अुनको जहा जहा अच्छे कामका पता चलता वही वे दौड जाते। कुछ दिन काशी विश्वविद्यालयमे भी सीखने गये थे। चीनीके बरतनोका भी अुन्होंने अभ्यास किया। नये सुधारोका कुम्हारोमें प्रचार भी खूब किया। और अेक बार तो सेवाग्राममें कुम्हार-समेलन भी करा डाला।

खजूर और ताड वृक्षोसे नीरा निकालनेके बरतनोमे अुन्होने काफी सुधार किया था। पुराने ढगके बरतनोमे नीरा जल्दी खट्टी हो जाती और पीने या गुड बनाने लायक नही रहती थी। वे बरतन नीराको सोख भी जाते थे। भाअी चन्द्रप्रकाशजीने अैसी पालिश खोज निकाली जिससे नीरा जल्दी खट्टी न हो और बरतन अुसे सोखें भी नही। अिसका प्रचार अुन्होने सारे हिन्दुस्तानमें किया, जो काफी कामयाब सिद्ध हुआ। चन्द्रप्रकाशजी जातिके बनिये होनेसे दुकानदारीका काम भी अच्छा कर सकते थे। अुन्होंने आश्रममे बापूजी और विनोबाजीके साहित्यकी छोटीसी दुकान भी आरभ कर दी, जो अेक पथ दो काज सारती थी। आनेवाले दर्शनार्थियोको अच्छा साहित्य सहज प्राप्त हो जाता था। और अुसमें से ही अुस कामका व्यवस्था-खर्च निकल आता था। यहा तक कि अुसमें से बची हुअी दस बारह सौ की रकमकी अेक थैली जब राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू आश्रममें राष्ट्रपति बननेके बाद पहली बार गये तब अुन्हे भेंट भी की गअी थी। मैं तो अुनको प्रजापतिके नामसे ही पुकारता था। आज भी मेरा तो यही नाम चलता है। अुनका साहित्य-प्रचार और मिट्टीके बरतनोका प्रचार चालू ही है।

मुझे तो हसी आया करती थी कि कुम्हार-काम भी कोअी प्रचारका काम है, यह तो गाव-गावमें चलता ही है। लेकिन बापूजीकी दृष्टि बहुत ही बारीक और लबा सोचनेकी थी। वे देख रहे थे कि ग्रामोद्योगोंके साथ साथ हमारी ग्रामजीवनकी सस्कृतिका भी लोप होता जा रहा है। और लोग

छोटीसे छोटी चीजोंके लिअे शहरों और बड़े बड़े कारखानोंके गुलाम बनते जा रहे हैं। अिससे वे अपना पैसा और स्वास्थ्य दोनों ही बरबाद कर रहे हैं। अिनको आत्मनिर्भर कैसे बनाया जाय, अिनकी आमदनीमें दो पैसे कैसे बचाये और बढ़ाये जाय, यह सवाल तो था ही। दूसरी तरफ बापू जिन कार्यकर्ताओंकी जिस काममें रुचि देखते अुनको अुसी काममें अुत्साह देकर आगे बढ़ाते थे। जैसे बच्चेको मा चलना सिखाती है और अुसके चलने लगने पर खुश होती है, अगर वह गिरता है तो अुसे अुठाते रहनेमें बिना थके आनन्दका ही अनुभव करती रहती है, अुसी तरह बापूजी भी करते थे। यह बापूजीकी दुहरी साधनाका मूलमंत्र था।

चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल पेशावरके थे। मगनवाड़ीमें ग्रामोद्योगके विद्यार्थी होकर आये थे और सेवाग्राममें रहे थे। आजकल भूदानके साहित्यका प्रचार करते हैं।

अिस बार जब मैं सेवाग्राममें गया तो वहांके कलाभवनमें खूब सुधरा हुआ कुम्हार-काम देख कर मुझे बड़ी खुशी हुआी। अुसे वहांके कलाकार श्री देवीभाअी* चला रहे हैं। नये कुम्हार-चाककी शोध करके और साधारण मालमसाला लेकर वे अिस कामको खूब आगे बढ़ा रहे हैं। मैंने जाते ही देखा कलाभवनमें काम करनेवालोंकी भीड़ थी। अुनमें से आधेसे ज्यादा लोग कुम्हार-काममें जुटे हुअे थे। नअी नअी चीजों और नये नये आकारके बरतनोंका ढेर लगा था। ग्रामीण जीवनके लिअे बरतन और सुन्दर खिलौने जोरोंसे बन रहे थे। वैसे तो सारा कलाभवन ही बड़ी कलात्मक जगह है, किन्तु मिट्टीका काम देखकर मेरा दिल खुश हो गया।

३

चर्म-अुद्योग

यों तो चर्मालय नालवाड़ीमें था। श्री गोपालरावजी वालुजकर अुसके संचालक थे। वे सप्ताहमें अेक रोज सुबह घूमनेके समय बापूजीसे अुसके विषयमें चर्चा करने नियमित रूपसे आते थे। अुसकी कठिनाअी, अुसमें सुधार आदिके विषयमें चर्चा होती थी। अेक रोज बापूजीने मुझसे पूछा, वालुजकरके साथ जो

* श्री देवीभाअी शान्ति-निकेतनके प्रसिद्ध कलाकार श्री नन्दलाल बोसके प्रिय शिष्योंमें से अेक हैं।

चर्चा होती है अुसे तुम सुनते हो न? मैं चुप रहा। क्योंकि मैं नियमित अुनकी चर्चाके समय हाजिर नहीं रह सकता था। अुसमें मेरी अितनी दिल-चस्पी भी नहीं थी। बापूजी बोले, "देखो, तुम तो गोपालक और किसान हो न? किसानको चमड़ेकी जरूरत तो होती ही है। वह अपना कच्चा चमड़ा मुफ्तमें या कौड़ीमें दे देता है। और पक्के चमड़ेकी कीमत अुसे पूरी चुकानी पड़ती है। अिसमें अर्थशास्त्र तो है ही, लेकिन धर्मशास्त्र भी भरा है। तुमको तो आज मैं गोसेवाके लिअे तैयार कर रहा हू न? और तुम्हारी भी अिस कामसें रुचि है। तो अुसका पूरा शास्त्र समझ लेना आवश्यक है। नअी तालीमके लिअे मैं यह कहता हू कि नअी तालीम माके गर्भसे आरंभ होनी चाहिये, तब ही हम अुसमें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन यह विषय आर्यनायकम् और आशादेवीका है। वे अुसे समझने और कार्यरूपमें परिणत करनेमें दिलोजानसे जुटे हैं। मैं जानता हू आशादेवी और आर्यनायकम् बबुनी (अुनका स्वर्गस्थ बच्चा आनन्द)को भूल नहीं सकते है। लेकिन मैंने अुनसे कहा है कि सेवाग्रामके और आसपासके देहातोंके सब बच्चे तुम्हारे हैं। सारे देशके बच्चे अपने समझोगे तो अुनमें तुम्हें बबुनीका दर्शन मिल जायगा। खैर, यह तो मैं विषयान्तरमें चला गया। तुमको तो यह कहने जा रहा था कि गायकी पूरी सेवा अुसके चमड़े और अवशेषोंका पूरा पूरा अुपयोग करने तक जाती है। अगर हम गायको कसाअीकी छुरीसे बचाना चाहते हैं तो अुसे आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी सिद्ध करना होगा। अुसमें धर्म और अर्थ दोनोंकी सिद्धि छुपी हुअी है। अुसके चमड़ेका तो अुपयोग है ही, लेकिन अुसके मास और हड्डियोंका अुत्तम खाद बन सकता है और पश्चिमके लोग बनाते भी हैं। वे हमारे यहांसे हड्डियां कौड़ीके मूल्यमें ले जाते हैं और अुनका कीमिया बनाकर हमसे मोहरके दाम वसूल करते हैं। अुनके सामने हिंसा-अहिंसाका खयाल तो है ही नहीं। गायको जब तक जिन्दा रखते हैं तब तक अच्छी हालतमें रखते हैं, नहीं तो मारकर खा जाते हैं। लेकिन वे अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लेते हैं।

"हम तो अहिंसक हैं। अगर गायको माताका स्थान देते हैं तो हमारी जवाबदारी दुहरी हो जाती है। जिन्दा रहने पर अुसकी मा जैसी सेवा करें और अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लें। अिससे आर्थिक लाभ तो होगा ही, धर्मलाभ भी होगा। लोग कहते हैं हम हरिजनोंसे अिसलिअे अलग रहते हैं कि वे लोग चमड़ा निकालते हैं और मुरदार मास खाते हैं।

मुरदार मांस तो वे गरीबीके कारण खाते हैं। यह स्वास्थ्यकी दृष्टिसे हानि-कारक है, लेकिन अुसमें पाप है यह तो मैं नहीं मानता हूं। पाप तो जिन्दा गायको कष्ट देनेमें है। अैसे अुपयोगी और वफादार प्राणीको कत्ल करने और अुसको कत्लखानेके दरवाजे तक पहुंचानेमें हमारा हाथ होता है जो हमारे लिअे शर्मकी बात है। चमड़ा निकालनेका काम तो पवित्र काम है। आखिर हम अपने माता-पिताको भी तो कंधे पर अुठाकर ले जाते हैं, तो गायको या किसी भी मृत पशुको ले जानेमें कौनसा पाप है? पुण्य तो जरूर है।

“अस्पृश्यताकी जड़में यह भावना भी काम कर रही है। अिसीलिअे सावरमतीमें मैंने सुरेन्द्रको चमार बननेको कहा था। वह चमारोंके बीचमें जाकर रहा और चप्पल बनानेमें अुस्ताद बन गया। तुम्हारा तो वह मित्र है न? समझो तुम्हारी गाय मर गयी और दूसरे किसीने अुसके मृत शरीरको अुठानेसे अिनकार कर दिया तो तुम क्या करोगे? क्या अुसे घरमें ही सड़ने दोगे? अगर तुम खुद अुसका चमड़ा निकालोगे तो तुमको अुसकी बहुतसी बीमा-रियोंका ज्ञान हो जायगा। डॉक्टर मृत शरीरकी चीरफाड़ क्यों करते हैं? अुनकी मृत्युका कारण जाननेके लिअे ही न? तो तुम अपनी गायकी मृत्युका कारण क्यों न जान लो? डॉक्टरोंको तो कोअी अछूत नहीं मानता है। अरे, मनुष्य-शरीरमें तो पशुसे कहीं अधिक गंदगी भरी पड़ी है। लेकिन हम डॉक्टरोंका आदर करते हैं और बिचारे हरिजनोंको दूर बैठाते हैं। मनुष्य-शरीरका तो मृत्युके बाद अुपयोग ही क्या है? अब तो यह घृणा यहां तक पहुंच गअी है कि कोअी हरिजन साफ-सुथरा भी रहे तो लोग अुससे भी परहेज करते हैं। डॉ० आम्बेडकर तो बैरिस्टर हैं और वह किसी भी सवर्णसे स्वच्छतामें कम नहीं हैं। लेकिन अुनको भी कितना अपमान सहन करना पड़ा है यह तो अुनका दिल ही जानता है। जब डॉक्टर आम्बेडकर मेरे सामने जोरसे बोलते हैं तो मैं अुनका दुःख समझ सकता हूं और मुझे सवर्णोंके बरतावसे शर्मका अनुभव होता है।

“जो गायके लिअे मरनेकी बात तो करते हैं, लेकिन काम गायको मारने या मरने देनेके करते हैं, अुनके लिअे क्या कहा जाय? गायके घी-दूधका अुपयोग न करना, हलाली चमड़ेका अुपयोग करना, तेलको जमाकर अुसे घीका नाम या रूप देना अित्यादि गायको मौतके नजदीक पहुंचानेके काम करना नहीं तो और क्या है? यह मैं लम्बी कथा कह गया, क्योंकि

यह सब तुम्हारे कामकी चीज है। तुमको तो लोगोको यह भी समझाना होगा कि गाय आर्थिक और धार्मिक दोनो दृष्टियोंसे अनिवार्य है और हमारे जीवनकी पूरक है।

"गोशालाके साथ साथ अेक अच्छा चर्मालय तो चलना ही चाहिये, लेकिन तुमको यहा चलानेकी जरूरत नही है। क्योकि नालवाडी यहासे दूर नही है और वे तुम्हारे मृत जानवर ले जा सकते है और अुनकी तुमको पूरी कीमत भी मिल सकती है। लेकिन तुमको यह सब समझनेकी जरूरत है। तब ही तुम सच्चे और पूरे गोसेवक बन सकोगे। नही तो मैं तुम्हें फूटी बादाम (निकम्मा) समझूगा।"

अैसा कहकर बापूजी हस दिये। सेवाग्रामके मृत पशुओंको सेवाग्रामका चौकीदार मुफ्त ही अुठाता था और चमडेका अेक पैसा भी किसीको नही देता था। मैंने अपने पशुओंका चमडा मुफ्तमें देनेसे अिनकार कर दिया था। मजदूरी देकर मैं चमडा निकलवाकर नालवाडी भेज देता था और अवशेषोको खादके खड्डेमें पूराका पूरा ही दबा देता था, जिसमें अुनका मास आदि तो सडकर खाद बन जाता था। हड्डियोका भी काफी भाग गल जाता था और वे पीसनेके लिअे नरम हो जाती थी। चमडा निकालते समय मैं भी कभी कभी निकालनेवाले भाअीको मदद करता था। लेकिन मैंने चमडा निकालनेकी कला पूरी तरहसे सीखी नही थी। हा, अन्दरके अवयवोकी मुझे काफी जानकारी हो गअी थी। कभी कभी पूरा ही जानवर बैलगाडीसे नालवाडी भेज दिया करता था और अुसके पूरे पूरे पैसे वसूल कर लिया करता था। हड्डियोका खाद भी बनाया था। हाथसे चमडा निकालनेका प्रसग तो सीकरमें ही आया। जब मैंने और भाअी ब्रह्मदत्तजी शर्माने हाथसे चमडा निकाला तो सीकरमें काफी विरोधी वातावरण पैदा करनेकी कोशिश की गअी। मुझे बापूजीकी अुस रोजकी सीख याद आअी कि सचमुच ही गायके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लेनेमें अर्थ और धर्म दोनो सधते है। बापूजीकी दृष्टि कितनी दीर्घ और सूक्ष्म थी और किसी बातके हर पहलू पर अुनका विवेचन कितना विशद होता था, अिसकी कल्पना अुस समय तो अितनी गहराअीसे समझमें नही आती थी। लेकिन आज अुसका अनुभव हो रहा है। अुनकी पैनी नजर जीवनके अेक भी कोनेको अछूता छोड ही नही सकती थी। अुनकी छाया अितनी सुखद थी कि अुसमें बैठकर हम समझते थे हमारे सिर पर कभी धूप आ ही नही सकती। हमको लगता था कि रोज

रोज बनानेके लिअे जब बापूजी बैठे हों तो हम अिन बातोंको याद रखने और अुन पर अमल करनेका कष्ट क्यों अुठायें? बापूजी अितनी जल्दी अिस प्रकार चले जायेंगे अिसकी कल्पना मुझे स्वप्नमें भी नहीं थी।

४

मधुमक्खी-पालन

अेक दिन बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो, छोटेलाल यहां मधुमक्खी पालना चाहता है। अुनके लिअे जो सुविधा चाहिये वह तुमको करनी होगी। छोटेलालके साथ तुम्हारा परिचय तो है न?" मैंने कहा, "जी हां। यहांके लिअे गाय भी तो छोटेलालजीने ही लाकर दी थी।" बापूजी बोले, "हां छोटेलाल तो हर काममें अुस्ताद है। जब मैंने मगनवाडीमें तेलघानी चलानेकी बात की तो विनोबाने अुसे मांग लिया था। अुसने घानीके पीछे जो मेहनत की है वह अद्भुत है। जब मगनवाडीमें मधुमक्खी-पालनकी बात चली तो वह काम भी मैंने अुसीको सौंपा और अुसके पीछे अुसने रात-दिन अेक कर दिया। हिन्दुस्तानमें जहां भी अिसका ज्ञान और साहित्य मिल सका वह सबका सब छोटेलालने प्राप्त करनेमें कोअी कसर नहीं छोडी। चक्कीमें अुसने काफी सिर खपाया है। सच बात तो यह है कि मेरे मनमें ज्यों ही किसी ग्रामोद्योगकी कल्पना आती है और अुसे पता चलता है त्यों ही अुसे मूर्तरूप देनेमें वह अपना खाना-पीना सब भूल जाता है। मेरा काम अैसे ही स्वयंसेवकोंसे चल सकता है। आजकल ग्रामोद्योग मृतप्राय अवस्थामें पहुंच चुके हैं। अिनको सजीव करनेके लिअे अनेक छोटेलाल खप जायं तो भी कम होंगे। ग्रामोंमें हमारे आसपास सोना बिखरा पडा है। अुसे अुठानेवाले चाहिये। मधुमक्खीका दृष्टान्त ही ले लो। मक्खियां फूलोंमें से रसकी अेक अेक बूंद जमा करके कितना पौष्टिक खाद्य अेकत्रित करती है। बस अुसकी व्यवस्था करना हमारा काम है।

"यों तो शहद दूसरे लोग भी जमा करते हैं। लेकिन अुनके जमा करनेमें हिंसा और गंदगीका कोअी पार नहीं होता। हमको शहद भी चाहिये और हिंसासे भी बचना चाहिये। यह मधुमक्खी-पालनके सिवा नहीं हो सकता। अिसके शास्त्रियोंने यह सिद्ध कर दिया है कि अेक भी मक्खी मरे बिना हमको काफी मात्रामें अुत्तम शहद मिल सकता है। तुमने मगनवाडीमें छोटेलालका मधुमक्खीका काम देखा होगा। वह सारी तरह मक्खियोंकी सभाल

रखता है। मगनवाडी शहरके बीचमें है, लेकिन यहा तो हम खुले खेतोमें पडे है। अगर हम सेवाग्राम और दूसरे गावोके लोगोको मधुमक्खी पालनेका शौक लगा सकें तो अुन्हे अेक नया धधा दे सकते है, जिससे अुनकी आमदनीमें वृद्धि हो सकती है। तुम भी अिसका शास्त्र समझ लो। गाय भी तो पहले जगली ही थी न? लोग अिसका मास खाना तक अधर्म नही बल्कि धर्म मानते थे। यज्ञोंमें गोबलिका भी जिक्र आता है। लेकिन जिसने पहली बार गायसे दूध लेनेकी बात सोची होगी वह कितना बुद्धिमान आदमी होगा। अुसके मनमें गोहिंसाके प्रति तिरस्कार आया होगा और अहिंसाका देव जगा होगा। मै यह भी देख रहा हू कि ग्रामोद्योगोंके विकासमें अहिंसाका विकास समाया हुआ है। तुम स्वय देहाती हो और देहातकी आवश्यकताओंको समझ सकते हो। छोटेलालका मन तो गावोमें ही रमता है। अुससे तुमको बहुत कुछ सीखनेको मिलेगा। किसानके लिअे मधुमक्खी-पालन खेती ी दृष्टिसे भी आवश्यक है। तुम जानते हो कि मक्खिया फसलको कैसे लाभ पहुचाती है?"

मैंने शर्मके साथ कबूल किया कि मैं नही जानता।

बापूजीने हसकर कहा, "तुम कच्चे किसान हो। देखो, बाहोश किसान अपने खेतोमें मधुमक्खीके छत्ते जरूर रखते है। अुससे अुनकी पैदावारमें वृद्धि होती है। फलवृक्षोंके फूलोमे या सागभाजीके फूलोमें भी नर और मादा दो प्रकारके फूल होते है। मधुमक्खी जब फूलका रस अुठाती है तो अुसके पैरोंके साथ थोडासा फूलका पराग भी लग जाता है। जब वही मक्खी दूसरे फूल पर जाती है तो वह पराग अनायास दूसरे फूलमें गिर जाता है। अिस प्रकार नर और मादा फूलोंके परागका सयोग होकर फलकी अुत्पत्ति होती है। अिसलिअे लोग मादा वृक्षोंके साथ नर वृक्ष भी रखते है। जगली मधुमक्खिया भी यह काम करती ही है। लेकिन अुनका पालन करनेसे दो लाभ होगे। तुम अिसका हिसाब रख सकोगे कि यहा छत्ते रखनेसे फसलमें कितनी वृद्धि हुअी।"

बापूजीकी यह आदत थी कि जिस बातको भी वे समझाने बैठते अुसकी अितनी बारीकीमे अुतर जाते जिसे हम बालकी खाल निकालना कह सकते हैं। लेकिन वे सचमुच ही बालकी खालमें से भी कुछ न कुछ खूबी निकाल ही लेते थे।

छोटेलालजी आये और अुन्होने जो सुविधा चाही वह मैंने अमरूदके बगीचेमें कर दी। मैंने समझा था कि वे मगनवाडीसे तैयार छत्ते लाकर

बगीचेमें रख देंगे। लेकिन वे तो बापूजीसे भी दो कदम आगे चलनेवाले निकले। अुन्होंने मुझसे कहा कि चलो यहांके लिअे आसपासके गांवोंमें से नये छत्ते पकड कर ले आयें।

मैं मना कैसे कर सकता था? बापूजीने पहलेसे ही मुझे गुरुमंत्र दे रखा था। छोटेलालजी स्वयं मगनवाडीमें रहते थे। अुनके साथ साहूजी नामका अेक हरिजन छत्ते पकडनेमें सहायकका काम करता था। दिनमें मेरे पास आदेश आ जाता कि आज शामको अमुक गांवमें छत्ते पकडने चलना है, तुम तैयार रहना। छोटेलालजीका स्वभाव और अनुशासन फौजी अफसरके जैसा कठोर था। अुनके कार्यक्रममें जरा भी गडबड हो गअी कि काम समाप्त ही समझो। अिसी डरसे मैं अुनके आनेकी राह देखता रहता। वे ठीक समय पर आते और मैं चुपचाप अुनके साथ चल देता। दो चार मील जाकर किसी अूंचे आम या अिमलीके पेडके नीचे खडे होते और अिशारा करके कहते कि अमुक खोहमें मक्खियां अुडती दीखती हैं, वहीं अुनका छत्ता होगा। चलो चढो पेड पर। चढनेमें मैं कोअी अुस्ताद नहीं था। हां, बचपनमें पेडों पर चढनेका कुछ न कुछ अभ्यास जरूर हुआ था। छोटेलालजीके प्रेमभरे अुत्साहसे मैं पेड पर चढ जाता। खोहके पास जाकर वे मुझे अेक तरफसे फूंकनीसे धुआं देनेको कहते और स्वयं दूसरे मुंह पर, मक्खी पकडनेकी अपनी पेटी लगा देते। साहूजी वहीं हमारी मददमें रहता या नीचेसे आवश्यक सामान पहुंचानेमें सहायता देता। यह सब क्रिया शामको अुस समय की जाती जब सब मक्खियां छत्तेमें आ चुकतीं। मक्खियां धुअेंके कारण अिस पेटीमें चली जातीं और हम अुसे बन्द करके नीचे अुतार लेते। मक्खियोंकी रानी पेटीमें चली जाती कि बस बाकी मक्खियां भी थोडे ही समयमें अपने आप पेटीमें आ जातीं। छोटेलालजीने मुझे भी रानीकी पहचान करा दी थी। वह दूसरी मक्खियोंसे बडी और लम्बी होती है। मक्खियां पकडकर कोअी बडा गढ जीतनेकी खुशीके साथ हम लोग आश्रममें कभी कभी रातको दस-ग्यारह बजे तक लौटते थे। छोटेलालजी बडे सहनशील [illegible] थे। अैसा लगता था कि अुनके [illegible] [illegible]। कभी कभी अैसे अवसर भी आते थे जब मक्खियां [illegible] [illegible] बाहर ही [illegible] पडता। [illegible] कि जैसे ही मक्खियां पास आ जाती हैं, [illegible] अपने [illegible] हैं और

जिनका स्वभाव छत्तेके अन्दर अडे और शहद अलग अलग रखनेका होता है अिससे शहद निकालते समय अेक भी अडेको नुकसान नही होता।

अिस प्रकार हमने ८-१० छत्ते अपने बगीचेमें जमा लिये। अुस स्थानका नाम मधुशाला पड गया था। छोटेलालजीने मक्खियोंके बारेमें मुझे सभी आवश्यक बातें सिखा दी थी। जैसे किसी छत्तेमें दो या तीन रानिया हो जाने पर अेकके सिवा शेष अेक या दो को अलग छत्तेमें रख देना चाहिये, ताकि और मक्खिया अुनके साथ अुडने न पावें। पेटियोंके पावोंके नीचे बरतनोमें पानी रखना चाहिये, ताकि पेटियोमें मक्खियोंके शत्रु कीडे प्रवेश न करने पावें। जब फूलोकी कमी होती है तब मक्खियोको शर्बत बनाकर कृत्रिम खुराक भी देना चाहिये, अित्यादि। अिन छत्तोंसे हमारी फसलमें कितने प्रतिशतकी वृद्धि हुअी अिसका सही हिसाब तो मै नही निकाल सका। लेकिन स्पष्ट ही फल और बेलदार सागोकी — जैसे लौकी, काशीफल, तुरअी, पपीता आदिकी — अुत्पत्ति काफी बढी। वजनमें अधिकसे अधिक काशीफल ८३ पाअुडका, पपीता ११ पाअुडका और चुकन्दर ७ पाअुड तकका हुआ। चुकन्दरको देखकर अेक बार ठक्करबापाने कहा था. 'अरे भाअी, बम्बअीमें तो छोटे छोटे होते है। अिसका नाम ही बदलना पडेगा।' सागभाजी, पपीता, नीबू और सतरा आश्रम और सेवाग्रामकी दूसरी सस्थाओंकी जरूरत पूरी करके वर्धामें काफी बेचना पडता था। मक्खियोंके झुडोको फूलो पर विचरते देखकर मेरे मनमें यही भाव आता था कि ये मक्खिया अलग अलग फूलोमें पराग बदलनेका काम कर रही है। और मुझे बापूजीका पहले दिनका भाषण याद आ जाता। जब मै बापूजीको यह सदेश सुनाता कि मधुशालाका काम ठीक चल रहा है और मक्खिया ठीक काम कर रही है, तो बापूजीका मुख प्रसन्न हो जाता और वे बोल अुठते, "तुम्हारे लिअे तो मक्खिया भी मजदूरी करती है। किसानका काम तो साप भी करता है यह तुम जानते हो। खेतीमें बहुतसे कीडे होते है जो फसलको नुकसान पहुचा सकते है। साप अुन्हें खा जाता है। अिनमें हिंसा भले हो, लेकिन साप किसानके लिअे अुपकारी ही है।" वास्तवमें मैंने देखा भी कि गन्नेके खेतमें साप गन्नो पर चढकर अुन कीडोको खा जाता था जो गन्नेको नुकसान पहुचाते है। धानके खेतमे हरे धानके रगके अनेक साप मैंने देखे। चूहोंका तो साप पक्का शत्रु है। मैंने सापको बिलोंमें से चूहोंको निकालकर खाते देखा है।

मुझे आश्चर्य तो यह होता है कि मैं किसान होने पर भी अिन छोटी छोटी बातोंको क्यों नहीं जानता था और बापूजी अुन्हें कैसे जानते थे? वास्तवमें बापूजीकी दृष्टि बहुमुखी और विशाल थी, जब कि हमारी दृष्टि सिर्फ नाककी सीधमें ही देखना जानती थी। अब अिन बातोंको कौनसे स्कूल या कॉलिजमें सीखा जाय?

छोटेलालजी जैन राजस्थानके थे। सन् १९१५ में किसी बम काडमें पकड़े गये थे। लेकिन अवस्था कम होनेसे छोड़ दिये गये थे। सन् १९१७ में साबरमती आश्रममें बापूजीके पास आ गये और अल्पकालमें ही वे साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख कार्यकर्ता बन गये। स्व० मगनलाल गांधीके साथ अुन्होंने अ० भा० चरखा सघका शिक्षा-विभाग अनेक वर्षों तक बड़ी योग्यतासे चलाया। श्री बालकोबाजी, श्री सुरेन्द्रजी और श्री तुलसी मेहरजी अुसी समयके अिनके सहयोगी प्रमुख कार्यकर्ता थे। साबरमती आश्रममें शिक्षणार्थ आनेवाले प्रत्येक विद्यार्थी पर अिन भाअियोंके अत्यन्त परिश्रमी तथा स्वाध्यायी होनेकी छाप शीघ्र ही पड़ जाती थी। जब पू० जमनालालजी बजाजने आश्रमकी अेकमात्र शाखा वर्धामें ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे श्री छोटेलालजीको माग लिया, तबसे वे अन्त तक पहले मगनवाडीमें और बादमें सेवाग्राममें अनेक ग्रामोद्योगोंको चलाते रहे। सेवाग्राममें रहते हुअे मधुमक्खी-पालनके सिलसिलेमें जगली मधुमक्खिया पकड़नेके लिअे लगातार कअी दिनों तक जगलोंमें भटकनेके कारण अुन्हें टाअीफाअिड हो गया और अुन्होंने अेक दिन बापूजीको यह सदेशा भेजा कि मुझे दूसरोंसे सेवा लेकर जीना सहन नहीं होता। लेकिन अिस सदेशको पाकर बापूजी दूसरे दिन आकर अुन्हें सान्त्वना दें, अिनके पूर्व ही रात्रिमें मगनवाडीके अेक कुअेंमें प्रवेश करके अुन्होंने जल-समाधि ले ली।

भाअी छोटेलालजीके आत्मघातके विषयमें अपने हृदयका दुःख अुडेलते हुअे बापूजीने ता० ११-९-१९३७ के 'हरिजनसेवक' में 'अेक मूक साथीकी मृत्यु' नामक लेखमें लिखा था

"छोटेलालकी मूक सेवाका वर्णन भाषाबद्ध नहीं हो सकता। अैसा करना मेरी शक्तिके बाहर है। . . . मेरे सौभाग्यसे मुझे कुछ अैसे साथी मिले हैं, जिनके बिना मैं अपनेको अपग महसूस करता हूं। छोटेलाल मेरे अैसे ही अेक साथी थे। अुनकी बुद्धि तीव्र थी। अुन्हें कोअी भी काम सौंपने मुझे हिचकिचाहट नहीं होती थी। वे भाषाशास्त्री भी थे। अुनकी

मातृभाषा हिन्दी थी। पर वे गुजराती, मराठी, बगला, तामिल, सस्कृत और अग्रेजी भी जानते थे। नअी भाषा या नया काम हाथमे लेनेकी अुनके अैसी शक्ति मैंने और किसीमें नही देखी।

"रसोअी बनाना, पाखाना साफ करना, कातना, बुनना, हिसाब-किताब रखना, अनुवाद करना, चिट्ठीपत्री लिखना आदि सब कामोको वे स्वाभाविक रीतिसे करते और वे अुन्हे शोभते थे। यह कहा जा सकता है कि मगनलालके लिखे 'बुनाअी-शास्त्र' में छोटेलालका हिस्सा मगनलालके जितना ही था। चाहे जैसे जोखिमका काम अुन्हे सौपा जाय, अुसे वह प्रयत्नपूर्वक करते और जब तक वह पूरा न हो जाता अुन्हे शाति नही मिलती थी। अुनके शब्दकोशमे 'थकान' के लिअे स्थान ही नही था। सेवा करना और दूसरोंसे सेवाकार्य कराना यह अुनका मत्र था। ग्रामोद्योग सघ स्थापित हुआ तो घानीका काम दाखिल करनेवाले छोटेलाल, धान दलनेवाले छोटेलाल और मधुमक्खिया पालनेवाले भी छोटेलाल। आज मैं छोटेलालके बिना जैसा अपग हो गया हू, वही स्थिति आज अुनकी मधुमक्खियोकी भी होगी।

"छोटेलाल मधुमक्खियोंके पीछे दीवाने थे। अुनकी शोधमें हलके प्रकारके मियादी बुखारने अुन्हे पकड लिया। यह अुनके प्राणोका ग्राहक निकला। मालूम होता है अुन्हे ६–७ दिन सेवा कराना भी असह्य लगा। अत ३१ अगस्त, मगलवारकी रातको ११ और २ के बीचमे सबको रोता हुआ छोडकर वह मगनवाडीके कुअेंमें कूद पडे।

"अिस आत्मघातके लिअे छोटेलालको दोष देनेकी मुझमें हिम्मत नही। छोटेलाल तो वीर पुरुष थे। अुनका नाम १९१५ के दिल्ली-षड्यत्र केसमें आया था। पर अुसमें वह बरी हो गये थे। किसी गोरे अफसरको मारकर फासीके तख्ते पर चढनेका स्वप्न वह अुन दिनो देखते थे। अितनेमें वे मेरे लेखोंके पाशमें आ फसे। और अपनी तीव्र हिंसक बुद्धिको अुन्होने बदल दिया, और अहिंसाके पुजारी बन गये। . . .

"छोटेलाल मझे अपना देनदार बनाकर ४५ वर्षकी अुम्रमें चल बसे।"

२२

चरखेका चमत्कार

वापूजीने चरखा और खादीको सब ग्रामोद्योगोंका मध्यबिन्दु माना था। अेक सालमें स्वराज्य दिलानेकी बात भी अुन्होंने चरखेके मार्फत ही की थी। वापूजीने अपने जन्मदिनके अुत्सवको भी चरखा द्वादशीका ही नाम दिया था। काग्रेसकी सदस्यताके लिअे भी चरखा अनिवार्य करनेकी अुन्होंने पूरी पूरी कोशिश की थी। सक्षेपमें चरखेके लिअे वापूजीने शिवजीकी तरह घोर तप किया था। मगनलालभाअी गाधीने भागीरथकी तरह चरखारूपी गगाकी खोज की थी। और विनोबाजीने दधीचिकी तरह सतत रोज ८-८ घटे तकली और चरखे पर कात कर अपनी हड्डिया सुखा दी और चरखेका मत्र सिद्ध करके दिखा दिया। बहुतसे लोग वापूजीकी चरखेकी बात सुन कर हसते भी थे। लेकिन वापूजीके जीवनमें चरखा ओतप्रोत था। कितने ही काममें हो, कितने ही थके हुअे हों लेकिन चरखा चलाये सिवा वापूजीका दैनिक कार्य पूरा ही नहीं हो सकता था। जब तक वापूजी बीमार होकर बिस्तर पर न पडे हो तब तक चरखेकी कभी भी नागा अुनके जीवनमें नहीं हुअी थी। अुन्होंने लम्बे लम्बे अुपवास किये तब भी और राअुण्ड टेबल कान्फरेंसमें गये, जहा कि सोनेके लिअे भी बहुत कम समय मिल पाता था, वहा भी अुनका चरखा तो चलता ही रहता था।

आज जब मैं सेवाग्रामके जीवन पर विचार करता हू तो मेरी आखोंके सामने चरखेका चमत्कार आ खडा होता है। मुझे सेवाग्राममें रोटी चरखेने ही दिलाअी थी। वापूजी कहते थे, "चरखा गरीबोंका सहारा है, दुखियोंका बन्धु है और अन्धेकी लकडी है।" वापूजीके अिस कथनकी सत्यता मैं अपने जीवनमें आज अनुभव कर रहा हू। अगर दशरथ और गोविन्द नामके लडकोंको कातना सिखानेकी बात न होती तो मुझे सेवाग्राममें रोटी कैसे मिलती? अगर मेरी सुनाअी सीखनेकी बात न होती तो मैं साबरमती आश्रम, विनोबाजीके पास या नालवाडी कैसे जाता? अगर न जाता तो वापूजीके चरणोंमें भी अन्त तक कैसे टिकता? अगर न टिकता तो आज ये पवित्र सस्मरण लिखनेका सौभाग्य क्योंकर मिलता, जिससे सत पुरुषोंकी पवित्र स्मृतियोंसे मनका मैल धोनेका अवसर

मिला? अगर यह अवसर न मिलता तो फिर अिस जगतमें जन्म लेनेका भी क्या अर्थ रहता? फिर तो मेरी मा यही कहती न 'नतरु बाझ भलि वादि बिआनी, रामविमुख सुत ते हित हानी।'

अर्थात् मेरा सारा ही जीवन व्यर्थ सिद्ध होता। अब मुझे बापूजीके चरणोंमें देखकर अवश्य ही मेरी माको स्वर्गमें सतोषका अनुभव होता होगा। सचमुच ही जब मैं यह सोचता हू कि मेरे जीवनकी नौकाको चरखेने किस प्रकार किनारेके निकट पहुचाया तो मैं स्वप्न-सा देखने लग जाता हू। अेक गरीब किसानका लडका, लिखा नही पढा नही, दूसरा कोअी साधन नही, तो भी जगतके अेक महान पुरुषका पुत्र बननेका अधिकार बापूजीसे झगडकर प्राप्त किया! जब गाधी-स्मारक-निधिवाले मेरी गोसेवाकी योजनाके लिअे पैसा देनेमें देर करते हैं तो मैं आत्मविश्वासके साथ यह कहनेकी हिम्मत रखता हू कि मेरे ही पिताके नामसे पैसा जमा किया और मुझे ही आख दिखाते हो! जिन बापूने मेरे बजट पर आख मीच कर सही की, अुन्ही बापूके नामका पैसा मुझे मिलनेमें अितनी देर क्यो? मैं अितना बडा दावा करनेका ढोंग नहीं करता हू और न किसीको गीदड-भभकी ही देता हू। जो भी कहता हू वह बापूके प्रति अटल श्रद्धाके बल पर ही कहता हू। बापूके सामने मेरे लिअे ससारकी सारी समृद्धि तृणवत् थी। बापूके प्रेमके कारण सेवाग्राम आनेवाले बडेसे बडे लोगोंसे भी परिचय कर लेनेका लोभ मेरे मनमें नही आता था। मेरी यह अैंठ बापूजीके प्यारके बल पर थी और बापूजीके प्यारका निमित्त बना था चरखा। जिस रोज बापूजीने मुझसे यह कहा था कि दशरथ और गोविन्दको कातना और धुनना सिखा दो, रोटी मिल जायगी, अुस दिनका चित्र मेरी आखोंके सामने आज ज्योंका त्यो नाच रहा है। अगर चरखा सीखनेकी बात न होती तो मैं साबरमती ही क्यो जाता? अगर मैंने चरखा न सीखा होता तो बापूजी मुझसे अुन लडकोको चरखा सिखानेकी बात ही क्यो कहते? अगर चरखे और धुनकीकी कला मेरे हाथमें न होती तो मैं तुकडोजी महाराज जैसे सतका गुरु कैसे बनता?

जिस प्रकारसे मेरे जीवनकी नीवमें चरखा है, अुसी प्रकार सेवाग्रामके सेवाकार्यकी नीवमें भी चरखेने ही प्रथम स्थान लिया। जिसे अेक दैवयोग ही कहना चाहिये। वे दोनों लडके कुछ काम सीखना चाहते थे, यह बात तो थी ही। लेकिन अुससे भी बडी बात यह थी कि अुनको बापूजीका सम्पर्क साधना था। अुन्होने देखा कि बापूजीको सबसे प्रिय चरखा ही है,

अिसलिअे हम भी चरखा सीखकर ही अुनके निकट पहुंच सकते हैं। बापूजीको सेवाग्रामकी सेवाका पवित्र काम चरखेसे ही आरम्भ करनेका अवसर मिल गया तो अुसे वे कैसे छोड सकते थे? और मेरे जैसा सस्ता शिक्षक सिर्फ रोटीमें ही मिल जाय तो बापू अैसा अवसर क्यों चूकते? फिर मुझे भी तो बापूजीके पास रहनेका लोभ था ही। अिस प्रकार बिना किसी योजनाके, बिना कुछ सोचे-विचारे, चरखा सेवाग्रामके जीवनमें सबसे प्रथम आकर खडा हो गया। मैं आज गर्वके साथ कह सकता हूं कि सेवाग्रामका प्रथम शिक्षक बननेका सुअवसर निःसंदेह मुझे चरखेने ही दिया। अिस प्रकार सेवाग्रामके क्षेत्रमें अुस दिनका चरखेका बीज वटवृक्षके रूपमें फला-फूला। मेरे अुस विद्यालयका आरम्भ कुअेंके पासकी अेक छोटीसी कोठरीमें हुआ था, जो आज भी अपनी टूटी-फूटी हालतमें अुस घटनाकी गवाही दे रही है। लेकिन आज तो सेवाग्राममें चरखेके लिअे महल खडे हो गये हैं। अब अुस बिचारी कोठरीका नाम भी कौन पूछता है? और शिक्षक भी बड़े बडे पंडित वहां आ गये हैं। तब मेरे जैसे बिना पढे आदमीका नाम अुनकी लिस्टमें कैसे रह सकता है?

हमने सेवाग्राममें चरखेके कामको धीरे धीरे बढाया। और लोगोंको भी चरखा चलाने और खादी पहननेकी बात कही। धीरे धीरे लोग हमारे पास आने लगे। श्री मुन्नालालभाअीने स्कूलमें बच्चोंको तकली सिखाना आरंभ किया। बुनाअी-काम भी भाअी अमृतलालजी नाणावटीने चर्खासंघकी मारफत आरंभ किया। बापूजीने कहा, "अेक चरखा ही अैसा अुद्योग है जो कि छोटे-बडे, जवान-बूढे सबको दिया जा सकता है।" हमने बुनाअी-घर बनाया और धुनाअी-घर भी बनाया। आज जो बापूजीकी कुटी है वह दरअसल मीराबहनने गांवके बच्चोंको धुनाअी व बुनाअी सिखानेके लिअे ही बनाअी थी। आज अुस स्थानकी महिमा भले ही बापू-कुटीके नामसे हो, लेकिन वास्तवमें तो वह चरखा-कुटी ही है। चरखा ही आश्रमके पास अेक अैसा अुद्योग था, जिसे बेकारोंके सामने खडा किया जा सकता था। अेक बार अकाल पडनेसे लोग परेशान हो गये। मेरे पास काम मांगनेके लिअे आने लगे। खेती और आश्रममें अितना काम नहीं था जो अितने लोगोंको दिया जा सकता। मैंने बापूजीसे पूछा कि क्या किया जाय? बापूजीने कहा, चरखा तो तुम्हारे पास है ही, जो आवे अुसको चरखा दे दो। मैंने सेगांवके अेक मकानमें चरखेका अेक परिश्रमालय खोल दिया। १०–२० चरखे नालवाडीसे मंगा लिये। जो

लड़कियां और बड़ी बहनें काम मांगतीं अुन्हें चरखा दे देता। चरखा संघ भी सेवाग्राममें आ चुका था। अुनका सूत चरखा संघ खरीद लेता था। अंतमें चरखा संघने सूतकी गुंडीके लिअे कताओीमें ज्यारी देनेका निश्चय किया। आश्रमका परिश्रमालय काफी दिनों तक चला और लोगोंको अुससे काफी मदद मिली। फिर वह चरखा संघमें विलीन हो गया।

गांवकी अेक सया नामक लड़की पागल हो गओी थी। अुसके घरवालोंने अुसे घरसे निकाल दिया था। अुस परिवारके साथ मेरा अच्छा संबंध था, क्योंकि अुस लड़कीका पति और जेठ दोनों मेरे पास गोशालामें काम करते थे। मैंने अुस लड़कीकी तलाश की, जो खेतोंमें भूखी-प्यासी घूमा करती थी और रातको भी जंगलमें किसी झाड़के नीचे पड़ी रहती थी। मैंने अुसको बुलवाया। अुसके घरवालोंसे अुसे संभालनेकी बात की, लेकिन अुन्होंने अुसे स्वीकार करनेसे अिनकार कर दिया। मैंने देखा कि अुसके सारे कपड़े और सिर जूंओंसे भरे थे। अुसके सिरके बालोंमें जूंअें अधिक थीं। मैंने अुसके बाल काटे। अेक दूसरी बहनको बुलाकर अुसको स्नान कराने और कपड़े धोनेकी बात की। अुस बहनने कहा, भाओीजी अिन कपड़ोंको तो जला देना ही ठीक है। नहीं तो अिसकी जूंअें मेरे अूपर चढ़ जायगी। मैंने वैसा करनेके लिअे अुस बहनको कह दिया। बालोंको जमीनमें गाड़ दिया। अुस बहनने पगलीको स्नान कराया। मैंने दूसरे कपड़े अुस लड़कीको दिये और परिश्रमालयमें चरखा कातने बैठा दिया। वह कातने लगी। अुसकी ही मजदूरीसे अुसके खाने-पीनेकी व्यवस्था कर दी। अुसका मन चरखेमें लगा, खानेको रोटी मिली और जूंओंके संकटसे मुक्त हुअी तो धीरे धीरे अुसका पागलपन कम हो गया। मैं अुसे रोज स्नान कराता था। अब तो अुसके चेहरे पर चमक आ गओी और वह ठीकसे बात भी करने लगी। यह सारा प्रोग्राम अुसका पति और घरके दूसरे लोग देखते ही थे। अिसलिअे धीरे धीरे अुनका भी मन बदला। अन्तमें मैंने अुसको अुन लोगोंके हवाले कर दिया। अब तो अुसके कओी बच्चे भी होंगे। अेक दो तो मेरे सामने ही हो गये थे। जब अुसने अपनी गृहस्थी जमायी तब मैं अुससे पूछता, "क्यों सया, अुस दिनकी बात याद है न?" तो वह हंस देती। सचमुच अगर मेरे पास चरखा न होता तो अुसके पागलपनको दूर करनेका मेरे पास कोओी दूसरा अिलाज नहीं था। चरखेसे अुसके मन और तन दोनोंको काम मिला और पेटको रोटी मिली। अिसलिअे अुसके मस्तिष्कमें जो विकृति आयी थी वह सब दूर हो गओी। मैं अिसे चरखेका चमत्कार ही कहता हूं।

महादेवभाअीके स्वर्गवासके बाद बापूजी जिस भक्तिभावसे महादेवभाअीके कमरेमें आध घंटा हमारे साथ मौन कताअी करते थे वह दृश्य देखने लायक होता था। धीरे धीरे कताअी और बुनाअीके कामोंका विकास हुआ और जहां सेवाग्रामके स्त्री-पुरुष कामकी खोजमें दूसरे गांव जाया करते थे, वहां आसपासके काफी स्त्री-पुरुष सेवाग्राम आश्रममें कामके लिअे आने लगे। मकान अित्यादिके काममें तो लोग लगते ही थे, लेकिन कताअी, धुनाअी और बादमें तो बुनाअीमें भी काफी लोगोंको काम मिलने लगा। सेवाग्राम गांवमें भी हमने अेक बुनाअी-घर खोला। कितने ही हरिजन और सवर्ण लड़कोंने बुनाअी सीखी और अुससे वे अपनी रोटी कमाने लगे। कताअी और धुनाअी भी काफी स्त्री-पुरुषोंकी आजीविकाका साधन बनी। मेरा प्रथम विद्यार्थी दशरथ आज खादी-कामका निष्णात कार्यकर्ता बन गया है और हरिजनोंमें सबसे पहला पक्का मकान अुन्होंने बनाया है। सेवाग्रामके कितने ही लड़के खादीके शिक्षक बनकर बाहर भी काम कर रहे हैं। कह सकते हैं कि जो सेवाग्राम पहले अेक बिलकुल कंगाल और अुजड़ा हुआ खेड़ा था, वह आज चरखेके प्रतापसे गुलजार बन गया है। फिर तो वहां चरखा संघका खादी-विद्यालय बना और सारे हिन्दुस्तानसे चरखा सीखनेके लिअे स्कूलोंके मास्टर विद्यार्थी बनकर आने लगे। तालीमी संघने भी कताअी और बुनाअीका काम बहुत बढ़ा दिया है। अुनमें भी हिन्दुस्तान भरसे नअी तालीमकी शिक्षा लेने अध्यापक और अध्यापिकाअें आती हैं। चरखा अुनके लिअे अनिवार्य है। सेवाग्रामका बापूराव नामका लड़का वकीलका मामूली मुहर्रिर था। अुसको मैंने चरखा दिया और १९४२ के आन्दोलनमें जेल भेजा। आज वह मध्यप्रदेशकी धारासभाका सदस्य है और कांग्रेसका बहुत अच्छा कार्यकर्ता है। यह चरखेका ही प्रताप है।

अैसे जिस चरखेमें बापूजीकी हिमालय जैसी अचल और अटल श्रद्धा थी। वे अुसे अपनी कामधेनु और अपने मोक्षका द्वार मानते थे। अेक बार अुन्होंने चरखेके विषयमें अपनी भावना व्यक्त करते हुअे लिखा था "मैं हर तारको कातते समय भारतके गरीबोंका ध्यान करता हूं। करोड़ोंकी मजदूरी चरखा ही हो सकता है। जिस चरखे पर अुनकी श्रद्धा मैं कोरे भाषण देकर नहीं जमा सकता, स्वयं कातकर ही जमा सकता हूं। अिसीलिअे मैं कातनेकी क्रियाको तपस्या या यज्ञ कहता हूं। मैं मानता हूं कि जहां शुद्ध चिन्तन है, वहां अीश्वर जरूर है। अिसीलिअे मैं हर तारमें अीश्वरका दर्शन कर पाता हूं।"

सन् १९४५ में चरखा संघको सन्देश देते हुअे बापूजीने लिखा था

"कातो, समझ-बूझ कर कातो। जो काते वह खद्दर पहने, जो पहने वह जरूर काते। 'समझ-बूझ कर' के मानी हैं चरखा यानी कताओ अहिंसाका प्रतीक है। गौर करो, प्रत्यक्ष होगा। कातनेके मानी हैं कपास खेतसे चुनना, बिनौले बेलनीसे निकालना, रुओ तुनना, पूनी बनाना, सूत मनमाने अंकका निकालना और दुबटा करके परेतना।

२८-३-'४५ मो० क० गांधी"

१९४८ के जनवरी मासकी १३ तारीखको जब दिल्लीमें बापूजीका अनिश्चित कालका अुपवास आरंभ हुआ, तब मेरे मनमें यह डर पैदा हो गया था कि बापूजी जिस अुपवासमें शायद नहीं बच सकेंगे। मैंने बापूजीको लिखा था कि अगर आप अिस अुपवासमें चले जायं तो मेरे लिअे आपका क्या आदेश होगा। अुन्होंने लिखा

"चरखेका विकास जहां तक मगनलालने किया था अुससे आगे नहीं बढ़ा है। अुनका शास्त्र अभी तक अधूरा है। अुसे पूरा करना आश्रमका काम है। मेरे मरनेके बाद चाहे सारा देश चरखेको छोड़ दे लेकिन आश्रमको चरखेको नहीं छोड़ना है। तुम आश्रमकी नींवसे हो, वहीं मरना।

बापू"

अन्तमें यह भी चरखेका चमत्कार ही कहा जायगा कि जिस सेवाग्राम आश्रमके कार्यका आरंभ चरखेकी शिक्षासे हुआ था, बापूजीके अवसानके बाद आज कुछ वर्षोंसे अुसका बहुतसा खर्च यज्ञकी भावनासे श्रद्धालुओं द्वारा काती हुओ सूतकी गुंडियों अर्थात् चरखेसे चल रहा है। सेवाग्राम आश्रमको कांचनमुक्त बनानेकी और अुसका खर्च सूत्रयज्ञकी गुंडियोंकी रकमसे चलानेकी कल्पना पहले-पहल श्री नारणदासभाअी गांधीके मनमें पैदा हुअी थी। वे राजकोटकी राष्ट्रीय पाठशालामें चरखा-द्वादशीके अुपलक्षमें जो सूत्रयज्ञ चलाते थे, और आज भी चलाते हैं, अुनीमें अेक वर्ष काती गअी सारी गुंडियां अुन्होंने पहली बार आश्रमको अिस भावनासे अर्पण की थीं और अिसका प्रचार भी किया। दैवयोगसे विनोबाजीके मनमें भी यही विचार स्फुरित हुआ और अुन्होंने भी अिसका प्रचार किया। बादमें तो सारे देशके सूत्रयज्ञमें श्रद्धा रखनेवाले लोगोंने अिसे अपना लिया। १२ फरवरी — बापूजीका श्राद्धदिन — आश्रमके लिअे गुंडीदानका दिन माना जाने लगा।

२३

बापूजीका हृदय-मन्थन

१९४२ का जुलाअी महीना था। अनवरत वर्षा हो रही थी। बापूजीकी तबीयत काफी खराब थी और कामका ढेर पड़ा था। बापूजीसे मिलनेवाले भी काफी थे। किशोरलालभाअीने अेक सूचना निकाली कि व्यवस्थापक मण्डलकी अिजाजतके बिना कोअी बापूजीसे मिलने न जाये। अुसका मैंने और मुन्नालालभाअीने विरोध किया। प्रार्थनाके बाद अुस सूचना पर चर्चा हुअी। किशोरलालभाअीने हमारे विरोधका तेजीसे जवाब दिया। हमें भी अुसका जवाब देना पड़ा। बात बापूजीके पास गअी। प्रार्थनाके बाद बापूजी बोले

"कल किशोरलालके लेख पर चर्चा हुअी यह ठीक नहीं हुआ। अुन्होंने तो मुझे बचानेके लिअे लिखा था। यह धर्मशाला है, फिर भी अिसमें कुछ नियम होने ही चाहिये। रुग्णालय भी है। रोगियोंको भी नियमका पालन करना पड़ता है। परन्तु भनाली तो हम सबसे श्रेष्ठ पुरुष है। अुनको नियम क्या? मुन्नालाल भी स्वतन्त्र है। अपना बादशाह है। वह कितना काम कर लेता है यह तो हम सबने किशोरलालभाअीके मकान पर देखा है। वह भी अपवाद है। बलवन्तसिंह हम सबसे अच्छा मजदूर है। गाय और खेतीके बिना वह जिन्दा नहीं रह सकता है। लेकिन आज मेरे पास पड़ा है। वह भी अपवाद है।"

हम समझते थे कि बापू हमारे पिता हैं। पिता बीमार हों और लड़कोंसे कोअी कहे कि तुम्हें पिताके पास जानेकी अिजाजत नहीं है तो यह कैसे बन सकता है?

२९ जुलाअीको विनोबाजी तथा अन्य कार्यकर्ता बापूजीसे कुछ जाननेके लिअे जमा हुअे थे, क्योंकि आन्दोलन द्वार पर खड़ा था। बापूजी बोले:

"मैंने तुम लोगोंको अिसलिअे बुलाया है कि मेरे मनमें जो विचार चल रहा है अुसे तुम्हारे सामने रख दूं और तुम्हें यदि अुनमें मेरा अधैर्य या कुछ दोष दिखे तो तुम मुझे बता सको।

"आजकल मेरे मनमें अुपवासका जो विचार चल रहा है, अुसे टालनेका मैंने खूब प्रयत्न किया है और आज भी कर रहा हूं। लेकिन मैं देख रहा

हू कि वह मेरे सिर पर सवार हो रहा है। मैंने आज तक बहुतसे अुपवास किये हैं और अुनमें से अेक भी असफल हुआ अैसा मुझे नही लगता। कितने ही तो मैंने व्यक्तिगत और कौटुम्बिक तौर पर किये हैं। अुनका परिणाम भी शुभ ही आया था। हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे जो अुपवास किया था, अुसका भी असर तो हुआ था। लेकिन वह कायम न रह सका। हरिजनोको अलग न करनेके लिअे जो आमरण अुपवास किया था अुसका परिणाम तत्काल हुआ था। लोग मेरे पास आकर बैठ नही गये थे, बल्कि काम करने लगे थे। हिन्दू महासभाके अध्यक्ष भी आ गये थे और अुन्होंने भी मेरी बात मान ली थी। वह सब मुझे अच्छा लगा था। आन्दोलनकी अशुद्धिके कारण जो आत्मशुद्धिका २१ दिनका अुपवास था अुसके पीछे मेरी यह भावना थी कि अिसकी शृंखला अेक साल तक चलाअी जाय। लेकिन साथियोंके गले न अुतरनेसे वह स्थगित करना पडा था। लेकिन अब मैं देख रहा हू कि अिसको टाला नही जा सकेगा। अिस वक्त हिंसा अपने पूरे जोरमें है और जगतमें अेक प्रकारका अंधकार-सा छा गया है। हिन्दुस्तानमें भी जहर फैलाया जा रहा है। सरकार हमारे आदमियोको ही हमारे सामने करके खुद तमाशा देखना चाहती है। अिसको मैं कैसे बरदाश्त कर सकता हू? अिसलिअे मुझे लगता है कि अब बलिदान दिये बिना यह ज्वाला शान्त नही हो सकेगी।

"अुपवासके दो पहलू हैं। अेक तो स्वतंत्र बुद्धिसे करना, दूसरा जनरल पर श्रद्धा रखकर करना। हिंसाकी लडाअीमें क्या होता है? जनरल पर श्रद्धा रखकर सिपाही अपने आपको आगमें झोंक देते हैं। तब अहिंसाकी लडाअीमें अैसा क्यों नही हो सकता? अिस बार मेरी अहिंसाकी व्याख्या भी बदली है। १९२० और १९३० में मैंने नियम बनाया था कि मन, कर्म और वचनसे अहिंसक होना अनिवार्य है। अब मैं देखता हू कि चालीस करोड लोगोंके दिलमें अिस बातको अुतारना और जब तक न अुतरे तब तक ठहरना योग्य नही है। अब मैं अितना ही कहता हू कि तुम कर्म और वचनसे तो हिंसा नही करना। मैं किसी सत्याग्रहीको कानून तोडने भेजता हू तो अुससे कहूगा कि तुम लाठी यहा रख जाओ और किसीको गाली दिये बिना अितना काम कर आओ। जब वह मेरी अिस बातको मानकर वह काम कर आयेगा तो कामकी सफलता देखकर अुसके मनसे भी हिंसाके भाव निकल जायेंगे। और समझो कि मेरे निमित्तसे अहिंसक सत्याग्रह आरंभ हुआ और बादमें हिंसा फूट निकली तो भी मैं सहन कर लूगा, क्योंकि आखिर तो मुझे जो अीश्वर

प्रेरणा कर रहा है अुसकी जो अिच्छा होगी वही होगा। अगर मुझे निमित्त करके वह हिंसासे दुनियाका संहार करना चाहता होगा तो मैं कैसे रोक सकता हूं? वह तो अेक अैसी सूक्ष्म चीज है कि जिसका पता लगाना मनुष्यकी शक्तिके बाहरकी बात है। बिजली भी सर्वत्र है, लेकिन अुसका हम कुछ पता तो लगा ही सकते हैं। लेकिन अीश्वर तो अिससे भी सूक्ष्म और व्यापक वस्तु है। अुनके लिअे तो अितना ही कह सकते हैं कि वह अैसी शक्ति है जिसके अिशारेसे यह सब कुछ चलता है। लेकिन वह क्या है और कैसी है, यह खोजना असंभव है। बस, अुन पर श्रद्धा ही रख सकते हैं और वही श्रद्धा मुझसे अपना काम करा रही है।

"मैं जब जर्मन और अंग्रेज तथा जापानके संहारकी बात सुनता हूं तो अुनके बलिदानकी कीमत मेरे दिलमें बहुत बढ़ जाती है। 'प्रिंस ऑफ वेल्स' को डुबानेवाला कितना बहादुर था कि अुसने अपने आपको जलते हुअे अेंजिनमें फेंक दिया और दुश्मनका जहाज डुबा दिया। अुसका कितना साहस!

"हमने तो अभी तक कुछ भी साहस नहीं किया है। जेलमें जाकर 'यह चाहिये', 'वह चाहिये' अिसके लिअे ही हम लड़े हैं। कुछ तुम्हारे जैसोंने अभ्यास किया है। अबकी बार अुनको स्थान नहीं है। प्यारेलाल कहे कि कुरान पूरा कर लूं या तुम कहो कि वह किताब अधूरी है अुसे लिख डालूं सो नहीं होगा। वहां तो दो चार रोजमें पूरा काम तमाम करना है। जब हम सरकारके सब कानूनोंका भंग करना चाहते हैं तो अुपवास आ ही जाता है। तब हमको जेलमें डालें तो हम अन्न-पानीका त्याग करेंगे और अपने आपको खतम ही कर देंगे।

"अब सवाल यह होता है कि अुसकी शुरुआत किससे की जाय? अिसके लिअे मैंने अपने आपको चुना है। क्योंकि मेरे बलिदानके बिना काम नहीं चलेगा। तुम सब लोगोंका मेरे साथ सहकार चाहिये। अिसमें किसीको घबरानेकी या रंज माननेकी बात नहीं है। कर्तव्य-पालनकी बात है। आखिर तो अिस शरीरको मिटना ही है। तो अेक शुभ कार्यके निमित्त अुसे मिटने देना ही अच्छा है।"

किशोरलालभाअी बोले, "अगर जनरल ही पहले चला जाय तो फौजका क्या हाल होगा? अिसलिअे अैसी ... है कि आप अिसको पसंद

करें अुसके द्वारा आरंभ करें और अुसके बलिदानका अुपयोग कर लें। जब समय आ जाय तो आप अपना बलिदान भी दे दें।"

वापूजी अैसा कौन है? समझो जानकीवहन कहे कि मेरे शरीरकी तो कुछ कीमत नहीं है, मुझे जाने दो। या शास्त्रीजी (परचुरे शास्त्री) कहें कि मैं जाअू।

किशोरलालभाअी — ना ना। मैं तो अैसी बात कहता हू कि जिसकी कीमत हो।

वापू — हा, मैं भी तो यही कहता हू। समझो, शास्त्रीजीकी कीमत पैसा है और जानकीवहनकी रुपया और मेरी मोहर। अगर अिस चीजकी कीमत मोहर देनी चाहिये तो मुझे ही देनी चाहिये। और अब मेरे बलिदानका समय आ गया है, अिसका निर्णय कौन करेगा?

किशोरलालभाअी — आप ही करेंगे।

वापू — बस तो मैं आज ही निर्णय करता हू कि पहला बलिदान मुझे ही करना चाहिये।

किशोरलालभाअी चुप हो गये। वापूने विनोबाजीसे पूछा, "तुमको कैसा लगता है?" अुन्होंने कहा, "मुझे तो ठीक लगता है। मैं समझा हू या नहीं अिसलिअे दुहरा जाता हू। आपके कहनेका मैं यह अर्थ समझा हू कि स्वतंत्र बुद्धिसे भी अुपवास किया जा सकता है। जिनकी स्वतंत्र बुद्धि साथ न दे, वे जनरल पर श्रद्धा रखकर भी कर सकते हैं।

बापू — ठीक है। लेकिन अिसमें अितना और जोड दू कि जब हिंसा अितनी फूट निकली है तो अुसे रोकनेका अिसके सिवा और कोअी चारा नहीं दीखता है और अिसलिअे अैसा करना आवश्यक हो गया है। अगर अिस विषय पर अधिक चर्चा करनी हो तो मैं समय निकाल सकता हू।

विनोबा — मुझे जरूरत नहीं लगती है।

अिसके बाद सभा विसर्जित हो गयी। मुझे बापूजीकी योजना पटती तो थी, लेकिन अनशनका अस्त्र आम लोगोंके सामने रखने जैसा नहीं लगता था। मैंने बापूजीको अपने मनकी बात कहते हुअे लिखा कि 'हिंसाकी लडाअीमें मरना जितना सरल है अुतना अिसमें नहीं है। सामूहिक रूपमें अिस प्रकारकी मृत्युमें कोअी जाति जूझी हो, अैसा अुदाहरण ही नहीं मिलता है। अिसमें क्या आत्महत्याके पापका डर नहीं है?'

मुझे डर यह भी था कि बापूजी अब अधिक दिनों जीवित नहीं रहेंगे। अिसलिअे मैंने लिखा था कि 'अिस ज्वालामें मेरा खात्मा हो गया तो प्रश्न ही खतम है। जीवित रहा तो आपकी आत्मा मुझसे क्या अपेक्षा रखेगी और मेरा कैसा कार्य देखकर सतुष्ट होगी? अगर आप समय निकाल सकें तो बम्बअी जानेसे पहले आपके सामने अपना दिल खोलकर मैं मन हलका करना चाहता हू। आप मेरी चिन्ता तो नही करते होंगे। मेरे सब अपराधोंको क्षमा करके मुझे आशीर्वाद दीजिये कि आपको सतुष्ट करनेमें सफल होअू।'

बापूजीने लिखा

मेरी चिन्ता न करें। दूसरोंके लिअे अनशन किया जा सकता है या नही? सोचनेकी बात है। मैंने तो सैद्धातिक चर्चा ही की।

तुम्हारे बारेमें विचार तो करता ही हू। चिंता मुद्दल नही। मुझे तुम्हारे बारेमें डर है ही नही। तुम्हारा यहा पड़ा रहना और आश्रमके काममें रत रहना मेरे लिअे पर्याप्त है और अैसा भी समझो कि अुसमें गोसेवा छिपी हुअी है। स्वामी अित्यादिसे मिलना, मुहब्बत करना। तुम्हारा यहा होना फायर बकेट-सा है। फायर बकेटमें कितनी शक्ति रहती है, जानते हो न? मैं खप गया तो भगवान मार्ग बता देगा। यों तो अिसकी नीवसे यहा हो, यहीं मरना। समय मिला तो बुला लूगा। पर मुश्किल है।'

२७-७-'४२ बापूके आशीर्वाद

अिससे प्रगट होता है कि बापू छोटेसे छोटे सिपाहीकी बातों पर कितना ध्यान देते थे। अिसी प्रकार विचार-मथनमें अगस्तका महीना आ गया।

बापूजी वर्किंग कमेटीकी मीटिंगके लिअे बम्बअी जानेकी तैयारी कर रहे थे। जानेके पहले दिन प्रार्थनामें बोलते हुअे बापूने कहा

"मैं कल बम्बअी जा रहा हू। क्या होगा यह तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरी अुम्मीद है कि ११ अगस्त तक मैं यहा वापिस आ जाअूगा। १३ से अधिक तो नहीं। जो लोग आश्रममें हैं अुनको समझना चाहिये कि आश्रम पर कुछ भी सकट आ सकता है। हो सकता है कि सरकार हमारा खाना भी बद कर दे। तो जिनकी पत्ते खाकर भी यहा रहनेकी तैयारी हो वे ही लोग यहा रहें, बाकी सब चले जाय। अगर सकट आने पर जायेंगे तो हमारे लिअे शर्मकी बात होगी।"

बापूजी बम्बअी जा रहे थे अुस दिन सोमवार था। गाडी लेट थी। बापू वेटिंग रूममें बैठकर अपना काम कर रहे थे। मैं बाके साथ बात कर रहा था। अुनसे मैंने कहा, "बा, जल्दी लौटकर आअियें।"

बाने करुण स्वरमें कहा "जोअीअे, शु थाय छे? * आप लोगोंके आशीर्वादसे लौट आये तो अच्छा ही है।"

बाका यह करुण स्वर मेरे हृदयमें बहुत ही चुभा। अुससे यह टपक रहा था कि अुन्हें वापिस आनेकी कोअी अुम्मीद नही है। और बाका यह डर सच ही सिद्ध हुआ। बा फिर लौटकर सेवाग्राम नही आ सकी।

बापूजीके लिअे गाडीमे स्थान अक्सर पहले ही निश्चित हो जाया करता था। लेकिन अिस बार अितनी भीड थी कि रेलवेवाले बापूजीके लिअे कोअी खास प्रबंध न कर सके। अुस रोज न मालूम क्यो महादेवभाअी भी लोगोंसे खास तौर पर मिल रहे थे। मैं अुनके साथ कोअी विशेष संबंध नही रखता था, लेकिन अुस रोज मुझे भी अुनके प्रति बडी श्रद्धा हुअी और मैंने अुन्हें प्रणाम किया। वे हंसकर बोले, "अच्छी तरहसे रहना।" सचमुच वे भी हमसे हमेशाके लिअे बिछुड गये।

बापूकी पार्टी गाडीमें जहां तहां बैठी, लेकिन मैं बापूजी और बाको बैठानेमें लगा था। डिब्बेमें बहुत भीड थी। जैसे तैसे बापूका बिस्तर अन्दर ले गया और बापूको चढाया। अुनको देखकर लोगोंने थोडी जगह कर दी। अेक सीट पर बापूका बिस्तर और दूसरी पर मुश्किलसे बाका बिस्तर लगाया। मैंने बा और बापूको प्रणाम किया और बापूने हंसकर अेक थप्पड लगाया। मैं वापिस चला आया।

यों तो बापू अनेक बार सेवाग्रामसे बाहर जाते थे। लेकिन अुन दिनकी जुदाअीने चित्त पर बिछोहका गहरा असर किया। मनमें अैसा ही लगता कि अब अिस बार बापूजी लौटकर आनेवाले नही हैं; निश्चित ही पकडे जायेंगे। और वही हुआ। पू० बा और महादेवभाअी तो मानो सेवाग्रामसे अुस दिन आखिरी बिदा लेकर ही गये थे। भगवानकी गति कौन जान सकता है?

---

* अर्थ देखें क्या होता है?

२४

अगस्त आन्दोलन और आश्रमवासी

९ अगस्तको सुबह ही रेडियोसे खबर मिली कि बापूजीको पकड़ लिया गया। वर्धामें सभा हुअी और अुसको भंग करनेके लिअे गोली भी चली। और अुसमें अेक लड़केकी मृत्यु हो गअी। सेवाग्रामकी सब संस्थाओंमें हलचल मची। हमारे पथप्रदर्शनके लिअे पूज्य किशोरलालभाअी सेवाग्राममें थे, जिसलिअे हम लोग निश्चिंत थे।

बम्बअीसे जो लोग वापिस आये, अुन्होंने बापूके नामसे 'करो या मरो' नारेका कुछ भिन्न ढंगसे अर्थ किया जो बापूजीकी अहिंसाके साथ मेल नहीं खाता था। तोड़फोड़के तरीके अपनानेकी जो बात थी वह बापूजीकी अहिंसामें ठीक नहीं बैठती थी। मैंने अुसका विरोध किया। भय यह था कि आश्रमको भी सरकार जब्त कर लेगी। कुछ लोगोंकी मान्यता थी कि सरकार अिस बार शायद आश्रम पर हाथ नहीं डालेगी। अिस आशंकाको मिटानेके लिअे हमने सरकारको सीधी चुनौती दी और आश्रमको सत्याग्रहका केन्द्र ही बना दिया। आसपासके देहातके जो सत्याग्रही आन्दोलनमें हिस्सा लेना चाहते थे अुनको वहां स्थान दिया। अुनकी अेक कमेटी बन गअी। दूसरी संस्थाओंसे जो लोग सत्याग्रहमें शामिल होना चाहते थे वे आश्रमके शिविरमें आ गये। मैं और चरखा संघकी तरफसे श्री सुनाभाअू चौधरी मुख्य थे। बापूजीकी रक्षाके लिअे जो चार पुलिस वहां रखे गये थे अुनको गवर्नमेंटने हटा लिया। अुनमें से रामजान अली नामक पुलिस कान्स्टेबलने अिस्तीफा दे दिया और वह आन्दोलनमें शामिल हो गया।

अुन दिनों किशोरलालभाअी 'हरिजन' के संपादनका काम कर रहे थे। वे भी अुस समयके झगड़ेमें पड़ गये थे और अुन्होंने जनताको तोड़फोड़का अुपदेश देनेवाला अेक लेख 'हरिजन' में लिखा था। जिसलिअे २३ अगस्तकी रातको बारह बजे पुलिसकी लारी आयी और अुनका मकान घेर लिया गया। हम खबर पाते ही हम भी वहां पहुंचे। पुलिसने अुनके मकानकी तलाशी ली और कुछ कागजातके साथ अुनको पकड़ लिया। किशोरलालभाअीने मुझे कहा कि तुम अिन लोगोंसे [illegible]

कर्तव्य समझाओ। जिन पर मैंने अुन्हें समझाया कि आप लोग पेटके लिअे यह कैसा निन्दनीय काम कर रहे हैं। अपनी रोटीके लिअे किशोरलालभाअी जैसे पुरुषको रातके बारह बजे गिरफ्तार करते आपको शर्म आनी चाहिये। अंग्रेज तो आज नही तो कल भारतसे जाने ही वाले है। तब आप क्यो अुन्हें खुश करनेके लिअे अैसा घृणित और देशद्रोहका काम करते है?" अुस समयकी अुनकी मनस्थितिमें मेरी बातका क्या असर हो सकता था? वे चुपचाप किशोरलालभाअीको लेकर चले गये।

आश्रमसे काफी लोगोंने सत्याग्रह किया और जेल गये। पहला जत्था बहनोंका गया। अुसमे पू० शकरीबहन, कचनबहन, कान्ताबहन, जोहराबहन और मनु गाधी गअी। वर्धामे सभाओं और जुलूसो पर प्रतिबध था। अिन्होंने जाकर अुसे तोडा और गिरफ्तार हो गअी। सच बात तो यह है कि अितने भाअी आश्रममें अुस समय थे ही नही कि अिस तरह सत्याग्रह आरभ कर सकते।

अुस समय सेवाग्रामके कुछ नौजवान भी निकले। हमें अुम्मीद नही थी कि सेवाग्राममें से भी कुछ लोग जेलके लिअे तैयार होंगे। लेकिन अैसे लोग भी निकले जो पहले कुछ खास हिस्सा आन्दोलनमें नही लेते थे। श्री बापूराव देशमुख, महादेवराव कोल्हे, चन्द्रभान तथा अन्य कअी लडके सत्याग्रहमें जुट गये। सबसे महत्त्वका आदमी तो सखाराम सावळे निकला, जो चरखा सघका बुनकर था। अुस पर ६–७ बच्चोंका भार था। लेकिन वह बडी दृढतासे सत्याग्रहमें शामिल हुआ और कह सकते है कि वह सेवाग्रामके सत्याग्रहमें सर्वश्रेष्ठ सत्याग्रही सिद्ध हुआ। अुसके घरमें छ बरसके बच्चेसे लेकर अुसकी पत्नी तक सब लोग सूत कातकर गुजारा करते थे। सत्याग्रहियोंके परिवारोंके लिअे हमने थोडीसी मदद भी दी, लेकिन वह नही के बराबर थी।

गावके हिसाबसे सेलूकाटेके, जो सेवाग्रामसे ५–६ मील दूर है, सत्याग्रही सबसे अधिक योग्य थे। सत्याग्रहियो पर वर्धाकी पुलिसने काफी जुल्म किये। दिनमें लडकोंको पकड़ लेते और रातमें अुनको अधेरेमें छोडते और अधेरेमें मारते। फिर भी सत्याग्रही लोग बहादुरीसे अपना काम करते रहे। श्री मनोहरजी दीवाण वर्धा जिलेके सत्याग्रहका सचालन करते थे। अुनकी सूचनाके अनुसार हम सत्याग्रहके लिअे सत्याग्रही भेजते थे। रामपत ओझा भी हमारे शिविरमें शामिल हो गया। अुसकी गिरफ्तारी हुअी और अुसको सजा हो

गअी। जब पुलिसके अत्याचार बढ़े तो मैं आश्रमके सत्याग्रहियोंकी अेक टोली लेकर वर्धा गया और सभा तथा जुलूसका कानून तोड़कर पकड़ा गया। क्योंकि जेलमें ज्यादा जगह नहीं थी। अिसलिअे सरकारने तहसीलको जेल बना दिया। वहां छोटीसी गंदी और अंधेरी जगहमें बहुतसे सत्याग्रहियोंको २४ घंटे बन्द रखते और वहीं खाना भी खिलाते। अिसका हम लोगोंने विरोध किया। जब अधिकारियोंने अिस पर कोअी ध्यान नहीं दिया तो मैं और मेरे अन्य साथी अनशन करनेके लिअे मजबूर हो गये। तब मुझे अस्पतालमें ले जाकर 'फोर्स्ड फीडिंग' (जबरदस्तीसे नाकमें नली डालकर दूध पिलाना) शुरू किया। अिस पर मैंने पानी भी छोड़ दिया। मजिस्ट्रेटने केस चलानेका नाटक-सा करके अुसी समय तककी सजाको पर्याप्त मानकर मुझे छोड़ दिया। मेरे केसमें अेक मजेदार घटना यह हुअी कि मजिस्ट्रेट श्री मेहताने मेरा परिचय पहले हो चुका था। सेवाग्रामकी सड़क बनाते समय अेक मंजुला नामकी बहनका खेत, जो बीचमें आता था, मैंने अुसे राजी करके प्राप्त कराया था। तबसे वे मुझे पहचानते थे। तब मेहताजीसे मैंने हंसीमें कहा था कि अेक दिन आपकी अदालतसे मुझे अपराधी करार देकर सजा होगी, यद्यपि अुन्हें अैसा अवसर आनेकी आशा नहीं थी। अेक दिन वे जेलमें आकर मुझसे बोले कि आपकी वाणी सत्य निकली। आपका केस मेरी अदालतमें है। मैं सजा नहीं करना चाहता और कलेक्टर व पुलिस आपको छोड़ना नहीं चाहते। अिससे धर्मसंकट अुपस्थित हुआ है। मैंने हंसकर कहा कि आप और मैं अपना अपना काम करें। अिससे मित्रतामें कोअी फर्क नहीं पड़ेगा। यह सब हो रहा था तब भसालीभाअी तो अपने चरखेमें ही मस्त थे।

आश्रममें जितनी बहनें थीं वे सब जेल चली ही गअी थीं। चिमनलाल भाअीको पकड़ा, पर सात दिन हवालातमें रखकर छोड़ दिया। जेलकी अव्यवस्थाके खिलाफ मैंने अुपवास किया, अिसलिअे मुझे भी छोड़ दिया। अुस समय वर्धामें श्री सालिग्राम सिंह अिन्स्पेक्टर और श्री ताराचन्द डी० अेस० पी० थे। अिन लोगोंने काफी जुल्म किये। पवनार षड्यन्त्र केसके नामसे तार काटने और रेलवे लाअिन काटनेका अेक झूठा केस बनाया गया। झूठे गवाह तैयार किये गये। सब गवाहोंसे मैं व्यक्तिगत रूपसे मिला और पूछा कि सचमुच तुमने अैसा कुछ देखा है क्या? लेकिन अेक भी गवाह अैसा नहीं निकला जो अुस केसके बारेमें कुछ भी जानता हो। जिस तरहसे पुलिस कहलवाती थी वैसा ही वे कहते थे। अुनका नाटक लंबा चला, जिसमें वल्लभस्वामीको दं

सालकी सजा हुअी। लेकिन बादमें अपील करने पर वे छूट गये। मुखबिरको पलट जानेके जुर्ममें सजा हुअी।

आश्रम सत्याग्रहकी सबसे प्रसिद्ध घटना तो भसालीभाअीके अुपवासकी रही, जिसका प्रचार सारे हिन्दुस्तानमें हुआ। वे बहुत समय तक सत्याग्रहकी हवासे निर्द्वन्द्व रहे। मैंने अेक दिन हसकर अुनसे कहा कि आप वर्धामें बैठकर चरखा कातें तो कैसा हो। लोगोंको मदद मिलेगी। अुनको यह सूचना बहुत पसन्द आयी। बोले, मै तो तैयार हू। मैंने कहा कि काकासाहबसे पूछकर आपको वहा भेजनेकी व्यवस्था करेंगे। लेकिन अुनको अितने समयके लिअे भी रुकना नही था। अुन्होने अपना चरखा अुठाया और वर्धामें लक्ष्मीनारायणके मदिरके चबूतरे पर बैठकर कातना शुरू कर दिया। मुन्नालालभाअी, रमणलालभाअी, तथा मोहनसिंहभाअी भी वहा गये थे। बस भसालीभाअीके चरखेके आसपास बच्चे अिकट्ठे हो गये। पुलिस तो किसीका भी जमा होना कानूनके विरुद्ध समझती थी। अिसलिअे बच्चोको अुसने धमकाया और जब भसालीभाअी तथा मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो भसालीभाअीको अकोला ले गये। वहा पानीके बगैर अुपवास करने पर अुन्हें फोर्स्ड फीडिंग किया गया, लेकिन सफलता नही मिली। बादमें अुन्हे छोड दिया गया। रमणलालभाअी और मोहनसिंहभाअीको पद्रह दिनके बाद छोडा। मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो चारोंको फिर गिरफ्तार कर लिया। भसालीभाअीने जेलमें जाते ही फिर अुपवास शुरू कर दिया। अिस पर अुनको तो छोड दिया, लेकिन मुन्नालालभाअीको रख लिया। फिर तो भसालीभाअीको कअी बार पकडा और कअी बार छोडा। भसालीभाअीको लगा कि मुझे अिस अन्यायी राज्यमें जीना ही नही चाहिये। हम लोग अुन्हे काफी समझाते थे, लेकिन अुन्हे अुपवास करके मरनेकी धुन लग गअी।

चिमूरमे पुलिसने स्त्रियो पर काफी अत्याचार किये। अुनकी निष्पक्ष जाचकी माग करने भसालीभाअी दिल्लीमें श्री अणेके घर पहुचे। मै भी साथ था। श्री अणे अुस समय वाअिसरॉयकी कौंसिलके सदस्य थे। अणे साहबने हमारा प्रेमसे स्वागत किया और आनेका कारण पूछा। हमने सारा हाल कह सुनाया और निष्पक्ष जाचकी माग की। अणे साहबने कहा कि जहा आन्दोलन चलता है वहा कुछ अवाछनीय घटनाअें भी हो ही जाती हैं। अिसका कोअी अुपाय नही है। अिस अुत्तरसे भसालीभाअीको सतोष नहीं हुआ और अुन्होंने अुपवास करनेका अपना निर्णय बताया। दुर्भाग्यसे अुसी दिन श्री अणेकी अेक पुत्रीका देहान्त हो गया था। यह बात हमने अुनके मुखसे ही सुनकर जानी।

लेकिन तब भी अुन्होंने भसालीभाअीसे कहा कि चलिये, आपके ठहरनेका प्रबंध कर दूं। मुझे तो अुपवास करना नहीं था अिसलिअे मुझे भोजन कराया। थोड़े ही देरमें पुलिसवाले आ गये और हमें दिल्लीसे चले जानेका नोटिस दिया। हमने अिनकार किया तो हमें जेलमें ले जाया गया और वहांसे ८ नवंबरको हमें सेवाग्राम भेज दिया गया। १० तारीखको भसालीभाअी पैदल ही चिमूरके लिअे निकले। पुलिसने रास्तेमें ही अुन्हें पकड़ लिया और सेवाग्राम पहुंचा दिया। २० तारीखको भसालीभाअी फिर निकले और २२ को चिमूर पहुंचे। पुलिस फिर अुन्हें सेवाग्राम रख गअी। अिस तरह कअी बार हुआ। वर्धामें चिमूर-दिवस मनाया गया। अिस सारे अर्सेमें भसालीभाअीका अुपवास चालू ही था।

अेक बार जब भसाली भाअी चिमूरके लिअे पैदल निकले तो हमको लगा कि वे चिमूर तक नहीं पहुंच सकते, रास्तेमें ही कहीं अुनका शरीर नष्ट हो जायगा। अिसलिअे मैं और लीलावती बहन रेल द्वारा अुनके समाचार जाननेके लिअे चिमूर जानेको निकले। चिमूरसे चार पांच मील अिधर हमने सड़क पर भसालीभाअीको पकड़ा। अुस समय तेज धूप पड़ रही थी। भसालीभाअीने पानी भी छोड़ दिया था। वे सिर पर भीगा हुआ कपड़ा रखकर चल रहे थे। अुनकी अिस कठिन सहिष्णुताको देखकर मेरे आश्चर्यका पार न रहा। चिमूर पहुंचते ही दूसरे दिन पुलिसने अुनको वहां गिरफ्तार कर लिया और सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया। लेकिन वे कहां माननेवाले थे? फिर निकल पड़े। तब तो हमको निश्चय हो गया कि अब भसालीभाअी चिमूर नहीं पहुंच सकते। अिसलिअे मैं, लीलावती बहन और मोहनसिंहभाअी बैलगाड़ी लेकर अुनके साथ निकले और यह तय हुआ कि चिमूरके आधे रास्तेसे अिधर यदि भसालीभाअीका शरीर छूट जाय तो सेवाग्राममें अुनके शरीरको दाह-संस्कारके लिअे ले आयेंगे और आधे रास्तेसे अुधर छूटे तो चिमूर ले जाकर दाह-संस्कार करेंगे। सेवाग्रामसे चिमूर सीधे रास्ते करीब ६३ मील पड़ता था। जब हम लोग ४० मील दूर निकल गये तो अेक रातको अेक गांवमें, जहां हमारा मुकाम था, पुलिस पहुंच गअी और हम सबको वापिस हिंगनघाट ले आयी। वहांसे भसालीभाअीको मोटर द्वारा सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया।

सत्याग्रहकी लड़ाअीमें भसालीभाअीका अुपवास आश्रमकी तरफसे अेक महान बलिदान था। भसालीभाअी मृत्युके बिलकुल नजदीक पहुंच

गये थे। अेक रोज तो अुनकी नाजुक स्थितिको देखकर हमें लगा कि शायद रातको ही वे चल वसेंगे। अुस रोज पुलिसने वजाजवाडी पर घेरा डाल दिया था। लेकिन मेरे मनमे कुछ अैसा विश्वास था कि भसालीभाअी अुपवाससे मरनेवाले नही है। अन्तमें सरकारने चिमूर-काडकी जाच करनेकी भसालीभाअीकी माग स्वीकार की और ६३ दिनके पश्चात् अुनका अुपवास अीश्वरकृपासे पूरा हुआ। अुसमें वे विजयी हुअे और आज भी देहातमें बैठकर लोगोकी बहुत बडी सेवा कर रहे है।

अिस सत्याग्रहका अितिहास तो स्वतत्र रूपसे लिखनेकी चीज है। मुझे यहा अितना ही जिक्र करना है कि आश्रमने अुसमें पूरा पूरा भाग लिया और जितना भी समव था सब कुछ किया।

वापूजीको पकडकर कहा ले गये? क्या हुआ? अिसका कुछ भी पता बहुत दिनो तक नही चलने दिया गया। धीरे-धीरे थोडे दिनके वाद गुप्त रूपसे पता चला कि वापूजीको आगाखा महलमें रखा गया है। कअी महीनोंके बाद वापूजीका दुर्गाबहनके नाम किया हुआ तार मिला। महादेवभाअीकी मृत्युके बारेमें अफवाह तो बाहर आ गअी थी, लेकिन वापूजीकी तरफसे कोअी प्रामाणिक खबर नही मिली थी। महादेवभाअीकी मृत्युसे आश्रमके लोगोको बडा धक्का लगा। दुर्गाबहन और महादेवभाअीका लडका नारायण वही पर थे। आश्रममें अेकदम गहरा शोक छा गया। लेकिन दुर्गाबहन बहुत धैर्यवान निकली। अुन्होने बहुत धीरज और समझसे काम लिया। नारायण भी बहुत समझदार लडका निकला।

गावमें महादेवभाअीकी मृत्यु पर शोकसभा की गअी। श्री दुर्गाबहनके हाथो हरिजनोका विट्ठल-मन्दिर हिन्दूमात्रके लिअे और सवर्णोका दत्त-मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिया गया।

नारायण स्वय भी सत्याग्रहमें शामिल होना चाहता था, लेकिन दुर्गा-बहनकी सान्त्वनाके लिअे अुसको समझाया गया और वह वहीं रहा।

वापूजीका अुपवास

१० फरवरी १९४३ से वापूने आगाखा महलमें २१ दिनका अुपवास आरभ कर दिया। जब वापूजीके अुपवासका बयान निकला, तब हम सबको पता चला और भय हो गया कि शायद वापूजी अिस अुपवासमें चले जायगे। सरकारके मनमें भी कुछ अैसा ही था, अिसलिअे वापूजीसे मिलनेकी लोगोको

बहुत बडी छूट दे दी गअी थी। आश्रममें किसीका बापूजीके पास जानेका अिरादा नही था, लेकिन अन्तमें बापूजीके चिन्ताजनक समाचार आने लगे और अैसा लगने लगा कि शायद बापूजी चले जायगे। अत अुनके दर्शन करनेकी अिच्छासे मैं व्याकुल हो अुठा।

आश्रम कमेटी पहले किसीको भी खर्च देनेको तैयार नही थी। परन्तु पूनासे रामदासभाअीका फोन आया कि बलवतसिंह आ सकते हैं। अिसलिअे कमेटीने मुझे जानेकी आज्ञा दे दी। मैं २८ तारीखको पूना पहुचा। समय अितना हो गया था कि मेरी मुलाकातकी अर्जी भी मजूर नही हो सकती थी। क्योकि मुलाकातके दिन बीत चुके थे। अर्जी दी भी, लेकिन नामजूर हो गअी। सद्भाग्यसे मि० कटेली, जिनके हाथमें आगाखा महलकी व्यवस्था थी, पहले यरवडा जेलमें मुख्य जेलर थे और मेरा अुनके साथ परिचय था। जब रामदासभाअीने अुनसे कहा कि बलवतसिंह सेवाग्रामसे आये हैं तो अुन्होंने अपने अधिकारसे मुझे भीतर आने दिया। दूसरे दिन बापू अुपवास खोलनेवाले थे। मैं जब वहा पहुचा तो बापू पानी पी रहे थे मुझे देखकर हसे और बोले, "अरे, मैं तो आशा छोड बैठा था। आ गया? क्यो गायको बिलकुल ही भूल गया?" बापूके अिस वचनमें मेरे लिअे औ गोसेवाके लिअे गहरी भावना भरी थी। बापूकी अुस समयकी मुद्रा औ अुनकी प्रेमभरी दृष्टिका वर्णन करना मेरे लिअे असभव है।

मैंने नम्रतासे कहा — मैं गायको भूला नही हू। लेकिन आज कुछ नह कर सकता हू। गोसेवा ही करनी है, लेकिन मैं अपने ढगसे कर सकता हू

मुलाकातें काफी थी। बापूजी काफी थके हुअे थे। शायद मुझ कहनेको अनेक बातें अुनके दिलमें भरी थी। पर मैं नही चाहता था कि बापू अेक शब्द भी बोलनेका कष्ट करें। अिसलिअे मैं अुनको प्रणाम कर हट गया। बापूजीके आगेके कार्यक्रमके बारेमें थोडी बात मीराबहन जान ली।

पूज्य बासे मिला। वे मुरझाअी हुअी और अुदास अेक खाट पर बैठ थी। मैंने प्रणाम किया। बाने पूछा, "क्यो अच्छे हो? सेवाग्राममें स अच्छे है?" अुन्होंने सबके नाम ले लेकर आश्रमवासियोकी राजीखुश पूछी। मैंने थोडेमें सब बताया और कहा, "बा, आप जब सेवाग्राम आयेंग तो आपको वहा आराम मिलेगा।"

बाने कहा, "अब तो सेवाग्राम आनेकी आशा नही दीखती है। मालूम होता है मै तो यही मरूगी। देखें, भगवान क्या करता है।"

फुअीबा, बापूजीकी बडी बहन, को पहली बार मैंने आगाखा महलमे देखा। अन्तमें प्यारेलालजी और सुशीला बहनसे मिलकर मै चला आया।

सचमुच जब मैंने आगाखा महलमें प्रवेश किया तो वह मुझे स्मशान जैसा भयावना प्रतीत हुआ। और आखिर वह स्मशान ही बन गया।

२५

बाका स्वर्गवास और बापूजीकी रिहाअी

बापूजीसे मिलकर मै बम्बअी होता हुआ सेवाग्राम आ गया। बादको १९४३ के दिसम्बरमें मै बगाल चला गया। वहा मै सतीशबाबूके साथ काम करता रहा। अचानक २२ फरवरी, १९४४ की रातको ९ बजे रेडियो बोल अुठा कि कस्तूरबा आज अिस दुनियासे चली गअी। सबको भारी आघात पहुचा। दूसरे दिन खादी प्रतिष्ठानमे अुपवास, सूत्रयज्ञ और प्रार्थना हुअी। सब गगास्नान करने गये और पूज्य बाको अजलि प्रदान की। मै बाके बहुत निकट सम्पर्कमे आया था, अतअेव मेरे कअी मित्रोंने मुझसे बाके विषयमे कुछ लिखनेको कहा। मास्टरजी क्षितिकात झाका अनुरोध सबसे अधिक और आग्रहपूर्ण था। मैंने अुन्हे लिखा

"आपकी अिच्छा है कि मै स्वर्गीय पूज्य बाके निकट परिचयके कुछ सस्मरण आपको लिखकर दू। किन्तु मै आपको अुनके बारेमें क्या लिखू? मातृप्रेमसे अतृप्त मेरा मन बाके मातृस्नेहसे सात्वना पाता था, क्योंकि मेरी मा मुझे बचपनमे ही छोडकर चली गअी थी। अुनका पवित्र दर्शन और सत्सग मेरे लिअे गगा जैसा ही पवित्र था। आज मै अपनेको अनाथ बच्चेकी तरह महसूस करता हू। अुनके लिअे रातभर मेरा दिल रोया है। स्वप्नमें बापूजीको अकेला देखकर वेदना और भी तीव्र हो गअी है। किन्तु बापूजी तो अिस सबके परे है। कुछ स्वप्न-सा देख रहा हू। सचमुच पूज्य बाकी प्रेममय फटकार अब सुननेको नही मिलेगी। अुनके पवित्र सस्मरण तथा अुनके अनेक असाधारण सद्गुणोंके विचारसे मेरा हृदय भर आता है और बुद्धिका भी वही हाल हो जाता है।

भग्न महा महिमा जल रानी।
मुनि मनि छाडि तीर अवगानी॥

"फिर भी आपका प्रेम और पूज्य बाके प्रति आपकी अगाव श्रद्धा मुझे लिखनेके लिअे प्रेरणा देती है। अिसलिअे थोडेमें घरेलू सस्मरण सिर्फ आपकी जानकारीके लिअे लिखता हू। बाका जीवन अितना सार्वजनिक था कि सब कोअी अुनके जीवनके बारेमें सब कुछ जानते है। तो भी मुझे बा अुनके चरण-कमलोंके निकट रहनेका सौभाग्य मिला और मैंने जिस दृष्टिसे अुन्हे देखा अुससे शायद आपको कुछ जानकारी मिले। अस्तु।

"यह तो आप जानते ही है कि बा बहुत कम पढी-लिखी थीं। तो भी गुजराती और हिन्दीमें अनेक धार्मिक ग्रथोका अुनका अभ्यास चालू ही रहता था। अितना ही नही, अिस अुम्रमें भी वे अेक छोटे विद्यार्थीकी तरह गीताके श्लोकोंका शुद्ध पाठ करने तथा अुन्हें कठस्थ करनेका सतत प्रयत्न किया करती थीं। और हममें से जिनके पाससे वे भाषा तथा ग्रथो सबधी कुछ भी सीख सकती थीं बडी श्रद्धाके साथ सीखा करती थीं। अितनी पूज्य और अितनी बुजुर्ग होते हुअे भी किसीसे पढते समय वे अेक योग्य विनयी विद्यार्थीकी तरह शिष्यभावसे ही पढा करती थीं। मुझे अुनको कुछ दिन रामायण पढानेका सौभाग्य मिला था। अुस समय मैंने अुनसे आदर्श विद्यार्थीका पाठ पढा था।

"बाकी अितनी अुम्र होते हुअे भी और अेक महापुरुषकी सहधर्मिणी बननेका सौभाग्य प्राप्त होने पर भी अुसके अभिमानने या अिस स्थितिसे सुविधा भोगनेकी भावनाने अुन्हे स्पर्श तक नही किया था। सेवाग्राममें अितने सेवक-सेविकाओंके रहते हुअे भी बा अपना काम आप ही करनेका आग्रह रखती थीं। अपना चेम्बर पॉट व कमोड भी जब तक खुद बीमार होकर बिस्तरमें न पड जायें, किसीको साफ नही करने देती थीं। अितना ही नहीं, आश्रमके भोजनालयका कुछ काम तो अपने हाथो किये बिना वे रहती ही नहीं थीं। अिसके बिना अुनको चैन ही नहीं पडता था। आश्रमके बीमारोंकी खबरदारी तो बा रखती ही थीं। परन्तु अितनी कमजोरीके बावजूद बापूजीकी कुछ न कुछ शारीरिक सेवा किये बिना भी वे नहीं रह सकती थीं। आश्रमके जवान लडके-लडकियो पर वे अेक माताकी तरह कडी निगरानी रखती थीं।

"वाकी गोभक्ति अद्‌भुत थी। जब गोपूजाका कोअी त्यौहार आता तो वा मुझसे कहतीं, "बलवत, अेक बछडेवाली गाय मुझे पूजाके लिअे चाहिये।" अुनकी प्रेममय गोपूजा देखकर मुझे यशोदा माकी याद आ जाती थी। अक्सर मैं अुनको देवकी नामकी गाय दिया करता था, जो वास्तवमें हमारी गोशालाकी मा थी और सचमुच देवकी जैसी ही निरीह और प्रेमकी मूर्ति थी।

"अगर आश्रममें वा न होती तो हमें त्यौहारोंका पता चलना असम्भव-सा ही था। कोअी त्यौहार हुआ कि वाकी सीधीसादी प्रसादी, जो आश्रमके अस्वाद-व्रतकी व्याख्यामें आती हो, हमारे सामने आ ही जाती थी। तब पता चलता था कि आज अेकादशी या सक्रान्तिका दिन है।

"देश या विदेशके राजनैतिक मामलोंमें अुनकी स्वतत्र दिलचस्पी न रहते हुअे भी वे रोजाना अखबार पढकर सब बातोंकी जानकारी रखती थी। लडाअीकी अिस मानव-सहारिणी विध्वसलीलाके बारेमें सुनकर व पढकर अुनको काफी वेदना होती थी। अेक रोज कुछ बात चल रही थी तो वे बोलीं, "आ लडाअी तो जगतनो नाश करीने ज शान्त थशे के शु?" (यह लडाअी जगतका नाश करके ही शान्त होगी क्या?) बगालके दुष्कालके बारेमें आगाखा महलसे अेक पत्रमें अुन्होंने लिखा था, "बगाळना समाचार सामळीने तो हैयु फाटे छे जाणे बंगाळमा तो आकाश ज फाटी पडयु छे कोण जाणे अीश्वर शु करशे?" (बगालके समाचार सुनकर हृदय काप अुठता है। बगाल पर तो आकाश ही फट पडा है। न मालूम भगवान क्या करेगा?) अिससे आप जान सकते हैं कि देशकी कितनी चिन्ता अुनको रहती थी।

"वा यद्यपि बहुत कम पढी-लिखी थी तो भी अग्रेज मेहमानोंका टूटी-फूटी अग्रेजीमें ही स्वागत करती और अुनके साथ कुछ बातचीत भी अग्रेजीमें कर लिया करती थी। अगर बाहरी दुनियाकी बात बापूजीके लिअे छोड दें तो वाके बिना आश्रम सुना-सा लगा करता था।

"जिस दिन बापूजी बम्बअी गये थे, मैं वर्धा स्टेशन तक अुन्हें पहुचाने गया था। गाडी लेट थी। स्टेशनके वेटिंग रूममें बापू तो कुछ लिखने लगे और हम लोग बाके पास बैठकर अुनसे कुछ बातचीत करने लगे। जब बा चलने लगीं तो मेरे मनमें अुनके जल्दी लौट आनेके बारेमें शका अुठी, अिसीसे मैंने प्रणाम करके कहा, बा, जल्दी लौटना। बा बोली, "हा

भैया, तुम्हारे आशीर्वादसे लौट आयी तो आनन्द ही होगा।" बाके अिन शब्दोंमें वियोगकी वेदना थी और लौटनेके बारेमें निराशा। बाके वत्सलतापूर्ण शब्द आज भी मेरे कानोंमें गूंज रहे हैं और अुनकी वह प्रेममयी मूर्ति मेरी आंखोंके सामने नाच रही है। शायद बाकी वही भविष्यवाणी थी, जो कल सच होकर ही रही। मेरी व्यक्तिगत श्रद्धा तो बामें अितनी बढ़ गयी थी कि यदि बापू और बा अेक नावमें बैठे हों, नाव डूबने लगे और दोनोंमें से अेकको ही बचाया जा सकता हो और अगर अुस हालतमें मेरा बस चले तो मैं पहले बाको बचानेकी कोशिश करूं। क्योंकि बापूने अपनी कठोर तपश्चर्याके बलसे जिन दैवी सम्पदाओंको प्राप्त किया है, अुनका अटूट भंडार स्वभावसे ही बामें भरा था। आज मैं जब अपने पुराने अितिहासकी तरफ नजर घुमाकर देखता हूं तो पू० बाके त्याग, अुनकी मूक तपश्चर्या और अुनकी अमर मृत्युके लायक अुपमा मुझे अेक भी नहीं मिल रही है।

"हिन्दू धर्मको अनेक महादेवियोंने धर्ममार्ग दिखाया है, जैसे सीता, सावित्री आदिने। सावित्री तो अेक बार ही अपने पतिको यमराजसे वापिस लायी थी। सीता सिर्फ १४ वर्ष ही रामके साथ वनवासमें रही। लेकिन बा तो जन्मभर बापूके साथ वनवासमें रहीं और जन्मभर अुनके लिअे यम-राजसे लड़ती रहीं। और आखिरमें विजयी होकर अुन्होंने अपने आपको सादर अुसके सुपुर्द कर दिया। अैसा पवित्र जीवन और पवित्र मृत्युका अुदाहरण भारतके या दुनियाके अितिहासमें क्या कोअी आपकी नजरमें है? बा जो आदर्श छोड़ गयी हैं अुससे देशके सारे स्त्री-पुरुषोंको लाखों क्या करोड़ों वर्षों तक धार्मिक और राजनैतिक मार्ग पर चलनेकी शक्ति और प्रकाश मिलता रहेगा।

"गीताका कर्मयोग तो बाके लिअे महामंत्र था। कामके बिना अेक क्षण भी रहना अुनके लिअे अस्वाभाविक था। अुनकी कार्यतत्परता देखकर हम सबको सिर झुकाना पड़ता था। और अिस वृद्धावस्थामें अुनकी अैसी कार्यतत्परता तथा शारीरिक और मानसिक शक्तिको देखकर हमें आश्चर्य होता था।

"बा बराबर नियमित रूपसे सूत कातती थीं। जब तक बीमारीके कारण बिल्कुल शय्याशायी न हो जातीं तब तक अुनका सूत कातना नियमित चलता था और प्रार्थनाके समय देखा जाता था कि सबसे ज्यादा सूत कातनेवालोंमें अेक बा भी होती थीं। कितने ही समय तक अस्वस्थ

रहने पर भी बापू तथा आश्रमको छोडकर जलवायु परिवर्तन करना या अपने पुत्र तथा स्नेहियोंके पास जाना अुन्होने कभी पसद नही किया।

"पूज्य बाके प्रति बापूका अितना आदर था कि जब बा कही बाहर जाती या बाहरसे आती तो बापू अपने जरूरीसे जरूरी कामको भी छोडकर बाको पहुचाने या अुनका स्वागत करने आश्रमके बाहर तक जाते थे। बापूने कितनी ही बार कहा है, 'मुझे व बाको नजदीकसे जाननेवाले लोगोमें तो अैसे ही लोग ज्यादा हैं जिन्हे मुझ पर जितनी श्रद्धा है अुससे कही ज्यादा बाके अूपर है।' पू० बाके जैसा पवित्र आदर्श जीवन और मृत्यु अीश्वर सबको दे अैसी प्रार्थना करे। अुनकी पवित्र मृत्युका शोक तो हम क्या करे?

मेरा मुझ पर कुछ नही, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर॥

"बस बा जिसकी थी अुसके पास चली गयी। हम सबको भी अेक दिन जाना है। किसी सतने कहा है अैसा काम करो कि रोते आये थे, हसते हसते जाओ।

"पूज्य बा हसते हसते गयी। वे अितनी अूची व पवित्रात्मा थी कि अुनकी आत्माको हमेशा ही शाति थी। और अिसमें सदेह नही कि वे भगवानकी गोदमे शान्तिपूर्वक विश्राम करेगी।

२३-२-'४४ आपका भाअी
बलवतसिंहके सादर प्रणाम"

सन् '४४ के मअीमें बापूजी जेलसे छूट गये और कुछ दिन आरामके लिअे जुहू चले गये। मैंने बगालसे बापूजीको लिखा कि आपसे मिलनेकी अिच्छा होती है, लेकिन रुकनेकी कोशिश करता हू। बापूजीने लिखा

चि० बलवतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। थोडे शब्द तो तुमको भी लिखू, क्योंकि थोडा थोडा प्रियजनोको लिखता हू। तुम्हारा वहा ठीक जम गया है। सतीशबाबूको मदद मिलती है, देनी चाहिये। अच्छे रहो। मेरे पास आनेकी अिच्छाको रोको।

जुहू, ३१-५-'४४ बापूके आशीर्वाद

मैं बगालसे वापिस ता० २१-९-'४४ को सेवाग्राम आया। बापूजी गाधी-जिन्ना वार्ताके लिअे बम्बअी गये थे। वहासे ता० १-१०-'४४ को वापिस आये।

मैने वापूजीको बगालका अनुभव और '४२ के आन्दोलनमें वाहर क्या क्या हुआ अुसका सब हाल सुनाया। वे कुछ नही बोले। अुन्होंने दुःखमें अेक लम्बी सास ली। मैने दीपावलीके दूसरे दिन वापूजीको अपने मनकी स्थिति बतलायी। सस्कृत पढनेकी अिच्छा प्रकट की और अग्रेजीके विपयमे अुनकी राय जाननी चाही। वापूजीने लिखा

"सस्कृत अवश्य पढो। अुच्चारण शुद्ध बनानेमें किया हुआ प्रयत्न व्यर्थ नही जायगा। प्रत्येक भापाके अुच्चारण शुद्ध होने चाहिये, परन्तु सस्कृत भापाके लिअे शायद शुद्ध अुच्चारण अत्यावश्यक है। अग्रेजीका अभ्यास तुम्हारे लिअे बिलकुल आवश्यक नही है। जो ज्ञान है अुसे व्यवस्थित करो और अुसमें वृद्धि करो।

मेरे आशीर्वाद तो तुम्हारे साथ है ही।

२१-१०-'४४ वापू

दूसरे दिन आश्रमवासियोंके सामने वापूजीने आश्रमकी विश्वकुटुम्ब भावना और ग्रामसेवाकी कमीके अूपर गम्भीर प्रवचन दिया। अन्तमें अुन्होंने कहा, "अगर हम सेवाका तेज न बता सकें तो प्रजाका पैसा खाकर यहा रहना अच्छा नही है।"

वापूजीके मनमें यह विचार चल रहा था कि अब आश्रमको विखेर देना चाहिये। वे चाहते थे कि आश्रमसे जो लोग वाहर जाकर अधिक काम कर सकते है, वे वाहर जाकर अधिक काम करे। अिस विपयमें वापूजीके साथ हमारी खूब चर्चा होती थी। मैने वापूको अेक लम्बा पत्र लिखा, जिसका आशय यह था कि आपने यहा सब सस्थाओंको बसाकर ठीक नही किया है। अुनमें आपसमें कुछ न कुछ सघर्प चलता है और देहातका काम भी अेक दृष्टिसे नही हो पाता है। आपके रोज नये नये परिवर्तन चलते रहते है। अैसे ही आपने सावरमती आश्रमका परिवर्तन किया। अब अिसका भी करना चाहते है। यदि ये सस्थाये अलग अलग गावमें बसती और स्वतत्र रीतिसे काम करती तो अिससे गावोकी अधिक सेवा होती। वापूजीने लिखा

चि० बलवतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। अुसमें तुमने बुद्धिका बल नही बताया है। खादी-विद्यालय आदि लाकर मैने बिगाडा नही है। मेरी ही बनायी हुअी सस्थाओंको मेरे नजदीकमें ही कार्य करना था। अगर अुनके सब सेवक

कस्तूरबा गो ... अ ... है। लेखक बछ ... कूर ...

बापूके हस्ताक्षरोंका नमूना

[यह पत्र पुस्तकके पृष्ठ २९७ पर छपा है ।]

अेक कुटुम्ब होकर न रह सकें तो दोष किसका? मेरा? हो सकता है। कि दोष देखनेवालेका? समझ-बूझकर साबरमती सत्याग्रह आश्रमका परिवर्तन किया। मेरा विश्वास है कि सच्चे होकर हमने कुछ भी गवाया नही है। आज जो मथन हुआ अुससे भी कुछ हानि नही हुअी है। हम सोते थे, जाग्रत हुअे।

कल जो हुआ अुसका नतीजा यह है कि हम अैसे ही रहेंगे तो ठीक नही होगा। जो बाहर जाकर ज्यादा सेवा कर सकते हैं, अुन्हें जाना ही चाहिये। मेरे कार्य और परिवर्तनको जो न समझ सकें वे मेरे सान्निध्यसे क्या लाभ अुठा सकते हैं? फायर-बकेट बनो तब तो मूक हो जाओ, नम्र बनो, सबको आश्वासन रूप बनो और यह सब समझ-कर बनो। सस्कृत अभ्यास बराबर करो। प्रथम कार्य तुम्हारा यह है कि तुम्हारे खतमें जो विचारदोष है अुसे दुरुस्त करना। किशोरलालसे मशविरा करो। मेरे साथ सवाद करना है तो समय मागो।

२७–१०–'४४ बापूके आशीर्वाद

मुझे सतीशबाबूने वहाकी गोशालाकी व्यवस्थाके लिअे कलकत्ता बुलाया था। आश्रमके कामकाजके बारेमे बापूजीको कुछ सूचनायें देनी थीं। बापूजीको मैंने लिखकर बताया। अुसके जवाबमें बापूजीने लिखा

चि० बलवतसिंह,

तुमने ठीक सावधान किया है। जो हो सके करूगा। जैसे हम समग्र हैं, अैसा ही फल आयेगा।

कौन जानता है कल क्या होगा? रामजीने नही जाना था कि प्रातःकालमे क्या होनेवाला है। वहाका काम ठीक करके निश्चित होकर वापिस आ जाओ।

सेवाग्राम, २०–११–'४४ बापूके आशीर्वाद

सचमुच बापूके बारेमें तो अैसा ही हुआ। किसको पता था कि ३० जनवरी १९४८की सायप्रार्थना बापूजी नही कर सकेंगे? लेकिन मेरा अेक अेक क्षण अीश्वरके हाथमें है अैसा अुनका अटल विश्वास था। वही विश्वास अुनके अन्त समय पर काम आया। अुस घडी सिर्फ अुनके मुहसे रामका नाम ही निकला। अैसा विश्वास प्राप्त करनेकी हम सबके मनमें लगन पैदा हो।

२६

महादेवभाओ और पूज्य बाके पुण्यस्मरण

जब बापूजीकी तबीयत ठीक रहती थी तब आश्रममें शुरु शुरूमें तकलीसे सूत्रयज्ञ आरम हुआ और बापूजी अुसमें मौजूद रहते थे। अुस समयका गाम्भीर्य देखने लायक होता था। सारा वातावरण यज्ञमय बन जाता था। आगाखा महलसे छूटनेके बाद बापूजी जब सेवाग्राममें रहते तब यह सूत्रयज्ञ महादेवभाओके अुस कमरेमें चलता था, जिसमें बैठकर महादेवभाओ अपना सारा काम करते थे। भगवान अपने भक्तकी किस तरह सेवा करता है, यह बापूजीके महादेवभाओके प्रति जीतेजागते प्रेमसे प्रत्यक्ष दिखाओ देता था। अुस समय अैसा ही प्रतीत होता था जैसे बापूजी महादेवभाओका जप कर रहे है और महादेवभाओ बापूके सामने हस रहे है। क्योंकि महादेवभाओ सूत्रयज्ञके बारेमें बहुत दृढ और नियमित थे। कितना भी काम हो, ३७५ तार तो वे कातते ही थे। आश्रममें सूत्रयज्ञका यह क्रम काफी दिन तक चला।

२२ फरवरी १९४५को बाकी पहली बरसीके समय बापूजी सेवाग्राममें ही थे। अुस रोज सुबहसे ही गीता-पारायण हुआ। सूत्रयज्ञ तो था ही। मैंने बापूसे कहा कि बाको रामायण बहुत प्रिय थी, अिसलिअे अुसका पाठ होना चाहिये। अत रामायणका पाठ भी सारे दिन चला। शामको सामूहिक प्रार्थना हुअी। बापूजीने अुनमें बाके प्रति गहरी श्रद्धा व्यक्त करते हुअे कहा

"सूर्यकी गतिके हिसाबसे आज बाको गये अेक वर्ष पूरा होता है। चन्द्रकी गतिसे महाशिवरात्रिके दिन अवसान हुआ था। यह खेदका प्रकरण नही है बल्कि जन्मके दिनकी तरह बडा आनन्द होना चाहिये। मै जन्म और मृत्युमें बडा फर्क नही मानता। आत्माका न जन्म है न मृत्यु। हम बाकी आत्माको चाहते थे। अुसका तो कभी हनन नही होता है।

"अैसे दिन बाह्य रूपसे तो हम धार्मिक क्रियामें ही बिताते है। आज २४ घंटा चरखा चला। वह मेरे पास धार्मिक विधि है। बलवतसिंहकी प्रेरणासे दिनभर रामायण भी चली। सुबह गीता-पारायण हुआ। मगर अिससे हमारा पेट नही भरता। हम लोग सोच-समझकर धार्मिक क्रिया करें, अीश्वरको स्वीकार करें। अीश्वर अूपर नही, नीचे नही, हृदयस्थ है।

सचमुच तो वह हर जगह है। शास्त्रमें जो लिखा है कि चन्द चीजें खाली हो सकती हैं वह हवासे खाली होनेकी बात हो सकती है। हवासे खाली करो तो भी कुछ तो रह ही जाता है। भौतिक शास्त्रवालोंने तो यह देख लिया है कि हवामें भी सूक्ष्म कोओी चीज है। आध्यात्मिक शास्त्रवालोंने देख लिया है कि ओीश्वर सब जगह है। हमारी सब धार्मिक क्रियाओंका वह ओीश्वर साक्षी है।

"कल मैंने कहा कि पहले हमें अपना पाप धोना है। कल विवाह था। पहले पाच मिनट में पाखाना देखने गया। वहा बदबू थी, आखोंने मैला देखा। मैला क्या भौतिक पाप नही है? मैला रखनेमें हमने बडी गलती की है। अैसे ही पाप हमने यहा भी किये होंगे। तो हमें देखना है कि हमारे पाखाने और रसोओीघर बिलकुल साफ है या नही, रसोओीका काम बराबर चलता है या नही? क्यो हम अेक-दूसरेको दुःख देते है? क्यों मच्छर-मक्खी बढते हैं? यह हमारे पापकी निशानी है। अिनके बढनेका कारण अभी तक मेरे हाथमें नही आया। लेकिन अिससे हमारा पाप मिट नही जाता।

"अिस शुभ दिन हमने चरखा चलाया, दूसरा धर्मकार्य किया। अुसके हम लायक थे या नही, अुसका चिह्न यह है कि हम नफाओी रखते है या नही। अिसे पाप न कहो, दोष कहो। मगर मेरे सामने वह अेक ही चीज है। अिस पापका बदला आगामी जन्ममें नही, अिसी जन्ममें मिल जाता है। अिस तरह देखें तो हमारा जीवन सरल और आनन्दमय बन जाता है।

"कान्तिका पत्र था। अुसमे दो विद्वानोंका अुल्लेख किया है। अेकने कहा, 'चरखा चलाना मैं धर्म नही मानता। यह तो रूढि हो गओी है, अिस-लिअे चलाता हू।' किसीको देखकर चरखा चलानेसे वह धर्मकार्य नही होगा, अुससे स्वराज्य नही आवेगा। वह तब होगा जब हम अुसके शास्त्रको, अुसकी शक्तिको समझ लें। अिस तरह बिना विश्वास चरखा चलानेवाले आश्रममें तो नही होने चाहिये। यहा सब चरखा नही चलाते है। वह मैं सहन करता हू। देखकर करनेवालोंको मैं मना नही कर सकता। मगर अितना बता देता हू कि अुनसे कार्यसिद्धि नहीं होती।

"दूसरे विद्वानने कहा, 'प्रार्थनामें मैं मानता नही।' वह अुनका दोष नही। अुसका कारण यह है कि हम प्रार्थना करनेवाले प्रार्थनाको जीवनमें ओतप्रोत नही करते। अुन्होंने मुझे चेतावनी दी कि तुम्हारे आसपास क्या सच्चे आदमी हैं या धोखा देनेवाले, तुम्हारे सत्सीवनमें निराशा ही निराशा

है। मुझे निराशा नहीं। मैं तो अपना धर्म पालन करता हूं, बता देता हूं पीछे मुझे क्या? वह विद्वान गीता पर प्रवचन देते हैं, प्रार्थनामें बैठते हैं, मगर रिवाजके कारण करते हैं।

"अगर प्रार्थनामें मन घूमता रहे, ओश्वरमें न रहे, तो प्रार्थनामें हाजिरी मात्र भले ही हो हम वहां नहीं हैं। हमारे शरीर और मनमें द्वन्द्व चलता है। आखिर मन जीत जाता है। यह सब कहनेका हेतु अितना ही है कि आज जिसे हम धर्मदिन मानते हैं, अेक स्वच्छ अनपढ बूढ़ी औरतके सामने, अुसके स्मरणसे जो करते हैं अुसे पूरे मनसे करें, वह सच्ची चीज हो।"

अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी आश्रममें आयी। अुस रोज रातको तो समय नहीं मिला, लेकिन २३ तारीखको सुबह मैं अुसे बापूके पास ले गया। वह तो सिर्फ बापूजीके दर्शन करनेके लिअे और अुनको अेक चद्दर भेंट करने आयी थी। मैंने बापूजीसे कहा, "बापूजी, आप अिस लड़कीको पहचानते हैं?" क्योंकि १९३९ में वह दिल्लीमें बापूजीसे मिल चुकी थी। बापूजीने कहा, "हां, क्यों नहीं।" और हंसकर बोले, "क्यों अब तो नहीं जायगी?" अुनका सेवाग्राममें रहनेका कोअी अिरादा नहीं था, लेकिन बापूके अिन वचनने अुसको बांध लिया। अुसने कहा, "हां, आप रखें तो रहूंगी आपके पास।" बापूने कहा, "अब तो यहीं रहना है।" बापूके अुस वचनका अितना चमत्कारिक असर अुस पर हुआ कि कुटुम्बके सब लोगोंका विरोध सहन करके भी वह अभी तक आश्रममें है। अिस तरह न मालूम कितने लोगोंको बापूजीने अपनी प्रेमडोरीमें बांधा था। वे कहा करते थे कि अेक बार जो मेरी चिमटीमें आ जाता है वह निकल नहीं सकता है। बात सच थी। क्योंकि आदमीको जो चाहिये अुसकी पूरी पूरी सुविधा बापूजी अुसके लिअे कर देते थे, और अुनका अुचित अुपयोग भी कर लेते थे। आदमी जाय तो भी क्या बहाना लेकर जाय?

बापूजी कलकत्ता जा रहे थे। अुसी दिन महिलाश्रममें कोअी अुत्सव था, जिसमें अुनको आशीर्वाद देने बुलाया गया था। सुबह ही बापूजी महिलाश्रम गये। मैं भी बापूजीके साथ था। बाके नामसे बापूजीको दो साड़ियां भेंट दी गयीं। साड़ियां हाथमें लेकर अुन्होंने बोलना शुरू किया:

"आप लोगोंने बाके निमित्तसे मुझे दो साड़ियां दी हैं यह अच्छा है। बा अनपढ थीं तो भी अुनका दिल स्त्रियोंकी अुन्नतिके लिअे काफी तड़पता था। अुनका जीवन सादा और अेक देहातीका-सा था। अुसका

आचार-विचार भी हमारी संस्कृतिका प्रतीकरूप था। बा मेरे हर संकटके समय मेरे साथ खडी रही और निरक्षर होने पर भी मेरे बडे बडे मेहमानोंका सत्कार करनेमें और मेरी बडी बडी लडाअियोंमें शामिल होकर साथ देनेमें कभी पीछे न रही। अन्तमें अेक अन्तिम लडाअीके मोर्चे पर मुझे अकेला छोडकर चली गअी।" यह कहते कहते बापूका गला भर आया और वाणी बन्द हो गयी। आंखोंमें अश्रुधारा बहने लगी। बाके लिअे पहली ही बार मैंने बापूको अिस तरह रोते देखा।

महिलाश्रमकी लडकियोंका दिल भर आया और कअीके आंसू निकलने लगे। अुनके बाद बापू अधिक नहीं बोल सके। धीरेसे कहा, "आज बंगालमें क्या चल रहा है? वहां लाखों लोग भूखमें मर गये। अभी भी वहांकी हालत सुधरी नहीं है। हिन्दू-मुस्लिम झगडे भी चलते हैं। मैं अिसमें क्या कर सकूंगा यह तो अीश्वर ही जाने।"

बापूजी बंगाल गये और शीघ्र ही लौट आये। २२ मार्चका दिन था। सुबहकी घंटी पर श्री कृष्णचन्द्रजी गीता लेने आये। मैं जगा। रामनामकी जगह पू० बाका नाम मनमें स्फुरा। साथ ही रामायणमें से अुस दिनके लिअे विषय खोजने लगा। अहल्याका अुद्धार सामने आकर खडा हो गया और साथ ही पू० बाकी वात्सल्य-मूर्ति। मैं स्वप्न नहीं देख रहा था। जाग्रत था परंतु बिलकुल स्पष्ट मैंने नहीं देखा। बाने बोलना आरंभ किया "जो बलवन्त, अहल्या कोअी पथ्थरनी शिला न हती जे रामनी पदरज लागवाथी स्त्री बनीने आकाशमां अूडी गअी अे तो मारा जेवी कोअी भोळी अने अभण बाअी हशे अेनी जड बुद्धिने लीधे तुलसीदासे अेने पथरा जेवी वर्णवी हशे अेने काअी आघात के समाजनो दंड लाग्यो हशे।[1] कुछ भूल भी हुअी होगी।

---

[1] बाने तो शायद सारी बात गुजरातीमें ही कही होगी, किन्तु वह मुझसे हिन्दीमें भी बोलती थी। आज यह संस्मरण लिखते समय मुझे पता नहीं है कि अुन्होंने क्या क्या बातें गुजरातीमें कही और क्या क्या हिंदीमें। लेकिन अुस दिनकी मेरी डायरीमें जैसा लिखा है वैसा अविकल रूपमें मैंने यहां दिया है। गुजराती वाक्योंका अर्थ "देखो बलवन्त, अहल्या कोअी पत्थरकी शिला न थी जो रामकी पदरज लगनेसे स्त्री बनकर आकाशमें अुड गअी। वह तो मेरे समान कोअी भोली और अनपढ बाअी थी। अुसकी जडबुद्धिके कारण तुलसीदासने अुसका पत्थर जैसा वर्णन किया है। अुसे कोअी आघात लगा या समाजका दंड मिला होगा।

मेरे पास क्या दलील थी जो मैं बाके शरीर रखनेकी सार्थकता सिद्ध कर सकता? आखिर बाके मुहकी तरफ देखता रहा। बाका चेहरा अुगते हुअे सूर्यके समान स्वच्छ और तेजोमय लेकिन आ भरकर देखा जा सके अितना शान्त था। मुख पर किसी प्रकारकी अुदासी या बुढापेकी झलक नहीं थी। बा फिर बोली, "देखो, तुम गायोसे दूर रहते हो यह मुझे बिलकुल पसन्द नही है। मैंने तो अुस समय भी बापूके साथ झगडा किया था। पण तारा गुस्साथी बापु मूझाय बीजानी साथे झघडानो भय रह्या करे अने बधी वातो तो बापु बारीकीथी क्या छाणे? पण अेने काअी नथी। तु गुस्सो छोड आज भले गायथी अलग छे पण गायने मनथी वीसरजे मा. गाय तो आपणी साची मा छे गाय न होय तो आपणे अेक डगलु चाली शकीअे नही"*

मुझे विचार आया कि रामकृष्ण परमहसके जीवनमें जो कालीके दर्शनकी बातें आती हैं वे अिसी प्रकारसे हुअी होगी। सच बात तो यह है कि हमारा मन ही सब कुछ है। मनमें जिस प्रकारके सस्कार और सकल्प होते हैं वैसे ही हम होते हैं। मैंने जो बाके दर्शनकी बात लिखी है यह कोअी स्वप्न नही है, न मेरी गढी हुअी बात है। मैं तो अुस समय शून्यवत् हो गया था। थोडी देरके लिअे अपने आपको भूल गया था।

मैंने बापूजीके सामने यह सारी बात रखी और पूछा कि अहल्याके बारेमें अुनका क्या मत है? बापूजीने लिखा

> अहल्या आख्यानका जो अर्थ बाने दिया वह ठीक है। वह अेक है। दूसरे भी अर्थ हो सकते हैं। जितने भक्त और अुनके भाव अितने और अैसे अर्थ होते हैं।
>
> २२-३-'४५ बापू

---

* परतु तेरे गुस्सेसे बापू घबराते हैं। दूसरोके साथ झगडेका भय रहता है। सारी बातें तो बापूजी बारीकीसे नही देख सकते हैं। पर अिसका कुछ नही। तू गुस्सा छोड। आज भले ही तू गायसे अलग है पर गायको मनसे मत भूलना। गाय तो हमारी सच्ची मा है। गाय न हो तो हम अेक कदम भी नही चल सकते।

२७

कुछ महत्त्वकी बातोंमें बापूकी सलाह-सूचना

मुन्नालालजीने बापूजीके सामने अेक अैसी योजना रखी कि जो आश्रमके नौकर हैं वे भी आश्रमके भोजनालयमें भोजन करें। अुनको अूपरके खर्चके लिअे थोडासा पैसा दिया जाय और अुनके भोजनादिमें जो अधिक खर्च हो वह आश्रम सहन करे। अिससे अुनके साथ भाअीचारा बढ सकेगा और हम अुनके जीवनमें प्रवेश कर सकेंगे।

मुझे यह योजना अव्यवहार्य लगती थी। अुसी समय मीराबहन मुझे किसानाश्रम, मूलदासपुर (हरद्वार और रुडकीके बीच) में गोशालाकी व्यवस्थाके लिअे बुला रही थी। लेकिन मेरी भतीजी होशियारी थोडे दिन पहले आश्रममें आयी थी और अुसे मेरे बिना अकेले रहना अटपटा-सा लगता था। अिस नौकरोंके प्रयोगके बारेमें मैंने अपनी शंका बापूजी बताअी थी और मीराबहनके पास जानेके बारेमें अुनसे पूछा था। पत्रका बापूजीका अुत्तर आया

चि॰ बलवन्तसिंह,

अब होशियारीको मत सताओ। मेरे आने तक ठहर जाओ। मीराबहनको लिखो। होशियारीका दुःख मैं समझ सकता हूं। मैंने मीराबहनको अेक खत अिसके पहले लिखा है। जो प्रयोग मुन्नालाल नौकरोंके मार्फत करते हैं अच्छा है। अैसा ही करना चाहिये। निष्फल हो सकता है तो यही होगा कि हमारी अहिंसा बहुत अधूरी है। गलती समझमें है। नौकरोंको हम नौकर न समझें, हमारे सगे भाअी समझें। कुछ बिगाडें, कुछ चोरें, ज्यादा खर्च हो जाय, पर सब व्यर्थ नहीं होगा, अगर हम [illegible] तो। लिखे रखो।

मैं [illegible] इतना [illegible] है अुसे [illegible] और [illegible] प्रतिमास [illegible]।

१६-८-'४१ बापूके आशीर्वाद

होशियारीको मैंने खादीके अध्ययनके लिअे खादी-विद्यालयमें भेज दिया, जहा अुसका मन काममें लग गया। नौकरोंके प्रयोगके बारेमें मैं अब तक सहमत न हो सका था। मैंने यह सब बापूजीको लिखा। अुनका अुत्तर आया

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। अब होशियारीको शाति देना, काम और अभ्यास करने देना।

नौकरोंके बारेमें जो मुन्नालाल करते है अुसमें सलाह मेरी है। अच्छे हेतु रखते हुअे अुस मुताबिक हम न चलें तो दोष हमारा है। हेतुकी निर्मलता मलिन नही होती है। काम कठिन है। मैं चाहता हू कि सब अुसमें मदद दें। नौकरोंको अपने आचारसे बताये कि वे नौकर नही हैं लेकिन हमारे भाअी-बहन हैं। हम अपना काम करें, शरीरको आलस्यसे बचावें, अिस शिक्षणमें तनिक भी फरक नही हुआ है। धैर्यसे अिसे समझो। न समझमें आये तो मुझे बार बार पूछो।

२५–५–'४५ बापूके आशीर्वाद

यह नौकरोंका प्रयोग थोडे दिन तक चला। मुन्नालालभाअीने अिसके पीछे बहुत मेहनत की। नौकरो पर कुछ असर भी हुआ। लेकिन धीरे धीरे वह बद हो गया।

साबरमतीमें बापूजीने आश्रममें रसोअी आदिके सामूहिक कामके लिअे नौकरोंसे काम न लेनेका नियम रखा था। लेकिन सेवाग्राममें तो जानबूझ कर आश्रमके रसोअी आदिके काममें हरिजन नौकर रखे गये थे। अिसमें बापूजीका अुद्देश्य हरिजन और देहातियोंके साथ घुलमिल जानेका था, जिससे देहातियोंकी आश्रमके साथ अेकरूपता सध सके। वैसी स्थिति साबरमतीमें नही थी। सेवाग्राममें बापूजी देहातियोंके साथ बिलकुल अेकरूप होनेका प्रयत्न करते थे। छोटी छोटी बातोंमें बापूजी बहुत तत्पर और सावधान रहते थे और जिसको अेक बार अपना लिया अुसको फिर माकी तरह ममत्वने पकडे रखते थे।

चि० होशियारी आश्रममें आयी तो सही लेकिन मेरे भाअी और भाभीको यह पसन्द नही था। मेरे भाअी अुसको वापिस ले जानेके लिअे आये।

होशियारीने कहा कि मै बापूजीकी अिजाजतके बिना वापिस नहीं जा सकती। अुसने बापूजीको तार दिया। मैंने पत्र लिखा। बापूजीका अुत्तर आया.

चि० बलवन्तसिंह,

चि० होशियारीका तार मिला था और कल शामको तुम्हारा खत भी मिला।

होशियारीके पिताजीको मेरी सलाह है कि वे मेरे आने तक होशियारीको ले जानेकी चेष्टा न करें। और क्योंकि आश्रममें आ गये हैं तो मेरे आने तक ठहर जावें और आश्रमके काममें पूरा हिस्सा लें, जिससे वे कुछ सीखेंगे, आश्रमका अनुभव लेंगे और आश्रम पर बोझ भी नहीं पडेगा। होशियारी मुझे तो अुतनी ही प्रिय है जितनी अपने पिताको। अगर होशियारीको असंतोष रहता तो मैं कुछ भी नहीं कहता। लेकिन होशियारीको संपूर्ण संतोष है। वह शिक्षा ले रही है और अूचे चढती जाती है। आश्रम संपूर्ण नहीं है, लेकिन आश्रम बुरा नहीं है। आश्रमने किसीका बिगाडा नहीं है। कअी लोग आश्रममें रहकर अूचे चडे हैं। जो अच्छे हैं अुनको कभी कष्टदाअी सिद्ध नहीं हुआ। अिसलिअे होशियारीके पिताजी अितना अितमीनान रखें कि आश्रममें रहकर होशियारीका अनिष्ट कभी नहीं होगा। अधिक तो मेरे आने पर मुल्तवी रखता हू। आज तो मेरा अितना ही विनय है कि होशियारीके पिताजी महीना भर आश्रममें न भी रह सकें तो भी होशियारीको न ले जावें। मेरे आनेके बाद अैसा निर्णय होगा कि होशियारीको वापिस जाना ही चाहिये तो तुम ही अुसको ले जाओगे।

आश्रम-व्यवहार ठीक चलता होगा। नौकरोंके बारेमें हम बातें करेंगे।

पचगनी, ७–९–'४५ बापूके आशीर्वाद

अिस पत्रमें बापूजीका साधकके लिअे कितना प्रेम और अुदारता और अुनके रास्तेमें आनेवालोंके लिअे कितना विनय भरा है? 'अैसो को अुदार जग मांही? बिनु सेवा जो द्रवे दीन पर, राम सरिस कोअु नाही।' तुलसीदासका यह पद सभी महापुरुषोंके लिअे लागू होता है।

अुसी समय मैं सेवाग्रामसे मीराबहनके किसानाश्रमके लिअे चल दिया और मेरे गावमें कुछ झगडा था, अुनको निबटानेके लिअे रास्तेमें ठहरा।

होशियारी अपने बच्चे गजराजको घर छोड आयी थी। अुसके पिताजी अुस बच्चेको अिस कारण नहीं भेजना चाहते थे कि अुसके खयालसे वह आश्रमसे

घर चली आयेगी। होशियारीके मनमें द्वन्द्व चल रहा था। वह लडकेके बिना भी नही रह सकती थी और आश्रम भी नही छोड सकती थी।

बापूजीने अुसे समझाया कि लडकेको भूल जाओ। अगर तुम्हारी सच्ची तपश्चर्या होगी तो तुम्हारे लडकेको तुम्हारे पिताजी तुम्हारे पास छोड जायेंगे। वह समझ गअी और यह निश्चय हो गया कि वह अब लडकेको लेने घर नही जायगी। लेकिन मैंने लडकेकी खराब हालत देखकर बापूजीको लिखा तो अुन्होने पहली ट्रेनसे ही अुसको लडकेके लिअे भेजा। पहली रातको ही बापूजी अिस बात पर अटल थे कि अुसे लडकेको लेने जानेकी जरूरत नही है, लेकिन मेरा पत्र पहुचते ही तुरत अुसको रवाना कर दिया। मुझे बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे खत मिले। वहाका झगडा तुम्हारी हाजरीसे मिटे तो बहुत अच्छा है।

होशियारी बहादुर है, सफलता अुसे मिलेगी। अच्छा है तुम भी वही हो। मुझे अच्छा रहता है। मीराबहन तुम्हारे लिअे तडप रही है।

डॉ० शर्माने* जो बनाया है अुसे देखना। अच्छा होगा। अुनकी प्रवृत्ति भी देख लो। यहाका काम ठीक चलता है। तुमने जो रास्ता बनाया है वहासे बालकृष्णके यहा जा नही सकते।

सेवाग्राम, २७–७–'४५ बापूके आशीर्वाद

* * *

अेक बार बापूजीकी तदुरुस्ती कुछ कमजोर थी। पेटमें भारीपन होनेसे अुन्होने केस्टर आअिलका जुलाब लिया था। आभाबहन अुनको स्नान करा रही थी। स्नानघरमें से अेकाअेक आभाके चिल्लानेकी आवाज आयी कि दौडो, दौडो, बापूजी गिर गये। मैं स्नानघरके नजदीक ही था। दौडकर गया तो देखा कि टबके पास जमीन पर बापूजी बेहोश होकर निश्चेष्ट पडे है। यह देखकर मेरा मुह पीला पड गया और मैंने समझा कि बापू हमेशाके लिअे चले गये। मैं न तो किसी दूसरेको आवाज दे सका, न बोल सका। स्तब्ध

* डॉ० हीरालाल शर्माने खुर्जाके पास अेक प्राकृतिक चिकित्सालय खोला था। बापूजीने अिस कामके अभ्यासके लिअे अुन्हें अमेरिका आदि भी भेजा था।

होकर बापूके माथे पर हाथ धरकर बैठ गया। दो मिनटमें बापूजीको होश आया। आभा जो बिलकुल सूख गअी थी, वह भी खुश हुअी। बापूजीने हममें कहा कि अिसकी कोअी चर्चा नहीं करना है। मैंने ओश्वरको अनेक धन्यवाद दिये और अैसा ही समझा कि बापू जाते जाते रह गये।

अिसके पश्चात् बापूजी दिल्ली चले गये, क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अपने निष्कर्ष पर पहुच रहा था। अुसके बाद मुन्हे सेवाग्राममें रहनेका अवसर बहुत ही कम मिला।

* * *

आश्रमके बगीचेमें तीन चार प्रकारके आमके पेड थे। अुनमें अेक पेडके आम बहुत ही मीठे और स्वादिष्ट होते थे। अुसके फल भी बहुत कम और सो भी हमेशा नही आते थे। अिस बार वह पेड खूब फला और फल भी अच्छे आये। मेरे मनमें लालच हुआ कि ये आम बापूजीको खिलाने चाहिये। बापूजी दिल्लीमें थे। मैंने सोचा किसी दिल्ली जानेवाले आदमीके साथ भेज दूं। वर्धामें कुछ परिचित मित्रोंसे पूछताछ की कि कोअी दिल्ली जानेवाला हो तो मुझे बतायें। श्री गंगाविशनजी बजाजने मुझसे कहा कि आप स्टेशन पर आम ले आना। कोअी न कोअी परिचित मिल ही जायगा, मैं भेजनेका प्रबंध कर दूंगा। मै स्टेशन पर आमकी टोकरी ले गया लेकिन कोअी मुसाफिर अैसा अपना परिचित नही मिला, जो आम बापूजीके पास पहुचा सके। रेलमें जो भोजनका डिब्बा होता है अुसके व्यवस्थापकसे गंगाविशनजीका परिचय था। अुन्होंने अुनसे कहा और वह पहुचानेको राजी हो गया। अुसने आम तो पहुचाये लेकिन बापूका थोडा समय भी लिया। बापू बहुत काममें थे तो भी जब अुस आदमीने मेरा नाम लिया तो अुन्होने थोडा समय दे ही दिया। अिस पर बापूजीने अुनसे तो कुछ नही कहा, लेकिन मुझे अेक पत्र लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा पत्र मिला। आम मिले। आम क्यों भेजे? सेवाग्रामकी कोअी खाद्य वस्तु मुझे भेजनेमें क्या फायदा? नुकसान तो बराबर है ही। नुकसान यों कि जो चीज वहां बहुत ही अुपयोगी है अुसे जहां वह अनावश्यक है वहां भेजनेमें अविचार ही सिद्ध होता है। और हम विचारहीन कभी न बनें। मैंने आम खाये। अच्छे थे। लेकिन जो फल हिन्दुस्तानमें कहीं भी मिलते हैं वह सब फल मेरे पास दौडे आते हैं। अैसी

हालतमें सेवाग्रामके आमकी क्या जरूरत? अब सुनता हू कि वहासे भाजी भेजते हो। अगर नही भेजी है तो मत भेजो। अिसमें कितना समय जाता है? हमारे पास जो समय है वह प्रजाका है। और रेलवेवालोंका अनुग्रह भी अैसी बातमे क्यो लें? यह सब फटकारके रूपमें नही है, लेकिन सावधानीके लिअे है अैसा समझो।

होशियारी और गजराज ६ दिनसे यहा है। मैंने तो कहा था कि यहा आना नही चाहिये था। फजूल समय गया है और गजराजका तो नुकसान ही हुआ है। कहती है आज चली जायगी।

मेरे ठहरनेका शायद आज निश्चित हो जायगा।

नअी दिल्ली, २५–५–'४६ बापूके आशीर्वाद

आमके बारेमें मैंने अपनी भूल समझी और बापूजीके सामने अुसे स्वीकार किया और आअिन्दा अैसी कोअी चीज न भेजनेकी बात अुन्हें लिखी। अिसके जवाबमें बापूजीने लिखा:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। आमके बारेमें समझ गये वह काफी है। सारा जीवन सावधानीसे ही अच्छा चल सकता है।

होशियारीका खत आया कि वह भाअीकी शादीके बाद आश्रममें जायगी। मैं अुससे बहुत बात नही कर सकता था। किसीके सामने देखनेकी फुरसत दिल्लीमें नही मिलती थी। मुसीबतसे गजराजके बारेमें बात कर सका था। और अुसे मेरे पीछे पीछे जहा रहू वहा आनेका मोह छोडनेको कहा था। अुसके परिणाममें वह घर चली गअी। मुझे लगता है कि आश्रममें वह शायद ही अब आगे बढ सके। वापिस आवे तो आश्रमसे नही जानेकी मुरादसे और गजराजको सुधारनेके ही लिअे आवे। अवलोकनसे मैंने पाया है कि गजराजको होशियारीने ही बिगाडा है। वह बिचारी दूसरा जानती ही नही है तो करे क्या? लेकिन गजराज तो बिगडता ही है।

तात वही बना लेते हैं वह बहुत ही अच्छा है। और बगीचा भी अच्छा कर रहे है अैसा अनन्तरामजी लिखते हैं।

मसूरी, ४–६–'४६ बापूके आशीर्वाद

* * *

अनाजकी कमीसे सेगावमें कुछ लोगोकी स्थिति बहुत खराब होती जा रही थी। लोग मेरे पास आये और कहने लगे कि आश्रमकी तरफसे कुछ मदद होनी चाहिये। आश्रममें अिस प्रकारकी कोअी व्यवस्था नही थी कि किसीको आर्थिक मदद दी जा सके। मैंने लोगोंसे कहा कि मै कोशिश करूगा कि दुकान (श्री जमनालालजीकी)की तरफसे आपको कुछ मदद मिल सके। लेकिन दुकानवाले भी बादमें कुछ ढीलेसे पड गये। मैंने बापूजीको लिखा कि सेवाग्रामकी स्थिति खराब होती जा रही है। लोगोको कुछ मददकी जरूरत है। यह विपत्ति अभी देखनेमें छोटीसी लगती है, लेकिन आगे चलकर यह बडी हो सकती है। आप सभाजी (जो जमनालालजीकी तरफसे सेवाग्रामका काम देखते थे) को लिखें तो कुछ हो सकता है। बापूजीने मुझे लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। बिलकुल ठीक है। जो आपत्ति है अुसको छोटी समझनेकी कोअी आवश्यकता नही है। जो छोटी समझकर आवश्यक वस्तुको छोड देता है वह अन्तमें कुछ नही कर पाता है। तुमने जो वचन दिया है अुसका पालन करना ही होगा। अब मै जो करना है वह शुरू कर देता हू। अिसके साथ सभाजीका खत है वह पढो और ठीक हो तो अुन्हें भेज दो।

मसूरी, ६–६–'४६ बापूके आशीर्वाद

* * *

बापूजी बगालमें थे। नोआखालीका तूफान शुरू हो गया था और अुसमें पडनेके लिअे बापूजी वहा चले गये थे। मैंने भी वहा जानेकी बापूजीसे अिजाजत मागी। बापूजीका अुत्तर आया

चि० बलवन्तसिंह,

मै खुद तो लेटे-लेटे क्या लिख सकता था? जो अैसा काम करनेवाले थे अुनको अलग अलग कर दिया। अब खेंच (कामके बोझ)के कारण मनु मेरे पास पडी है और काम दे रही है। तुम्हारे खतका सब अुत्तर मै नहीं लिखवा सकूगा। याद भी नही है। यहा आनेके बारेमें अगर मै नही लिख चुका तो लिखवाता हू कि अिस वक्त वही रहो

वही तुम्हारा धर्म है। स्वस्थचित्तसे गुस्साको रोककर स्थितप्रज्ञ जैसे रहना है।

श्रीरामपुर, २६-१२-'४६ बापूके आशीर्वाद

बापूजी बिहार और बंगालके दंगोंके मामलेमें अितने फंस गये थे कि सेवाग्राम वापिस आना अुनका असंभव बन रहा था। अुक्त पत्रसे भी बापूका बंगाल-बिहारके हिन्दू-मुसलमानोंके पागलपनके विषयमें दुःख टपकता है। अेक भाओीको अुन्होंने लिखा, 'या तो बंगालमें सफल हूंगा या यहीं पर देह छोड़ूंगा।' अिस दृढ़ निश्चयके साथ बापूजी अुस आगमें कूदे थे।

*   *   *

सेवाग्राममें मेरे पास कोओी खास काम नहीं था। मैंने सोचा कि मैं खुर्जाके आसपासके देहातोंमें जाकर वहीं बैठ जाअूं। आश्रमकी गोशाला गोसेवा संघके पास चली गओी थी और अब वहांसे भी तालीमी संघके पास जा रही थी। अुसकी हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। यह भी मुझे अच्छा नहीं लगता था और अन्य भी अैसे प्रश्न थे जिनको बापूजी ही सुधार सकते थे। मैंने बापूजीको लिखा कि या तो आप यहां आकर अिन सबको ठीक कीजिये और नहीं तो मुझे जानेकी अिजाजत दीजिये। बापूजीने लिखा

पटना, १७-४-'४७, शामको

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। होशियारीके बारेमें समझा। अुसके लिअे भी खत अिसके साथ रखता हूं। मेरा खयाल है कि तुम्हारे खुर्जा जानेकी कोओी जरूरत नहीं है। तुम्हारा धर्म सेवाग्राममें रहकर जो काम हो सके वही करनेका है। गजराजका ठीक चल रहा होगा। कृष्णचंद्र विनोबाजीके साथ रहकर प्रगति कर रहा है, यह मुझे बहुत भाता है। गोशालाका तो क्या कहूं? मेरा आजकलमें सेवाग्राम आना करीब करीब असंभव है। अगर बिहार तथा नोआखालीसे छूट सकूं तो सब संभवित हो सकता है। यहां गरमी बहुत सख्त पड़ रही है। देखें, अीश्वर मुझे कैसे रखता है।

बापूके आशीर्वाद

अुसी समय आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाअीकी तबीयत बहुत खराब हो गअी थी और वे आश्रमका भार नहीं संभाल सकते थे। अुनकी कमजोरी और आग्रहके कारण व्यवस्थाका काम मुझे सौंपा गया था। आश्रमके बगीचेकी बाड़की लकड़ी अेक छोटासा लड़का निकाल रहा था। मैं पास ही खड़ा था। यह देखकर मुझे अुस बच्चे पर गुस्सा आ गया और मैंने अुसके दो-चार चांटे लगा दिये। बच्चा आश्रममें ही काम करनेवाले हरिका भानजा था। अिस बातका हरिको भी दुःख हुआ। मुझे भी खूब दुःख हुआ और मैंने बच्चेके मातापिताके सामने अुसको मारनेकी भूलके लिअे क्षमा मांगी।

मैंने बापूजीको लिखा कि अैसी छोटी छोटी बातों पर मुझे गुस्सा आ जाता है, तो मैं आश्रमका व्यवस्थापक कैसे बन सकता हूं। बल्कि मुझे तो आश्रम छोड़ देना चाहिये। बापूजीने लिखा

दिल्ली, ५-५-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे हाथ बड़ी जिम्मेदारी आयी है। मुझे विश्वास है कि तुम यह बोझ अच्छी तरह अुठा लोगे। क्रोधको जीतना होगा। यह काम अेकदममें होता नहीं है। क्रोधका मौका आने पर भी जब अंकुशमें रहता है तब ही कहना है कि नहीं यह समझमें आ सकता है। जो दृष्टान्त तुमने भेजा दिया है अुसमें मुझे आश्चर्य नहीं होता है। लेकिन जो पद तुमने लिया है वह तुम्हें बचा लेगा। लड़केके मातापिताके सामने क्षमा मांगी सो बहुत अच्छा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

आश्रमके भाअी अनन्तरामजीकी तबीयत खराब रहती थी। खास तौरसे अुनका दिमाग परसे काबू चला जाता था और वे कुछ भी बोलने लगते थे। वे आश्रमकी खेतीमें मेरे साथ साथ काम करते थे। अुन्होंने बीमारी और खेतीके बारेमें बापूजीको खत लिखा। बापूजीका अुत्तर आया:

मसूरी ५-६-'४६

चि० अनन्तराम,

तुम्हारा खत मिला। किसानोंको आसमानी सुल्तानी आपत्तिका सामना करना पड़ता है। यह करते हुअे भी वही मुख्य साधन है जिस पर जगत निर्भर रहता है। अिसलिअे तुम दोनों काम कर रहे हो यह मुझे बहुत अच्छा

लगता है। तुम्हारी चित्तशांतिके लिअे अब तो मैं सिवा राम-नामके और कोअी अिलाज नहीं बता सकता हू। यह अनुभवसे पाया है। अुसकी शर्तें दो हैं। पहली, वह नाम हृदयसे लेना चाहिये। और दूसरी, वह लेनेके जो कानून मैंने बताये हैं अुनका पालन होना चाहिये। अुनका पालन बहुत ही आसान है।

बापूके आशीर्वाद

२८

'सेवाग्रामके सेवकोंके लिअे'

बापूजीने सेवाग्राम आश्रमके सेवकोको किसी विषयमे मार्गदर्शन देनेके लिअे अेक सूचना-वही बना ली थी। जब अुनके मनमें कोअी सूचना करनेका विचार आता तो वे वहीमे लिख देते और आश्रमके व्यवस्थापक अुसकी नकल करके सब आश्रमवासियोको सुना देते थे। ये सूचनायें अैसी हैं जो सामूहिक जीवन जीनेवाली सार्वजनिक सस्थाओ, परिवारो और अन्य सबके लिअे भी अुपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। अिसलिअे मैं यहा बापूजीकी अैसी कुछ कीमती सूचनाओका नमूना पाठकोके सामने रखता हू :—

सेवाग्रामके सेवकोके लिअे

मुझे पूछा गया है कि यहा किसी बारेमें नियम है क्या? है, क्योकि जब साबरमती आश्रम बन्द किया, तब मैंने बताया था कि हम सब जगम आश्रम बनते हैं और कहीं भी जाय आश्रम-जीवन और अुसके नियम साथ लेकर चलते हैं। अिसलिअे प्रार्थना आदि ज्यो की त्यो कायम है। अुठनेका समय भी कायम रहा है। अवश्य सयोगवशात् सिद्धान्तोको छोडकर दूसरी बातोमें परिवर्तन कर सकते हैं। जैसे कि यहा किया है। हम जानबूझ कर हरिजन नौकरोको रखते हैं। क्योकि अुसमें अुनकी सेवाकी भावना है। लेकिन यद्यपि नौकर रखते हैं तो भी अुनको हमारे भाअी समझकर बरताव करना चाहिये। अिसलिअे जो कार्य मजदूरीका भी हम कर सकते हैं वह हम ही करें। जो हमसे नहीं हो सके तो हम दूसरे साथीकी मारफत करावे। अुनसे भी न हो सके तो बही हरिजनोंसे लेवें।

ता० ६–६–'३८ बापू

जिस कमरे (आदि-निवास) में हम बैठते हैं, अुसमें सुघड़ता नहीं है। बहुत सामान मैंने देखा वह निकम्मा है। निरीक्षण करके अुसे हटाना चाहिये। जिधर मैं बैठता था वहां जो केस पड़ी है वह अनावश्यक है। सदूक पर सब सामान जा सकता है। हमारा परिग्रह कमसे कम होना चाहिये। याद रखा जाय कि ११ व्रतोंमें अपरिग्रह भी है।

ता० १२–६–'३८ बापू

आज दुःखद घीना बन गअी। अेक लड़का हमारे खेतके नजदीक गैया चराता था। अुसको रोकनेकी चेष्टा की गयी। वह नहीं माना। बलवन्तसिंहने अुसको धक्का मारा। यह बात हमारे लिअे शरमकी है। मैंने ग्रामवासियोंको कह दिया है कि अगर दुबारा अैसा बलवन्तसिंहसे हो जायगा तो वे सेगाव छोड़ेंगे। हमें समझना चाहिये कि हम सेवक हैं, मालिक नहीं। ग्रामवासियोंकी दयासे ही रह सकते हैं। हमको किसीको गाली देनेका या स्पर्श करनेका कुछ भी अधिकार नहीं है।

ता० १९–७–'३८ बापू

अितनी बातें हम याद रखें

१ थूक भी मल है। अिसलिअे जिस जगह हम थूकें या मैले हाथ धोवें वहां बरतन कभी साफ न करें।

२ टंपसे सीधा पानी अिस्तेमाल न करें। अिसमें अधिक पानीका खर्च होता है और ज्यादा आदमी अेक टंपसे अेक ही वक्तमें पानी नहीं ले सकते हैं। अिसलिअे अपने लोटेमें पानी निकालें और लोटेके पानीसे मुंह साफ करें। फिर लोटे साफ जगह रखनेकी व्यवस्था भी होनी चाहिये।

ता० ६–८–'३८ बापू

मेरी सलाह है कि सब नियमपूर्वक सूत्रयज्ञ करें। अिस बातमें हमें बहुत सावधान रहना चाहिये।

ता० ६–१–'४० बापू

खानेके बारेमें हरअेकको मर्यादा रखना आवश्यक है। गुड़का, घीका, दूधका, भाजीका प्रमाण होना चाहिये। भाजी अेक समयके लिअे आठ औंस काफी समझी जाय। भोजनमें कुछ बिगड़े तो अुसकी टीका खानेके समय ... असभ्यता है। अिसलिअे हिंसा है। खानेके बाद चिट्ठी लिखकर

व्यवस्थापकको बताया जाय। कोअी चीज कच्ची रह जाय तो छोड देना। अितनी भूख रह जाय तो कोअी हानि नहीं होगी, लेकिन गुस्सा न किया जाय।

सब काम सावधानीसे होना चाहिये। हम सब अेक कुटुम्ब हैं, अैसी भावनासे काम लेना आवश्यक है।

ता० २२-१-'४० बापू

आजकल मैं जो कुछ लिखता हूं असको आज्ञारूप न माना जाय। सब अपनी बुद्धिका अुपयोग करके जो करे वही सही माना जाय।

ता० २४-१-'४० बापू

नमक भी चाहिये अुतना ही लेवें। पानी तक निकम्मा खर्च न करें। मैं आशा करता हूं सब (लोग) आश्रमकी हरअेक चीज अपनी और गरीबकी है अैसा समझकर चलेंगे।

ता० ३०-१-'४० बापू

सबको जानना चाहिये कि सेगावमें काफी जहरी साप रहते हैं। अीश्वरकी कृपा समझें कि अब तक किसीको सापने नहीं काटा है। लेकिन सावधान रहना हमारा धर्म है। अीश्वर सावधानको ही सहायता देता है। अिसलिअे मेरी सलाह है कि जब तक हो सके लालटेनका सहाय लें। अिसी तरह अंधेरेमें जूते भी पहनें।

ता० १३-२-'४० बापू

मैं सुनता हूं कि कअी सज्जन जब खाना छोडते हैं तो अुसकी खबर रसोडेमें पहुचाते नहीं हैं। अिसका नतीजा यह आता है कि खाना पडा रहता है। अिसलिअे प्रार्थना है कि जो पहलेसे जानते हैं कि अमुक समय खाना छोडना है वे वक्त पर रसोडेमें खबर भेज दें। यह नोंध और दूसरी जो नित्यकी है अुसे दीवाल पर रखना चाहिये।

ता० ७-३-'४० बापू

मेरी आशा है कि सब अुबला हुआ पानी ही पीते हैं। वर्षा-ऋतुमें हमारे कुअेंके पानीमें काफी खराबियां रहती हैं। मलेरियासे बचनेके लिअे सब रातको हाथ-पैरों पर मिट्टीका तेल लगाकर सोवें। सिर पर भी लगाना चाहिये। खाना चबाकर खाया जाय। दस्त हमेशा साफ आना ही चाहिये।

न आवे तो अेरंडीके तेलका जुलाब लेवें। धूपसे बचना, काम करते समय सर पर टोपी या कुछ कपड़ा होना चाहिये।

ता० ६-७-'४० बापू

जो सूतयज्ञ चल रहा है (राष्ट्रीय सप्ताहके सबबमें १२ घंटेके दो अखण्ड और ता० ६ तथा १३ को २४ घंटेके अखण्ड) अुसमें जितना लिया जाय

(१) हरअेककी पूनीका वजन।

(२) अुसमें कितना वजन सूत निकला।

(३) कचरा कितना रहा। जब टूटा हुआ सूत अिकट्ठा किया जाय, अुसका अुपयोग है।

(४) तारका आंक, मजबूती, समानता।

(५) प्रत्येक गुंडी पर कातनेवालेका नाम दिया जाय।

ता० ७-४-'४१ बापू

लड़के या बड़े आपसमें या लड़कियोंसे निरर्थक मजाक न करें। आश्रमकी बातमें निर्दोष विनोदको जगह है। वह अेक कला है। प्रथम तो बगैर कारण मौन ही धारण करना शुद्ध बोलीकी जड़ है।

आश्रममें अिर्दगिर्द बहुत गंदगी रहती है। अिसलिअे अेक आश्रमवासीको जिम्मेदारी सिर पर लेनी चाहिये। अहिंसामें शौच तो आता ही है।

ता० १५-४-'४१ बापू

मेरा [illegible] (ग्राम प्रयोग) तभी सफल होगा जब यहांके लोग अपना-अपना काम ठीक तरहसे करावें और कोअी भी आपसमें झगड़ा न करे। यहांका सब काम मेरे आदर्शके अनुसार चलावें और चलें।

ता० २८-१०-'४१ बापू

[illegible] अुपनियम [illegible]

[illegible]

(अुस समय) जब आश्रमका कुछ कार्य नही दिया गया है और कमसे कम अेक घटा तक कात लिया हो।

बीमारी या अनिवार्य कारणके लिअे कातनेसे मुक्ति होगी।

बगैर कारण कोअी वार्तालाप नही करेंगे। अूची आवाजसे कोअी नही बोलेंगे। आश्रममें नित्य शातिकी छाप पडनी चाहिये। अैसे ही सत्यताकी छाप। अेक-दूसरेके साथ हमारा व्यवहार प्रेममय और मर्यादामय होना चाहिये। और अतिथि या देखनेवालोके साथ सभ्यताका। कोअी कैसा भी वेश पहनकर आवें, गरीब-से लगें, तो भी अुनके प्रति आदरसे वरताव होना चाहिये। अूच-नीच, गरीब-अमीरका भाव नही होना चाहिये। अिसका मतलब यह नही है कि कोअी नाजुक अतिथि आ जावे तो अुसकी तरफसे अैसी आशा रखें कि वह भी हमारी जैसी सादगीसे रह सकता है। आतिथ्यमें अतिथिके रहन-सहनका हमें हमेशा खयाल रखना होगा। अिसीका नाम सच्ची सभ्यता है। आश्रममें कोअी अनजान मनुष्य आ जावे तो अुसके आनेका प्रयोजन पूछना चाहिये। और आवश्यकता होने पर व्यवस्थापकके पास अुसको ले जाना चाहिये। यह धर्म सब आश्रममें रहनेवालोका है। क्योंकि किससे पहली भेंट अैसे लोगोकी होगी, अिसका हमें पता नही चल सकता।

हरअेक मनुष्य जो कुछ करे, कहे, सोच-विचारकर और विचारपूर्वक करे। जो कुछ करे अुसमें ध्यानावस्थित और तन्मय हो जाय। सब खाना औषध समझकर और शरीरको आरोग्यवत रखनेके लिअे खाया जाय और शरीरकी रक्षा भी सेवाकार्यके लिअे ही की जाय। अिस दृष्टिसे मनुष्यको मिताहारी अथवा अल्पाहारी होना चाहिये।

खाना जो मिले अुससे सतोष माना जाय। कुछ खाना कच्चा या विगडा हुआ लगे तो अुसी समय शिकायत न की जाय, लेकिन बादमें विनयपूर्वक रसोडेके व्यवस्थापकको बताया जाय। विगडा हुआ या कच्चा खाना छोड दिया जाय। खानेमें आवाज न किया जाय। आहिस्ते आहिस्ते मर्यादा और स्वच्छतापूर्वक अीश्वरका अनुग्रह मानते हुअे खाना चाहिये।

हरअेक मनुष्य अपने वरतन वरावर साफ करे और बताअी हुअी जगह पर रखे।

अतिथि या दूसरे अपनी थाली, लोटा, दो कटोरी और चम्मच साथ लावें। अपनी लालटेन, बालटी और विस्तरा भी। कपडे वगैरा आवश्यकताके

अधिक न होने चाहिये। कपडे सब खादीके होने चाहिये। अन्य वस्तुअें यथासंभव देहाती या कमसे कम स्वदेशी होनी चाहिये।

सब हरअेक वस्तु अपनी जगह पर रखें और कचरा कचरेकी जगह पर। पानीका भी दुर्व्यय न किया जाय।

पीनेका पानी अुबला हुआ रहता है और बरतन भी अंतमें अुबले पानीमें धोने चाहिये। कुअेंका कच्चा पानी पीने योग्य नहीं माना जाता है। अुबलने हुअे पानी और गरम पानीका भेद समझना आवश्यक है। अुबलता हुआ पानी वह है जिसमें दाल पक सकती है, जिसमें से काफी भाप निकलती है। अुबलता पानी कोअी पी नहीं सकता।

कोअी रास्तेमें न थूके, न नाक साफ करे। अैसी क्रिया अेकांत जगहमें जहां किसीका चलना फिरना नहीं होता वहीं की जाय।

पाखाना-पेशाब भी नियत जगह पर ही किया जाय। यह दोनों क्रियाओंके बाद सफाअी होना आवश्यक है। पाखानेका बरतन हमेशा अुलटा ही रहना है, रहना चाहिये। पाखाना जाकर साफ मिट्टीसे हाथ धोने चाहिये और धोनेके बाद साफ कपडेसे पोंछने चाहिये। पाखाने पर सूखी मिट्टी अितनी डालनी चाहिये कि अुस पर मक्खी न बैठ सके और देखनेमें सिर्फ सूखी मिट्टी ही नजर आवे।

पाखाना बैठते समय ध्यानसे बैठना चाहिये, जिससे बैठक न बिगडे और पाखाना अपनी जगह पर ही पडे। अंधेरेमें लालटेन जरूर ले जायं।

कोअी चीज जिस पर मक्खी बैठ सकती है ढकना आवश्यक है।

दतौन अेक जगह बैठकर शांत चित्तसे करना चाहिये। खूब चबा चबाकर बारीक कूची करके दांत और मसूडोंको आगे पीछे घिसना चाहिये। घिसते समय जो थूक पैदा होता है अुसे थूक देना चाहिये। निगलना नहीं चाहिये। दांत अच्छी तरह साफ होनेके बाद दतौन चीरकर दोनों चीरोंसे जीभ अच्छी तरह साफ करना और बादमें मुंह खूब साफ करना और नाक भी पानी चढाकर साफ करना चाहिये। दतौनकी चीर पानीमें अच्छी तरह धोना और अुसे अेक बरतनमें अिकट्ठी करना चाहिये। भर जाने पर अुसे जलानेके काममें लाना चाहिये। नियम यह है कि कोअी चीज बरबाद नहीं जानी चाहिये।

निकले हुअे कागज जो दूसरी तरह किसीके काममें नहीं आ सकते अुन्हें जला देना चाहिये। खादमें कागज और कोअी चीज नहीं मिलाना चाहिये।

भाजी वगैरा साफ करनेसे जो कचरा बचता है अुसे अलग रखके खाद बनाना चाहिये।

फूटा काच अेक निश्चित जगह किसी खोकेमें डाला जाय, अिधर अुधर हरगिज नही।

कोओी आश्रम देखनेको आते है अथवा हमारे अतिथि होते है तो अुनसे हम मोहब्बत करे। अुनको परायापन नही लगना चाहिये।

आश्रममें सब वस्तु अपनी जगह पर होनी चाहिये और कोना-कोना साफ होना चाहिये। दरवाजे पर धूल नही होनी चाहिये। वह चिकने नही होने चाहिये।

जो काम जिसके सिर है अुसे वह बडी सावधानीसे करे।

सामुदायिक काममें सब पूरी हाजिरी भरे, बरतन माजनेमें खूब सफाओी होनी चाहिये।

पाखाने हमेशा सूखे होने चाहिये। मैले पर सूखी धूल हमेशा होनी चाहिये।

पानीकी कोठीके नजदीक बहुत पानी रहता है, वह ठीक नही है। खाना हमेशा ढका होना चाहिये। मक्खी न बैठने पावे।

खानेमें सब अस्वाद-व्रत ध्यानमें रखे और सब वस्तु औषध समझकर खाय। कोओी समय (कभी) कुछ कम मिले तो अस्वस्थ न बनें। जो मिले वह औीश्वरकृपा समझकर ग्रहण करे।

प्रार्थनामें जो कुछ है अुसका अर्थ बराबर समझें। आश्रमकी सब वस्तु निजी है अैसा समझकर अुसकी रक्षा करे और अुसको अिस्तेमाल करे।

ता० ८-१२-'४१ बापू

मेरा खयाल है कि कमसे कम अेक समयके लिअे कच्ची भाजिया ही खानेसे बडा फायदा होता है। भाजियोमें पालक या लूनीकी पत्तिया, शलगम, गाजर, गोबी, मूली, टमाटर ले सकते है। अिसमें क्षार मिलते है, दात मजबूत होते है, हाजमे पर अच्छा असर होता है। और पकी खाते है अुससे ... गे हिस्सेमें काम निपटता है। बराबर चबानेकी आदत होती है, स्वाद पकी भाजीसे अधिक रहता है। मैंने तो दो महीने तक यह प्रयोग किया है। जिनको खार[illegible] नहीं है वे प्रयोग करके देखें।

सब अपने अपने काममें अधिक जाग्रत रहें। जैसा व्यवस्थित काम होना चाहिये वैसा नहीं हुआ है। स्वच्छताके बारेमें काफी सुधारणाको स्थान है।

ता० ७-२-'४२ बापू

मेरी सलाह है कि आवश्यकतासे अधिक (बरतन) किसीके पास न रहें और जिनके पास नये बरतन हैं वे पुराने लें, जिससे मेहमानोंके लिअे अच्छे रह सकें।

ता० ८-२-'४२ बापू

आश्रममें हममें से कोअी स्वादके लिअे न खाय, जीनेके लिअे खाय। जीना भी जीनेके कारण नहीं लेकिन सेवाके लिअे। अिसलिअे अेकका देखकर दूसरे न करें। जैसे कि अगर किसीको भातकी आवश्यकता है तो अुसके लिअे पकाया जाय, अिसलिअे दूसरे भी मांगें अैसा नहीं होना चाहिये। सामान्यतया कोअी रोटी और भात दोनों न खाय, लेकिन किसीके लिअे आवश्यक है तो दोनों दिये जावें। नियम यही है, स्वाद नहीं।

अिसमें से यह तो सहज प्राप्त होता है कि जिसको अीश्वरने धन दिया है वे इसमें स्वाद न करें। यहां रहनेका सब फायदा वे गुमा देंगे, अगर स्वादके कारण कुछ भी चीज खरीदेंगे।

आजकल अच्छा होगा यदि सब कमसे कम दो बार लाल पानीसे कुल्ला करें। लाल पानी कितना रखा जाय डॉक्टर दाससे समझ लें। सामान्य नियम यह है कि पानीका रंग गुलाबके फूलसा होना चाहिये।

ता० २३-४-'४२ बापू

बात यह है कि हम अपना जीवन विचारमय करें। काम कम करना है तो कम करें, लेकिन जो करें सो बन पड़े वहां तक संपूर्ण करें। अिसीलिअे मैंने कहा है कि अगर हम अपने जीवनको (भजनमें) गाते हैं वैसा करें और सेवाग्रामको आदर्श बना सकें तो हमने सब किया।

ता० १०-५-'४२

अुपवास करके देह छोड़नेवाले श्री धर्मानन्द कोसाम्बीका अंतिम दर्शन।

२९

धर्मानन्दजी कौशाम्बी

चिमनलालभाअीकी तबीयत काफी कमजोर हो गअी थी। मुझे अुनकी चिन्ता हो रही थी। मेरी सूचना थी कि अुनको अुरुलीकाचन जाना चाहिये या सेवाग्राममें ही किसी प्राकृतिक चिकित्साके जानकारको बुलाकर अुसकी सूचनाके अनुसार चलना चाहिये। अुसी समय पू० धर्मानन्दजी कौशाम्बीको बापूजीने आश्रममें भेजा। अुनकी तबीयत काफी खराब थी। अुनको कुछ भी हजम नही होता था। अुन्होंने सिर्फ पानी पर रहकर शरीर छोडनेकी बापूजीसे सलाह मागी थी। अपने अतिम सस्कारके बारेमें अुनके मनमें यह विचार था कि मेरी अन्त्येष्टि क्रिया सस्तीसे सस्ती की जाय, और अुन्हें लगता था कि जमीनमें दफनाना सबसे सस्ता है।

चक्रैया (हरिजन लडका) को, जिसे श्री सीताराम शास्त्रीने १९३५ में बापूजीके पास भेजा था, कुछ बीमारी हो गअी, जिससे अुसको बार बार चक्कर आते थे। अुसकी डॉक्टरी परीक्षा करानेके लिअे बबअी भेजनेका निश्चय हुआ। यह सब मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीका अुत्तर आया

सोदपुर, १२–५–'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे तीनो खत मेरे सामने हैं। चिमनलालभाअीकी तबीयत अच्छी रहे या न रहे मुझे अच्छा लगेगा कि वह वही रहनेका निश्चय करें। दुबेजीको बुलानेसे कुछ भी फायदा नही होगा। दूध, फल और कच्ची-पक्की भाजी काफी खुराक है। मूगफली खानी हो तो पानीमें ३६ घटा रखकर खायें। ठडे पानीमें बैठनेसे फायदा हो सकता है। यह सब करते हुअे, राम-नाम लेते हुअे, जो हो सो होने देना। अुरुलीका विचार अुनके लिअे नही कर सकता हू।

कौशाम्बीजी कुछ भी हजम नही कर सकते है तो भले पानी पर रहें। पानी न पी सकें तो भले देह जाय। भीतरी शाति है तो सब कुछ है। फिर भी जैसे विनोबा कहें सो करो। यह सब अुन्हें सुनाओ।

चक्रैया बम्बअी पहुच गया है, अैसा खत लीलावती बहनका है। मैंने चक्रैयाको लिखा है। डॉ० पुरधरको भी, जो आख देखते हैं।

होमियोपैथिक भीतर ठीक है तो दुबारा बीमार होनी नहीं चाहिये। तुम्हारी परीक्षा ठीक हो रही है।

राह न देखी जाय। कौशाम्बीजीके विषयमें मैथिल खबर दी जाय। मैं तो बहुत पसन्द करूंगा। लेकिन अुस बारेमें मेरा आग्रह नहीं।

बापूके आशीर्वाद

कौशाम्बीजी विनोबाजीकी सलाहसे अल्पाहार कर रहे थे। ता० ४-५-'४७ को वह भी अुनकी अनुज्ञा लेकर अुन्होंने बन्द कर दिया। अुनका शरीर धीरे धीरे क्षीण हो रहा था। किन्तु अुनकी चित्तकी प्रसन्नता और बुद्धिकी तीव्रतामें लेशमात्र भी फर्क नहीं पड़ा था। वे आनंदके साथ प्रयाणकी तैयारी कर रहे थे। धर्मानंदजी बौद्ध थे। लेकिन सचमुच ओश्वरकी भक्तिमें अुनकी अपार निष्ठा थी। अुन्होंने योगाभ्यास भी काफी किया था। अपनी मृत्युका दर्शन वे सब स्पष्ट रूपसे वैसे ही कर रहे थे, जैसे कोअी सामने खड़े हुअे आदमीको देख सकता है। अुसके बारेमें छोटी छोटी सूचनाअें भी हमको वे करते थे। अपना अनुभव भी सुनाते थे। अेक दिन प्रार्थनाके पश्चात् मुझसे कहने लगे "आपके बारेमें मुझे यह कहना है कि आप क्षत्रिय हैं, बुद्ध भी क्षत्रिय थे। आपको बौद्ध धर्मके कुछ वाक्य बताना चाहता हूं।" अुन्होंने जो कुछ बोला वह अिस प्रकार था "यो वे अुप्पतित कोधं रथं भन्तं व धारये। तमहं सारथिं ब्रूमि रस्मिग्गाहो अितरो जनो॥ (जो लोग अुछलते क्रोधको चक्राकार घूमनेवाले रथकी तरह नियंत्रणमें रखते हैं, अुन्हें मैं सारथि कहता हूं, दूसरे तो केवल रस्सी पकड़नेवाले हैं।)" कहने लगे, "आपको भगवानका वचन सुनाया है। अिसको ध्यानमें रखकर कुछ रोज अभ्यास करना चाहिये। अभी तो आपके पास काफी समय है। अिससे आप काफी कर सकते हैं। आप मेरे पाससे कुछ चाहते थे, अिसलिअे मेरी अिच्छा हुअी कि आपको कुछ बताना ही चाहिये। मैं आपको आशीर्वाद देता हूं। आपका कल्याण होगा।" फिर अुन्होंने अपने ध्यानका अनुभव सुनाया और बोले, "आज जो अितनी शांतिका अनुभव मैं कर रहा हूं वह अुस साधनाका ही फल है। मनुष्यकी परीक्षा मृत्युके समय ही होती है। अगर अुसकी कुछ साधना सफल होगी तो अुस समय अुसके अवश्य ही काम आयेगी और वह शांतिका अनुभव करता करता शरीर छोड़ेगा। हमको अपनी कीर्तिके लिअे कुछ भी नहीं करना चाहिये। जो करना है सो अच्छे गुणोंके विकासके लिअे करना चाहिये। क्रोध सबको आता है। अिसमें क्रोध

नहीं वह मनुष्य किसी कामका नहीं। लेकिन जो क्रोधके वशमें होकर अपना काबू खो बैठता है वह अुससे भी बुरा है। क्रोधको अपने काबूमें रखकर मर्यादासे बाहर न जाने देना ही पुरुषार्थ है। बापूजीमें यही शक्ति है। आपको क्रोधको काबूमें रखनेका अभ्यास करना है और निष्काम भावसे खूब काम करते जाना है। अिसीसे आपका कल्याण हो जायगा। मेरी आत्मा आपसे बडी खुश है कि आप जिज्ञासु हैं। जिज्ञासु होनेसे मनुष्य कितना ही बुरा हो अेक रोज सत्पुरुष बन ही जाता है।"

कौशाम्बीजीका दिल प्रेमसे सराबोर था। मुझे अुनकी वाणीमें साक्षात् भगवानकी कृपा बरसती मालूम हुअी। वे आगे कहने लगे

"बापूजीने मेरा अनशन छुडवाया। अुस समय मुझे कोअी तकलीफ नहीं थी, खुजली भी नहीं थी और अुस समय मैं आरामसे मर सकता था। लेकिन बापूजीने मेरे अूपर दया करनेके लिअे, मुझे अुपवाससे निवृत्त करनेके लिअे तार दिये। मैंने अुनकी प्रेरणासे पिछले २३ सितम्बरको अनशन छोड दिया और तबसे आज तक काफी दुःख पाया और अन्तमें फिर वही अनशन करना पडा। लेकिन अिसमें बापूका तनिक भी दोष नहीं है, क्योंकि बापूजीने सब दयाभावसे ही किया था। अिसमें मुझे जरा भी दुःख नहीं है, क्योंकि भगवान बुद्धने कहा है कि 'खन्ती परम तपो तितिक्खा।' (तितिक्षारूपी क्षमा ही परम तप है।)

"बापूजीकी कृपासे मुझे अिस तितिक्षाका अवसर मिला। अिसमें मेरी कसौटी हो गयी। मुझे जो खुजली आती है अुसके सहन करनेमें आनन्द मानता हूं। यह सब बापूजीकी कृपा है। मेरी अिस प्रकारकी मृत्युसे बापूजीको आनन्द मानना चाहिये, क्योंकि अुनका अेक भक्त अिस कसौटीमें से गुजर रहा है और शान्तिपूर्वक प्रयत्न कर रहा है। अन्तके क्षण तक क्या होगा यह तो भगवान ही जाने।"

मैंने यह सब वर्णन बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया:

पटना, १६–५–'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत प्रार्थनाके पहले लिखा हुआ मिला। कौशांबीजीका पढकर आनंद होता है। साथमें अुनके लिअे खत रखता हूं। मिलने तक देह होगा तो खत अुनको दे देना या पढा देना।

अुनके आश्रममें रहनेसे आश्रम पवित्र होता है, अिसमें मुझको कोअी शक नहीं है।

शकरनूका खत अिसके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

अन्त्येष्टि संस्कारके विषयमें कोशाम्बीजीने सब बापूजी पर छोड़ा था। अतअेव बापूजीका दूसरा पत्र आया:

पटना, २०-५-'४७

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। अिससे पहले अैसा कोअी खत मिला नहीं है जिसमें कोशाम्बीजीके शरीरका मृत्युके बाद क्या करना यह पूछा हो।

लेकिन आज शकरनूका खत है अुसमें सब विगतें दी हैं। कोशाम्बीजी आखरका निर्णय हम पर छोडते हैं तो अग्नि-संस्कार ही सबसे अच्छी क्रिया है। यह बात जगतमान्य हो रही है। अुसमें खर्च भी ज्यादा नहीं है, न होना चाहिये। दफन करनेमें भी शास्त्रीय तरीकेसे करें तो काफी खर्च होता है। बाकी चीजें तो अुन्होंने लिखवाअी हैं। पाली अित्यादिके बारेमें अुनका अमल होगा ही अैसा अुनको कहा जाय। मेरी अुनसे प्रार्थना है कि अब अैसी बातोंको भूल जाय और अंतरध्यान होकर देह छूटना है तो छूटे, रहना है तो रहे। अुनसे यह भी कहना कि पाली भाषा तो लंकामें सीखी जायगी। लेकिन बौद्ध धर्म सीखनेका क्षेत्र लंका है अैसा मेरा दिल नहीं मानता। बौद्ध धर्मकी अूपरी बात जाननेसे रहस्यका ज्ञान होता नहीं है।

गोविन्द रेड्डीका खत आया है। अुसका अुत्तर पढो और जो निर्णय करना है सो करो।

दस्तखत ता० २१को प्रात. बापूके आशीर्वाद

धर्मानंदजीने बापूको लिखवाया था कि अुनकी मृत्युके बाद कुछ विद्यार्थियोंको हर साल लंका भेजा जाय, जो पाली भाषा सीखकर बौद्ध

धर्मका प्रचार भारतवर्षमें करे। अिसके अुत्तरमें ही बापूजीका अुपर्युक्त अुत्तर था। अुक्त पत्रके अुत्तरमें कौशाबीजीने लिखवाया

सेवाग्राम, २५-५-'४७

पू० बापूजी,

सादर प्रणाम। यदि श्री कमलनयन बजाज आग्रहसे मेरे अूपर अेक हजार रुपयेका बोझा न छोड जाते तो स्मारकके बारेमें मेरे दिलमें कोअी विचार नही आता। पैसा आनेके बाद जो विचार मुझे सूझे, लिखवाये। लेकिन अुसकी जरा भी चिन्ता नही है। मै तो सर्व भार आपके अूपर छोडकर सतुष्ट रहता हू। रातको आकाश देखकर बहुत सुख पाता हू यह सब आपके आशीर्वादका ही सुफल समझता हू। सिलोनमें बौद्ध धर्मका रहस्य नही रहा है यह मै भी जानता हू। अुन लोगोके साथ अेक बरस रहकर मैने बहुत अनुभव लिया है। लेकिन अुनके साथ रहनेसे भगवान बुद्धके जमानेकी कुछ कुछ याद कर सकता था और अुससे मुझे बहुत लाभ हुआ है। अभी तक अुसकी यादसे बहुत आनन्द मिलता है। बाकी सब भूल गया हू। आम और नीम अेक ही जमीनमें बढते है, लेकिन आमका फल अलग होता है, नीमका अलग।

अशोकके शिलालेखोका अर्थ अग्रेज आनेसे पहले हम भूल गये थे। पाश्चात्य विद्वानोंके प्रयत्नसे ही अुनका अर्थ हम लोग समझ सके है। हमारे विद्वानोंने भी पाश्चात्योका अनुकरण करके बहुत कुछ लिखा है। लेकिन अशोक राजाके अत्यत सहृदय वचनोको पढकर कितने पडितोका हृदय कपित होता होगा? अिसलिअे मेरा कहना है कि प्राचीन सस्कृत खडहरोमे मिल गया है तो भी सज्जन अुससे बहुत सबक सीखते है।

अभी जो आदमी सिलोन जानेवाला है वह अैसा भक्त थोडा ही हो सकता है? वह यहाकी डिग्री लेकर वहा सिर्फ ज्ञान बढानेके लिअे जायगा। तो भी हमारा कर्तव्य है कि अुसका गुजारा वहा पर अच्छी तरहसे चल सके अिसलिअे काटछाट न करके अुनके गुजारेके लिअे काफी पैसा मिलना चाहिये। आजकल जो शिक्षायंत्र चल रहा है अुससे जो फायदा अुठा सकते है वह अुठाना चाहिये।

भवदीय
धर्मानद कौशाम्बी

अुसी दिन किशोरलालभाअीका पत्र बारडोलीसे आया :

बारडोली,
दिनांक २५-५-'४७

प्रिय वल्लवन्तसिंहजी,

आपका विस्तृत पत्र मिला। श्री कौशाम्बीजीकी सारी सूचनायें लिख भेजी जिससे खुशी हुअी। अुनमें से जितना पू० बापूजीसे सबध है वे अुनको लिख भेजी होंगी। मुझे दुःख है कि मैं अुनके अंतिम दिवसोंमें अुनका लाभ अुठा नही सक रहा हूं। अुनमें वहां पहुचनेका विचार तो है, लेकिन अुतने दिन तक अुनके शरीरका टिकना मुश्किल है। और मैं अैसी कठोर अिच्छा भी कैसे करू कि सिर्फ मैं अुनको मिल सकू अिसलिअे अुनकी यातना बढती रहे। अिसलिअे मन ही मन अुन्हें दूरसे नमस्कार भेजता हूं।

अुनकी 'आपबीती' (गुजराती) आपने पढी है या नहीं? बहुत पढने योग्य है। सत्यधर्मकी खोजके लिअे पुरुषार्थी मुमुक्षु क्या क्या करेगा और कितने कष्ट अुठायेगा अिसकी अुसमें तवारीख है। और बादमें जो अुन्होंने प्राप्त किया अुसे जगतको वितरण करनेके लिअे भी अुन्होंने जीवन चक जाय तब तक परिश्रम किया है। बहुत बडे भंडारमें से अच्छेसे अच्छे मोती चुन चुन कर अुन्होंने हमें दिखा दिये हैं। वे बडे संत पुरुष हैं। यह अेक मापालंकार नहीं, सच बात है। अुनकी जन्म-तारीख आपने मालूम कर ली होगी। न की हो तो कर ली जाय।

श्री चिमनलालभाअी बहुत कमजोर हो गये हैं यह जानकर खेद होता है। अच्छा होता गर्मीमें वे थोडे दिन पूना जाते। अब भी जाय तो ठीक रहेगा अैसा मेरा खयाल है।

चि० होशियारीकी तबीयत अच्छी हो रही है जानकर संतोष हुआ। चि० गजराजके लिअे कुछ अच्छी तरहसे सोच लेना चाहिये। अुनकी नाक ठीक हो जानी चाहिये।

आपके कुअेंको अभिनन्दन। अब बहुत धान्य बढा होगा।

गर्मी यहां पर बहुत है। लेकिन यहां लू नही बरसती। हवा अक्सर चलती रहती है। फिर भी यहांकी हवा बम्बअीके जैसी है। अिसलिअे पसीना सूख नही पाता और ठंड भी मालूम होती है। और रातको हवा बन्द हो जाती है तब तीन चार घंटा बुरा मालूम होता है। गर्मीके कारण मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक है। और गोमतीको भी यहां बहुत तकलीफ जैसी नहीं,

हुआी है। हा, अपनी अगुली या शरीरके किसी भागको अिजा कर ले तो अुसका क्या किया जाय?

अब यहासे निकलनेकी अिच्छा कर रहा हू। पर सेवाग्रामवालोंके जो पत्र आते है वे आनेसे रोकते है। आज ही श्री जाजूजीका बम्बअीसे पत्र है कि अिस वक्त सेवाग्राम न जाना अच्छा है।

आपका
किशोरलाल

मु० कौशावीजीको मेरा प्रणाम कहना। चि० होशियारी और गज-राजको आशीर्वाद।

लि० गोमती

किशोरलालभाअीको मैंने पू० कौशावीजीका सारा समाचार लिखा था। और भी आश्रमके समाचार लिखे थे। अुसके जवाबमें अुनका भाव और विवेचना, मनोरजन, गभीरता तथा व्यावहारिकतासे भरा अूपरका पत्र आया। गोमतीबहनके हाथमें शाक काटते समय चाकू लग गया होगा तो अुसका भी जिक्र कर दिया। पू० कौशावीजीके लिअे अुनके दिलमे बडा आदर था। परन्तु अुनसे मिलनेकी तीव्र अिच्छा होते हुअे भी अुनके सकल्पके कारण ही अुनको शारीरिक यातना क्यो सहन करनी पडे, यह विचार कितना अुदात्त है! यह पत्र मैंने कौशावीजीको सुनाया तो वे बहुत खुश हुअे और बोले, किशोरलालजी तो बडे विवेकशील पुरुष है। अुनको लिखो कि मुझसे न मिलनेका दुख न मानें। आखिर तो हमारी आत्मा अेक ही है और वह मिली हुअी है।

आश्रमके ११ सालके जीवनमें कौशावीजीकी मृत्यु पहली मृत्यु थी। अैसी आदर्श मृत्यु मैंने अपने जीवनमें कभी नही देखी। वे रातको अपने पास सोनेको मुझे कभी नही कहते थे। लेकिन मृत्युकी पहली रातको मुझसे कहने लगे कि, "आज तुम मेरे पास सोओ। रातको बारह बजे जब चन्द्र सिर पर आयेगा तब मेरी मृत्यु होना सभव है। तुम सावधान रहना। मेरे कफनके लिअे नये कपडेका अिस्तेमाल नही करना। मेरे जो पुराने कपडे है, अुनका ही अिस्तेमाल करना है।" वे सब कपडे धो-धाकर साफ रखे थे।

अुन्होंने अपना सारा सामान आश्रमके सुपुर्द कर दिया था। सिर्फ अेक घडी अपने लडकेके लिअे अिसलिअे रखी थी कि शायद वह अुनका

कुछ चिह्न रखना पसद करे। अुनके लडके और लडकीके बार बार बम्बअीसे पत्र आते थे और वे अुनको देखनेके लिअे सेवाग्राम आना चाहते थे। लेकिन, कौशाम्बीजीने आग्रहपूर्वक अुनको नही आने दिया। तीन जूनको रातको, बारह बजे तक मै अुनके पास था।

अुस समय गोआमें अेकातमें अुन्होने जो योगाभ्यास किया था अुसका बहुतसा वर्णन अुन्होंने सुनाया। मृत्युका पहलेसे पता कैसे चल सकता है, जिसकी भावना भी अुन्होने की थी। अपना पुराना बहुतसा अनुभव भी मुझे लिखाया। अुन्होने 'आनापान' भावनाकी बात बतायी, जिसकी पूरी साधनासे मनुष्य अपने अन्तिम श्वासको भी अच्छी तरह जान सकता है। वे बोले .

"जैसा योग रहता है वैसी ही आनापान भावना रहती है। लेकिन अुस भावनामें कुम्भक श्वास रोकना, पूरक श्वास भीतर ग्रहण करना, रेचक श्वास छोडना नही होता है। सिर्फ श्वासोच्छ्वासका खयाल रखना पडता है। जिसका सक्षिप्त वर्णन 'समाधि-मार्ग' में मैंने किया है। विस्तृत वर्णन पाली ग्रथोमें, विशेषत 'विशुद्धि-मार्ग' में है। यद्यपि यह भावना अलग है तो भी जिसका अुपयोग अन्य कअी भावनाओमें होता ही है। जिस भावनाका मैंने विशेप अभ्यास नही किया है। थोडासा तो करना ही पडा था, लेकिन अुसका अभी अच्छा फल मिल रहा है।

"रातको मुझे जरासी नीद आती है तब मेरा मुह खुल पडता है और जीभ बिलकुल सूख जाती है और अुस पर काटे खडे हो जाते है। जब अेकाअेक जागता हू तब क्या करना और क्या नही करना अुसका भी खयाल नही रहता है। कल-परसोंसे अुस आनापान भावनाकी मददसे जिस कष्टके अूपर काबू कर रहा हू।

"अुस भावनाके वर्णनमें यह कहा गया है कि जो यह भावना पूरी तौरसे करेगा वह अपना अंतिम श्वास भी जान सकेगा। अुसका अेक अुदाहरण भी वहा दिया है। लेकिन मेरा तो पूरा अभ्यास नही है। मै नही जानता हू, अत क्या होगा।

"यह डॉ० बारदेकरजी अथवा काकासाहबको बतलाना। वे जिनका अुपयोग कर सकते है। अुनके पास अेक कापी दे देना।"

अुनकी आज्ञानुसार मैंने अेक कापी डॉ० बारदेकरको दी थी।

अुन्होंने कअी कुअें और विहार बनवाये थे, जिसका बहुत दिलचस्प वर्णन अुन्होने मुझे बताया था। अुनको कुओंसे बडा ही प्रेम था। अुसी

समय आश्रमके खेतमें दक्षिणकी ओर जो बडा अडाकार कुआ है, वह बन रहा था। अुस कुअेंको देखनेकी अिच्छा अुन्होने प्रकट की। मेरी अिच्छा तो पहलेसे ही अैसी थी कि कौशावीजीके हाथसे ही अुसका शिलान्यास कराअू। परन्तु अैसी कमजोर हालतमें अुन्हे कैसे वहा तक ले जाअू, यही सकोच मेरे मनमें था। जब अुन्होंने स्वय अुत्साह बताया तो मैं स्ट्रेचर पर अुनको कुअेंके पास ले गया। अुनके हाथसे अुसमें अेक पत्थर लगवाया। अुस कुअेंका नाम 'कौशावी-कूप' रखा। अुसमें अुनके जन्म और मृत्युकी तारीख पत्थरमे खुदाकर लगवानेकी बात थी। अिस सबधमे बादको कुअें पर अिस प्रकार स्मृतिपत्र खुदवाया गया .

"जिनका सलिल-सा निर्मल जीवन था, ४ मअीसे आमरण अुपवास द्वारा आमन्त्रित मृत्युदेवको अतिथिवत् क्षणभर विश्रामके लिअे छोड जिन्होंने २२ मअीको जीवनके अिस सनातन स्रोतको आशीर्वाद दिया, अुन श्री धर्मानन्दजी कौशाम्बीकी पावन स्मृतिमें।

जन्म गोवा निर्वाण सेवाग्राम
९-१०-१८७६ ४-६-१९४७"

अुस रातको बारह बज गये। मैं जाग रहा था। अुन्होने मुझसे कहा कि अब तुम सो सकते हो। आज रातको तो मैं नही मरूगा। मैं जाकर सो गया। प्रात अुनके पास गया तो वे प्रसन्न थे। करीब १२ बजे अुन्होंने कहा कि मेरी जानेकी तैयारी है। दो बजे थोडा पानी लिया और मकानके सब दरवाजे खोलनेके लिअे कहा, मानो अुनको अैसा प्रतीत हो रहा हो कि अुनको कोअी लेनेके लिअे आया है, अथवा अुनके जानेके लिअे दरवाजे खोल देने चाहिये। अिस प्रकारसे वे कभी दरवाजे नही खुलवाते थे। धीरे धीरे शरीर शिथिल होता गया और ठीक २।। बजे वे शात हो गये। अुनका अतका सास निकलने और सावधानीसे बात करनेके बीचमें बेहोशीका अन्तर दस मिनटसे ज्यादा नही था।

५ बजे अुनके भौतिक शरीरका दाह-सस्कार हुआ। काकासाहब और विनोबा मौजूद थे। विनोबा वेदमत्रोंका पाठ कर रहे थे। बडा ही सुन्दर दृश्य था। जितना भव्य कौशाम्बीजीका जीवन था, वैसी ही भव्य अुनकी मृत्यु हुअी।

कबीरका यह भजन अुनके जीवन और मृत्युको पूरी तरह लागू होता है . 'दास कबीर जतनसे ओढी, ज्योकी त्यो धरि दीनी चदरिया।' अुनकी मृत्युका

सारा वर्णन मैंने बापूको दिल्ली लिख भेजा था। अुन्होंने ता० ५-६-'४७ के अपने प्रार्थना-प्रवचनमें कौशाम्बीजीको अंजली देते हुअे कहा था : "जो अपनी डोंडी पीटते-पिटवाते हैं, अुन्हें तो हम बहुत चढाते हैं। पर जो मूक सेवक हैं, धर्मकी सेवा करते हैं, अुन्हें लोग पहचानते भी नहीं। अैसे अेक आचार्य कौशाम्बीजी थे। वे हिन्दुस्तानके (बौद्धधर्म और पालीके) अगेवान विद्वान थे। अुन्होंने स्वयं फकीरी पसंद की थी। वे प्रार्थनामय थे। अीश्वर करे हम सब अुनका अनुकरण करें।"

अुनकी सेवा और मृत्युसे मुझे आश्रमके अस्तित्वकी सार्थकताका प्रत्यक्ष भान हुआ। आश्रमके बल पर बापूजी किसी भी आदमीको आश्रममें आकर रहनेका खुले दिलसे निमंत्रण दे सकते थे। अिसीलिअे बापूजी कहा करते थे कि चरखा संघ जैसी सब संस्थायें मैंने ही बनायी हैं। लेकिन आश्रम जैसी दूसरी संस्था मैं भी नहीं बना सका।

अिसमें हम आश्रममें रहनेवालोंकी विशेषता नहीं थी। विशेषता बापूजीके अुस शुभ संकल्पकी थी। बाहरके हमारे ही लोग आश्रमकी अनेक प्रकारकी आलोचनायें करते थे और करते हैं, परन्तु मैं नम्रतासे लेकिन दृढतासे यह कह सकता हूं कि वे आश्रमके महत्त्वको समझनेमें असमर्थ रहे हैं। मैं आज आश्रमसे कितनी दूर बैठा हूं, लेकिन देखता हूं कि आश्रम मेरे चारों तरफ लिपटा हुआ है।

बापूजीकी पूर्ण कल्पनाका अमल जीवनमें करना तो शायद कल्पनाकी ही बात रहेगी। लेकिन अुसका थोडासा जो स्पर्श हो सका है, अुस परसे बापूजी आश्रमकी मारफत क्या चाहते थे अिसका खयाल करके बापूजीकी महानता और अपनी कमजोरीके सामने मेरा सिर झुक जाता है।

आश्रम शब्द प्राचीन है लेकिन बापूजीने अुनमें नवीन जीवन फूंककर अुसको जिस तरह सजीव किया, अुससे अनेक लोगोंके जीवनमें स्फूर्तिके नये अंकुर देखनेको मिलते हैं। बापूजीके सामने कभी मेरे मनमें भी अैसा आ जाता था कि बापूजीके आसपास हम निकम्मे आदमी अिकट्ठे हो गये हैं। लेकिन जब अेक अेक आश्रमवासीके बारेमें मैं सोचता हूं तो मुझे लगता है कि अुनके पास अूपरसे कितने भी कमजोर क्यों न मालूम हों पर हृदयके सच्चे शायद ही ठहर सकते थे। अीश्वर हमें सच्चे रूपमें आश्रमवासी बननेकी विवेकबुद्धि और शक्ति दे, यही प्रार्थना है।

३०

कुछ प्रश्नोंका बापूजीका हल

पिछले प्रकरणमें चक्रैयाका जिक्र आ चुका है। वह बम्बअी गया था। अुसके साथ प्रभाकरजी किसी डॉक्टरको भेजना या खुद जाना चाहते थे, क्योंकि अुसकी बीमारी खतरनाक थी। बापूने बम्बअीके डॉक्टरोंसे लिखा-पढी करके सब व्यवस्था कर दी थी। मैंने बापूजीको अिस बारेमें लिखकर पूछा तो बापूजीने जवाब दिया

भगीनिवास, नअी दिल्ली
२४-५-'४७

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। मैंने जो टेलिफोनसे कहला भेजा था वह यह था कि चक्रैयाके लिअे जो कुछ भी हो सकता है सब हो रहा है। अिसलिअे अुसके पास किसीको भेजनेकी आवश्यकता नही है। फिर भी मैं मनाअी करना नही चाहता। अुनके दिलमें लगे कि जाना ही चाहिये तो जा सकते हैं। और अब गया तो है ही। अस्पतालमें लडकियोके लिअे हम फिक्र न करे। विजयाबहन तो है ही। चाद, जोहरा वगैरा अच्छी लडकिया हैं। फिर तो हमारा जैसा नसीब।

बापूके आशीर्वाद

परीक्षा करने पर चक्रैयाके मगजमें फोडा निकला। अुसका आपरेशन किया गया और दुर्भाग्यसे टेबल पर ही अुसका शरीर चला गया। अिससे बापूजीको काफी दुःख हुआ। अधिक दुःख तो अिस बातका था कि चक्रैया प्राकृतिक चिकित्सामें विश्वास रखता था और अिस प्रकारके आपरेशन आदिकी झझटमें नही पडना चाहता था।

अुसने बापूजीको अेक पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा करते करते यदि मेरा शरीर चला जाय तो अुसकी चिन्ता नही है। लेकिन दुर्भाग्यसे वह पत्र बापूजीके हाथमें तब पहुचा जब चक्रैया अिस लोकसे विदा हो चुका

था। अगर पत्र पहले मिल जाता तो बापूजी तारसे अुसका आपरेशन रोक देते। लेकिन अीश्वरको यही मंजूर था।

चकैया प्रयत्नशील, नम्र और बड़ा अच्छा सेवक था। जन्मभर आदर्श जीवन जीनेका और सेवा करनेका अुनका दृढ़ निश्चय था। अुसके बारेमें बापूजीने दिल्लीकी प्रार्थना-सभामें दुःख प्रकट किया और कहा था. "वह सेवाग्राममें मेरा बेटा बन गया था। अुसका चरित्र आदर्श था। कुदरती अिलाजमें अुनका विश्वास था। मुझे यह कहनेमें गौरव मालूम होता है कि चकैया सचेत हालतमें रामनाम जपते हुअे ही मरा।"

* * *

सेगांवमें बहुत लोग गठाअीका काम करते थे और अुनमें से कठिया वगैरा पिरोते समय कुछ सोनेके मनके चुरा लेते थे। अेक गोंड कुछ चीज कहींसे चुराकर लाया, अैसा गांवके लोगोंको पता चला। गांवकी पंचायत हुअी और अुसको कोड़ोंकी सजा दी गअी। अुस गांवका अेक राजपूत तहसीलदार था। अुसने अपने हाथसे अुस गोंडको खूब पीटा। यह सब किस्सा मुन्नालालभाअीने बापूजीको लिखा। बापूजीने लिखा कि यह सारा किस्सा क्या है, कैसे हुआ, क्यों हुआ? बापूजी गोंडको भी हरिजन समझते थे। मैंने सारा किस्सा बापूजीको लिखा और बताया कि वह गोंड था लेकिन गोंड हरिजन नहीं होते हैं। बापूजीने लिखा

नअी दिल्ली,
१४-७-'४७

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। गोंडके बारेमें दुःखद किस्सा है। हम अहिंसासे बहुत दूर हैं, प्रयत्नशील रहें।

दूसरा लिखनेका समय नहीं है। वहां जो हो सके किया करो। गलतियां होंगी ही। अुन्हें दुरुस्त करना और आगे बढ़ना हमारा धर्म है।

गोंड हरिजनका भेद मैं भूल गया था। कोड़े और बेतका भेद मैंने न किया।

बापूके आशीर्वाद

* * *

अेक रोज आश्रमकी गाडीमें माल भरकर मैं वर्धा शहरमें बेचने जा रहा था। रास्तेमें बैलका पेट फूला और वह तुरत मर गया। जिसका मुझे बहुत दु ख हुआ। यह सारा किस्सा मैंने बापूजीको लिखा और अपना दु ख भी बताया। बापूजीने लिखा

नअी दिल्ली,
२४-७-'४७

चि० बलवतसिंह,

बैलके बारेमें पढकर दु ख हुआ। मै समझता हू कि किसानको बैल पुत्रवत् होता है। गोवश-वृद्धिका शास्त्र बहुत कठिन है। काश्तकारी सहयोगसे ही फलदायी होगी। बहुत हिस्सा अग-मेहनतसे होना चाहिये। मैंने नोआखालीमें तो अग-मेहनतसे खेत साफ करनेको कहा है। वहा बल मिलते ही नही है। बहुत मारे गये। नया बैल खरीदना नही अैसा मेरा अभिप्राय रहेगा। कहा तक खरीदते जाय ? यह सारा शास्त्र विचारणीय है।

तुम्हारा स्वप्न सुन्दर था। अैसा ही हम वर्तन करे तो मामला शीघ्र ही हल हो जायगा।*

'साधो मनका मान त्यागो' भजनका मनन करो।

बापूके आशीर्वाद

* * *

* मैंने अेक रातको यह स्वप्न देखा था कि मुझे दो मुसलमान अेक बडे मकानमें बुलाकर ले गये और मेरे पीछेसे अुन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया। फिर अुनमें से अेकने छुरा निकाला और मुझसे बोला कि हम तुम्हे मारेगे। मैं अुससे भयभीत नही हुआ। और स्वस्थ रहते हुअे मैंने अुत्तर दिया कि भले तुम मुझे मार दो, लेकिन अिसका परिणाम अच्छा न होगा, तुम्हे पछताना पडेगा। क्योकि मैं तुम्हारा दुश्मन नही हू, बल्कि दोस्त हू। अितना सुनते ही अुसका चेहरा प्रसन्न हो गया और वह बोला कि हम तो तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे। यह स्वप्न मैंने बापूजीको लिखा था और यह भी लिखा था कि अगर प्रसग आने पर जागृतिमें भी अितना धीरज रख सकू तो कितना अच्छा हो।

आश्रममें और सेवाग्राममें गायका दूध कम पड़ रहा था। चम्पाबहन,* जो आश्रमके ही मकानमें रहती थी, भैंसका दूध लेनेकी अिजाजत चाहती थी। मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया

नअी दिल्ली,
२७-७-'४७

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। अब तक आश्रममें या तो सेवाग्राममें कहीं भी गायके दूधका घाटा रहे यह असहनीय है। घाटा दूर करनेके लिअे जो अिलाज लेने चाहिये सो लो। चम्पाबहनको भैंसका दूध लेना पड़े वह हमारी शर्म माननी चाहिये। अगर अुसको रहने दें तो हम किसी दामसे भी गायका दूध न दे सकें तब तो लाचारीसे अुसको भैंसका दूध देना होगा। जाजूजीसे मिलकर अिसका निचोड़ लाना होगा।

बापूके आशीर्वाद

* * *

भारतीय स्वतंत्रताके दिन पास आ गये थे। देशमें रक्तकी होली और साम्प्रदायिक पागलपन जोरों पर था। अिस दावानलको पीते हुअे भी बापू आश्रमको भूले न थे। आश्रमकी गोशाला नष्ट-सी हो रही थी, क्योंकि तालीमी संघ गाय नहीं रखना चाहता था। मैंने बापूजीको लिखा कि अितनी मुसीबतसे मैंने गोशाला जमाअी थी और अब वह बन्द हो रही है। अिससे मुझको दुःख होता है। बापूजीने लिखा

हैदरी मैन्शन, कलकत्ता,
१५-८-'४७

चि० बलवंतसिंह,

मैं तो यहां बड़े हजूममें पड़ा हूं। मेरी परीक्षा हो रही है। नोआखाली अब तो छूट गया है।

गोशालाके बारेमें सब पढ़ गया। यहांसे मैं क्या राय दूं? मैं अितना जानता हूं कि सेवाग्राममें गाय रहनी चाहिये। गोशाला चलनी

* बापूजीके घनिष्ठ मित्र डॉ० प्राणजीवन महेताकी पुत्रवधू।

चाहिये। वह कैसे हो सके, नही जानता हू। मै आर्यनायकम्‌जीको लिखता हू।

बापूके आशीर्वाद

गोशाला तालीमी सघके हाथमें जानेसे स्थिति अैसी हो गयी थी कि आश्रमको दूध मिलना मुश्किल हो गया था और सेवाग्रामका दूधका सारा सगठन छिन्नभिन्न हो गया था। मेरे मनमें अैसा विचार हो आया कि क्यो न गायका दूध पीना ही छोड दू। अपने मनका यह मन्थन मैंने बापूजीको लिखा था। बापूजीकी तरफसे मनुका पत्र आया

नअी दिल्ली,
२०–९–'४७

मु० बलवतसिहजी,

आपका पत्र बापूको मिला। बापू तो जवाब नही लिख सकते है। अुनके पास अेक मिनटकी फुरसत नही है। बापूजीने जो कहा है मै लिख देती हू।

'गोशालाके लिअे दुःख नही मानना चाहिये। जो हुआ सो हुआ। अीशावास्यका श्लोक क्या है? अपना कुछ नही है, सब कुछ अीश्वरका है। गायका दूध नही छोडना चाहिये। गायका दूध छोडकर बकरीका लें तो अुसमें गायकी सेवा नही है। देहातसे गायका दूध आता है सो अच्छा है। और देहाती गायोकी सेवा करो, अुनका दूध बढाओ। और अिर्दगिर्दके देहातोकी गायोको बढाना, अुनको कौनसा चारा दें तो अच्छा दूध निकले और कौनसी अच्छी वनस्पति दे तो अच्छा दूध निकले, यह सब देखो। और वही सच्चा आदर्श है। तुमको वहासे कही नही जाना है। वहा कुछ हो जाय तो जरूर मरना। वहा जो हो सके करो। काफी काम तो पडा है।'

यह बापूजीने बताया था सो लिख दिया है। पू० बापूजी वैसे तो ठीक है। लेकिन थकान बहुत जल्दी लगती है। आप सब अच्छे होगे और सब हाल सुशीलाबहनने बताया ही होगा।

मनुका सादर प्रणाम

मै गोशालाके विषयमे निराश हो गया था और अपने कठोर परिश्रमसे बनाअी हुअी चीजको अिस तरह बिगडते देखकर सचमुच मुझे दुःख

होता था। मैंने मनुके मारफत बापूजीको लिखा। अुसके जवाबमें सुशीलाबहनने लिखा

विड़ला हाअुस, नअी दिल्ली,
२५-१०-'४७

श्री बलवतसिंहजी,

आपका मनुकी ओरका पत्र बापूजीको पढकर सुनाया। वे कहते हैं कि आप क्यों अिस तरह निराश होते हैं? गोशाला बन्द कहा हुअी? विस्तृत हो गयी। सब गावके ढोरोंकी अुन्नति करना, दूध अच्छा हो, ढोरोंकी नसल अच्छी हो, लोग प्रामाणिक मनसे दूध बेचना सीखें, दूधमें पानीकी मिलावटके लिअे परीक्षा-विज्ञान — यह सब आप कर सकते हैं, करना चाहिये। अुसे वे सच्ची गोसेवा मानते हैं। आप कुशल होंगे। अब जल्दी मुलाकात होगी। बापू अब अच्छे हैं।

सुशीलाका प्रणाम

३१

शांतियज्ञमें प्राणार्पण

बापूजीकी सेवाग्राम आनेकी बात चल रही थी। सन् १९४६ के अगस्त मासमें बापूजीने सेवाग्राम छोड़ा था। अुस समय किसको पता था कि अब बापूजी यहां कभी वापिस नहीं आयेंगे? अितने लम्बे समयके लिअे जेलको छोड़कर बापूजी सेवाग्रामसे कभी बाहर नहीं रहे थे। चरखा संघ, तालीमी संघ वगैरा संस्थाअें भी चाहती थीं कि बापू अेक बार सेवाग्राम आ जायं तो वे अपने बहुतसे प्रश्न अुनके सामने रखकर हल कर लें। हम लोग भी चाहते ही थे। लेकिन अेकके बाद अेक संकट बापूजीके अूपर अैसा आता रहा कि अुनके लिअे सेवाग्राम आना असंभव बन गया। ११ फरवरी १९४८ को जमनालालजीकी पुण्यतिथिके निमित्तसे तथा और भी दूसरे कामोंसे बापूजीको सेवाग्राम आनेका आग्रह किया गया। बापूजीने अुसे स्वीकार भी किया। अखबारोंमें भी अैसी खबर आने लगी कि 'बापूजी वर्धा जा रहे हैं।' लेकिन बापूजीकी ओरसे हमें कोअी सीधी सूचना नहीं मिली थी।

२७ जनवरीको हमने प्यारेलालजीको तार दिया कि वापूजीके आनेकी तारीख निश्चित कर दें, ताकि हम कमरा आदि ठीक कर लें। तारका भी कुछ जवाव नही मिला। फिर भी हमने तैयारी तो शुरू कर ही दी थी। वापूजी सेवाग्राम आयें यह तो सव लोग चाहते ही थे। दूसरे लोगोंकी भी अुत्कट अिच्छा रही होगी। लेकिन मै तो विलकुल अधीर हो रहा था।

ता० २९–१–'४८ को वापूजीका नअी दिल्लीसे लिखाया हुआ नीचेका पत्र अुनके अवसानके वाद मुझे मिला था। यह मेरे नाम अुनका अतिम पत्र था। अिसलिअे यहा दे रहा हू।

नअी दिल्ली,
२९–१–'४८

श्री वलवतसिंहजी,

वापूजीने कहा सो मेरे शब्दोंमें लिख रहा हू। होशियारी वहन बीचमें यहासे खुर्जा जा आअी। कल ही वापिस आअी हैं। और आज ही खुर्जा वापिस जायेंगी। कारण यह है कि वे कहती है कि वहा कोअी वैद्यराज हैं जो अेक महीनेमें अुन्हें अच्छी कर देनेके लिअे कहते हैं। होशियारी वहनने अुनका अुपचार लेना पसद किया है और वापूजीने भी अुसे ठीक समझा है। वापूजीने कहा कि होशियारी चगी हो जावे तभी सेवाके काममें दिल लगा सकेगी, अिसलिअे मैंने अुसके लिअे वैद्यराजकी दवा कराना कवूल किया है। यह पत्र चिमनलालभाअीको भी दिखा देंगे।

वाकी चिमनलालभाअीके खतमें से पढना। अिति।

सेवक
विसेनके नमस्ते

सेवाग्राम छोडे वापूजीको वहुत समय हो गया था। अिस वीचमें मैंने नये नकशेका अेक कुआ वनाया था। वह २१ फुट लम्वा और १० फुट चौडा अडाकार था, जिसमें लोग तैरना चाहे तो तैर सकें। वडा ही सुन्दर दीखता था। सेवाग्राममें रहते तव वापूजी वाहरकी सडक पर घूमने निकला करते थे। अुस सडक पर वहुत धूल अुडती थी। अिसलिअे अिस कुअेंवाले खेतमें ही वापूजीके घूमनेके लिअे मैंने रास्ते वनाये थे। खेतीमें और भी कअी प्रकारके सुधार किये थे, जिन्हें वापूजीको दिखानेका मेरे मनमें

बड़ा अुत्साह था। मैं सोच रहा था कि बापूजी जब आयें और सब ये सब देखकर प्रसन्न होकर मेरा श्रम सार्थक करें। अुनके [illegible] आनेकी आशा स्वागत मैंने ये गेंदवाले गमले साफ कर लिये थे, और अुनकी आस-पासकी मरम्मत कर दी थी। अब मैं [illegible] लगा था। कूड़े-कचरेको अेकत्र करके कम्पोस्ट खादके गड्ढोंमें डालना चाहता था। ३० जनवरी, १९४८के दिन मैं यही काम कर रहा था। वर्धाके सरकारी कम्पोस्ट खाद विभागका अेक कर्मचारी भी मेरा साथ दे रहा था। मनमें यह अुत्साह था कि बापूजी जिन रास्तों पर चलकर आनन्दित होंगे तथा कम्पोस्ट खादके गड्ढोंको देखकर अपने 'धूलमें से धन' वाले स्वप्नको कार्यान्वित हुआ देखकर सन्तुष्ट होंगे। अिस अुत्साहने मुझे लगातार श्रमकी थकावटका अनुभव नहीं होने दिया था।

शामका भोजन करनेके बाद मैं अपने कमरेके सामने बैठा था कि श्रीपत बाबाजी घबराये हुअे मेरी तरफ आये और अुन्होंने यह सवाद सुनाया. 'भाअू, बापूजी गेले।' (भाअी, बापूजी गये।) मैंने समझा अुनके कराची जानेकी सम्भावना थी, वहीं गये होंगे। अिसलिअे यह प्रश्न किया कि वे कहां गये? तब बाबाजीने अत्यंत करुण स्वरमें यह सुनाया कि ३ गोलियां मारकर किसी आदमीने बापूजीकी हत्या कर दी। मुझे सहसा अिस पर विश्वास न हुआ। तुरन्त ही मैं प्रार्थना-भूमिकी ओर गया। और वहां यह सवाद मिला कि वर्धासे श्री जगदीशचन्द्रका टेलिफोन आया था कि शामकी प्रार्थना-सभामें जाते समय किसीने बापूको गोलीसे मार दिया। यह रेडियो पर सुना गया था। फिर भी विश्वास बैठा नहीं।

जब रातको ८ बजे रेडियो पर प० जवाहरलाल नेहरू तथा सरदार वल्लभभाजीके वक्तव्य सुने तब कहीं लाचारीसे विश्वास हुआ। सोचने लगा कैसी दैवकी लीला है! महात्मा सुकरातको अुनके देशवासियोंने जहर पिलाकर अुनके प्राण लिये। महात्मा औसाको अुन्हींके देशवासियोंने फांसीकी सजा देकर परलोकवासी बनाया। वही दशा बापूजीकी हुअी! लेकिन मैं यह नहीं सोच पाता था कि बापूजी जैसे अहिंसक महात्माको मारनेके लिअे क्यों कर हत्यारेका हाथ चला होगा।

हमने प्रार्थना की। तत्पश्चात् सब साथ बैठे। वर्धाके कलेक्टर तथा पुलिस कप्तान हमारे पास आये और अुन्होंने सहानुभूति प्रगट की। भाअी मन्नालालजीने यह सूचना रखी कि किसीको दिल्ली जाना चाहिये और तदर्थ

अपनी तैयारी बताअी। वे दिल्ली गये। मैं यह सोचकर रह गया कि अुनकी आत्मा मुझे रोता देखकर कही यह पूछ बैठे कि 'मेरे साथ रहकर तुमने यही सीखा है? जिस मृतदेहको देखनेके लिअे गायोको छोडकर यहा कैसे आ गये?' तो मैं अपने हृदयका समाधान कैसे करूगा? दूसरे, अब वहा पुलिसका कडा पहरा होगा। अुसमें अन्दर प्रवेश कठिनाअीसे ही होगा। अब वे मुझे स्वय तो बुला नही सकते, न प्यारका थप्पड ही लगा सकते है। तो जानेसे लाभ भी क्या? अित्यादि विचारोमें मैं मग्न हो गया।

मैंने बहुतेरी विधवाओंके प्रति सहानुभूति प्रगट की होगी। परतु विधवाकी वास्तविक मनोदशाका अनुभव मुझे अुसी समय हुआ। बापूजीके चले जानेसे मेरे सीग व दात तो गायब हो ही गये थे। अैसा प्रतीत हो रहा था मानो मैं सारी शक्ति खो बैठा हू। जीवनमें अेक लबे अर्सेके बाद नितान्त शून्यता-सी लगने लगी। लगता था कि अब किसकी प्रसन्नता और आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिअे शरीर श्रम करेगा। फिर अुस हत्यारे मानवका खयाल आया। मनने कहा, अुसने बापूजीको मारकर समस्त मानव-जाति पर प्रहार किया है और अपनी आत्माका भी साथ ही साथ हनन किया है। बापूजीकी आत्माको तो अुस पर दया आअी ही होगी और अुनकी ओरसे अुसे क्षमा मिल ही चुकी होगी। और आगे सोचता गया दैवकी अिच्छाके बिना पत्ता भी नही हिलता। बापूजी हिन्दू-मुसलमानोकी मारकाटको रोकनेके लिअे अपने प्राणोकी बाजी अिससे पहले दो बार लगा ही चुके थे। परतु त्रिकालदर्शी दैवको विदित था कि शातिका मूल्य अुनके मूल्यवान प्राण ही है। तभी दैवने हत्यारेको यह कार्य करनेकी बुद्धि और साहस दिया होगा। अेक अन्य विचार आया कि बापूजीने सत्य, अहिंसा, प्रेम, त्याग, वैराग्य अेव लोकहितार्थ जीवन अित्यादि सर्वोत्कृष्ट दैवी सपत्तियोका जो मदिर निर्माण किया था, अुस पर 'प्राणार्पण' का कलश शेष था। सो भी चढ जानेसे वह मदिर अब अेक अत्यत देदीप्यमान कलशसे सुसज्जित हो गया है।

यदि वे किसी अुपवासके कारण या असाधारण बीमारीके कारण मृत्यु प्राप्त करते तो अुसके पहले कितना घटाटोप छा जाता? सारे देशमें कितनी दौडधूप मचती, अुनकी सेवाके लिअे कितनी होड की जाती? कोअी अपनेको सेवाका प्रथम अधिकारी मानता और सेवाका कोअी अधिकारी सेवासे वचित रह जाता। परन्तु दैवको यह बात प्रिय न थी, अिसलिअे किसीको अुसने अेक क्षणका भी अवसर नही दिया। अिस प्रकारके विचारोंसे मैं सान्त्वना प्राप्त

करनेका प्रयत्न करता रहा। जितनी शून्यता मैंने जीवनमें कभी किसी प्रिय-जनके मरने पर अनुभव नहीं की थी जितनी अुस दिन अनुभव की।

कृष्णके जानेके बाद अर्जुन भी जिस तरह गतिहीन हो गया था कि भीलोंने दण्ड मारकर अुससे गोपियोंको छीन लिया था। अुसके बाहु तथा गाण्डीव ज्योंके त्यों थे, परन्तु कृष्णका पीठबल चला गया था। वैसा ही हाल हम सेवाग्राम आश्रमवालोंका बापूजीके चले जानेसे हो गया।

*　　*　　*

रातको मैंने स्वप्न देखा कि नागपुरमें शामके समय बापूजीका बड़ा भारी जुलूस निकल रहा है। देखनेकी अिच्छासे मैं भी अुधर बढ़ा तो देखा कि जुलूसके सब लोग लौट गये हैं और बापूजी अकेले ठण्डा अनुभव कर रहे हैं। कपडा भी पासमें नहीं है। मुझे बापूजीको अिस प्रकार अकेला देखकर दुःख और आश्चर्य हुआ। मैं दौड़ा और बापूजीको सहारा देकर अेक किसानके घर ले गया। अुनसे स्थान और कपडे मांगे। दिन छिप चुका था। ठंड बढ़ रही थी। मैं अुनके घरमें बापूजीके लायक स्वच्छ स्थान खोजने लगा। बापूजी कुछ बोलते नहीं थे। अिससे भी मुझे आश्चर्य हो रहा था। अिस प्रकारकी विचित्र अवस्थामें मैंने बापूजीको कभी नहीं देखा था। अितनेमें आंख खुल गअी। सोचने लगा, बापूजी पर कोअी संकट तो नहीं आ पड़ा है? दिल्ली चलूं क्या? किसीको कुछ खबर दूं क्या? अगर दूं तो क्या दूं? आखिर स्वप्नकी बात है यह सोच कर रह गया। (ता० २८-१-'४८ की डायरीसे)

अब ३० जनवरीकी दुर्घटनाके बारेमें सोचता हूं तो अिस स्वप्नका मेल अुसके साथ बैठता है। अुस दिन ठीक शामके समय बापूजी सबसे अलग होकर अेकान्तमें यमुनाके किनारे राजघाट पर चिरनिद्रामें सो गये। मनमें लगता है अगर मैंने अुस स्वप्नको थोड़ा महत्त्व दिया होता और दिल्ली जाकर कुछ सावधानी रखनेकी व्यवस्था की होती तो शायद बापूजीको बचा लेता। यह भी लगता है कि अगर अुस रोज मैं अुनके साथ होता तो गोडसेके द्वारा दूसरी गोली न चलने देता। लेकिन यह विचार भी अेक स्वप्न ही है। विधिका विधान कौन टाल सकता है? मुझे तो यह भी लगता है कि बापूजी जानबूझ कर भगवानमें लीन हुअे थे। अुनको जानेका आभास मिल गया था। और अुनके मनमें जानेका संकल्प भी हो गया था। मानव-जातिको अहिंसाका सही रास्ता बतानेका यह अन्तिम अुपाय अुनके पास था सो भी जगतके सामने रखकर अपना काम पूरा करके वे चल गये। जगतके लिये

अिससे बड़ी देन अुनके पास नहीं थी। और भगवानके पास भी अुनके लिअे अिससे अच्छी मृत्युकी देन क्या हो सकती थी? भक्तके लिअे भगवानके पास कुछ भी अदेय नहीं है और वह जो करता है भक्तकी सलाहसे, अुसके अन्तरको जानकर, ही करता है। यह भी बापूजीकी मृत्युने सिद्ध कर दिया है।

'जन्म जन्म मुनि जतन कराहिं। अन्त राम कहि आवत नाहिं॥'

भक्तकी परीक्षाकी भी अिससे बडी कसौटी और क्या हो सकती है कि अन्तका अेक शब्द भी निकले तो वह रामनाम ही निकले? सच पूछा जाय तो भगवान और भक्त दोनों खिलाडी हैं और अेक-दूसरेकी कसौटी करनेके अनेक खेल खेलते हैं। तभी तो तुकारामने गाया है

माझें मन पाहे कसून। चित्त न ढळे तुझ पाया पासून॥
कापूनि देअी न शिर। पहा कृपण की अुदार॥
मजवरी घाली घण। परि मी न सोडी चरण॥
तुका म्हणे अति। तुजवाचून नाही गति॥

(मेरा मन कसकर देख। चित्त तेरे पाससे नहीं हटेगा। मैं सिर काटकर दे सकता हूं। तू देख मैं कृपण हूं या अुदार। मेरे सिर पर घन पडेगा तो भी मैं तेरे पैर नहीं छोडूंगा। तुकाराम कहते हैं कि अन्तमें तेरे बिना मेरी गति नहीं है।)

यह भक्त और भगवानका नाता है, जिसे बापूजीने अपने जीवन और अपनी मृत्युसे सिद्ध करके दिखाया।

* * *

कअी दिनोंके बाद श्री रामकृष्ण बजाज दिल्लीसे अेक पात्रमें बापूजीकी भस्मका अेक भाग लेकर सेवाग्राम आये। जहां पूज्य बापूजीकी दिव्य मूर्तिके दर्शनोंकी लालसा सेवाग्रामवासियोंके मनमें थी और अुनकी प्रेमभरी चपत खानेको सब तरस रहे थे, वहां ताम्रपात्रमें अेक मुट्ठीभर भस्म आती देखकर सबका धीरज टूट गया।

जब अुस पवित्र कलशको मैंने संभाला तो मेरे शरीरमें बिजली-सी दौड़ गअी और आंखोंके सामने अंधेरा-सा छा गया। मैं सोचने लगा कि बापूको हंसते हुअे आते देखकर हम सब लोग हंसते थे। प्रत्येकके मिलनमें अपनी अपनी खूबी होती थी। मैं तो सबके पीछे चुपकेसे जाकर अुनके चरणोंमें पड़ा करता था। जब अुनकी नजर मुझ पर पड़ती तो चपत लगाते और चौंककर पूछते,

'बच्छा आ गया? तेरा गौ परिवार कैसा है?' मैं कथा सुनाता कि कितनी गायें ब्यायी हैं, कितने बच्चे हैं, कितना दूध होता है, अित्यादि।

आज यह सब किसको सुनाअूं? मैं बापूजीको नया हुआ दिखाना चाहता था, नये रास्तों पर अुनको चलाना चाहता था। आखिर अुस पवित्र कलशको लेकर अुन्हीं रास्तोंसे होकर मैं कुअें तक गया। दूसरे लोगोंको यह सब अटपटा लगा होगा। लेकिन मैं विवश था। मैं पुकार पुकार कर कह रहा था, 'बापू, यह सब देख लीजिये।' मैं नहीं जानता था कि लोग मेरे पागलपनको देख रहे थे या नहीं।

बापूने हमको जन्मभर यह पाठ पढ़ानेका प्रयत्न किया था कि जिस प्रकार किसीका जन्म लेना मात्र खुशीका कारण नहीं है अुसी प्रकार मृत्यु भी दुःखका कारण नहीं है, बल्कि मृत्यु तो हमारा परम मित्र है। अुसके आनेसे रोना क्या? आज वह सारा अुपदेश न जाने कहां चला गया था। हृदयकी बनावटमें भगवानने कुछ अैसे प्रकारके पुर्जे लगाये हैं कि अुनके तारोंको अमुक प्रकारका स्पर्श होते ही आंखोंकी नालियां बहने लगती हैं। अिसका क्या किया जाय?

३२

बापूके अन्तेवासी विभिन्न सेवाक्षेत्रोंमें

आखिर बापूका महान वियोग भी सहा गया और आश्रमके विषयमें गंभीरतासे कअी बातें सोची गयीं। आश्रमवासियोंने मिलकर यह निश्चय कर लिया था कि अबसे हम लोग आश्रमके लिअे किसीसे चन्देकी याचना नहीं करेंगे। खेती करते हुअे स्वावलम्बी रहनेका यत्न करेंगे और जो भी कष्ट अुठाने पड़ें अुन्हें अुठाते हुअे अन्त तक आश्रमको निभायेंगे।

यह प्रश्न विनोबाजीके समक्ष गया, क्योंकि बापूजीके बाद हमने विनोबाजीसे मार्गदर्शनकी याचना की थी और अुन्होंने कृपापूर्वक आश्रमका मार्गदर्शन करते रहना स्वीकार कर लिया था।

विनोबाजीने हमारे प्रश्नका अेक गंभीर और अुदात्त हल ढूंढ निकाला —सूतांजलिका। अिसके दो शुभ परिणाम हुअे। आश्रमको थोड़ी रकम मिलने लगी तथा सूत्रयज्ञकी भावनाने जनताका मानसिक स्तर अूंचा अुठाया।

हमारे लिअे यह बड़े संतोषका विषय है कि तभीसे आश्रम अपनी खेतीके बल पर ही बिना बाहरी चन्देके चल रहा है। रेड्डीजीने खेतीमें अनेक प्रयोगों और अथक परिश्रमके द्वारा खूब प्रगति कर ली है, जिससे अुत्पत्ति काफी बढ़ गअी है।

बापूजीके सामने ही आश्रमवासियोंको अुन्हें सतानेवाले अपंग तथा रोगियोंकी अेक जमात समझा जाता था। पर वास्तवमें अैसा था नही। जहा अेक ओर रोगियोकी सेवा करना बापूजीके आश्रम-जीवनका अेक विशेष कार्य-क्रम था, वहा दूसरी ओर अुनके आसपासके कार्यकर्ता बापूजीको अपना जीवन अर्पण करके रहते थे और अुनकी आज्ञानुसार कैसा भी कार्य करनेको तत्पर रहनेमें अपनेको धन्य मानते थे। वे बापूजीके हृदयमें अुत्पन्न होनेवाले अनेक विचारोंको तुरन्त ही कार्यरूप देनके लिअे अुनकी जीती-जागती प्रयोगशाला थे। बापूजी स्वय ही अुन्हें वात्सल्यमयी माकी तरह अपनी छातीसे लगाये रहनेकी ममतासे मुक्त नही थे। परतु यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अुनमें से प्रत्येक बापूजीका आदेश पाकर कही भी जाकर कैसा भी सेवाकार्य अुठा लेनेकी क्षमता रखता था।

बापूजीने अेक बार अेक प्रतिज्ञा-पत्र निकालकर यह आदेश दिया था कि जो आश्रमवासी अुनके मरनेके बाद आश्रममें मरणपर्यन्त सेवा करनेके निश्चय-वाले हों वे अुस पर हस्ताक्षर कर दें। कुछ भाअियोंने अुस पर हस्ताक्षर किये थे। मैंने सिर्फ अिसीलिअे नही किये कि बापूजीके बाद न मालूम परि-स्थितियोंका कैसा तकाजा हो, यद्यपि निश्चय तो मेरा भी वैसा ही था। बापूजीको विश्वास हो गया था कि चिमनलाल, मुन्नालाल, कृष्णचन्द्र, बलवन्तसिंह, पारनेरकर ये सब लोग यही रहनेवाले हैं। हम लोग सेवाग्रामको अपना घर मानने लगे थे। बापूजीके बाद जब जवाहरलालजी सेवाग्राम पधारे तब अुन्होने यह जानना चाहा कि यदि बाहर जाकर कार्य करनेकी आवश्यकता आ पड़े तो हम लोग जानेको तत्पर हैं या नही। तब मैंने सबकी तत्परता बतलाते हुअे यह स्पष्ट कर दिया था कि हम कही भी जाकर काम करें, लेकिन सेवाग्राम ही मरणपर्यंन्त हमारा घर बना रहेगा। अिसी निश्चयके अनुसार जब विनोबाजीने, जिन्हें हमने अपना मार्गदर्शक बना लिया था, मुझे राजस्थानमें जाकर गोसेवाका कार्य करनेका आदेश दिया तब अनिच्छा होते हुअे भी मुझे सीकर आ जाना पड़ा। कृष्णचन्द्रजीको अुन्होंने ही अुरुलीकाचन भेजा, जहा वे आज प्राकृतिक चिकित्सालयकी भारी सेवा रहे हैं। पारनेरकरजी

ऋषिकेशमें पशुलोकका संचालन कर रहे हैं। चिमनलालभाअी तथा मुन्नालाल-भाअी सेवाग्राममें ही हैं। अीश्वरकृपासे यह सिद्ध हो गया है कि हममें से कोअी वैसा पशु सिद्ध नहीं हुआ जैसा कि लोगोंका खयाल था। बापूजीके सामने आपसमें हमारे बीच स्वभाव-भिन्नताके कारण कभी कभी चकमक झड जाती थी। लेकिन आज अेक-दूसरेसे सैकडों मील दूर होते हुअे भी हमारे बीचका स्नेह सगे भाअी-बहनोंके स्नेहसे भी कहीं अधिक और श्रेष्ठ है।

आश्रमकी बहनोंका मैं स्वयं परिहास किया करता था कि बापूके बाद आप लोगोंके हाल कैसे होंगे? जब मैं अुनसे पूछता कि बापूजीके मरनेके बाद आप लोग क्या करेंगी, तो वे बेहद चिढतीं और कहतीं अैसे अशुभ वचन क्यों मुहसे निकालते हो। लीलावती बहन और अमतुल्बहन तो लड़ने पर आमादा हो जातीं। आज सभी यह देख सकते हैं कि अिन बहनोंके काम हम भाअियोंके कामोंसे भी ज्यादा चमक रहे हैं।

लीलावती बहनने ३७ वर्षकी अवस्थामें पढना शुरू किया और डॉक्टरीकी सनद हासिल की। आजकल सौराष्ट्रको अुनकी डॉक्टरीकी सेवाका लाभ मिल रहा है। राजकुमारी बहन, जो सचमुच बापूकी राजकुमारी थीं, आजकल भारतकी केन्द्रीय स्वास्थ्यमंत्रिणी हैं और अुनकी सेवा सराहनीय है। सुशीलाबहन अेक कुशल डॉक्टर हैं। दिल्लीकी प्रादेशिक विधानसभाके अध्यक्षपद पर भारतमें ही नहीं सारी दुनियामें पहुंचनेवाली वे सर्वप्रथम महिला हैं। आजकल विनोबाजीके भूदान-आन्दोलनमें प्रमुख भाग ले रही हैं। बहन अमतुस्सलामकी तो बात ही क्या कहनी? मृत्युको धोखा देनेमें वे सिद्धहस्त हैं और यह देखकर आश्चर्य होता है कि न मालूम किस आन्तरिक शक्तिके आधार पर वे अितना काम कर लेती हैं। अपने साथी कार्यकर्ताओंके प्रति अुनका माता जैसा स्नेह होता है। वे सतत सेवाकार्यमें लगी रहती हैं। किसी कामसे थकने या निराश होनेका तो अुनके जीवनमें स्थान ही नहीं है। अुनके प्रत्येक सेवाकार्यमें बापूजी और बाके प्रति अुनकी जीती-जागती श्रद्धाका प्रत्यक्ष दर्शन होता है। अुनके व्यक्तित्व और वाणीमें अितना प्रभाव है कि कोअी भी अुनकी बातको टालनेकी हिम्मत नहीं कर सकता। मैं बहुत दिनोंसे अुनको पत्र लिखनेकी फिक्रमें हूं, लेकिन वे बार बार लंबी [illegible] मरनेकी नौबत आ चुकने पर भी अुठ खडी होती हैं और झट अपने आपको किसी महत्त्वपूर्ण सेवाकार्यमें लगाकर मृत्युको दुविधामें डाल देती हैं। अब तो मुझे यह भय होने लगा है कि कहीं वे ही मेरी चिता पर दो

लकडी डालनेकी अपनी मुराद पूरी न करें। आजकल वे पटियालामें सुन्दर खादीकार्य कर रही हैं।

मीराबहन तो पाडवोंकी तरह हिमालय पर चढनेमें मशगूल हैं। पहले हरद्वारमें अुन्होंने किसानाश्रमकी और ऋषिकेशमें पशुलोककी स्थापना की, क्योंकि गौओंके पीछे वे पागल हैं। ऋषिकेशसे आगे बढकर टेहरी गढवालमें अुन्होंने पक्षीलोककी स्थापना की और पशुसेवा तथा गोसेवाका काम किया। जब मैं हिमालय-दर्शनके लिअे गया तो मैंने देखा कि हिमालयका वह भाग अुनकी सेवाकी सुगन्धसे महक रहा था। वहाकी जनता तो अुन्हें अपनी सेवाके लिअे प्रेषित अीश्वरका दूत ही मानती थी। अब वे हिमालयमें अन्दरकी ओर बढ गअी हैं और काश्मीरमें गोसेवाका कार्य कर रही हैं।

मेरी भतीजी होशियारीने मेरे मना करने पर भी अपने अिकलौते बेटेका मोह त्याग कर निसर्गोपचार आश्रम, अुरुलीकाचनमें कुशल सेविकाका काम करनेकी योग्यता प्राप्त कर ली है।

पुष्पाबहन १९४२ के आन्दोलनके बाद बम्बअीके वातावरणमें से निकल कर अविवाहित रहनेके अपने निश्चय द्वारा अपने मातापिताको गहन चिन्तामें छोडकर आश्रममें आअी थी। कअी लोगोंको अैसा लगा था कि वे आश्रमके कठिन जीवनको ग्रहण करनेमें असमर्थ रहेंगी। लेकिन वे डटी हुअी हैं और नागपुरके निकट टाकडी ग्राममें भसालीभाअीके साथ अुत्तम ग्रामसेवाका काम कर रही हैं।

मेरा अिन समस्त बहनोंकी सेवाभावनाके सामने अनायास ही मस्तक झुक जाता है। यह सब बापूजीके आशीर्वादोंका और हम लोगोंसे अुन्होंने जो आशायें रखी थी अुनका ही शुभ परिणाम है अैसा मानना चाहिये।

३३

अुपसंहार

मैं काफी लिख गया तो भी मेरा हृदय बापूजीके सत्सगके और अपने २५ वर्षके आश्रम-जीवनके संस्मरणोंसे अभी और छलाछल भरा हुआ है, जिन्हें लेखनीबद्ध करना कठिन है। अिन संस्मरणोंके जरिये बापूजीके पावन चरित्रका सहज अेक छोटासा अंग ही स्पर्श हुआ है। अुनका चरित्र अितना महान और अितना विशाल था कि मेरा यह प्रयास कुछ कुछ अुस हाथी जैसी बात सिद्ध होगा, जिसे अनेक अंधोंने स्पर्श द्वारा पहचान कर अनेक भिन्न-भिन्न आकृतियोंका बताया था। अपने अपने कथनमें सब सच्चे थे, लेकिन पूर्ण सत्यसे सब कितने दूर थे!

मैं नहीं जानता मेरा यह अल्पसा प्रयास पाठकोंके लिअे कितना अुपयोगी सिद्ध होगा। परन्तु स्वयं अपने लिअे कहूं तो अिन पंक्तियोंको लिखते हुअे मुझे भगवन् नामस्मरणके पावन प्रभावका सच्चा महत्त्व समझमें आया है। कहा जा सकता है कि अिस प्रयासमें मानसिक जप और ध्यानकी महिमाकी झांकी भी मुझे हुअी है। व्यास भगवानको श्रीमद् भागवत लिखकर जैसी शांतिका अनुभव हुआ था, वैसी ही शांतिका अनुभव मुझे बापूजीके अिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंको लिखकर हुआ है। अिस प्रयत्नमें अपने आध्यात्मिक पिता बापूजीके बहुत बडे ऋणसे यत्किंचित् अुऋण होनेका संतोष भी मेरी आत्माको हुआ है, जिनका हृदय रामके निवासके योग्य था, जो राममय थे। यह वस्तु अुनके जीवन और मृत्युसे सिद्ध हो चुकी है। बापूजीके जीवनका सार हमें अिन पंक्तियोंमें मिलता है

> काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
> जिनके कपट दंभ नहीं माया। तिन्हके हृदय बसहु रघुराया॥
> सबके प्रिय सबके हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
> कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
> तुम्हहि छाडि गति दूसरि नाही। राम बसहु तिनके मन माही॥
> जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥

जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर विपति विसेखी।।
जिनहि राम तुम प्रानपिआरे। तिन्हके मन सुभ सदन तुम्हारे।।

अिन सस्मरणोंको लिखते समय जहा मुझे आध्यात्मिक आनंद और आध्यात्मिक खुराक मिली है, वहा मै बापूजीके प्यार और ममताका स्मरण करके रोया भी खूब हू। मुझे तो अैसा ही प्रतीत होता है कि

सखेति मत्वा प्रसभ यदुक्त हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमान तवेद मया प्रमादात् प्रणयेन वापि।।
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहार शय्यासनभोजनेषु।
अेकोऽथवाऽप्यच्युत तत्समक्ष तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्।।

ये सब अपराध मैंने बापूजीके साथके अपने व्यवहारमें अज्ञानवश किये थे। अिसके लिअे मेरा हृदय निरन्तर बापूसे क्षमा-याचना करता ही रहता है।

अधिक क्या कहू? 'जड चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार। सत हस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार।।' अिस नियमके अनुसार मेरे आत्मवत् पाठकवृन्द मेरे दोषोंकी तरफ ध्यान न देकर अिसमें से बापूजीके गुणरूपी दूधको ग्रहण करके सतोष मानेंगे। और मेरी त्रुटियोंके लिअे मुझे अुदारतापूर्वक क्षमा करेंगे।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी।

परिशिष्ट – १

मेरी अभिलाषा

बापूजीके जानेके बाद मैं आश्रयहीन बन गया था। अन्दर ही अन्दर दुःखका कीड़ा घुनकी तरह दिलको खाता रहता था और कभी यह दुःख बाहर भी आता था तो साथी कहते कि अगर आप अिस प्रकार धीरज खोयेंगे तो हमारा क्या होगा। अिसलिअे भी मैं अपने मनको दबाकर रखता था। जब विनोबाजीने गोसेवाके निमित्तसे मुझे राजस्थान भेजनेकी बात निकाली तो मैंने अपनी अनिच्छा तो बताअी, लेकिन जिस प्रकार बापूजीके सामने अड जाता था अुस प्रकारसे अडनेकी हिम्मत मैं खो बैठा था। बापूजीके बाद आश्रमका मार्गदर्शन विनोबाजीको सौंपा गया था, अिसलिअे विनोबाजीकी बात टालना मुझे अुचित नहीं लगता था। अेक विचार और भी मेरे मनमें काम कर रहा था। जब बापूजीके सामने आश्रमवासियोंके बाहर जानेकी बात निकलती तब मैं विरोध करता, तो लोगोंको लगता था कि हम लोग पंगु बन गये हैं और बापूजीके साथ चिपके रहना चाहते हैं। अिसलिअे भी अब बाहर जाकर अपने पैरोंको आजमा देखना मेरे लिअे जरूरी हो गया था। विनोबाजीके कहनेसे मैं राजस्थानमें आकर गोसेवाका काम तो करने लगा था, लेकिन मेरा मन तो आश्रममें ही था। क्योंकि आश्रमको मैंने अपना घर बना लिया था और बापूजीकी अिच्छा तो स्पष्ट ही थी कि अुनके बाद हम लोग आश्रम न छोड़ें। अैसी मनस्थितिमें मैंने २१–४–'५५ को अखबारमें पढा कि सेवाग्राम आश्रम और बापूजीकी कुटी बंद करके आश्रमवाले भूदान-यज्ञमें भाग लेंगे, अिसलिअे दोनों बन्द कर दिये गये हैं। अिस समाचारसे मुझे गहरी चोट लगी, लेकिन मन मसोसकर चुप रहा। अिसके बाद सेवाग्रामसे मुझे भाअी प्रभाकरजीका पत्र मिला। साथमें विनोबाजीके दो पत्रोंकी नकल भी मिली। अुस परसे मैं समझा कि यह सब विनोबाजीकी प्रेरणासे हुआ है।

वे पत्र यहां दिये जाते हैं

सेवाग्राम (वर्धा),
दिनांक १८–४–'५५

प्रिय भाअी बलवन्तसिंहजी,

नमस्कार।

साथ विनोबाजीके दो पत्रोंकी नकलें हैं। आज शामको ५–३० बजे सामूहिक कताअी और प्रार्थनाके बाद आश्रम और बापू-कुटी बन्द रहेगी।

श्री चिमनलालभाओी, अनन्तरामजी, मुन्नालालजी दवाखानेमें रहेंगे। कचन बहन फिलहाल बरहानपुर जा रही है।

विनोबाजी आजके प्रार्थना-प्रवचनमे आश्रम-आहुतिके बारेमें बोलेगे। शायद अखबारोंमें वह आयेगा। १ मओीसे दो टुकडी निकलेंगी। भूदान-कार्य समाप्त होने तक टोलिया घूमती रहेंगी। विनोबाजीका आदेश आनेके बाद फिर टोलिया आश्रममें आवेगी। लेकिन वह दिन कब आवेगा प्रभु जाने।

आप तो अच्छे होगे। मै १ मओीको दक्षिणके भागमें जा रहा हू। फिर राम जाने।

आपका
प्रभाकर

पडाव, ताराबोओी,
अुत्कल पदयात्रा, १३-४-'५५

श्री चिमनलालभाओी,

भूदान-यज्ञ कार्यमें आश्रम होमनेकी कल्पना आप लोगोको रुचि, यह जानकर खुशी हुओी। दिनाक १८ को आश्रम खाली किया जाय। आप और अनतरामजी फिलहाल दवाखानेमें जाय। अनन्तरामजी आपकी कुछ सेवा भी करेंगे।

बापू-कुटी बद करके कुजी छगनलालभाओीके पास दी जाय। आगेकी व्यवस्था सर्व-सेवा-सघ सोचेगा। तब तक देखनेके लिओ आनेवाले कुटीको बाहरसे देखेंगे और भूदानके कार्यमें लगनेका आदेश अुससे अुनको मिल जायगा। बाद सर्व-सेवा-सघसे परामर्श कर सोचा जायेगा।

हमारी तरफसे छगनलालभाओी थोडे दिन कुजी सभालनेकी जिम्मे-वारी अुठा लेंगे अैसी मै आशा करता हू। बापूके सबसे पुराने साथी शायद आज वे ही है।

विनोबाके प्रणाम

पडाव, ताराबोओी,
१३-४-'५५

श्री छगनभाओी,

चिमनलालभाओीको लिखे पत्रकी नकल साथ है। अिस कदमका रहस्य आप तो समझ लेंगे। बापूने कओी बार अैसे प्रयोग किये है। आज

यह आहुति अपरिहार्य हुआी है। कुंजी सभालनेका कार्य थोडे दिनके लिअे आप अुठा लेंगे। बाद सर्व-सेवा-संघ देख लेगा।

विनोबाके प्रणाम

मैंने प्रभाकरजीको जो पत्र लिखा वह भी यहा देता हू

गोसेवा-आश्रम, सीकर,
दिनाक २२-४-'५५

प्रिय भाअी प्रभाकरजी,

आपके पत्रके साथ विनोबाजीके पत्रोकी नकल भी मिली। यह समाचार मैंने अखबारमें पढ लिया था। यह जानकर मुझे तो धक्का-सा लगा है। मेरा मत आप लोगोंसे भिन्न है। मैं किसी भी कीमत पर आश्रमको बन्द करनेके पक्षमें नही हू। आप लोगोंका कदम मुझे बिलकुल नही रुचता है। मनमें आया कि मैं खुद आकर आश्रमको खोलू। लेकिन यहाके कामको छोडकर भागू तो वही होगा जो आप लोग कर रहे हैं। सब कामोंसे अधिक मेरी ममता आश्रमसे है, लेकिन मेरे साथ विनोबाजीने और आप लोगोंने जो बर्ताव किया है अुससे मेरा मन खट्टा हो गया है।

श्री चिमनलालभाअी और अनन्तरामजी तो अपनी तबीयतको जैसे तैसे चला रहे थे। अुनके शरीरमें शक्ति तो है ही नही। आश्रमकी रक्षा करना ही अुनके जीवनका सर्वोत्तम अुपयोग था। लेकिन अुनको अैसा ही जचा है तो क्या किया जावे? अिनसे भूदानमें कितनी मदद मिलेगी यह तो अनुभव बतायेगा। हा, आप आन्ध्र जायें यह ठीक है। मुन्नालालजी भी बाहर निकल सकते थे। लेकिन आश्रम बन्द करना मेरी नम्र रायमें मैं भूल मानता हू। आप लोगोंको आश्रम बन्द करनेका अधिकार है तो मुझे अपनी राय देनेका तो अधिकार है ही। भावनाके वेगको शान्त करके गंभीरतासे विचार करनेकी नम्र सूचना है।

आप लोगोंका पुराना साथी लेकिन आजका विरोधी,

बलवन्तसिंहके सबको प्रणाम

फिर अुनका कोअी जवाब नही मिला। और मैं मन ही मन कुढने और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। मनमें आता कि सेवाग्राम चलकर बापूजीकी कुटीको खोलकर वहीं बैठ जाअू। लेकिन कुछ तो सीकरका काम

और कुछ यह विचार मुझे रोकता था कि विनोबाजी और दूसरे आश्रम-वासियोंने जो किया है अुसके बीचमें मैं क्यों पड़ूं।

ता० २५–६–'५५ को हैदराबादमें गोसेवकोंकी सभा थी। मुझे अुसमें जाना था। वर्धा बीचमें पडता था। मेरे मनमें द्वन्द्व चला कि वर्धा अुतरूं या नहीं। क्योंकि बापूजीकी कुटी और आश्रमको बन्द देखनेकी मुझमें हिम्मत नहीं थी। मैंने आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाअीको पत्र लिखा कि मैं हैदराबाद जा रहा हूं। २४ को वर्धासे गुजरूंगा। लौटते समय अुतरनेका विचार तो नहीं है। अगर अुतरा तो सीधा आश्रममें ही आअूंगा। वहीं ठहरूंगा और वहीं खाअूंगा। मैं हैदराबादसे २८ जूनको लौट सका। श्री चिमनलालभाअीने अिस डरसे कि मैं कहीं सीधा ही न चला जाअूं मुझे गाडीसे अुतारनेके लिये स्टेशन पर श्री कंचनबहनको भेजा। मैं अुतरा और सेवाग्राम गया। अुस समय चिमनलालभाअी और दूसरे आश्रमवासी कस्तूरबा दवाखानेमें रहते थे। मुझे वहीं पर अुतारनेकी सूचना थी, लेकिन मेरा निश्चय सीधा आश्रम जानेका था। अिसलिअे मैं सीधा आश्रमको गया। आश्रमको खाली और बापूजीकी कुटीको बन्द देखकर मुझे तीव्र वेदना हुअी। मैंने हरिभाअूसे कुटीकी चाबी मांगी तो अुसने बताया कि चाबी चिमनलालभाअीके पास है। मैंने लानेको कहा और मैं बरामदेमें बैठकर प्रार्थना करने लगा। अितनेमें हरिभाअू चाबी ले आया और कुटी खोली। मैंने 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' भजन आरंभ ही किया था कि मेरे धीरजका बांध टूट गया। मैं बापूजीके बैठनेकी जगह पर औंधा पछाड़ खाकर गिर पड़ा और जोरसे चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। अितनेमें चिमनलालभाअी दूसरे आश्रमवासियोंके साथ वहां आ गये। मेरे बुरे हाल देखकर सबकी आंखें गीली हो गअीं। चिमनलालभाअी मुझे अुठाने और धीरज बंधानेका प्रयत्न करने लगे तो मैंने अुनको सुनाया कि क्या हमें बापूजीने अिसलिअे पाला था कि हम अुनके बाद आश्रम और कुटीको बन्द करके चले जायं? रोना बन्द करना मेरे काबूसे बाहर हो गया था। मेरा मगज फटा जा रहा था। मुझे तो डर था ही, दूसरे साथियोंको भी डर हो गया था कि कहीं मेरे हृदयकी गति न रुक जाय। लेकिन अितने पुण्य नहीं थे, जिसलिअे सिर पर पानी और भीगा कपड़ा रखनेसे कठिनतासे रोना रोक सका। बादमें सबने मिलकर प्रार्थना की।

मेरे जीवनमें अिस प्रकारका यह पहला आघात था। मैंने अनेक कुटुम्बीजनों और मित्रोंको खोया है। लेकिन मेरा धीरज कभी अितना टूटा हो और

किसीके लिअे भी मैं अितना रोया होअूं यह याद नहीं आता। मैंने निश्चय किया कि आजसे कुटी खुली रहेगी। और आश्रममें दोनों समय प्रार्थना और सूत्रयज्ञ भी चलेगा। कोअी न आया तो मैं अकेला ही यह करूंगा। अितना निश्चय करनेके बाद मेरा दिल कुछ हलका हुआ। अिस निश्चयके अनुसार शामको आश्रमकी प्रार्थना-भूमि पर प्रतिदिन प्रार्थना होने और बापूकी कुटी खुली रहनेकी मैंने घोषणा कर दी। प्रार्थनामें लगभग ५०-६० व्यक्ति आये थे। अुन्हें अिससे बड़ी खुशी हुअी। लेकिन आश्रमके कोअी लोग अुस दिन प्रार्थनामें शरीक नहीं हुअे। दूसरे दिन २९ तारीखको मगनवाडीमें सर्व-सेवा-संघकी कार्यकारिणीकी सभा थी। और अुसमें कुटीके प्रश्न पर चर्चा होनेवाली थी। भाअी राधाकृष्णजी बजाजने आग्रहके साथ सूचना की कि मैं और चिमनलालभाअी सभामें जायें। मेरी अिच्छा तो नहीं थी लेकिन अुनके आग्रहसे गया। जब सभामें कुटीका प्रश्न निकला तो मैंने कहा कि पहले थोड़ी बात मेरी सुन लीजिये। बादमें आगेका सोचना ठीक होगा। लोगोंने मेरी बात सुनना कबूल किया। मैंने कहा कि कुटी तो मैंने कल खोल दी है। अुसकी तीन शर्तें भी रख दी हैं.

१ कुटी हर समय खुली रहेगी।

२ आश्रममें दोनों समय प्रार्थना चलेगी।

३ सूत्रयज्ञ नियमित चलाना होगा।

अिस पर सब लोग चौंके। क्योंकि मेरा नाम राय देनेवालों या कुटीका निर्णय करनेवालोंकी अुनकी लिस्टमें नहीं था। लेकिन संघके अध्यक्ष धीरेन्द्रभाअी मजूमदारने बड़ी सूझसे काम लिया। वे बोले, जब कुटी तो खुल ही गअी है। तो अुसे जाहिर कर दो। भाअी राधाकृष्णजीने कहा कि कल ३० तारीखसे खोलना ठीक होगा। धीरेन्द्रभाअीने कहा, कलसे क्यों? आजसे क्यों नहीं? वे चुप रहे। शंकरराव देवजीने कहा कि अभी तो बलवन्तसिंहजीके दो प्रश्न हल करने बाकी हैं। प्रार्थना और सूत्रयज्ञ कौन करेगा? अितनेमें आशादेवी आर्यनायकम् और आर्यनायकम्‌जी खड़े होकर बोले कि अिन दो बातोंकी जवाबदारी हम लेते हैं। सबके चेहरे खुशीसे खिल अुठे। मेरी खुशीका तो पार न रहा। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी अुसी समय सभासे अुठकर सेवाग्राम चले गये। अुन्होंने बापूजीकी कुटीको सजाया और शामको बड़ी ही प्रसन्नताके साथ सबने प्रार्थना की। सेवाग्रामके लोग भी खुश हो गये, क्योंकि कुटी बन्द होनेका अुनको भी बड़ा दुःख था।

मेरी तीनों शर्तें स्वीकार हो जानेसे मेरी आत्माको काफी शांति मिली और सन्तोष हुआ। लेकिन मेरी हार्दिक अभिलाषा यही थी और है कि सारा आश्रम फिरसे खोल दिया जाय और बापूजीके कुछ योग्य साथी वहीं रहें, जो आश्रमकी मुलाकात लेनेवाले भाअी-बहनोंके सजीव सम्पर्कमें रह कर बापूजीके अुस पुण्य कार्यक्षेत्रकी रक्षा करते रहें। मेरी यह नम्र सूचना मैंने विनोबाजीके सामने आग्रहपूर्वक रखी है, लेकिन अभी तक अुन्होंने अुस पर गौर नहीं किया है। आज भी मैं बार-बार विनयपूर्वक अुनसे और सर्व-सेवा-संघसे यह निवेदन करता हूं कि वे मेरी सूचना पर गहरा विचार करें और सेवाग्राम आश्रमको खोल दें। बापूजीने अेक प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया था, जिसमें लिखा था . "मेरे मरनेके बाद अपने मरने तक जो आश्रममें ही रहे वे ही अिस पर सही करें।" मेरी नम्र रायमें तो अुसका यही अर्थ होता है कि बापूजीके मरनेके बाद भी आश्रम अुनके सहयोगियोंके जीवन-काल तक तो कमसे कम चलता रहे और भावी पीढ़ीको सच्चे आश्रम-जीवनकी और अुदात्त जनसेवाकी प्रेरणा देता रहे।

आज आश्रम और बापू-कुटीकी देखरेख तथा रक्षाका काम सर्व-सेवा-संघके हाथमें है। श्री अुका बाबाजी कुटीकी सेवा बड़ी ही श्रद्धा और तत्परतासे कर रहे हैं। हरिभाअू और नारायण आश्रमकी साफ-सफाअीका काम अुमी श्रद्धासे कर रहे हैं। आश्रमकी खेती सहकारिताके आधार पर भाअी नामदेव राणे बड़ी लगनसे चला रहे हैं। भाअी अनन्तरामजी अपनी कमजोर तबीयत रहते हुअे भी कस्तूरबा दवाखानेसे जाकर अुनको कीमती सहायता देते रहते हैं। श्री चिमनलालभाअी अत्यन्त दुर्बल अवस्थामें भी आश्रमके मकान और खेती आदि सब चीजोंकी देखभाल बड़ी चिन्ताके साथ करते हैं और आश्रम-परिवारके जो लोग बाहर हैं अुनके साथ पत्रव्यवहार द्वारा सजीव सम्पर्क बनाये रखते हैं। आश्रमकी मुलाकात लेनेवालोंकी आवभगतका भार भी अुन्हींके सिर पर है। वे सन् १९१७ से अन्त तक बापूके साथी रहे और अुनके अनन्य भक्त हैं।

भले अिसे कोअी ममत्व कहे, लेकिन मेरी ममता और श्रद्धा बापूकी अिस तपोभूमिके प्रति अपनी माके जैसी ही है। सचमुच आज भी मुझे अुससे आश्वासन मिलता रहता है। मैं मानता हूं कि मेरे ही जैसी श्रद्धा और भक्ति देश-विदेशके अनेक श्रद्धालु जनोंकी भी अुस तपोभूमिके प्रति है और सदा बनी रहेगी।

परिशिष्ट – २

१

बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना

प्रात.कालकी प्रार्थना

बौद्धमन्त्र

न म्यो हो रें गे क्यो ।
न म्यो हो रें गे क्यो ।
न म्यो हो रें गे क्यो ॥

नित्यपाठ

हरि ॐ ।
ओशावास्य इदम् सर्वम् यत् किं च जगत्या जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृध कस्यस्विद् धनम् ॥

प्रात स्मरणम्

प्रात स्मरामि हृदि सस्फुरद् आत्मतत्त्वम्
सत्-चित्-सुख परमहंस-गति तुरीयम् ।
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलम् अहं न च भूत-सघ ॥१॥
प्रातर् भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यद् अनुग्रहेण ।
यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुन्
त देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर्-अग्र्यम् ॥२॥
प्रातर् नमामि तमस परम् अर्कवर्णम्
पूर्णं सनातन-पद पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन् अिदम् जगद् अशेषम् अशेषमूर्तौ
रज्ज्वा भुजगम अिव प्रतिभासित वै ॥३॥
समुद्रवसने ! देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले ! ।
विष्णु-पत्नि ! नमस् तुभ्यम् पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥४॥
या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र – वस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्ड-मण्डित-करा या श्वेतपद्मासना ।

या ब्रह्माऽच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर् देवैः सदा वंदिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥५॥

वक्रतुण्ड ! महाकाय ! सूर्य-कोटि-सम-प्रभ !
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! शुभ-कार्येषु सर्वदा ॥६॥

गुरुर् ब्रह्मा, गुरुर् विष्णुर्, गुरुर् देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥७॥

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्वलोकैकनाथम् ॥८॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितम् अविहितं वा सर्वम् अेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे ! श्री महादेव ! शम्भो ! ॥९॥

न त्वहं कामये राज्यम् न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःख-तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्तिनाशनम् ॥१०॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।
गो-ब्राह्मणेभ्यः शुभम् अस्तु नित्यम्
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥११॥

नमस् ते सते ते जगत्कारणाय
नमस् ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्तिप्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१२॥

त्वम् अेकं शरण्यं त्वम् अेकं वरेण्यम्
त्वम् अेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वम् अेकं जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
त्वम् अेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥१३॥

भयानां भयं, भीषणं भीषणानाम्
गतिः प्राणिनां, पावनं पावनानाम् ।

[illegible]
[illegible] ॥१६॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥१७॥

अेकादश व्रत

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह ।
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन ॥
सर्वधर्मी समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना ।
ही अेकादश सेवावी नम्रत्वे व्रतनिश्चये ॥

कुरानसे प्रार्थना

अअूजु बिल्लाहि मिनश् शैतानिर् रजीम्।
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम।
अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन।
अर् रहमानिर् रहीम, मालिकि यौमिद् दीन।
अीयाक न अबुदु व अीयाक नस्तअीन।
अिहदिनस् सिरातल् मुस्तकीम ।
सिरातल् लजीन अन् अम्त अलैहिम,
गैरिल् मगजूबे अलैहिम वलज्जु आलीन ॥
आमीन
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम।
क़ुल हुवल्लाहु अहद् । अल्लाहुस्समद् ।
लम् यलिद्, वलम् यूलद्,
व लम् यकुल्लहू कुफवन् अहद् ॥

जरथोस्ती गाथा

(पारसी प्रार्थना)

मजदा अत्त मोइ वहिश्ता
स्रवा ओस्वा श्योथनाचा वओचा।

ता-तू वहू मनघह्रा
अशाचा अिथुदेम स्तुतो
क्षमा का श्थ्रा अहूरा फेरषेम्
वस्ना हुअि श्येम् दाओ अहूम् ।।

[नोट : अिसके बाद भजन, धुन और साप्ताहिक गीता-पारायण होता था।]

सायंकालकी प्रार्थना

य ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुत स्तुवन्ति दिव्यै स्तवैर्
वेदै सागपदक्रमोपनिषदैर् गायन्ति य सामगा ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति य योगिनो
यस्यान्त न विदु सुरासुरगणा देवाय तस्मै नम ।।

स्थितप्रज्ञ-लक्षणानि

अर्जुन अुवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधी किं प्रभाषेत किम् आसीत व्रजेत किम् ।।१।।

श्री भगवान् अुवाच

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ ! मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्ट स्थितप्रज्ञस् तदोच्यते ।। २ ।।
दु खेष्वनुद्विग्न-मना सुखेषु विगतस्पृह ।
वीत-राग-भय-क्रोध स्थितधीर् मुनिर् अुच्यते ।।३।।
य सर्वत्रानभिस्नेहस् तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।४।।
यदा सहरते चाय कूर्मोङ्गानीव सर्वश ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।५।।
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिन ।
रसवर्जं रसोप्यस्य पर दृष्ट्वा निवर्तते ।।६।।
यततो ह्यपि कौन्तेय ! पुरुषस्य विपश्चित ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभ मन ।।७।।

तानि सर्वाणि सयम्य युक्त आसीत मत्पर ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।८।।
ध्यायतो विषयान् पुस. सगस् तेषूपजायते ।
सगात् सजायते काम कामात् क्रोधोऽभिजायते ।।९।।
क्रोधाद् भवति समोह समोहात् स्मृति-विभ्रम ।
स्मृतिभ्रशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।।१०।।
राग-द्वेष-वियुक्तैस् तु विषयान् इन्द्रियैश् चरन् ।
आत्मवश्यैर् विधेयात्मा प्रसादम् अधिगच्छति ।।११।।
प्रसादे सर्वदु खानाम् हानिर् अस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धि पर्यवतिष्ठते ।।१२।।
नास्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयत शान्तिर् अशान्तस्य कुत. सुखम् ।।१३।।
इन्द्रियाणा हि चरताम् यन् मनोऽनुविधीयते ।
तद् अस्य हरति प्रज्ञाम् वायुर् नावम् इवाम्भसि ।।१४।।
तस्माद् यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वश ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।१५।।
या निशा सर्वभूताना तस्या जागर्ति सयमी ।
यस्या जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने ।।१६।।
आपूर्यमाणम् अचल-प्रतिष्ठ
समुद्रम् आप प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा य प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिम् आप्नोति न कामकामी ।।१७।।
विहाय कामान् य सर्वान् पुमाश् चरति निःस्पृह ।
निर्ममो निरहकार म शान्तिम् अधिगच्छति ।।१८।।
एषा ब्राह्मी स्थिति पार्थ नैना प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वाऽस्याम् अन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणम् ऋच्छति ।। १९।।

(भगवद्‌गीता, २ : ५४-७२)

[नोट प्रार्थनाके अन्तमें भजन, धुन और रामायणका पाठ होता था ।]

२

वर्तमानकालीन प्रार्थना

प्रात.कालकी अुपासना

न म्यो हो रे गे क्यो।
न म्यो हो रे गे क्यो।
न म्यो हो रे गे क्यो।।

अीशावास्य अुपनिषद्

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह
पूर्णमे निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्णमें मे पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति.

१ हरि ॐ अीशका आवास यह सारा जगत्
जीवन यहा जो कुछ अुसीसे व्याप्त है।
अतअेव करके त्याग अुसके नामसे
तू भोगता-जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धनकी किसीके भी न रख तू वासना।

२ करते हुअे ही कर्म अिस ससारमें
शत वर्षका जीवन हमारा अिष्ट हो।
तुझ देहधारीके लिअे पथ अेक यह
अतिरिक्त जिसमे दूसरा पथ है नही।
होता नही है लिप्त मानव कर्मसे,
अुससे चिकटती मात्र फलकी, वासना।

३ मानी गयी है योनिया जो आसुरी
छाया हुआ जिनमें, तिमिर घनघोर है,
मुडते अुन्हीकी ओर मरकर वे मनुज
जो आत्मघातक शत्रु आत्मज्ञानके।

४ चलता नही, फिरता नही, है अेक ही,
वह आत्मतत्त्व सवेग मनसे भी अधिक,

अुसको कहीं भी देव वर पाते नहीं,
अुनको कभीका वह स्वयं ही है घरे।
वह अुन सभीको, दौड़ते जो जा रहे,
ठहरा हुआ भी छोड़ पीछे ही गया।
वह 'है', तभी तो सञ्चरित है प्राण यह,
जो कर रहा क्रीडा प्रकृतिकी गोदमें।

५. वह चल रहा है और वह चलता नहीं
वह दूर है, फिर भी निरंतर पास है।
भीतर सभीके बस रहा सर्वत्र ही
बाहर सभीके है तदपि वह सर्वदा।

६. जब जो निरन्तर देखता है, भूत सब
आत्मस्थ ही है, और आत्मा दीखता
सम्पूर्ण भूतोंमें जिसे, तब वह घृणा
अुसका किसीके प्रति नहीं रहता कहीं।

७ ये सर्वभूत हुवे जिसे है आत्मस्थ,
अेकत्वका दर्शन निरन्तर जो करे,
तब अुस दशामें अुस सुधीजनके लिअे
कैसा कहां क्या मोह, कैसा शोक क्या?

८. सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ सो
है बैठ जाता, प्राप्त कर लेता अुसे—
जो तेजसे परिपूर्ण है, अशरीर है
यो मुक्त है तनुके व्रणादिक दोषसे,
त्यों स्नायु आदिक देहगुणसे भी रहित—
जो शुद्ध है, बेधा नहीं अघने जिसे।
वह क्रान्तदर्शी, कवि, वशी, व्यापक, स्वतन्त्र
सब अर्थ अुसके सब गये हैं ठीकसे
सुस्थिर रहेंगे जो चिरन्तन कालमें।

९ जो जन अविद्यामें निरन्तर मग्न है,
वे डूब जाते है घने तमसान्धमें।
जो मनुज विद्यामें सदा रममाण है
वे और घन तमसान्धमें मानो धसे।

१० वह आत्मतत्त्व विभिन्न विद्यासे कथित
अेव अविद्यासे कथित है भिन्न वह।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषोंसे सुना,
जिनमे हुआ अुस तत्त्वका दर्शन हमें।

११. विद्या-अविद्या—अिन अुभयके साथमें,
है जानते जो मनुज आत्मज्ञानको
अिमके सहारे तर अविद्यासे मरण
वे प्राप्त विद्यासे अमृत करते सदा।

१२ जो मनुज करते है निरोध अुपासना
वे डूब जाते हैं घने तमसान्धमें
जो जन सदैव विकासमें रममाण है
वे और घन तमसान्धमें मानो घसे।

१३. वह आत्मतत्त्व विकाससे है भिन्न ही
कहते अुसे अेव विभिन्न निरोधसे।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषोंसे सुना
जिनसे हुआ अुस तत्त्वका दर्शन हमें।

१४ ये जो विकास-निरोध, अिन दोके सहित
है जानते जो मनुज आत्मज्ञानको
अिमके सहारे मरण पैर निरोधसे
पाते सदैव विकासके द्वारा अमृत।

१५ मुख आवरित है सत्यका अुस पात्रमे
जो हेममय है, विश्व-पोषक हे प्रभो,
मुझ सत्यधर्मकि लिअे वह आवरण
तू दूर कर, जिमसे कि दर्शन कर सकू।

१६ तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक अेक है
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर रहा
पालन सभीका हो रहा तुझसे प्रजाकी भाति है।
निज पोषणादिक रश्मिया तू खोलकर मुझको दिखा
फिरसे दिखा अेकत्र त्यो ही जोड करके तू अुन्हे।
अब देखता हू रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम
वह जो परात्पर पुरुष है, मै हू वही।

१७ यह प्राण जुत चेतन अमृतमय तत्वमें
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो।
ले नाम ईश्वरका अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, उसका किया तू स्मरण कर।
संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह उसे।
१८ हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे तत्व जो जगमें ग्रथित।
ले जा परम आनन्दमयकी ओर तू
ऋजुमार्गसे, हमको कुटिल अघसे बचा।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुझे।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुझे।

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह
पूर्णसे निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्णमें से पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सायंकालकी उपासना

य ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुत: स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगा:।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।

अर्जुनने कहा

१ स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे,
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता।

श्री भगवानने कहा

२ मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो,
आत्मामें आप ही तुष्ट, वो स्थितप्रज्ञ है तभी।

३ दुःखमें जो अनुद्विग्न, सुखमें नित्य निःस्पृह,
वीत-राग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही।
४ जो शुभाशुभको पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
५ कूर्म ज्यों निज अंगोंको, अिन्द्रियोंको समेट ले—
सर्वदा विषयोंसे जो, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
६ भोग तो छूट जाते है निराहारी मनुष्यके
रस किन्तु नही जाता, जाता है आत्म-रागसे।
७ यत्नयुक्त सुधीकी भी अिन्द्रिया ये प्रमत्त जो
मनको हर लेती है, अपने बलसे हठात्।
८ अिन्हें संयमसे रोके, मुझीमें रत, युक्त हो,
अिन्द्रिया जिसने जीती, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
९ भोग-चिन्तन होनेसे होता अुत्पन्न संग है,
संगसे काम होता है, कामसे क्रोध भारत।
१० क्रोधसे मोह होता है, मोहसे स्मृति-विभ्रम,
अुससे बुद्धिका नाश, बुद्धिनाश विनाश है।
११ राग-द्वेष-परित्यागी करे अिन्द्रिय-कार्य जो,
स्वाधीन वृत्तिसे पार्थ, पाता आत्म-प्रसाद सो।
१२ प्रसाद-युत होनेसे छूटते सब दुःख है,
होती प्रसन्नचेताकी बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।
१३ नही बुद्धि अयोगी के, भावना अुसमें कही,
अभावन कहा शान्त, कैसे सुख अशान्तको।
१४ मन जो दौडता पीछे अिन्द्रियोंके विहारमें,
खींचता जनकी प्रज्ञा, जलमें नाव वायु ज्यों।
१५ अतअेव महाबाहो, अिन्द्रियोंको समेट ले—
सर्वथा विषयोंसे जो, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
१६ निशा जो सर्वभूतों की, संयमी जागते वहा,
जागते जिसमें अन्य, वह तत्त्वज्ञकी निशा।
१७ नदी-नदोंसे भरता हुआ भी,
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ,

त्यों काम जिसमें सारे समावें,
पाता वही शान्ति, न कामकामी।

१८. सर्व-काम-परित्यागी, विचरे नर निःस्पृह,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम शान्ति सो।

१९ ब्राह्मी स्थिति यही पार्थ, जिसे पाके न मोह है,
टिकती अन्तमें भी है, ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी।

नाम-माला

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू,
सिद्ध बुद्ध तू, स्कन्द विनायक, सविता पावक तू।
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू,
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू,
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय, आत्म-लिंग शिव तू।

अेकादश व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रत निष्ठासे ये अेकादश सेव्य हैं॥